आरमेनिया

की

लघु कहानियां

संकलन

सोफ़ी अवाकियान

अनुवाद

विभा देवसरे

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

विषय-सूची

प्रस्तावना

"वे हमारे आदमियों की हत्या कर रहे हैं", "वे हमारे भाइयों को कत्ल कर रहे हैं" ये दुखभरे वाक्य आरमेनियाई मूल के अमरीकी लेखक विलियम सेरोयान की कहानी "सत्तर हजार असीरियाई" में एक नाई द्वारा उस अमरीकी लड़के से कहे गए हैं जो उसकी दुकान में मुफ्त बाल कटवाने आया था। यह एक दुखभरी, व्यंग्यात्मक और मर्मस्पर्शी कहानी है। सचाई यह है कि वह नाई आरमेनियाई मूल का था, इसलिए वह अपनी जनजाति के लोगों के निरंतर कम होने के प्रति दुखी हो रहा था । दरअसल आरमेनियावासियों ने समय-समय पर बहुत दिनों तक और शायद सदियों तक अत्याचार और विनाश सहा है। केवल सन् 1915 में ही जब तुर्की के अधिकारियों ने "पिछले हिस्से को खाली कराने" के नाम पर आरमेनियाई लोगों का सामूहिक निष्कासन किया और उन्हें सीरिया के दहकते रेगिस्तान और दजला-फरात नदियों के पानी में डूब मरने के लिए छोड़ दिया था तो करीब पन्द्रह लाख लोग मौत के मुंह में चले गए थे। इतिहास में व्यापक जाति-संहार का यह पहला उदाहरण है। भारत में भी सत्रहवीं शताब्दी में जो आरमेनियाई यात्री आए थे, वे व्यापारिक लाभ उठाने के लिए नहीं बल्कि वे तुर्की और ईरानी विजेताओं के अत्याचार से बचने के लिए आए थे ।

आरमेनिया को प्रायः एक खुला हुआ संग्रहालय कहते हैं। इसकी राजधानी येरेवान बेबीलोन के पुरातत्व से मिलती-जुलती है। यहां की भूमि खंडहरों से भरी हुई है जो न केवल शताब्दियों के ऐतिहासिक गौरव की कहानी सुनाते हैं बल्कि आक्रामकों, लुटेरों और धार्मिक कट्टरपंथियों द्वारा किये गये विनाश की भी याद दिलाते हैं। आज आरमेनिया संयुक्त सोवियत समाजवादी गणराज्य का एक गणतंत्र है। यह पहाड़ी और अर्द्धउष्ण देश है जिसका क्षेत्रफल ग्यारह हज़ार वर्गमील है और इसकी आबादी करीब बीस लाख अस्सी हज़ार है। यूरेशिया के नक्शे में इसे काकेसस पर्वत के नीचे कालासागर और कैस्पियन सागर के बीच देखा जा सकता है। यहां खूब सिंचाई होती है और फसलें भरपूर होती हैं। तांबा, लोहा और संगमरमर यहां की प्रमुख खनिज संपत्ति है।

अमरीका की "दि ग्रैंड कैनियॉन" संभवत: विश्व की सबसे प्रबण, विस्मयकारी और सुंदर घाटी है। इसकी एक पहाड़ी पर पर्यटकों के लिए जो स्थान बना है, वहां एक चट्टान है। वह गोल है और उससे लोहे की एक छड़ बंधी हुई है। दर्शकों से कहा जाता है कि वे उस छड़ को पत्थर से रगड़ें। इस दर्शनीय स्थान को बनाए हुए पचास साल हुए हैं और ग्रैंड कैनियॉन आने वाले लाखों दर्शकों द्वारा लगातार छड़ को रगड़ने से पत्थर में एक सेंटीमीटर गहरा गढ़ा बन गया है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि इसी तरह कोलोरेडो नदी के पानी ने भी पहाड़ को काटकर ग्रैंड केनियॉन की मीलों लंबी कंदरा बना दी है। इसे शायद दो करोड़ वर्ष लगे होंगे। इस इलाके की जन-जाति "होपिस" यह मानती है कि इस सृष्टि का आरम्भ ग्रैंड कैनियॉन से ही शुरू हुआ और लोगों का मन इसे मान लेने के लिए तैयार भी हो जाता है।

अगर होपिस लोग सृष्टि के आरभ का दावा कर सकते हैं तो इसी तरह आरमेनियाई लोग सभ्यता के आरंभ का दावा कर सकते हैं। इसका कारण वे यह बताते हैं कि जलाप्लावन के बाद "नोहा की मंजूषा" आरमेनिया की मशहूर पर्वत चोटी अरारात पर ही ठहरी थी।

सन् 303 में रोम से भी पहले आरमेनिया पहला ईसाई राज्य बना था। संभवत: यहां का पहला साहित्य-ग्रंथ बाइबिल का अनुवाद था जो सन् 424 ई० में संत मेसरोब द्वारा किया गया था। उन्होंने आरमेनियाई भाषा के छत्तीस अक्षरों का भी निर्माण किया था।

आरमेनियाई लोगों ने भारत के साथ वाणिज्य-व्यापार का नया अध्याय शुरू किया था और मित्रता तथा परस्पर कल्याण की भावना पर आधारित संबंधों की स्थापना की थी। आरमेनियावासी निश्चय ही व्यापार में अत्यन्त कुशल रहे होंगे और साथ ही अच्छे अधिवासी भी सिद्ध हुए होंगे, क्योंकि कलकत्ता और मद्रास में उनके नाम की सड़कें—आरमेनियन स्ट्रीट आज भी विद्यमान हैं। इन दोनों शहरों की आरमेनियन स्ट्रीट्स पर दो सौ साल पुराने आरमेनियाई गिरजाघर भी बने हुए हैं। "दि आरमेनियन होली चर्च ऑफ नज़ारेथ, कलकत्ता", भारत का सबसे पुराना गिरजाघर है। इसका निर्माण सन् 1707 में हुआ था और समय-समम पर इसका पुनर्निर्माण भी होता रहा। यहां लगे एक समाधि-प्रस्तर से इसके और भी पुराने होने का संकेत मिलता है। उस पर 21 जुलाई 1630 की तारीख पड़ी है और लिखा है—"दानशील सूकियास की पत्नी रेजावीबेह।" आरमेनिया के जो व्यापारी सोलहवीं शताब्दी के अंतिम

वर्षों में कलकत्ता आए थे, वे इतनी जल्दी मालामाल हो गए कि उन्होंने हुगली नदी के किनारे पुराने हावड़ा पुल के दक्षिण में अपना पृथक घाट बना लिया था। कलकत्ता में आज भी आरमेनियाई लोगों द्वारा बनवाए गए कई महत्वपूर्ण स्मारक हैं। आज का पांच सौ कमरों वाला मशहूर ग्रैंड होटल एक आरमेनियाई जौहरी अरातू स्टीफेन के ही प्रयासों का फल है। एक अन्य आरमेनियाई हस्ती सी. एल. फिलिप्स, जिन्हें "कोयले का बादशाह" भी कहते थे, ने भारत की कोयला खानों का विकास किया था, साथ ही अपने लिए एक आलीशान महल बनवाया था—जिसका नाम "फिलिप्स की मूर्खता" रखते समय वह खुद भी हंसे होंगे। इसके अलावा कलकत्ता स्थित आरमेनियन कालेज आज भी शिक्षा का केन्द्र है। अंग्रेजी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए आरमेनियन कालेज में एक विशेष आकर्षण है—कालेज का वह कमरा जहां जुलाई 1811 में विलियम मेकपीस ठाकरसी का जन्म हुआ था।

आरमेनियन स्ट्रीट, आज भी मद्रास शहर की एक अत्यंत भीड़-भाड़ वाली सड़क है और साथ ही व्यापार का एक अत्यंत व्यस्त केन्द्र भी। अब यहां आरमेनियाई समुदाय के अवशेष के रूप में केवल एक ही परिवार है जो सड़क के आरम्भ में ही पड़ने वाली एक बेहद पुरानी इमारत में रहता है।

यहां के आरमेनियाई गिरजाघर के मुख्य द्वार पर पहुंचने के लिए दो ओर से सीढ़ियां हैं। वहां लिखा है—सन् 1772। मूल आरमेनियाई गिरजाघर सन् 1712 में सेंट जार्ज किले के पास बना था। किन्तु अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के युद्ध के दौरान वह क्षतिग्रस्त हो गया था, इसलिए उसे छोड़ दिया गया था और जहां कभी कब्रिस्तान था वहां नया आरमेनियन गिरजाघर निर्मित है। इस गिरजाघर में अब न केवल बिजली की रोशनी है बल्कि टेलीफोन और सभी आधुनिक सुविधाएं हैं। लेकिन इस सबके बावजूद गिरजाघर की सीमा में प्रवेश करते ही सौ साल पुराने वातावरण का परिचय तो मिल ही जाता है। इमारत की ईंटें गारे से जुड़ी हैं, दीवारें करीब डेढ़ फीट मोटी हैं और दरवाजों के एक-एक कब्ज़े कम से कम चार-पांच पौंड भारी होंगे। फर्श पर कई जगह चारपाई के आकार वाली पत्थर की बड़ी-बड़ी सिल्लियां लगी हुई हैं। एक तरह से वे इसलिए चारपाई जैसी हैं, क्योंकि उनके नीचे उन आरमेनियाइयों को दफनाया गया है जो पिछली ढाई शताब्दी में मद्रास में मरे हैं। इन समाधि-प्रस्तरों पर उन सभी की कहानियां विचित्र ढंग से लिखी हुई हैं। इन्हें वही समझ सकता है जो आरमेनियाई भाषा जानता है। ये पत्थर एकदम ठोस, भारी और अध्वंस्य हैं।

आरमेनिया में एक पांडुलिपि को समय, कलाकृतियों के विध्वंसकों और युद्ध में से कोई भी नष्ट नहीं कर सका। इसका नाम है---"माउश के धर्मोपदेश" छह सौ पृष्ठों वाली इस पुस्तक का भार साठ पौंड है और यह आठ सौ वर्ष पुरानी है। मेरा ख्याल है कि यह अभी भी आरमेनिया में मतेनादरान में देखी जा सकती है। इसे फेंक दिया गया था, लोग इसे भूल गए थे और उन्हें इसके कुछ अंश ही याद थे, इसके पन्ने न जाने कितने हाथों में पहुंचे, फिर भी किसी परीकथा के चमत्कार की तरह यह पूरी हो गयी।

किसी भी भाषा के विकास का अर्थ यह नहीं है कि वह अपनी ही भूमि में फले-फूले। उसका विकास तो विदेशों में और कठिन परिस्थितियों के बावजूद होना चाहिए। और तब यह कितना आश्चर्यजनक लगता है कि मद्रास से आरमेनियाई भाषा में एक पत्रिका का प्रकाशन भी होता था। इसकी भी कहानी है। शिराज के एक आरमेनियाई पादरी ने एक ही सप्ताह में अपने दो बेटों को खो दिया। अपने इस दुख पर विजय पाने के लिए उस पादरी ने भाषाओं के अध्ययन में अपने को डुबो लिया। वह आरमेनियाई गिरजाघर के पल्ली-पुरोहित तथा धर्मपालक के रूप में मद्रास आया और सन् 1794 में उसने विश्व का पहला आरमेनियाई-पत्र "अज़दरुर" का प्रकाशन आरम्भ किया। उस पत्र के ग्राहक कुल अट्ठाइस थे। वह स्वयं कंपोज करते, स्वयं छापते, टाइप भी खुद ही ढालते और यहां तक कि अपनी जरूरत के लिए कागज भी कपड़े की लुग्दी से तैयार करते थे। रेवरेंड अराथून श्मावानियान को इसीलिए आधुनिक आरमेनियाई साहित्य का पिता कहा जाता है। उनकी मृत्यु सन् 1824 ई. में हुई। वह मृत्यु से पूर्व चालीस वर्ष तक मद्रास आरमेनियाई गिरजाघर के धर्मपालक के रूप में रह चुके थे।

आरमेनिया के विकास और प्रगति में मद्रास की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दो सौ वर्ष पहले की बात है। नवाबों, सुल्तानों और ईस्ट इंडिया कंपनी का वह जमाना था। आरकाट के नवाब को साहूकारों ने कर्ज की वसूली के लिए घेर रखा था और सभी अपने धन के लिए उन्हें दबा रहे थे। बहुत ही दुखद और अपमानजनक क्षण था वह। लेकिन उस भीड़ में वह एक आरमेनियाई व्यापारी-राजकुमार को देखकर अत्यंत आश्चर्य में पड़ गया। "आग़ा शमीर, तुम भी ?" नवाब ने उदास होकर पूछा। "मुसीबत के इन क्षणों में केवल मैं ही आया हूं," यह कहते हुए उसने नवाब से लिखवाया हुआ कर्ज़नामा फाड़ कर फैंक दिया। उसके इस कार्य से सन्नाटा छा गया। नवाब साहब की इज्जत बच

गयी और उन्होंने तत्काल आदेश दिया कि हमारे यहां जो भी आरमेनियाई भूमि, इमारत आदि हैं उस पर कोई कर न वसूल किया जाये। और आज तक आरमेनियाई गिरजाघर कर-मुक्त हैं।

एक अन्य दर्शनीय स्थान है मद्रास के निकट सेंट थामस पर्वत पर। वहां एक आरमेनियाई व्यापारी खोजा पेट्रोस वोस्कान ने एक प्रार्थनालय का निर्माण कराया था जिस पर पहुंचने के लिए पत्थर की एक सौ साठ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। उसने मद्रास का मारमलोंग पुल भी सन् 1726 ई. में तीस हजार पेगोडा खर्च करके बनवाया था और इतना ही नहीं उसने इसकी देखभाल और मरम्मत के लिए वार्षिक धनराशि की भी व्यवस्था कर दी थी।

खोजा पेट्रोस वोस्कान निश्चित ही थोड़ा रोमांटिक भी रहा होगा क्योंकि वह मद्रास में मरा और उसे आरमेनियाई गिरजाघर में दफनाया गया, किन्तु उसका दिल सोने की मंजूषा में बंद करके ईरान में जुल्फे इस्फहान स्थित उसके माता-पिता की कब्र के साथ दफ़नाने के लिए ले जाया गया था।

अब भारत में बहुत कम आरमेनियाई रहते हैं। मद्रास में दो परिवार हैं, बंबई में तीन और सौ-दो सौ कलकत्ता में हैं। हालांकि संख्या में वे ज्यादा नहीं हैं, किन्तु भारत के आरमेनियाई समुदायों के बारे में दो पुस्तकों में काफी कुछ लिखा गया है—"भारत में आरमेनियावासी" लेखक—मेसरोब जे० सेठ और "भारत में आरमेनियावासियों का निवास" लेखिका—एन्नी बासिल।

भारत पर आरमेनियाई समाज की छाप वास्तविक, गहरी और सूक्ष्म है, फिर भी भारतीय विद्वानों पर आरमेनियाइयों की गहरी छाप है। यह विलियम सरोयान ही थे जो लिखते तो अंग्रेजी भाषा में थे, किन्तु वह आरमेनिया की आत्मा का संगीत और उसकी पीड़ाएं अंकित करने में सफल हुए थे। भारतीय भाषाओं में उसका अनुवाद हुए तीस वर्ष हो चुके हैं। मद्रास के अधिकांश भाग में बोली जाने वाली तमिल में तो उसका अनुवाद हो ही चुका था। सरोयान ने एक बार कहा था—"तुम आरमेनियावासी को कहीं भी, किसी भी समय पहचान सकते हो।" "लेकिन कैसे?" किसी ने पूछा। उत्तर था—"आंखों से। आरमेनियावासियों की आंखें उदास और दुखी होती हैं।"

सरोयान 1976 में आरमेनिया गए। तब उन्होंने कहा—"अब जो मुझे सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात दिखाई दे रही है, वह है—आरमेनियावासियों की आंखों में उदासी और दुख की कमी। मैं जहां जाता हूं, स्वस्थ, मजबूत और प्रसन्नचित्त लोगों को देखता हूं। सचमुच कितना अच्छा है।"

मद्रास

अशोक मिश्रन

आमुख

एक अत्यंत प्राचीन भारतीय पांडुलिपि, जो पपीरस घास से बने एक बड़े पृष्ठ जैसी है, येरेवान के मातेनादरान (पांडुलिपियों का संग्रहालय) में कांच के अंदर सुरक्षित रखी है और इसे लाखों दर्शक देख चुके हैं। सन् 1977 की सर्दियों में आरमेनिया के लेखक संघ के भवन में सोवियत-भारतीय लेखकों की एक विचार-गोष्ठी हुई जिसमें आधुनिक साहित्य के महत्वपूर्ण प्रश्नों तथा आपसी हितों के अन्य मसलों पर चर्चा हुई। इस विचार गोष्ठी में भारतीय, आरमेनियाई तथा अनेक सोवियत लेखकों और विद्वानों ने भाग लिया। इस प्रकार एक ओर तो अतीत द्वारा दी गयी एक भारतीय पांडुलिपि है जिसे आरमेनियावासियों ने अन्य साहित्यिक ग्रंथों के साथ मातेनादरान में सुरक्षित रखा है, तो दूसरी ओर भारत और आरमेनिया के आधुनिक लेखकों का यह साहित्यिक सम्मेलन है। ये दोनों घटनाएं एक प्रकार से आरमेनिया और भारत के लोगों की सदियों पुरानी और आज भी विद्यमान मित्रता का प्रतीक हैं।

समृद्ध भारतीय साहित्य और उससे भी अधिक समृद्ध भारतीय लोक साहित्य ने सदा ही आरमेनियाई लेखकों को आकर्षित किया है। आरमेनियाई साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक जैसे होव्हान्स तूमानियान, अवेतिक इसहाकियान, वर्तेनेस पापाजियान, वहान तेरियान और वहान टोटोवेन्स ने भारतीय साहित्य और लोक साहित्य की अनेक रचनाओं के अनुवाद किए हैं। सन् 1925 में अवेतिक इसहाकियान वेनिस में रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिले थे और उन्हें भारतीय लोक साहित्य की कथाएं जैसे 'आनन्द और मृत्यु', 'भगवान बुद्ध पक्षी के रूप में', 'उशीनारा', और 'बुद्ध' आरमेनियाई भाषा में सुनाई थीं।

आरमेनियावासी सदा ही भारतीयों के जीवन और संस्कृति में रुचि लेते रहे हैं। इसका एक प्रमाण तो यही है कि आरमेनियाई भाषा में रवीन्द्रनाथ टैगोर की अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं, जैसे 'माली' (1922), 'गीतांजलि' (1961) आदि। सन् 1961 में भारतीय कहानियों का एक संग्रह 'भारतीय कथाएं' प्रकाशित हुआ था। इसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, यशपाल, कृष्णचंदर, मुल्कराज आनन्द, गोपाल खालदार, ख्वाजा अहमद अब्बास प्रमेन्द मित्र, कमल

दोस्त नेसो', 'शर्त', 'नेसो के नहाने का पत्थर', एस० ज़ोरियान के कथा संग्रह 'दुखी लोग' (1981), 'बाड़ा', (1923), 'युद्ध' (1925) और डी० दमिरचियान की 'अनावश्यक', 'पादरी', 'भूख', 'मुस्कराहट' और कुछ अन्य कहानियों में जीवन के अनेक उल्लेखनीय प्रतिबिंब और आम आदमी का अस्तित्व समाहित है।

आधुनिक आरमेनियाई साहित्य में एच० तूमानियान का वही स्थान है जो भारत में रवीन्द्रनाथ टैगोर का है। तूमानियान ने अपनी कहानियों और कविताओं में आरमेनियाइयों के जीवन के सच्चे और जीवंत चित्र प्रस्तुत किए हैं। दरअसल आम आदमी के जीवन और व्यवहार, उसके संबंध और मनोवैज्ञानिक विशेषताएं ही तूमानियान के मौलिक लेखन का आधार और मूल विषय बनीं। व्यक्ति के स्वप्न तथा आशाएं, दुख और विपत्तियां, अभिरुचियां तथा अपेक्षाएं लेखक ने बड़ी गहराई से आत्मसात करके उन्हें समय की भावना के अनुरूप ढाल कर उच्च कोटि की रचनाओं के रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनकी श्रेष्ठ कविता 'अनुश' ऐसी ही है और ऐसी ही उनकी कुछ उल्लेखनीय कहानियां है, जिनमें से एक इस पुस्तक में दी गयी है।

एस० ज़ोरियान के साहित्यिक पुनर्मूल्यांकन के सिद्धांतों और चरित्रों के चुनाव की झलक उनकी पहली पुस्तक के शीर्षक में ही मिल जाती है। उनके चरित्र निस्संदेह वे उदास और दुखी लोग हैं जिनकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी, परेशानियां और समस्याएं किसी भी रूप में शायद महत्वपूर्ण न प्रतीत हों। उनके लिए शायद जीवन का अर्थ कुछ भी नहीं रहा। वे अत्यंत अल्प एवं मूल्यहीन संबंधों तथा उन चर्चाओं पर जीवित रहते हैं जो उनके अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं। 'मित्र' कहानी ऐसी ही है जिसमें बूढ़े कुंआरे फोगोस की एक मात्र जीवन साथी और संभाषी एक पालतू बिल्ली है। इसी तरह 'सर्दी की एक रात' कहानी में दुखी, उदास और अर्थहीन जीवन का नग्न चित्र प्रस्तुत किया गया है। जिन पति-पत्नियों के लिए जीवन में कुछ भी करने को नहीं है, उनके लिए निरर्थक बातों का सिलसिला और फिजूल की बकवास ही सांत्वना का आधार बनते हैं। अनेक उल्लेखनीय पुस्तकों तथा अन्य कहानियों की कथावस्तु यही है। उनके विशिष्ट दुख वाली अनोखी कथाओं में दुखी और आम आदमी की छवियां अन्योन्याश्रित और निरन्तरता लिए हुए होती हैं।

ऐसी ही छवियों को डी० दमिरचियान की रचनाओं में विचित्र अभिव्यक्ति मिली है। शैली की विविधता और अपनी संपन्न परंपरा के कारण सन् 19:0 के आसपास लिखी गयी इन कहानियों ने साहित्य में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त

किया है। दमिरचियान ने कथा के स्वरूप और घटनाओं तथा कथानक की गंभीरता के माध्यम से अंतरमन के मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक सूक्ष्मताओं को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है। ऐसी ही एक चौंकाने वाली कथा है 'अनावश्यक', जिसमें अपराध करने तथा अपराधबोध की प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और दार्शनिक विचारों के वातावरण में चलती है। उनकी कई वर्षों बाद लिखी गयी 'फूलों की किताब' में उच्च स्तरीय दार्शनिक चिन्तन है और इसमें आरमेनियाई लोगों के अस्तित्व एवं उनकी अध्यवसायी प्रवृत्ति के संबंध में कई विशिष्ट प्रश्न उठाए हैं। उनके कथा वृत्तांत 'पादरी' और 'भूख' में भी चिन्तनशील मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओं के दर्शन होते हैं।

ए० ईसाहृकियान ने भी तुमानियान की तरह साहित्य के लोकप्रिय आधारों को ही स्वीकार किया और आम आदमी के जीवन को साहित्य में अभिव्यक्त करने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके साथ ही वह मनुष्य से जुड़े हुए जीवन और मृत्यु, मनुष्य के होने और उनके अस्तित्व के अर्थ से संबंधित अनेक प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए भी प्रयत्नशील थे। उनके ये प्रश्न उनकी कविता 'अबुल अल मारी' और अन्य अनेक पद्य एवं गद्य रचनाओं तथा चर्चाओं में बड़ी गहराई से व्यक्त हुए हैं। ये रचनाएं सन् 1927 में लिलिट, 'प्राच्यदृष्टि' शीर्षक से प्रकाशित हुई थीं। उनकी कहानी 'सादी का अंतिम वसंत' इसी में से ली गयी है। ईसाहृकियान जीवन के दार्शनिक हैं। उन्होंने जीवन के आंतरिक विषयों जैसे जीवन की अनित्यता, जीवन का प्रेम, वसंत का आगमन और मृत्यु पर विचार व्यक्त किए हैं। उनकी यह विचारधारा सादी के जीवन से बहुत प्रभावित रही है, विशेषकर इन पंक्तियों द्वारा जिन्हें सादी ने 'गुलिस्तां' में लिखा है 'हम अपनी इच्छा से नहीं जन्मे हैं, हम तो इस अचरज लोक में सिर्फ जीते हैं और हम लालसाएं लेकर मर जाते हैं।' इस तरह इसहाकियान को पूर्व के विचारों ने अपनी चित्रोपमता, संवेदनात्मकता, दार्शनिकता और गंभीरता के कारण बहुत प्रभावित किया। इसहाकियान ने अपनी अनेक रचनाओं में से ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजे हैं जिनका संबंध जीवन के अर्थ से है और मानव अस्तित्व तथा मृत्यु के रहस्यों को समझने की कोशिश भी है।

व्ही० टोटोवेन्स और ए० बाकुंट्स, आरमेनियाई गद्य साहित्य के दो प्रतिनिधि लेखक हैं जिनकी साहित्यिक रचनाओं ने सन् 1910 से 1920 के बीच हुए सघन साहित्यिक अन्वेषण युग में बहुत सहयोग दिया है। यह आत्मकथात्मक उपन्यास है और इसे उन्होंने अलग-अलग कहानियों तथा कथाओं के रूप में लिखा है। ये

कहानियां और कथाएं, अधिकांशत: पृथक रूप में पूर्ण होकर भी समग्र रूप में एक होने का भी आभास देती हैं। इस प्रकार सन् 1920 से 1930 के बीच आत्म-कथात्मक उपन्यास शैली से आरमेनियाई साहित्य में बहुत प्रगति हुई। जी० महारा ने नाटकत्रयी 'बचपन' (1929) 'किशोरावस्था' (1930) और 'यौवन के प्रवेश द्वार' (1950) की रचना की, एस० ज़ोरियान ने 'एक जीवन की कहानी' (1935 से 1939) उपन्यास की रचना की, जेड० येसयान ने 'सिलि-हदार के बाग' (1935) लघु उपन्यास लिखा। इन सभी में व्ही० टोटोवेन्स के लघु उपन्यास का विशेष महत्व है। इसे उन्होंने अपने जन्म स्थान, संबंधियों के विविध रूपों, बचपन की घटनाओं तथा स्मृतियों के कारण उभरी अतिशय भाव-प्रवणता एवं गीतात्मकता तथा वेदना एवं संतुलित उत्कंठा के साथ लिखा है।

ए० बाकुंट्स सन् 1920-30 के बीच लिखे गए आरमेनियाई गद्य साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर थे। पेशे से कृषि शास्त्री होने और आरमेनिया के गांवों में काम करने के कारण उनका लेखक, उस समय के आरमेनियाई ग्रामीण जीवन की चारित्रिक विशेषताओं को प्रतिबिंबित करने वाले अनेक अनुपम चित्र, साहित्य में प्रस्तुत करने में सफल हुआ। बाकुंट्स ने अपनी कहानियों के संग्रह प्रकाशित किए। उन्होंने एक उपन्यासिका 'क्योरेस' (1935) भी लिखी थी जिसमें उन्होंने अपने जन्म स्थान गोरिस के जीवन और आचरण का वर्णन किया है। उनके दो उपन्यास 'करमेरकर और खचातूर अबोवियान' अधूरे रह गए जिनमें उनका अन्वेषण महाकाव्य की रचना शैली के समान था। उनकी कहानी 'पहाड़ी लाल फूल' (1926) उनके मौलिक साहित्य की श्रेष्ठ रचना है। यह कहानी जीवन के काव्यात्मक बोध 'चित्रकार का चरित्र' ऐतिहासिक पुरावशेषों का भावशून्य अन्वेषण 'इतिहासकार का चरित्र' जीवन के दुखों से मृत और दबी हुई काव्या-त्मकता 'किसान की पत्नी का चरित्र' और जीवन के कटु सत्य 'किसान का चरित्र' का सूक्ष्म संश्लेषण है। इस प्रकार बाकुंट्स की रचनाओं में उनका सूक्ष्म निरीक्षण ही ऐसी विशेषता है जो गद्य काव्य और गीतात्मकता के रूप में अभिव्यक्त होती है। उन्होंने पहाड़ी गांवों के किसानों की सुन्दरता और उनके दुखों को अभिव्यक्त करने के लिए अत्यंत उत्कृष्ट काव्य शैली का प्रयोग किया है। इसीलिए बाकुंट्स की कहानियां पर्वतीय झरनों जैसी स्वच्छ और पारदर्शी हैं, पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों जैसी सरल और साधारण हैं, लेकिन साथ ही मनोवैज्ञानिक रूप से वे गंभीर और नाटकीय भी हैं, क्योंकि लेखक ने उन सबको उसी तरह देखा है।

वी० अनन्यान भी एक ऐसे लेखक हैं जिन्होंने अपनी कहानियों में मनुष्य

और प्रकृति के संबंधों को चित्रित किया है। उन्होंने शिकार संबंधी अनेक वृत्तांत लिखे हैं और आरमेनिया के वनों तथा वन्य पशुओं पर सामान्य विज्ञान की कई पुस्तकें लिखी हैं। उनके उपन्यास 'होवाज्दज़ोर के गुलाम', 'सेवानी अपिन', 'सेवान झील के तट पर' और अन्य अनेक पुस्तकों का विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उनकी भाषा के आकर्षण का आधार है सरल वाक्य विन्यास और उससे अधिक महत्वपूर्ण है प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंधों के बारे में उनकी 'विश्व दृष्टि' और प्रकृति से प्राप्त अनुभवों के आधार पर मानव का विकास।

साहित्य जगत में गद्य लेखकों की एक नयी पीढ़ी युद्धोत्तरकाल में उभरी और उनमें से कुछ प्रतिनिधि लेखकों—सेरो खानज़ादियान, मक्रतिच सरकासियान, रापेल अरामियान, अविग अवाकियान की रचनाएं इस पुस्तक में प्रस्तुत की गयी हैं।

एस० खानज़ादियान आधुनिक आरमेनियाई गद्य साहित्य के प्रमुख लेखक हैं। उनके आरमेनियाई जीवन से संबद्ध ऐतिहासिक, युद्धकाल तथा युद्धोत्तरकाल के कथानकों पर आधारित उपन्यासों को पाठकों ने सराहा है। इन उपन्यासों के साथ ही उन्होंने अनेक कहानियां भी लिखी हैं, जो आधुनिक जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट प्रमाण हैं। उनकी कहानी 'सफेद मेमना' में गहरा विषाद है। दूर के पर्वतीय गांव में अकेले रहने वाला नवसार्द, लगातार दस वर्ष तक अपने भतीजे की प्रतीक्षा करता रहा है। उसे नवसार्द ने ही पाला-पोसा था। जब उसे खबर मिली कि अशॉक गांव में आया है तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन अशॉक नवसार्द से न तो मिला और न उसके घर आया और वापस चला गया। इस कष्टप्रद व्यवहार से बूढ़ा नवसार्द बुरी तरह आहत हुआ था।

म्क्रिच सरकासियान ने उल्लेखनीय रचनाएं लिखी हैं। अपने उपन्यासों, उपन्यासिकाओं और कहानियों में उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के जीवन और मानव मनोविज्ञान को चित्रित किया है। ये रचनाएं युद्ध से संबद्ध व्यक्तियों की जीवन कथा द्वारा पाठक को मोहित कर लेती हैं। इस पुस्तक में प्रस्तुत कथा उसका एक अंश मात्र है। युद्ध के कारण जीवन की सामान्य गति और संतुलन बिगड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में एम० सरकिसियान की दृष्टि न केवल दुख, मृत्यु और विनाश पर जाती है बल्कि मनुष्य की कोमलता और युद्ध के दुखों को सहने की शक्ति के रूप में प्यार के बंधनों, व्यंग्य और हास्य के क्षणों को भी बड़ी कुशलता से चुनते हैं।

ए० अवाकियान ने भी युद्धोत्तर आरमेनियाई गद्य साहित्य के कथा पक्ष को समृद्ध बनाने में उल्लेखनीय योगदान किया है। ईरान में, जहां बहुत से आर-मेनियाई लोग रहते हैं, अपना बचपन और किशोरावस्था व्यतीत करने के कारण उन्होंने दक्षिण के जीवन के प्रभावों तथा आचरण को ग्रहण कर लिया है। सन् 1946 में सोवियत आरमेनिया आने के बाद, उन्होंने अपनी साहित्यिक गतिविधियां तेज कर दीं। दक्षिण के तपते सूर्य के रंगों में डूबी हुई और मानव मनोविज्ञान के नये एवं रोचक तथ्यों को उजागर करने वाली उनकी कहानियां एक के बाद एक प्रकाशित हुईं। उनकी हाल की एक पुस्तक का विचित्र शीर्षक है 'दक्षिणी बुखार' (1971) जिसमें से उनकी कहानी 'उत्कंठा' ली गयी है। इसमें एक सामान्य शक्ति है जो सन् 1915 में आरमेनिया वासियों पर आयी मुसीबत के कारण पूरे विश्व में बिखरे हुए आरमेनियाइयों की संतानों का विरह अभिव्यक्त करती है। ये विरह अपनी उस जन्म भूमि के लिए है जिसे उन्होंने खो दिया था और शत्रु के हाथों में छोड़ आए थे। ए० अवाकियान ने ईरान के धूल भरे और मामूली से गांव में रहने वाले एक मात्र आरमेनियाई ग्रिगोर मनोकियान का चरित्र निर्मित करके इस कथानक को बड़ी कुशलता से नया रूप दिया है।

सन् 1960 में लेखकों की एक नयी पीढ़ी ने साहित्य जगत में प्रवेश किया और वे आज आधुनिक कलात्मक जीवन को संवारने का महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। इस पीढ़ी के लेखक हैं बरदेस पेट्रोसियान, हैंट मटेवोसियान, ज़ोरेर खला-पियान, मोशेग गलशोयान, पर्च जीतुन्त्सियान, अगासी ऐवाजियान, करेन सिमो-नियान, व्होवान्स मेलकोनियान और रूबेन होव्सेपियान। इनमें से कुछ की कहानियां इस पुस्तक में प्रस्तुत की गयी हैं। इन सभी की रचनाएं आज के आर-मेनियाई गद्य के नये युग का निर्माण कर रही हैं। आधुनिकता के लिए आवश्यक तत्वों का बोध और आज के मनुष्य के नैतिक और मनोवैज्ञानिक चरित्र का निर्माण ये दोनों ही तत्व इन लेखकों को, उनकी विषयगत एवं शैलीगत विविध-ताओं के बावजूद एक सूत्र में बांधते हैं।

वी० पेट्रोसियान ने साहित्य में उन चरित्रों का समावेश किया है जो जीवन की नयी और वर्तमान परिस्थितियों के प्रति सजग हैं और उन स्थितियों में अपनी विशिष्टताओं को उद्घाटित करते हैं। इस दृष्टि से, उनका मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास 'जिए और अनजिए वर्ष' और उनका निबंध 'आरमेनियाई रेखाचित्र' विशेष उल्लेखनीय हैं जिनमें लेखक ने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के बीच

आज के आरमेनिया और आरमेनियाई मानव के अस्तित्व का आधार खोजने का प्रयत्न किया है।

जीवन का अतीत, जिसमें बचपन की यादें हैं, संबंधियों और मित्रों की धुंधली होती यादें, पृथ्वी में समाए हुए अवशेष और अतीत के जीवन और वैभव का समर्थन करने वाली घटनाएं और इतिहास आज सिर्फ बीते हुए दिनों की बातें हैं। लेकिन उन बातों को याद करना हर मनुष्य को अच्छा लगता है। ऐसी ही याद की गूंज है वी० पेट्रोसियान की कथा माला 'बचपन के स्टेशनों से लिखे पत्र' में। इसमें एक कथा 'उसकी मां का घर' इस पुस्तक में प्रस्तुत है। अगर यों कहा जाय, तो शायद गलत न होगा कि इस कथा माला का नायक लेखक का स्वयं का बचपन है। वह एक ऐसा बचपन है जो प्रौढ़ जीवन के मनोविज्ञान के सहारे सार्थक बनता है और अतीत के चित्र बचपन के ही केन्द्र बिंदुओं से उभारता है। वह अतीत की वस्तुएं, घटनाएं, लोग, प्यार, सपने, सुगंध और गीत कितनी गहन वेदना के साथ सबको याद करता है। इस मनोवैज्ञानिक स्थिति के मूल तत्व हैं संवेदनशीलता और गीतात्मकता, उत्कंठा और संस्मरण, दया और नम्रता, दुख और जीवन की अनित्यता के प्रति चेतना साथ ही अतीत की स्मृतियों से पूरित अश्रु और मौन। 'उसकी मां का घर' कहानी उपर्युक्त कथन का श्रेष्ठ प्रमाण है। इस कहानी में जीवन की परिस्थितियों के कारण रिश्तेदारों तथा पैतृक घर से क्रमिक विरक्ति हो जाती है और रिश्तेदारों के प्रति स्नेह भाव को मन में रख पाने की समस्या का चित्रण है।

एच० मटेवोसियान ने युद्ध के समय से लेकर आज तक के आरमेनियाई ग्रामीण जीवन के चित्रों को बड़ी वास्तविकता से प्रस्तुत किया है। उनके लिए अपनी नैतिक और सामाजिक स्थितियों तथा बाहर की विशाल दुनिया के साथ विविध संबंधों सहित गांव एक बुनियादी प्रतिबद्धता बन गया है ताकि वह उसके उन महत्वपूर्ण प्रश्नों को उजागर कर सके जो आज के जीवन से जुड़े हुए हैं। एच० मटेवोसियान की सभी रचनाएं एक दूसरे से संबद्ध प्रतीत होती हैं। वे विभिन्न उपन्यासों के अलग-अलग अध्याय जैसी लगती हैं। उनमें लेखक का रचनात्मक चिन्तन और चित्रित परिवेश अनिवार्य स्थितियां तथा चरित्र स्थायी और अपरिवर्तनीय होते हैं। एच० मटेवोसियान की मौलिक रचनाओं में तीन तरह की विचारधारा मिलती है। उन्होंने प्रकृति के प्रति निष्ठावान होने का सिद्धांत अपनाया है और उनकी कथा 'भैंस' तथा उपन्यासिका 'हम और हमारे पर्वत' इसका प्रमाण है। उनकी दूसरी विचारधारा है जीवन का दुख यानी

कठिन और आत्मा का नष्ट करने वाला मार्ग जिसे हम भोगा हुआ जीवन कहते हैं। उनके रचनात्मक साहित्य का यह पहलू उनकी कथा माला 'बोझीले घोड़े, में बड़ी गंभीरता से प्रतिबिंबित हुआ है। इसके अलावा इसी विचारधारा से प्रभावित अन्य रचनाएं हैं—उपन्यासिका 'एक मां अपना बेटा ब्याहने जाती है' और कहानियां 'आरंभ' तथा 'वृक्ष'। मटेवोसिनान की रचनाओं का तीसरा वैचारिक पहलू उनकी उपन्यासिका 'लटका दो' में व्यक्त हुआ है जिसमें उन्होंने एक ऐसे नायक का निर्माण किया है जिसके साधन तो गांव में हैं किन्तु वह एक बड़े शहर का सुविधा युक्त जीवन बिता रहा है, और वह उन साधनों तथा आधुनिक युग के बीच संबंध जोड़कर ही अपनी चेतना तथा विचार श्रृंखला को पूर्ण कर पाता है। यह उपन्यासिका आत्म जागृति और योजनाबद्ध कार्य की चेतना का संदेश देती है।

एम० गलशोयान ने बीसवीं शताब्दी के विशिष्ट आरमेनियाई जीवन के चरित्रों के चित्र प्रस्तुत किए हैं। ये ऐसे चरित्रों के चित्र हैं जिन्होंने विध्वंस और बरबादी, जन्मभूमि का विनाश और वहां से अपना निष्कासन देखा है और जिन्होंने नयी बस्तियों में नये जीवन की नींव रखी है। आरमेनिया का इतिहास, विपत्तियों, बरबादी और निष्कासन का इतिहास है और यही उनकी कथावस्तु बने हैं और अपनी जन्मभूमि से दूर घर की याद और विरह में तड़पते हुए लोग उनके नायक हैं जिनकी नियति में आरमेनिया के इतिहास का अभिनव अतीत और वर्तमान प्रतिबिंबित हैं। ये सभी नायक उनकी उपन्यासिकाओं 'ज़ोरी मिरा' (घाटी का मिरो) और 'पथ के राही', उपन्यास 'परिवार' तथा कथाओं 'पुकार' और 'चाचा होरास' में बड़ी सफलता से अवतरित हुए हैं।

ए० ऐवाज़ियान ने आधुनिक आरमेनियाई गद्य में नायकों की अनोखी श्रृंखला का निर्माण किया है। उनकी पुस्तकों 'परिवार का पिता', 'शीर्ष-संख्या' और 'सिगनोर मारटिरोस की साहस यात्राएं' में संकलित कहानियां एक ऐसे लेखक का परिचय प्रस्तुत करती हैं जिसने सौंदर्यबोध के निश्चित सिद्धांतों के अनुरूप जीवन को प्रस्तुत किया है। उनकी कथा 'टिफलिस' उनकी पुस्तक 'शीर्ष संख्या' से ली गयी है। अपने स्वरूप और चित्रोपमता के कारण पुराने टिफलिस नगर, जहां कभी बहुत से आरमेनियाई रहा करते थे और आज भी रहते हैं और जहां से लेखक स्वयं भी आरमेनिया आया है, ए० ऐवाज़ियान की रचनाओं में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सका है। टिफलिस का जीवन और उसकी चित्रोपमता उनकी कहानियों 'टिफलिस साइन बोर्ड्स', 'पवित्र सत्य' और 'वानो और पुलिस मैन' में भी प्रतिबिंबित हुए हैं।

पी० जीतुन्तियान और के० सिमोनियान में कुछ ऐसे मौलिक कलात्मक विचार हैं जो प्रतिबंधित और विलक्षण तत्वों का उपयोग करने में सक्षम है। इन तत्वों के संचय तथा परिस्थितियों के विविध पहलुओं से उभरने वाले विशिष्ट बिम्ब प्रतीकों से युक्त हैं। पी० जीतुन्तियान की उपन्यासिकाएं 'क्लाड राबर्ट इजेरजी' और 'सबसे दुखी व्यक्ति' में वह तथ्यों पर आधारित इस युग की दो महान् विपत्तियों के साहित्यिक चित्र प्रस्तुत करते हुए बीसवीं सदी के दो विचित्र सत्यों में जीते हैं। इनमें एक है इस सदी का सबसे बड़ा अपराध हिरोशिमा मे अणुबम का विस्फोट, बीस लाख लोगों की मृत्यु, बीमारियों का फैलना, अपराध बोध और इसकी भयानक अभिव्यक्ति। दूसरा है राबर्ट स्ट्राड का दुख, उनका आधी सदी का कारावास, उनका खोया हुआ जीवन, उनकी क्षति को पूरा करने का प्रयत्न और ईश्वर के प्रति आस्थावान होना।

के० सिमोनियान एक तरह से वस्तुओं और पदार्थों के विचित्र चित्र प्रस्तुत करने में रुचि लेते हैं लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि वह उन नैतिक और मनोवैज्ञानिक मूल्यों से दूर है जो मानव जीवन को संवारते हैं और उसके सामाजिक अस्तित्व को निर्मित करते हैं। इस संदर्भ में उनका उपन्यास 'फार्मेसिस्ट नरसेस मजहान' और अनेक उपन्यासिकाएं तथा आख्यात उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक युग का विशेषकर पूरी बीसवीं शताब्दी का आरमेनियाई गद्य साहित्य एक संपन्न/विविधतापूर्ण कथा यात्रा का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय पाठकों के लिए प्रस्तुत यह पुस्तक/बीसवीं सदी के आरमेनियाई गद्य साहित्य की विशेषताओं को उद्घाटित करने वाली बुनियादी शक्तियों, प्रकृतियों और अभिरुचियों का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करेगी। यह पहला परिचय निश्चय ही भावी निकट संबंधों और परस्पर सम्मान की भावना के लिए सेतु बनेगा। इस संकलन में प्रस्तुत और इसमें छूटे हुए लेखकों द्वारा लिखा गया पुराना, संपन्न और रुचिकर साहित्य इसका आश्वासन भी है। आरमेनियाइयों और भारतीयों के बीच निर्मित प्राचीन मित्रता का यह सुदृढ़ मार्ग पारस्परिक संबंधों की मूलभूत पूर्वापेक्षाओं का भी निर्माण करता है।

डेविड गसपारियान

होवान्स तूमानियान (1869-1923)

तूमानियान का जन्म आरमेनिया के दशेश इलाके के एक गांव में, पादरी परिवार में हुआ था। उन्होंने आरम्भिक शिक्षा त्बिलिसी के गुरुकुल में प्राप्त की थी, किंतु बाद में पढ़ाई छोड़ कर रोजी-रोटी कमाने में लग गए।

1890 में तूमानियान की पद्य एवं गद्य रचनाओं का पहला संकलन मास्को में प्रकाशित हुआ था। तूमानियान का रचनात्मक साहित्य, आरमेनियावासियों की गौरव निधि है। आपकी कविताएं 'अनुष', 'अहूतमार', 'परवाना', 'त्मकाबर्दा की विजय', 'मारो', 'डेविड सास्नुस्की' बहुत ही लोकप्रिय हैं और उन्हें आरमेनिया-वासी ही नहीं बल्कि सोवियत लोग भी पसंद करते हैं।

तूमानियान ने बच्चों के लिए भी लिखा था। ये रचनाएं अपनी सहजता भी प्रवाहमयी भाषा के लिए प्रसिद्ध हैं। आपकी रचनात्मक कृतियों का अनुवाद और प्रचुर मात्रा में हुआ है।

नेसो : मेरा दोस्त

हम गांव के बच्चे साथ-साथ रह कर हमेशा बहुत खुश रहते थे।

गांव में न तो हमारे लिए स्कूल था और न पाठ याद करने का झंझट था। हम चिड़ियों की तरह मुक्त थे। सारा दिन खेलते-कूदते रहते। सच, खेल के वे क्षण कितने सुखद थे। हम आपस में कितने अच्छे मित्र थे और एक दूसरे को कितना प्यार करते थे। भूख लगती तो घर की ओर भागते। रोटी का एक टुकड़ा और मर्तबान से थोड़ा पनीर लेकर हम फिर खेल के मैदान की ओर दौड़ जाते। फिर कभी शाम को हम सब बैठकर बातें करते और कहानियां सुनाते।

हमारे एक साथी का नाम था—नेसो। उसे इतनी ज्यादा कहानियां और परी कथाएं याद थीं कि बस कभी खत्म ही न होतीं।

गर्मी की चांदनी रातों में हम अपने बाड़े में पड़े लट्ठों के ढेर पर गोला

बनाकर बैठ जाते और नेसो की तरफ मंत्रमुग्ध से टकटकी लगाए देखते रहते। हमसे प्रेरणा पाकर वह भी खुश हो जाता। वह हमें गुरी पेरी, स्वर्ग के पक्षियों और अंधकार तथा प्रकाश के साम्राज्यों की कहानियाँ सुनाता। फिर हम उससे फरमाइश भी करते—'नेसो कोई और कहानी सुनाओ न। अच्छा, अंधे राजा वाली कहानी, तोते की कहानी या बिना दाढ़ी वाले गंजे आदमी की भी कहानी सुना दो'।

(2)

एक दिन हमारे गांव में एक स्कूल खुल गया। गांव के बीस या तीस लोगों ने अपने बच्चों को उसमें पढ़ने भेजा। मेरे माता-पिता ने भी मुझे स्कूल भेजा। एक वर्ष की फीस केवल तीन रूबल थी। लेकिन जिन बच्चों के माता-पिता उसे भी दे पाने की स्थिति में न थे, उनके बच्चे स्कूल जाने से रह गए। इस कारण मेरे बहुत से दोस्त, जिन में नेसो भी था, स्कूल में पढ़ने नहीं गए।

इस तरह हम दोस्तों को जीवन में पहली बार एक दूसरे से अलग किया जा रहा था। अलगाव का यह काम किया था—हमारे स्कूल और हमारे शिक्षक ने। और इस तरह हमें पहली बार यह बताया गया कि हम कुछ लोग धनी हैं और दूसरे लोग गरीब हैं। मेरे कानों में आज भी नेसो का बिलख-बिलख कर रोना और धूल में लोट-लोट कर चिल्लाना गूंज उठता है—'मैं भी स्कूल जाना चाहता हूं, मैं भी स्कूल जाना चाहता हूं।' और फिर उसके पिता की मजबूर आवाज मेरे कानों में गूंजती है—'भगवान के लिए क्या तुम इतना भी नहीं समझ सकते कि मेरे पास पैसा नहीं है। अगर मेरे पास तीन रूबल होते तो मैं अनाज न खरीद लाता जिससे घर के लोग भूखे तो न रहते। मेरे पास बिल्कुल पैसा नहीं है'।

नेसो और अन्य वे दोस्त जो स्कूल नहीं जाते थे, हमें देखने के लिए बहुत उत्सुक रहते थे। वे स्कूल के फाटक के पास आकर खड़े हो जाते और हमें देखने के लिए झांकने लगते। लेकिन शिक्षक उन्हें अन्दर झांकने भी न देता। वह उन्हें खदेड़ कर भगा देता। यहां तक कि वह हमें उनके साथ आधी छुट्टी में खेलने भी न देता। उसका कहना था कि स्कूल के बच्चों के साथ, बाहर के बच्चों को खेलने की क्या जरूरत है। मेरे दोस्त निराश होकर चुपचाप चले जाते। स्कूल से दूर कहीं बैठ जाते और छुट्टी होने पर हमारे लौटकर आने की प्रतीक्षा करने लगते। फिर हम सब मिलकर बातें करते हुए घर लौट आते।

धीरे-धीरे एक साल में मैंने स्कूल के अन्दर नये दोस्त बना लिए। फिर साल

बीतते-बीतते नेसो और स्कूल न जाने वाले मेरे बाकी दोस्त भी दूर होते गए और उन्होंने स्कूल के बाहर मेरी प्रतीक्षा करनी छोड़दी।

(3)

मैं दो वर्ष तक अपने गांव के स्कूल में पढ़ता रहा। फिर मेरे पिता मुझे पास के कस्बे में ले गए और वहां के माध्यमिक स्कूल में मेरा नाम लिखवा दिया। यहां सब कुछ मेरे लिए नया था। कस्बे के सभी घरों के छप्पर लाल रंग के थे। लोग बहुत अच्छे और साफ कपड़े पहनते थे। स्कूल भी काफी बड़ा और सुन्दर था। वहां मेरे गांव के स्कूल की तरह एक ही शिक्षक नहीं बल्कि कई शिक्षक थे, जिनमें एक महिला भी थी। यह मेरे लिए एक सुखद आश्चर्य था।

उस नये परिवेश और स्कूल के अनुरूप मेरे कपड़ों और पहनावे में भी परिवर्तन आया। अब मैं कस्बे के स्कूल की सुन्दर और स्वच्छ पोशाक पहनता था। कुछ दिनों बाद छुट्टियां हुईं। मैं एकदम बदले हुए रूप में अपने गांव लौटा। जब नेसो और मेरे अन्य मित्रों को मालूम हुआ कि मैं घर वापस आया हूं तो सुबह-सुबह वे सब से पहले मुझे देखने के लिए आ गए। वे घर के द्वार पर बड़ी उत्सुकता से मेरी एक झलक पाने के लिए बार-बार इधर-उधर झांक रहे थे। मैं उनसे मिलने बाहर निकला। अब यह तो मुझे याद नहीं रहा कि उस समय हमारी क्या बातें हुईं। लेकिन इतना जरूर याद है कि हमारी पुरानी दोस्ती मिट चुकी थी। उन्होंने सबसे पहले मेरी पोशाक को बड़े ध्यान से देखा। नेसो ने मेरी छोटे कालर वाली कमीज को तिरछी नजरों से देखकर कहा—"ऐसा लगता है जैसे उन्होंने तुम्हारी दुम के पंख नोच डाले हों।' इस पर सब लोग हंस पड़े। मुझे बुरा जरूर लगा, पर मैंने कुछ कहा नहीं। फिर नेसो ने मेरी जैकिट का कपड़ा हाथ से छू कर देखा और बाद में अन्य साथियों ने भी यही किया। उस कपड़े की कोमलता को देखकर वे सब चकित थे। दरअसल उस समय ही पहली बार मैंने उनके कपड़ों की ओर ध्यान दिया कि वे कितने गंदे और जगह-जगह से फटे हुए थे। और सच कहूं तो उस समय मुझे पूरा गांव ही गरीबी का मारा हुआ और एक दम गंदा महसूस हुआ।

(4)

दो साल बाद मेरे पिता मुझे एक बड़े शहर में ले गए और पहले से भी अधिक बड़े स्कूल में दाखिल करा दिया। उस बड़े स्कूल से जब मैं गांव लौटा तो मेरे

बचपन के साथी भी अब बड़े हो गए थे। वे मुझ से मिलने आए। अन्य किसानों की तरह उन्होंने भी मुझे सलाम किया और एक ओर तमीज के साथ खड़े हो गए। उस समय हो रही बातचीत के दौरान जब किसी ने मुझ से पूछा कि क्या मुझे अपने गांव के स्कूल के दिनों की याद है ? तो नेसो एकदम बोल उठा था—

"क्या तुम्हें याद है जब हम रात को तुम्हारे बाड़े में लट्ठों के ढेर पर बैठकर कहानियां सुनाते थे।"

"मैं वह सब कैसे भूल सकता हूं। वे तो मेरी स्मृति के सुखद क्षण हैं।"

मेरा विचार है कि इस उत्तर से नेसो खुश हुआ था, लेकिन फिर भी वह मुझ से दूर ही रहा। एक अजनबी की तरह।

कुछ दिनों बाद मेरे शहर लौटने का समय आ गया। मेरे पिता ने मुझे भेजने के लिए नेसो के पिता से एक घोड़ा किराये पर लिया। नेसो को उस घोड़े के साथ जाना था जब हम चले तो में घोड़े की पीठ पर बैठा था। नेसो अपनी गुदड़ी और पैरों में पुरानी सेंडिल पहने मेरे साथ चल रहा था। उसे देखकर मेरा मन बहुत दुखी हुआ। अभी हम कुछ दूर ही आए थे कि मैंने कहा—'मुझे तो पैदल चलना ही अच्छा लगता है।' और मैं घोड़े से उतर कर पैदल चलने लगा। हम इसी तरह आगे बढ़ते रहे। कभी साथ-साथ पदल चलते और कभी घोड़े पर चढ़ कर। नेसो खुश नजर आ रहा था। लेकिन मैंने यह अनुभव किया कि वह मेरी निष्पक्षता और मित्रता की भावना को बिलकुल नहीं समझ रहा था। वह तो मुझे पैदल चलते देखकर बेवकूफ समझ रहा था। मुझे इससे दुख हुआ, किंतु अभी तो इससे भी बुरी बात होने वाली थी।

रास्ते में हम कुछ खाने-चबाने के लिए रुके। हमने एक तरबूज लिया और उसे काटने के लिए मैं ने अपनी जेब से चाकू निकाल कर नेसो को दे दिया। लेकिन जब हम खा-पी कर फिर से चलने को हुए तो मैंने देखा कि वह चाकू वहां न था। नेसो से पूछा तो उसने कसम खा कर कह दिया कि वह उसे लौटा चुका है और मैंने अपनी जेब में रख लिया था। हालांकि मैं इस सत्य को जानता था कि उसने चाकू नहीं लौटाया, फिर भी मैंने अपनी जेबों को टटोल लिया। खैर, हम आगे की यात्रा पर चल पड़े। यह स्पष्ट था कि उसने चाकू चुरा लिया था और बाद में लोगों ने उसे उसके पास देखा भी। किंतु हम जैसे-जैसे अपनी यात्रा पर आगे बढ़ रहे थे, इस घटना से मेरा मन दुखने लगा था। मुझे चाकू खोने का दुख न था बल्कि दुख था उससे भी अधिक हुई उस हानि के लिए जिस के प्रति मेरा साथी बेखबर था।

जब हम अपने गंतव्य पर पहुंच गए तो नेसो वापस जाने लगा। मैंने उसे घोड़े का किराया देने के साथ-साथ जैकेट के लिए कपड़ा भी खरीदकर दिया। इस पर भी जब वह बोला—'बख्शीश नहीं दोगे' तो मैं बड़े पशोपेश में पड़ गया। मैंने बख्शीश दे दी। लेकिन इस घटना के बाद से, चांदनी रात में लट्ठों के ढेर पर बैठकर नेसो से कहानियां सुनने वाले बचपन के दिनों की याद जब भी करता हूं तो मेरा मन पीड़ा और दुख से भर जाता है।

(5)

'नेसो गरीब है...नेसो नादान है...नेसो गांव की निराशाभरी गरीबी की जिन्दगी से पिस चुका है अगर उसे शिक्षा मिली होती तो वह मुझ से कहीं अधिक अच्छा इन्सान बनकर निकलता।' यह सब जब नेसो के बारे में आज सोचता हूं तो मैं अपने आपसे ऐसी ही बातें कहता हूं और उसे क्षमा करने की कोशिश करता हूं ताकि अपनी नजरों में उसे ऊंचा उठा करूं वैसे ही प्यार करुं जैसा बचपन में किया था। मैं चाहता हूं मेरे सामने नेसो वैसा ही रहे जैसा वह खामोश, तारों भरी चांदनी रातों में होता था। किंतु ऐसा हो नहीं सकता। मैं उसे उस रूप में देख नहीं सकता।

अपनी शिक्षा पूरी कर अपने लिए दुनिया में जगह बनाने के बाद मैं एक बार अपने गांव वापस लौटा। उस दिन गांव का चौराहा भीड़ से भरा हुआ था, और बहुत शोर हो रहा था। चौराहे के बीच एक खंभे से नेसो बंधा हुआ था और उसका सिर शर्म से झुका हुआ था।

मुझे बताया गया, उसे चोरी के अपराध के लिए सजा दी जा रही है। मैंने उसकी ओर से पैरवी की और उसे छुड़ा लिया। लेकिन मेरे मस्तिष्क में वह दृश्य सदा के लिए अंकित हो गया है—नेसो, खंभे से बंधा है, उसका सिर झुका हुआ है और चारों तरफ शोर हो रहा है।

हमारे गांव में यों तो चोरी करना और कोड़े की मार पड़ना एक आम बात थी, लेकिन मैं इस घटना को बिल्कुल नहीं भूल सकता, क्योंकि छोटे से नेसो को चांदनी रातों में लट्ठों पर बैठ कर कहानियां सुनाते हुए नहीं भुला सकता। मेरे बचपन का मित्र नेसो। कितना पवित्र और सुन्दर है...नेसो।

अवेतिक ईसाहकियान (1875-1957)

ईसाहकियान का जन्म लेनिनकान नगर के पास स्थित काजरपाट गांव में हुआ था। आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा आरमेनियाई पादरी स्कूल, अलेक्जेंड्रोपोल में पाई। इसके बाद इचमियादज़िन में गुरुकुल की शिक्षा पूरी करके ईसाहकियान अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करने के लिए विदेश गए। वहां लिपज़िग विश्व-विद्यालय में प्रवेश लिया और साहित्य, इतिहास, दर्शनशास्त्र, नृतत्वशास्त्र और मानव-जाति विज्ञान पर व्याख्यान सुने। इसके साथ ही इन्होंने विश्व साहित्य का भी अध्ययन किया।

इस दौरान ईसाहकियान ने ग्रीस और इटली की भी यात्रा की और 1895 में अपनी मातृभूमि लौट आए। 1911 में वह फिर से विदेश यात्रा के लिए निकले और इस बार 1926 में अपनी मातृभूमि सोवियत आरमेनिया लौट आए।

ईसाहकियान की कविताओं का पहला संग्रह गीत और घाव 1895 में प्रकाशित हुआ था। उनके गीत, बैले, कविताएं, कहानियां, परी कथाएं और विशेष-कर उनकी कविता—अबुल-अल-मारी ने उन्हें विश्वख्याति दिलायी।

सादी का अंतिम वसंत

वसंत आ गया था।

यह उन वसंतों में से एक था जो धरती का रूप बदल देते हैं। खुशियों और ग़म के शायर सादी ने ऐसे सौ वसंत देखे थे। उस सुबह सादी जल्दी ही उठ गए थे। वह रोन्नाबाद नदी के किनारे फूलों से भरी वाटिका की ओर गए, जहां वह एक बार फिर बुलबुल का संगीत सुन सकें और वसंत का चमत्कार फिर से देख सकें। उन्होंने शीराज के खेत की ओर देखा। वह प्रकृति की अनुपम भेंट गुलाब के फूलों से सजा संवरा था और सुबह की गहरी नींद में डूबा हुआ था। उसे चारों ओर से सफेद खुशबूदार कुहरे की चादर ने ढक रखा था।

फूलों से लदे चमेली के पेड़ के नीचे हरी घास के सुन्दर कालीन पर सादी बैठ गए। उन्होंने हरी पत्तियों और लाल रंग की पंखुड़ियों वाला गुलाब का फूल अपने थरथराते हाथों में रख लिया। उसे कुछ देर तक बड़ी हसरत से देखते रहे, फिर बहुत आहिस्ता-आहिस्ता उससे कुछ कह उठे—'जैसे कोई नौजवान शहज़ादी, अपने महबूब के आग़ोश में मुस्कराती है। ठीक वैसे ही गुलाब की ये कलियां सुबह के महकते समीर को अपने ओठों का स्पर्श देती हैं।'

हालांकि सादी अब बहुत बूढ़े हो चुके थे लेकिन उनकी आत्मा अभी भी उनकी अधखुली आंखों और कानों से, इस दुनिया की आश्चर्यजनक घटनाएं और दृश्यों तथा अनजानी दूरियों के गीत और खामोशियां—देख-सुन सकती थीं। कविता की सम्मोहक आत्मा-जमरुख्त चिड़ियां, जिसका घोंसला सितारों के देश में कोहेफाक की चोटी पर बना है, अभी भी उनसे बातें करती थीं।

चमकती आंखों और भूरे पंखों वाली बुलबुलें वहां चहकने लगी थीं। वे प्यार की आग से जलती हुई अपनी मोहक रुबाइयां गा रही थीं और उनके यही गीत सादी के हृदय में गूंज रहे थे।

चुंबन करते हुए समीर की निर्मल सांसों ने, दूर के आशिक गुलाबों की शुभ कामनाएं लाकर दीं और सादी के दिल ने मोहब्बत के इस इज़हार को समझ लिया। उन्हें याद आ गए वे शब्द जो उन्होंने बहुत बरस पहले कहे थे—'एक प्यार भरा दिल ही प्रकृति के शब्दों के अर्थ सदैव समझ सकता है। यह दुनिया प्यार और मिलन की भावना से भरी हुई है। इसकी आशिकाना खुशबू शाश्वत है।'

बुलबुल के गीत और लाल गुलाबों की सुंदरता से उन्मत्त सादी ने उस सम्मोहक खुशबू में सांस ली और उसकी मादकता में डूबकर आंखें बंद कर लीं। फिर उन्हें लगा जैसे सपने में इस दुनिया का प्रतिबिंब उनके हृदय पर उभर आया हो।

उन्होंने कमल के पवित्र फूलों से सजे भारत के तालाब देखे। उन्होंने बुद्धिमान हाथियों को जंगल की झाड़ियों में विचारमग्न देखा और दिल्ली के सुनहरे महलों में सुन्दर शहज़ादियों को अपने भूरे-काले बालों में किरमिजी फूलों को लगाए देखा।

उन्होंने तूरान के तूफानी मैदान देखे और देखे भयानक दैत्य जो जलती हुई तलवारें लिए तूफान के पंखों के सहारे आकाश में उड़ रहे थे।

उन्होंने सूरज की गर्मी से जलता हुआ रेगिस्तान भी देखा, साथ ही अपने

ऊपर मंडराने वाली चीलों की तेज़ नजरों से बचकर तेज़ी से भागने वाले चिकोरों का पीछा करते हुए बद्दुओं को देखा।

उन्होंने प्राचीन मिस्र के मशहूर आश्चर्य भी देखे। साथ ही विशाल समुद्र के नीले रत्न और दमिश्क की मखमल जैसी कोमल शहज़ादियों के झिलमिलाते बदन भी देखे। उनकी लचीली प्यार भरी बाहों ने, युवा सादी के गले में हार बनकर उन्हें आलिंगन में भर लिया।

सादी ने ठंडी सांस ली और अपनी आंखें खोल दीं। आह! मेरे सौ साल एक सुखद सपने की तरह गुजर गए, जैसे सब कुछ किसी रात की झलक रही हो। ये तमाम साल एक लमहे की तरह गुजर गए, क्योंकि परी कथाएं, बुलबुलें, गुलाब के फूल और गुलाब की बहनें, स्वर्गिक सुख से भरी हुई शहज़ादियां ये सब जो मेरे साथ थे।'

फिर सूरज के उगते ही उस स्वर्गिक वाटिका के फूल, पत्तियां, पत्थर और चट्टानें अनोखी चमक से भर गए, क्योंकि रात ने उन सब पर ओस के हीरे जो बिखरा दिए थे।

उस समय का नीला आकाश, सुनहली सुबह में चिड़ियों का चहकना—यह सब सादी ने बहुत गहराई से देखा। वे सब उनके लिए आश्चर्यजनक और अनोखे थे। 'सचमुच, यह दुनिया एक चमत्कार है, एक अनोखी परीकथा है। यह शाश्वत रूप से मोहक और सुन्दर है।'

'मैं हर रोज इस दुनिया को देखता हूं और मैं हर रोज इसकी मोहक नवीनता को देखकर हतप्रभ रह जाता हूं, लगता है जैसे यह सब कुछ पहली बार देख रहा हूं। यह दुनिया कितनी जानी पहचानी है, फिर भी कितनी विस्मयकारी है, पुरानी होकर भी कितनी नयी है। इसकी नवीनता कितनी शाश्वत है। इसका सौन्दर्य कितना अकथनीय है, यह स्वयं ही अपनी उपमा है।'

सादी ने एक बार फिर दुनिया को निहारा, प्रकृति के विविध रूपों और तिलस्मी खेल को निहारा, और तब उन्होंने दो फाख्ता देखे जो अपने मूंगिया पैरों से हरी घास पर चलते हुए आपस में चोंच मिला रहे थे। उन्हें देखकर एक बार फिर सादी बोल उठे—

'यह दुनिया कितनी मोहक है। जैसे यह किसी अदृश्य जादूगरनी की तिलस्मी घड़ी के आकर्षण से बंधकर सुंदर परीकथा बन गयी हो।

'यह दुनिया बड़ी तेजी से भागती है, गिरती है और फिर बदल जाती है, लेकिन वह क्या है जो इस सम्मोहक दुनिया को फिर से जन्म देता है, उसे फिर

से बनाता है और हमारे सामने एक चमत्कारी परीकथा के रूप में प्रस्तुत कर देता है ? वह कौन है जो चिकोरा की प्यार भरी उमंग को निराशा में बदल देता है, उसे नुकीली चट्टानों पर चढ़ाता है और फिर पत्थर पर अपना सिर पटक-पटक कर अपने सींग तोड़ डालने के लिए मजबूर कर देता है।

'वह क्या है जो गुलाब को मणि की पत्तों को खोल कर, ऐसी मोहक सुगंध बिखराने के लिए विवश कर देता है ?

'वह क्या है जो मनुष्य को अज्ञात से ज्ञात की ओर ले जाता है और उसे हाड़-मांस की देह प्राप्त कर सोचने, पीड़ाओं को अनुभव करने और अपनी भुलसती हुई आकांक्षाओं की आंच महसूस कर, कभी न मरने की चाहना लेकर जीने को मजबूर करता है ?

'वह प्यार है, प्यार! तुम जो अजेय शक्ति हो, तुम ऐसे प्यारे कातिल हो जिसे मैं बहुत दिनों से जानता हूं और फिर भी मैं कभी तुम्हारी गहराई और तुम्हारे रहस्य को पूरी तरह नहीं समझ सका ।'

सादी की अंतरात्मा ने उन्हें बता दिया था कि यह उनका अन्तिम वसंत है। हां, उनका अन्तिम वसंत ।

तभी उपवन के द्वार खुले ।

महकते समीर को अपने सफेद मरमरी जिस्म का चुंबन देती हुई शीराज की नजियत ने प्रवेश किया । वह सादी की प्रेमिका थी और उनके पास अक्सर आती थी। उसके होंठ मदिरा जैसे मादक थे। उसकी निर्वस्त्र बाहों की सफेदी और गरमाहट ने तो इस शतवर्षीय कवि की अनेक उनींदी रातों को सम्मोहक बनाया था। सादी ने उसे अपने युवा हृदय की शाश्वत सचाई से प्यार किया था और अपने अमर काव्य 'गुलिस्तां' में स्वर्णाक्षरों से अंकित कर दिया था।

नजियत उनके करीब आयी। उसकी बांहें गुलाब के फूलों से भरी हुई थीं। उसने सादी का स्वागत किया और स्वयं एक महकते गुलाब की तरह उनके सामने खड़ी हो गई।

कवि उस समय उदास था। उसकी उदासी, उसके पीले होंठों पर उभर आयी थी। 'दुनिया के तमाम इन्सानों में सबसे ज्यादा खुशनसीब, ऐ कवि ! तुम्हें किस बात का ग़म है ?'

सादी खामोश रहे ।

'मैं तुम्हारी उदासी को भी प्यार करती हूं सादी । तुम्हारा तो ग़म भी

मोहक है। क्या तुम्हारे पवित्र होंठों ने नहीं कहा है कि मोती तो घावों से जन्म लेते हैं और लोबान की खुशबू तभी फैलती है जब वह जलता है।'

सादी ने एक फीकी मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा।

'देखो, मैं तुम्हारे लिए गुलाब के फूल लायी हूं। अपने बाग के मखमली गुलाब।'

फिर उसने सादी पर गुलाबों की वर्षा कर दी और अपनी सुन्दर उंगलियों से उनके उदास चेहरे को आहिस्ता से छुआ।

'ऐ पवित्र शहजादी, तुमने जो गुलाब के फूल मुझे दिए हैं, वे दुनिया के सबसे खूबसूरत गुलाब हैं, जो कभी नहीं मुर्झाते।'

'हां, सादी, तुमने ही तो कहा था—गुलाब की खुशबुओं में सांस लेने वाले को भला यह क्यों सोचना चाहिए कि उसकी जिन्दगी छोटी है। उस खुशबू को एक बार अपनी यादों में बसा लो, तो फिर वह खत्म होकर भी कभी नहीं मिटती।' नजियत ने अपनी सुरीली आवाज में कहा। फिर नजियत उसके पास बैठ गयी और अपनी स्वप्निल जुल्फें सादी के चेहरे पर फैला दीं। वह सादी के बिल्कुल करीब थी। सादी ने जैसे ही नजियत की स्वप्निल जुल्फों को अपने हाथों से छुआ कि तभी उस बाग में खुशनुमा हवा का एक झोंका आया और वहां इन्द्र-धनुषी आभा बिखर गयी। ये दरअसल जमरुख्त पक्षी के सम्मोहक पंख थे, जिनकी आभा फैल गयी थी।

तब सादी ने अपने चारों ओर फैले हुए खूबसूरत परिस्तान को, अपनी आत्मा की गहराई से, जी भर कर निहारा। फिर उस सुंदर शहजादी की मोहक मुस्कान को देखा—और तभी उनकी आंख से गिरे गर्म आंसू की बूँद ने उनके बूढ़े दिल को जला दिया। उन्होंने उस शहजादी का सुंदर हाथ लेकर चूमा और फिर अपने धड़कते दिल पर रखकर हल्के से दबा लिया।

'अपने इस सुन्दर हाथ से मेरे 'गुलिस्तां' के आखिरी पन्ने पर लिख दो—'हम अपनी इच्छा से जन्म नहीं लेते, हम तो इस अचरज लोक में सिर्फ रहते हैं और अपनी ही वेदना में खत्म हो जाते हैं।'

डा० दमिरचियन (1877-1956)

दमिरचियन का जन्म अहलकलाकी शहर (जार्जियाई सोवियत समाजवादी गणतंत्र) में हुआ था। दमिरचियन जिनेवा विश्वविद्यालय से प्रकृति-विज्ञान में स्नातक बने थे। इसके साथ ही साहित्य और शिक्षा-शास्त्र संबंधी व्याख्यानों का पाठ्यक्रम पूरा किया और 'कन्जरवेटाइर' में अध्ययन भी किया। देरेनिक दमिरचियन के रचनात्मक साहित्य ने सोवियत आरमेनियन गद्य और नाटकों के विकास को बहुत प्रभावित किया है। दमिरचियन की मुख्य रचनाएं हैं—'वसाक', 'मुकदमा', (रिच औवनान), 'बहादुर नासर' और 'मेरा स्वदेश', (नाटक), 'वरदानक' (उपन्यास) और कुछ कहानी-संग्रह।

भूख

घर से चौराहा और चौराहे से घर। बस यही उसका इलाका था, जिसमें वह सुबह से शाम तक घूमता रहता था। पहले भी, जब वह बढ़ई का काम करता, कस्बे में कोई ऐसे खास स्थान न थे जहां वह जाता रहा हो। लेकिन शनिवार की संध्याओं को जब वह घर लौटता तो अपना रास्ता शराबघर की ओर मोड़ लेता। लेकिन अब चूंकि युद्ध और अकाल ने अन्य लोगों की तरह उसे भी तबाह कर दिया था, वह कहीं नहीं जाता था, अब चूंकि वह बूढ़ा और एकदम अशक्त हो चुका था, इसलिए कोई काम भी नहीं करता था। इस दुनिया में उसकी स्थिति वैसी ही थी, जैसे गांव के भूखे और तिरस्कृत कुत्ते की होती है, जो किसी को डराने या किसी अजनबी के होने की सूचना देने के लिए नहीं, बल्कि आदतन गला फाड़-फाड़ कर भौंकता रहता है।

वह एक साधारण बढ़ई था, जिसे हाल ही में काम से मुक्त कर दिया गया था। उसके आखिरी मालिक ने उसकी बची-खुची शक्ति भी निचोड़ ली थी और उसे अब घर भेज दिया था, घर नहीं बल्कि यों कहिए कि उसे उसकी कब्र में

ढकेल दिया था। चालीस साल तक काम करने के बाद भी उसके पास कुछ नहीं बचा था—न तो शक्ति, न धन और न मित्र। ये सब ऐसे गायब हो गए थे जैसे प्रचंड गति से दौड़ने वाले घोड़े रथ को ही उड़ा कर ले जाएं। उसके पास अगर कुछ बचा था तो वह थी—अतर्पणीय भूख जो उसकी सबसे विश्वासपात्र बन कर उससे चिपटी हुई थी। यों समझिए कि उस भूतपूर्व कारीगर का पेट अभी भी उसके पीछे पड़ा हुआ था।

सिर्फ खाना ... खाना......और खाते ही रहना, बस यही एक धुन उस पर सवार रहती।

सुबह से रात तक, उसकी हर बात, हर काम और हर योजना का संबंध सिर्फ खाने से ही होता था। वह अपनी जगह से उठता, अलमारी के पास जाता, उसे खोलता और फिर लालच भरी निगाह से उसका कोना-कोना छान मारता। उसमें रखे बर्तनों के ढक्कन खोलकर देखता, नेपकिन की परतों को उलट कर देखता और यही सोचता कि शायद कहीं कुछ खाने की अच्छी चीज़ मिला जाय। कई बार ऐसा भी होता कि वह अलमारी खोलता और उसके सामने खड़ा हो कर देर तक अपने विचारों में खोया रहता। वह देर तक उन खाली प्लेटों को देखता रहता जिनमें खाने के लिए कुछ भी न होता था। फिर भी वह हर घंटे बाद इस क्रिया को दुहराता रहता।

घर के किसी भी कोने में, कहीं भी अगर रोटी रखी हो तो उसे वह बढ़ई ढूंढकर खा जाता। उसकी पत्नी चीनी के तीन-चार क्यूब किसी कोने में चुपचाप छिपाकर रख जाती, फिर भी बढ़ई अपनी खोज में जुटा रहता कि शायद रोटी का एक टुकड़ा या उबले हुए मटर के कुछ दाने ही मिल जायं।

लेकिन वहां कुछ भी न था। कोई अपनी जिन्दगी की कीमत देकर भी वहां कुछ नहीं पा सकता था। और जब उसे कुछ भी न मिलता तो उसकी भूख उत्तेजित हो उठती। वह भूख से पागल हो उठता। वह अंत में निराश हो कर जम्हाई लेता। उसका मुंह टेढ़ा हो जाता और एक ओर से लार बह निकलती। वह अपने होंठों को चाटने लगता और वापस आकर सोफे पर बैठ जाता। उसकी पीठ और सिर सामने की दीवार की झुक जाते। वह सामने दीवार पर बने किसी निशान को अधखुली आंखों से देखता रहता और इस तरह कई घंटे बिता देता।

उसे जम्हाई आती है, ऊंघने लगता है...किंतु इस अर्द्ध-निद्रित अवस्था में उसके सामने अनेक काल्पनिक दृश्य उभरने लगते हैं। वह अपनी उस खीझ भरी

मनः स्थिति में मुर्गे की टांगें, बादाम और मसाले मिला कर भूनी गयी मछली, अचार लगी सेंडविच और भेड़ के मांस से बनी चीजों को देखता। यों समझिए कि उस समय उसके सामने दावत की बेशुमार चीजें होतीं, कई किस्म के 'सूप' होते और सारा वातावरण बढ़िया खुशबुओं से भर जाता। तभी पतली सफेद रोटी में लिपटा हुआ भुने गोश्त का टुकड़ा, उसके होंठों तक पहुंच जाता है और नमकीन गोश्त के शोरबे में भीगी हुई रोटियां उसकी जीभ और तालू के बीच घुटने लगतीं।

अचानक उसकी लार बहकर गले में अटक जाती है और वह खाँसता हुआ जाग उठता है। वह जागते ही भूखे भेड़िये जैसी आंखों से चारों तरफ देखने लगता है। किन्तु भयानक और निष्ठुर वास्तविकता उसे निराश बना देती है।

वह भूख और क्रोध से पागल हो उठता है। अपनी जगह से उछल पड़ता है। पहले घबराया हुआ लड़खड़ाने लगता है, पैर अस्थिर हो जाते हैं, किन्तु फिर वह दीवार का सहारा लेकर, धीरे-धीरे बालकनी तक चला जाता है।

उसकी किसी भी हरकत को देखकर उसकी पत्नी को कोई आश्चर्य नहीं होता था। वह कभी उछलता, कभी बाहर चला जाता और चाहे जब लौट आता। उसकी पत्नी को, उसकी किसी भी क्रिया में कोई नयापन नजर नहीं आता था। बढ़ई का जीवन जैसे रुक गया था। उसकी सारी हरकतें, शब्द और क्रियाएं पूर्वनिश्चित होतीं और विधिवत् ढंग से बार-बार दुहराई जातीं, जैसे हज़ारों साल पुरानी परम्पराओं का नियम होता है। किंतु यह सब कुछ बेहद उबाने वाला होता - बिल्कुल शरदकालीन वर्षा की तरह।

इस भूखे राक्षस को, अपनी पत्नी का ध्यान आकर्षित करने के लिए क्या करना चाहिए? यह शायद उसके भाग्य में पहले से ही निश्चित था। वह बिल्कुल वैसी ही हरकतें करता रहेगा। वह बाहर छज्जे पर जाता, वहां एक कोने में धूप में सूखने के लिए फैले हुए आलू को एक-एक कर उठाता, उन्हें काँपते हाथों से देखता, फिर जीभ से चखकर वापस रख देता। इसके बाद वह अपनी छड़ी उठा कर सीढ़ियों से नीचे उतरता और बाहर सड़क पर चला जाता। लेकिन वह जाएगा कहां? यह भी जैसे पूर्वनिर्धारित था - यानी उसी चौराहे तक।

वहां वह इधर-उधर घूमता, शहर की पटरियों पर लगी दुकानों पर खरबूजे, तरबूज और ककड़ियों को उठाकर देखता और रख देता। फिर डेरी की दुकान पर जाता। इस तरह सभी चीजों के भाव-ताव करता हुआ वह आगे बढ़ जाता। कसाई की दुकान पर वह काफी देर तक खड़ा रहता। वहां लटके हुए

गोश्त के टुकड़ों को हसरत भरी निगाह से देखता रहता। हर किस्म के गोश्त को जी भर कर देखने के बाद वह दुकान के अन्दर जाता और नरम चर्बी वाले मांस के टुकड़ों को उठाकर देखता-परखता। फिर उसे वहीं छोड़ कर घर की ओर लौट पड़ता। उस चौराहे के छोर पर पहुंच कर वह किसी ऊंची पट्टी पर बैठ जाता और अपनी छड़ी पर बाहों को टिका कर, उस चौराहे तथा वहां स्थित खाद्य-पदार्थों की सभी दुकानों को ध्यान से देखता रहता।

वह सोचता—इस दुनिया में चीजों की कमी नहीं है, हर चीज प्रचुर मात्रा में है, लेकिन दुख तो यही है कि सभी कुछ बहुत महंगा है। इस असीम भंडार में से उसके लिए एक छोटा-सा कतरा भी नहीं है - चाहे अनाज हो या मीठे अंगूर हों, मीठे खरबूजे हों या बढ़िया पनीर। लगता है यह दुनिया एक सपना है, एक भयानक, दुखदायी और निष्ठुर सपना। तभी तो इतनी तेज भूख मिटाने के लिए इतनी प्रचुर मात्रा में वस्तुएं होते हुए भी अप्राप्य हैं।

आखिर इस समस्या का अंत कहां होगा? क्या इस बढ़ई की लालसा एक बार भी पूरी हो सकेगी या वह सदा असंतुष्ट ही रहेगा? उस बढ़ई का जीवन भी क्या है? वह इस दुनिया में जिन्दा रहकर भी मृत था, क्योंकि मृत व्यक्ति खाता-पीता नहीं। लेकिन वह जिन्दा था और अपनी आंखों से सब कुछ देख रहा था। उसने अभी कुछ देर पहले ही तरबूजों के ठंडे छिलकों को सहलाया था, भेड़ के चर्बीदार नरम गोश्त को छुआ था, इसीलिए वह अभी जिन्दा है, मृत नहीं है। तब उसके लिए दुनिया का अर्थ क्या है? क्या वह सचमुच बिना कुछ खाये ही मर जायगा।

वह बेहद कटु, क्रोधी और विद्रोही हो गया था। वह उठकर घर की ओर चल देता और अपने आप से बातें करता हुआ घर लौट आता।

वह जैसे ही अपने घर के बाड़े में घुसता, उसकी पत्नी, उसकी बड़बड़ाहट सुनती, लेकिन उसकी ओर मुड़कर भी न देखती। ऐसी पागलपन की स्थिति में वह सीढ़ियों पर छड़ी ठोंकता हुआ हजारों बार घर के अन्दर आया है। उसकी पत्नी ने यह सब कुछ देखते-देखते जैसे उम्र बिता दी है। उसने देखा है बढ़ई की धुंधली और ठहरी हुई आंखें, टकटकी लगाकर देखने वाली अशुभ आंखें—हां, आंखें जो देख कर भी नहीं देख सकती थीं। और यह सही भी था। वह बढ़ई किसी भी व्यक्ति या वस्तु को नहीं देख सकता था। उसे तो केवल एक ही चीज दिखाई देती थी—भोजन।

बढ़ई आकर अपनी जगह पर बैठ जाता। अपने चारों ओर देखता। घर

में कहीं कुछ नयापन न था। उसे लगता जैसे दुनिया ठहर गई है, उसके पहिए थम गए हैं।

दरवाजे पर बैठी उसकी पत्नी मोज़े बुन रही है। बढ़ई उससे कुछ बात करना चाहता है, कुछ कहना चाहता है जिससे उसके दिल का बोझ हल्का हो सके। वह कहता है -"मैं अभी चौराहे तक गया था। वहां बहुत अच्छे टमाटर बिक रहे थे। मैंने सोचा कुछ खरीद लूं, हम उन्हें सिरके के साथ खाएंगे। लेकिन जाने भी दो। बहुत महंगे थे। और फिर हमारे पास पैसा भी तो नहीं है।"

वह उदास और निराश हो जाता है। मुंह में आया थूक निगल लेता है। उस समय उसकी स्थिति वैसी थी जैसे वह रेगिस्तान में भटका हुआ कोई यात्री हो, जो चलता जाता है—चलता जाता है, लेकिन दूर-दूर तक उसे कोई बस्ती नहीं दिखाई देती। उसका 'आज' भी वैसा ही है जैसा 'कल' था।

कमरे में शांति है। उसकी पत्नी कुछ भी नहीं बोलती। और वह बोले भी क्या उसकी भी अपनी परेशानियां हैं। घर में वह अकेली कमाने वाली थी। घरों में काम करती, सिलाई करती और कपड़े धोती—इस तरह बड़ी मुश्किल से वह कुछ रूबल कमा पाती। इस तरह जो कुछ वह कमाती वह सब रोटियों पर खर्च हो जाता और अधिकांश रोटियां उसके पति के मटके जैसे पेट में समा जातीं। वह गरीब औरत बहुत मेहनत से काम करती थी और दो पौंड रोटियों के लिए पर्याप्त पैसे ले आती थी। वह सोचती थी कि इतना ही काफी है, इसलिए वह अपने पति से बातें करने की जरूरत नहीं समझती थी।

कुछ देर बाद आखिर उस दिन का वह पवित्र और सुखद क्षण आता है जब उसकी पत्नी रोटियां लेने जाती है। उस समय, जब उसकी पत्नी नीचे के होटल में चाय या सब्जी लेने के लिए चली जाती है, वह बढ़ई भूखे भेड़िये की तरह उठता और जहां रोटियां रखी होतीं वहां झपट कर पहुंच जाता है। वह रोटियों को दबोच लेता है। फिर अपने गंदे हाथों से उन्हें तोड़ मरोड़ डालता है और तब उसके लिए अपने को और अधिक रोक पाना मुश्किल हो जाता है। वह उन्हें अपने मुंह में ठूंसने लगता है। वह उनका स्वाद भी नहीं जानता, बस उन्हें निगलता जाता है, भले ही वे गले में क्यों न फंस जाएं।

थोड़ी देर में उसकी पत्नी आती है। वह यह सब कुछ देख कर भी चुप रहती है। वह अपने को एक हिंसक पशु को पालने वाला मानती और तब एक हिंसक पशु द्वारा यह सब किया जाना स्वाभाविक ही था। कभी-कभी वह अपने आपसे शिकायत करती, कभी इसकी बातों की उपेक्षा कर देती और कभी उसे

फटकारती भी। लेकिन ज्यादातर वह अपने दुर्भाग्य को कोसती हुई चुप ही रहती।

उनका भोजन बेहद उदास वातावरण में किंतु जल्दी ही समाप्त हो जाता। बड़ी मुश्किल से रोटियां निगलने के बाद, भयभीत बढ़ई कुछ बातें करने लगता—'पिछले साल इन दिनों हमारे पास एक बोरा प्याज थी।' या 'तुमने शाम के लिए कुछ सब्जी रख दी है क्या ?'

"वह थी ही कितनी जो मैं शाम के लिए भी रख देती।' झुंझलाकर उसकी पत्नी कहती है और जूठी प्लेटें हटाने लगती है।

और अगले दिन फिर, नियमानुसार ठीक इसी दृश्य की पुनरावृत्ति होती।

शीत ऋतु आती है। इस मौसम की अपनी जरूरतें होती हैं, अपनी आशाएं भी होती हैं। वह बढ़ई अपने छज्जे पर मुंडेर के सहारे ठुड्डी चिपकाए हुए बैठा है। वह सामने वाले मकान के आंगन का दृश्य देख रहा है। पड़ोस के दुकानदार ने एक गाड़ी भर लकड़ी खरीदी थी। वह उन्हें अपनी निगरानी में गाड़ी से उतरवा रहा था। सुर्ख गालों वाला एक आदमी बड़ी मेहनत से आरी चला रहा था और अजीब सा सूं-सां का शोर कर रहा था। बैलों का एक जोड़ा भी वहां था—एक बैल खड़ा था और दूसरा जमीन पर बैठा था। दोनों बैल धीरे-धीरे घास खा रहे थे। पूरी सड़क पर लकड़ी और घास की एक अजीब सी मिली-जुली महक फैली हुई थी।

दिन का उजाला फैला हुआ था। धूप का रंग लाल आमलेट जैसा था। वह बढ़ई यह सब देख रहा था और अपनी भूख से दुखी था। उसने अपने उन सुखद दिनों को याद किया जब वह भी सर्दी के लिए लकड़ियां इकट्ठी करके रख लेता था। उसने अपना बचपन भी याद किया जो अत्यंत मधुर था, किन्तु जिसका कोई अर्थ न था।

आरी चलाने वाला आदमी पसीने से भीग रहा था। उसने करीब एक घंटे तक आरी चलाने के बाद काम बंद कर दिया। उसने एक थैले से, गांव में बनी लाल रोटी निकाली और उसे अपने दुबले-पतले हाथों से तोड़ने लगा। उसके एक-एक टुकड़े को उसने धीरे-धीरे अपने मुंह में डाला और जल्दी-जल्दी चबा डाला। वह बढ़ई उसे देखता रहा और उसके साथ स्वयं भी रोटी खाने की कल्पना का आनंद लेता रहा। इसके बाद निराश होकर उसने उस बैल की ओर देखा जो घास खाकर जुगाली कर रहा था।

बढ़ई के विचार दिन पर दिन सिर्फ खाने-पीने के दृश्यों तक ही सीमित होते

जा रहे थे। उसकी कल्पना में सारा संसार सिर्फ खाने-पीने वाला ही दिखाई देता। हर आवाज़, हरेक हरकत और हरेक वस्तु उसे खाने-पीने से संबंधित ही दिखती। बढ़ई की आंखें नीचे सड़क पर लेटे हुए बैल पर टिकी हुई थीं। जिसकी मोटी रान की मांसपेशियां उभरी हुई थीं। कुछ ही क्षणों में बढ़ई अपनी कल्पना में खो गया। उसने हिरन के पुट्ठे का मांस काट कर पकाया और बर्तनों में परोस कर खाने बैठ गया। इस तरह वह अपनी कल्पना में उस गोश्त को न जाने कितनी देर तक खाता रहा। उसका मुंह थूक और झाग से भर गया था। वह डरावना दिख रहा था। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। उस समय वह बिल्कुल किसी हिंसक पशु सा लग रहा था—सिर्फ भूख से जलता हुआ एक भूखा पेट, और कुछ नहीं।

वहां वह उस समय तक वैसे ही बैठा रहा जब तक गाड़ी से सारी लकड़ियां नहीं उतर गईं और उन्हें काटकर अन्दर नहीं रखा गया। गाड़ी खाली होकर चली गयी ओर उसके पीछे-पीछे गया आरी चलाने वाला व्यक्ति। हवा में ठिठुरन थी। बढ़ई को हल्की ठंड महसूस होने लगी थी। उसने कमरे में जाकर अपना पुराना बड़ा कोट पहन लिया।

कुछ दिनों बाद वह गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया। उसकी पत्नी तो इस बात के लिए पहले से ही आशंकित थी। उसने इस स्थिति के लिए अपने को तैयार कर लिया और अपने अंतिम दायित्व पूरे करने में जुट गयी। बढ़ई ने थोड़ा-सा 'सूप' कुछ इस तरह मांगा जैसे कोई जीवन-दान के लिए याचना कर रहा हो। लेकिन इस कीमती भोजन से उसे संतुष्ट करने का कोई उपाय न था। उसके इस आग्रह के उत्तर में उसकी पत्नी ने प्यास बुझाने के लिए एक गिलास ठंडा पानी दे दिया जिसमें पांच सूखी किशमिश पड़ी हुई थीं। लेकिन बीमार बढ़ई 'सूप' पीने की जिद करने लगा। पूरी सुबह वह सूप की बात दुहराता रहा और सारे दिन उसकी निरर्थक प्रतीक्षा करता रहा।

भोजन के समय उसके सामने भूरी रोटी का एक टुकड़ा रख दिया गया। उसने उसे खाना चाहा पर निगल न सका। शाम को पड़ौस की एक महिला ने देखा कि बढ़ई की पत्नी काफी परेशान है। वह उसके पास आयी और तब सारी बात मालूम हुई। उसे दया आ गई। उसने तुरन्त अपने बेटे को दही लाने के लिए भेजा। लेकिन दही नहीं मिला, इसलिए 'सूप' बनाने का कार्यक्रम अगली सुबह तक के लिये स्थगित हो गया।

लेकिन रात में बढ़ई की हालत बिगड़ गयी। तेज बुखार में वह बड़बड़ाने लगा। यह पहला अवसर था जबकि उसने बड़बड़ाहट में भोजन के बारे में कुछ

नहीं कहा। उस तेज़ बुखार में उसने अपनी पत्नी से उन स्थानों के बारे में पूछा जहां लावारिसों को ले जाते हैं। लेकिन उसकी पत्नी कुछ भी न समझ सकी और उसने कोई उत्तर न दिया। बीमार बढ़ई ने आँखें खोलीं और अपनी पत्नी की ओर देखकर बोला—'तब तुम खाओगी क्या ?' पत्नी ने सोचा शायद वह अब सूप की प्रतीक्षा कर रहा है। वह अभी आ जायेगा। थोड़ा इन्तजार करो।' पत्नी ने उत्तर दिया।

'मेरे मरने के बाद तुम क्या करोगी, क्या खाओगी ?' बढ़ई ने अपनी मृत्यु की ओर संकेत करके पूछा।

'भगवान जाने ! मैं क्या बताऊं ?' दुखी आवाज़ में पत्नी बुदबुदाई।

उसी समय पड़ौस की वह महिला एक प्लेट में सूप लेकर आ गयी। उसने प्लेट को टेबिल पर रख दिया और बीमार बढ़ई को देखने लगी।

'ये तुम्हारे लिए सूप लायी है। तुम उसे पिओगे ?' पत्नी ने बढ़ई से पूछा।

'ये तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।' पड़ोसिन ने कहा।

'अच्छा ?' बीमार बढ़ई ने बुखार से जलती अपनी आंखें खोलकर पूछा।

सूप की प्लेट नजदीक लायी गयी और एक चम्मच में सूप भरकर उसके होंठों से छुआया गया। बीमार बढ़ई ने तत्काल समझ लिया कि उसे कुछ खिलाया जा रहा है। उसने होठों पर जीभ तो फिरा ली, किन्तु उसने कुछ भी खाया नहीं, क्योंकि अब उसकी भूख सदा के लिए खत्म हो चुकी थी।

बढ़ई के जीवन में यह पहला अवसर था। जब उसे भूख नहीं लगी थी। उसकी दुनिया बदल चुकी थी। भूख जो कभी उसके शरीर का आनन्द थी, उसे वह बढ़ई अब खो चुका था वही भूख अब सज़ा में बदल चुकी थी।

उसने कुछ भी नहीं खाया। बस दुखी मन से एक बार अपनी पत्नी और उस पड़ोसन की ओर देखा।

'कोई बात नहीं। इसे तुम बाद में ले लेना।' पड़ौसन ने उसे सूप के प्रति आश्वस्त करते हुए कहा और वह प्लेट बढ़ई की पत्नी को थमा दी।

बढ़ई की पत्नी का मन दुख से भरा हुआ था। उसने पहले सूप की प्लेट को देखा, फिर मृत्यु के निकट पहुंच रहे बीमार बढ़ई को देखा। फिर वह चुपचाप प्लेट रखने के लिए अलमारी के पास गयी।

जब उसने अलमारी खोली तो उसका दिल दर्द से कराह उठा। वह अलमारी अनेक बार खोली और बंद की गयी है, उसमें अनेक बढ़िया चीजें रखी गयी हैं, तमाम दोस्तों को बढ़िया से बढ़िया भोजन सामग्री उस अलमारी से

निकालकर, खिलाने के अवसर आ चुके हैं। और अनेक बार बढ़ई ने भी उस अलमारी को खोला और बंद किया है जो कभी उनके जीवन के सुखी दिनों का प्रतीक थी।

अभी वह अलमारी में प्लेट रख भी न पायी थी कि पड़ौसन महिला उसके पास आकर फुसफुसायी और उसे इशारे से बुलाने लगी।

बीमार बढ़ई की अन्तिम सांसें चल रही थीं उसने इशारा किया - वह कुछ कहना चाहता था। उसके गले से कुछ अस्पष्ट सी आवाज निकली, जैसे वह कह रहा हो—'अगर इसी तरह मुझे मरना है, तो मैं मरने के लिए तैयार हूं।'

और फिर वह तुरंत ही शांत होकर मृत्यु की गोद में सो गया।

कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया था।

अब क्या ? क्या सब कुछ इतना ही था ?

उसकी पत्नी ने कुछ क्षणों तक प्रतीक्षा की, शायद उसके पति के शरीर में कोई हरकत हो। लेकिन फिर कुछ न हुआ। उसने देखा कि एक ओर भूखे बढ़ई की स्थिर आंखें खुली हुई हैं, और दूसरी ओर वह अलमारी भी खुली हुई है जो स्थिर थी। वह अलमारी उसी सूनेपन से देख रही थी, जिस तरह वह बढ़ई देखा करता था।

स्टीपेन ज़ोरियान (1890-1967)

ज़ोरियान का जन्म किरोवोकान शहर में हुआ था। ज़ोरियान की रचनात्मक कृतियों में राष्ट्रीयता की जड़ें बहुत गहरी हैं। उनमें मानवतावादी दृष्टि है और इस कारण आरमेनिया के साहित्य—इतिहास में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। ज़ोरियान की मुख्य कृतियां हैं : 'पुस्तकालय वाली लड़की' (हानी); 'एक जीवन की कहानी', 'किंग पाप' और 'अमीरयान परिवार' (उपन्यास); और 'वाराजदात' (एक ऐतिहासिक नाटकत्रय)

शक्करदानी

हाथ में नीले रंग का छोटा सा बंडल लिए एक युवक टिफलिस नगर के एल्दात्स्की बाजार से होकर जा रहा था। इस बाजार में लोग खीरे-ककड़ी के अचार, पकाने के लिए नकली मक्खन, चोरी के कपड़े और पुराना फर्नीचर बेच रहे थे।

वह भारी और बहके हुए कदमों से चल रहा था। लेकिन वह अजनबी की तरह इधर-उधर बराबर किसी स्थान को खोजने के इरादे से देख रहा था। उसके चेहरे का भाव उस समय कुछ वैसा ही था जैसा अपने आलोचकों से शर्मिन्दा होने पर कवियों का होता है—कुछ अपराधी-सा, कुछ अपमानित सा।

अगर वह अपनी पुरानी इंगलिश-टोपी की बजाय चौड़े मुंह वाला फ्रेंच-हैट पहने होता तो लोग उसे गांव के स्कूल का कोई अध्यापक समझते जो शहर में एक हैट खरीदने या कोई नाटक देखने आया हो। यदि उसने अपने लंबे और सिकुड़े हुए, गंदे और फीके रंग वाले कोट की बजाय, एक साफ-सुथरी चुस्त जैकेट पहनी होती तो लोग यही समझते कि वह कोई छोटा-मोटा दुकानदार है जो किसी पास के कस्बे से आया है।

लेकिन सचाई तो यही थी कि वह इनमें से कुछ भी न था। और अगर

आप सचमुच जानना ही चाहते हैं तो जान लीजिए कि वह अभी-अभी जेल से छूटा हुआ एक कैदी है ।

जिस समय जेल के फाटक खुले थे, उसका दिल सचमुच कितनी खुशी से भर गया था। जब वह खुली सड़क पर आया तो आसमान से बड़ी सुहानी वर्षा हुई थी । जेल से छूटते वक्त हर व्यक्ति बहुत सी बातें सोचता है । निस्संदेह उसने भी उस समय बहुत कुछ सोचा था। शहर के आजाद लोग, खुली खिड़कियों वाले घर, इधर-उधर घूमती हुई गाड़ियां और आसमान से टप-टप करती हुई वर्षा की बूंदें सभी कुछ उसे बहुत ही प्यारा लग रहा था। लेकिन इसके साथ ही उसने एक और बात महसूस की। जब किसी अनजान तहखाने, घर या रेस्तरां से स्वादिष्ट भोजन के पकने की खुशबू उसने महसूस की तो अचानक ही उसकी भूख जाग उठी। बस उस रास्ते में जो भी पहला रेस्तरां पड़ा, वह उसी में चला गया। जब उसका पेट भर गया तो वह अपनी स्थिति के बारे में सोचने लगा। और यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि पेट भर जाने पर हर व्यक्ति इसी तरह सोचता है। उसने सोचा कि अब रात बिताने के लिए उसे किसके पास जाना चाहिए। उस शहर में न तो उसका कोई रिश्तेदार था और न ही कोई मित्र, जिसके पास वह जाता। उसके पास पैसे के नाम पर केवल एक ही रूबल था, जिसमें से तीस कोपेक्स का उसने भोजन कर लिया था। उसने अपने गांव लौरी के लोगों के बारे में सोचना शुरू किया जो इस शहर में आकर व्यापार करने लगे थे। उसे ओहेन्स नामक दर्जी की याद आयी। सोचा, उसके पास जा कर कहूं कि जब तक मुझे कोई काम नहीं मिल जाता, मेरी मदद कर दो। किंतु फिर यह सोच कर मन निराश हो गया कि एक बार ओहेन्स ने कहा था कि घर से जब शहर लौटो तो मेरे लिए थोड़ी सी फलियां लेते आना, लेकिन उसने वह छोटा सा काम नहीं किया था। फिर उसने निकाले मोची के पास जाने का इरादा किया, लेकिन वहां भी जाना संभव न था, क्योंकि एक बार बहस के दौरान उसने उस मोची को 'बुर्जुआ' कह दिया था और इस बात का मोची ने बहुत बुरा माना था। अब उस ने अपने गांव के अन्य लोगों के बारे में सोचा, जैसे—सारकिस बनिया, दुकान का नौकर बगरात और साइमन लुहार। लेकिन इनके साथ भी उसने कोई न कोई अप्रिय व्यवहार किया था। अंत में उसने यह तय किया कि वह अबेल नामक दुकानदार के पास जाएगा। दरअसल अबेल को गांव से शहर ला कर आदमी बनाने का काम उसके पिता ने ही किया था। इसलिए उसे अबेल से मदद मिलने की ज्यादा उम्मीद थी।

उस वक्त वह शोर भरे सल्दात्स्की बाजार से गुजरता हुआ अबेल के यहां ही मदद मांगने जा रहा था। रास्ते में वह अबेल के बारे में सोचने लगा। फिर उसे उसकी दुकान याद आयी जहां वह तीन साल पहले काम कर चुका था। दुकान पर लगा बड़ा-सा साइन बोर्ड याद आया जिस पर शक्कर का एक तिकोना, एक नाशपाती और सेबों भरे बर्तन चित्रित थे। उसे पूरी आशा थी कि अबेल मदद के लिए कभी इनकार नहीं करेगा।

'सचमुच ही वह मना नहीं करेगा', उसने अपने आप से कहा, 'क्योंकि मेरे पिता ने ही तो उसे आदमी बनाया है। अगर मेरे पिता ने उसकी मदद न की होती तो आज वह भेड़ चराने वाला मामूली गडरिया होता। फिर भी, अगर उसने न की तो मैं उससे कुछ धन उधार ले लूगां और बाद में लौटा दूंगा।'

इन्हीं विचारों में खोया हुआ वह अबेल की दुकान पर पहुंच गया। उसने खिड़की से अंदर झांक कर देखा। दुकान में केवल एक ही लड़का था। उसने पट्टेदार कपड़े पहने थे और वह जल्दी-जल्दी चिंविगम खा रहा था। इस नवयुवक को पहले तो संकोच हुआ कि अंदर जाए न जाए। किन्तु फिर उसे जैसे ही अपनी स्थिति का ख्याल आया कि उसके पास रात बिताने के लिए कोई जगह नहीं है, खाने के लिए पैसे नहीं हैं, वह साहस बटोर कर दुकान के अंदर चला गया।

उसे देखकर उस लड़के ने चिंविगम मुंह से निकाल ली और चुपचाप जेब के अंदर चिपका ली। 'तुम्हें क्या चाहिए ?' लड़के ने बड़ी निर्भीकता से पूछा। वह युवक एक क्षण के लिए सहम-सा गया।

'मैं मि० अबेल यानी तुम्हारे मालिक से मिलना चाहता हूं।' वह बोला, 'क्या वह यहां हैं ?'

'वह खाना खा रहे हैं। तुम कहो तो उन्हें बुला लाऊं ?'

युवक संकोच में पड़ गया। उसे लगा कि वह गलत वक्त पर आ गया है। अगर वह कुछ देर बाद आता तो ठीक रहता। लेकिन ठीक है, यदि उसके खाने में बाधा नहीं पड़ती है तो वह लड़का बुला ही लाएगा।

वह लड़का जल्दी से दुकान के भीतरी हिस्से में चला गया। वह युवक दुकान के काउंटर के पास आ गया। जब तक मि० अबेल आएं तब तक वह एक पंक्ति में रखी हुई ढक्कनदार शक्करदानियों को देखने लगा, जिनका उपयोग आम तौर पर पुरोहित और पंडित करते हैं। वह उनके ढक्कन उठा-उठा कर देखने लगा, लेकिन उसका ध्यान तो कहीं और था। वह सोच रहा था कि अबेल उसे शायद

ही पहचाने। उससे आखिरी बार मिले हुए तीन साल बीत चुके हैं। लेकिन अगर वह उसे पहचान लेगा तो जरूर खुश होगा, क्योंकि आखिर उसके पिता के ही कारण तो अबेल इस दुकान को जमा सका था। इसलिए वह कभी नहीं मना करेगा। अवश्य मदद करेगा।

'लेकिन जब उसे यह मालूम होगा कि मुझे चोरी के अपराध में जेल जाना पड़ा था, तो शायद मदद न करे', वह अपने आप से कह रहा था, 'वह शायद कभी इस बात पर विश्वास नहीं करेगा कि मैं निर्दोष था और इसीलिए मुझे जेल से मुक्त कर दिया गया है।

उसने सोचा कि वह इसी क्षण दुकान से बाहर चला जाय, यहां से भाग जाय जिससे उसके गांव वालों को इन बातों का कुछ भी पता न लग सके। किंतु तभी उसे यह भी ख्याल आया कि ऐसा करने से वे लोग उस पर और भी दोषारोपण करेंगे। इसलिए वह वहीं खड़ा रहा।

ठीक उसी समय बगल की दीवार के पीछे से जल्दी-जल्दी चलने की आहट सुनाई दी। उस युवक ने अभी भी उन शक्करदानियों को देखना जारी रखा जिससे उस पर किसी प्रकार शक न हो।

तभी एक अधेड़ व्यक्ति अंदर आया। उसने अपने जूठे हाथ को अलग करके ऊपर उठा रखा था। वह उसके लौरी गांव का एक सामान्य व्यक्ति था। उसके सिर और दाढ़ी के छोटे-छोटे भूरे बाल किसी कांटेदार बाड़ी जैसे लगते थे। उसने युवक की ओर देखकर पूछा,—'तुम्हें क्या चाहिए ?'

'मुझे...' उस युवक ने अपनी आंखों को इधर-उधर घुमाते हुए कहा—'मुझे चाहिए...'

दरअसल वह बहुत असमंजस की स्थिति में था, क्योंकि अबेल खाना छोड़ कर आया था और बेसब्री से उसकी ओर देख रहा था।

उसने शक्करदानी के ढक्कन को घुमाते हुए कहा—'मैं चाहता हूं....'

दुकानदार ने एक बार फिर उसकी ओर बेसब्री से देखा और उस युवक को शक्करदानी की तरफ लगातार देखने के कारण पूछा— 'इस शक्करदानी को तुम खरीदना चाहते हो ? इसकी कीमत एक रूबल है।'

'इसने शायद मुझे पहचाना नहीं' यह सोचकर युवक ने उसे अपने बारे में बताना चाहा।

'देखिए, में खेचान चाचा का बेटा हूं।' कहकर वह शरमा गया। दूसरे ही क्षण उसे लगा कि उसने यह क्या बेवकूफी भरी बात कह दी। इसकी क्या जरूरत थी।

'खेचान चाचा?' आश्चर्य से दुकानदार ने कहा—'हमारे खेचान चाचा के बेटे हो?'

'हां,' वह युवक खुश हुआ। उसे लगा कि बातचीत की शुरुआत ठीक हुई है। अब अबेल उससे कुछ प्रश्न भी पूछेगा ही और वह अपनी बात कह सकेगा।

'देखो! अगर तुम हमारे खेचान चाचा के बेटे हो तो इसकी कीमत कुछ कम कर दूंगा' दूकानदार ने कहा—'तुम इसके नब्बे कोपेक्स दे दो और ले जाओ। यह बहुत अच्छी है। घाटे में नहीं रहोगे।

वह युवक चुपचाप खड़ा रहा। वह सोच रहा था कि अपनी बात को आगे कैसे बढ़ाये। इसीलिए वह चाहता था कि अबेल उसके बारे में कुछ पूछताछ करे। लेकिन उसने कुछ भी न पूछा। बस अपना जूठा हाथ अलग उठाए हुए उसकी ओर बेसब्री से देखता रहा।

'क्यों पसंद नहीं आयी या...'

'देखिए मैं...' युवक ने फिर कहना चाहा कि वह अभी-अभी जेल से छूट कर आया है और बहुत जरूरतमंद है, लेकिन खामोश रहा।

उसे भला यह सब बताने से क्या लाभ होगा। इससे अच्छा तो...

'मेरा विश्वास करो, इसकी कीमत इससे कम नहीं हो सकती।' दुकानदार ने जोर देकर कहा, 'मैं तुम्हारे लिए ही कीमत कम कर रहा हूं। हम इसको एक रूबल और बीस कोपेक्स में ही बेचते हैं, पर मैं तुम्हें नब्बे कोपेक्स में दे रहा हूं। चीज के बारे में तो कहना ही क्या? यह 'ओडेसा प्रोडक्ट' है। बहुत अच्छी और चलने वाली। अगर इसे तुम टूटने से बचाते रहो तो यह बीस साल तक चलेगी।'

वह युवक बड़े असमंजस में पड़ा हुआ था।

'देखिए, मैं अभी-अभी जेल से छूट कर आ रहा हूं, इसलिए...' वह आगे कहना चाहता था, किंतु दुकानदार और लड़के की ओर देखकर एकदम चुप हो गया।

अबेल ने फिर से बेसब्री जाहिर की, ठीक वैसे ही जैसे आधा खाना छोड़ कर आने वाला या कहीं जल्दी में जाने वाला व्यक्ति करता है।

'भई, मैं तो खरीदवाली कीमत पर बेच रहा हूं' उसने जल्दी से कहा, 'इसी कीमत पर मैंने खरीदी है।'

युवक ने अपने गांव वाले का स्वर समझ लिया कि वह उसे परेशान कर रहा है और शायद वह उस लड़के को भी परेशान कर रहा था। क्योंकि वह लड़का

उसकी तरफ बड़ी-बड़ी गुस्सैल आंखों से देख रहा था। इसलिए उस युवक ने वहां से चले जाना ही ठीक समझा।

'तुम्हें यह कीमत ठीक नहीं लगी ?' दूकानदार ने पूछा।

'नहीं, बहुत मंहगी है।'

'तुम कितना दोगे ?'

'सत्तर कोपेक्स।'

'लेकिन इसमें तो मुझे नुकसान होगा।'

'पर इससे ज्यादा मैं दे नहीं सकता।' युवक ने हिचकिचा कर कहा और दरवाजा खोल कर बाहर निकल गया।

'कोई बात नहीं...आओ...आओ ..ले जाओ इसे।' दुकानदार ने पुकारा, 'आओ। तुम खेचान चाचा के बेटे हो, इसलिए इससे ज्यादा मैं और क्या कर सकता हूं।'

युवक बिना कुछ कहे लौट आया। उसने सत्तर कोपेक्स दे दिए—उसके पास कुल इतना ही तो धन था उसने शक्करदानी उठा ली और चला आया।

कुछ ही क्षणों बाद वह अब फिर सल्दात्स्की बाजार में पहले की तरह घूमने लगा था। अब उसके हाथों में नीले बंडल के अलावा एक शक्करदानी भी थी।

वहान टोटोवेन्ट्स (1893-1938)

टोटोवेन्ट्स का जन्म पश्चिमी आरमेनिया के मेज़री कस्बे में हुआ था। बाद में वह अमरीका चले गए जहां से विस्कान्सिन विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। सन् 1922 में टोटोवेन्ट्स सोवियत आरमेनिया लौट आए। टोटोवेन्ट्स की प्रमुख रचनाएं हैं: 'खोनो' (कहानी), 'अमरीका' (कथा-शृंखला), 'असातूर और क्लियोपेट्रा' (कहानी), 'बाकू' (उपन्यास), 'पुरानी रोमन रोड का जीवन' (कहानी), 'कबूतर' और 'नीले फूल' (कथा-संग्रह)।

आरमेनिया में बचपन के कुछ चित्र[1]

मैसोपोटामिया से आने वाले ऊंटों के काफिले हमारे दरवाजे के सामने से होकर गुजरते थे। वे एसियामाइनर के बहुत से व्यापारिक केन्द्रों को जाया करते थे और यहां तक कि सबेस्तिया भी जाते थे। फिर सर्दी के मौसम में जिन दिनों हमारे बागों में उर्वरता कम होने लगती थी, लगभग उन्हीं दिनों वे काफिले अनंत मरुभूमि और बेबीलोनिया तथा अरब के उन सम्पन्न नगरों की ओर लौटने लगते थे जहां सितारों की तरह चमकते हुए हीरों और विविध अनमोल रत्नों के भंडार हैं।

वे ऊंट हमारे लिए बड़े सुखद दिन लेकर आते थे। जब काफिले आते तो हमारे बाजार में जैसे नयी जिन्दगी आ जाती। सारा शहर ऊंटों के गले में बंधी घंटियों की रुनक-झुनक से गूंज उठता। हर ओर ऊंटों की समझदार और शांत आंखें दिखाई देतीं और बीच-बीच में उनकी दुख भरी आवाज भी सुनाई दे जाती।

ऊंट की दृष्टि उतनी ही शांत होती है जितना कि रेगिस्तान के ऊपर का आकाश। उन शांत आंखों की स्मृति, उन काफिलों के चले जाने के काफी दिनों बाद तक हमारे मन में बनी रहती थी।

---

[1] 'आरमेनिया में बचपन के कुछ चित्र' नामक उपन्यास से उद्धृत।

जब ऊंट चलते तो उनके पीछे-पीछे बच्चों का झुंड भी चलता जो यह चाहता था कि उसकी पीठ या पैरों से थोड़े बाल नोंच लें तो सर्दी के लिए मौजे बनवा लेंगे। वे ऊंट जब सड़क के किनारे बैठे होते तो उनके सामने होती थी वह चार दीवारी जिस पर वे शांति से अपनी आंखें टिका लेते थे, वही आंखें—जो दक्षिण की अनंत दूरियों को देखने की आदी थीं—जैसे वे क्षितिज की दूरी और शांति मांग रही हों।

एक ऊंट अभी-अभी सामने से गुजर रहा है। वह पूर्व के दूल्हे जैसा सजा है। छोटे-छोटे आबले उसके कपड़ों में चमक रहे हैं, छोटी-छोटी घंटियों की टिन-टिन, बसंत के स्पंदन सी गूंज रही है। इधर-उधर रेशमी और बहुरंगी ऊनी कपड़ों की पट्टियां लटक रही हैं। यह ऊंट काफिले के मालिक का है।

वह मालिक अपने साथ अपना परिवार भी लाया है जिसे वह उत्तर के विचित्र देश दिखाना चाहता है।

ऊंटों की ऊंची पीठ पर एक सुसज्जित काठी बंधी हुई है। उसपर रेशम के बहुरंगी पर्दे लगे हुए हैं जो ऊंट के चलने के साथ-साथ हिलते रहते हैं। उस पर बैठी महिलाएं पैरों से लेकर नाक तक का भाग तथा ऊपर से सिर और भौं तक का भाग कपड़ों से ढके हुए हैं। बस सिर्फ उनकी आंखें ही दिखती हैं जैसे दक्षिण का सूर्य चमकता है। वे मुंह में लगातार कुछ चबा रही हैं। उनके जबड़े भी ऊंट के हिचकोलों की गति के साथ चल रहे हैं। अपना मुंह चलाती हुई वे छोटे-छोटे बहुरंगी तकियों का सहारा लेकर बैठी हैं और पालकी की खिड़कियों से हमारा शहर, घरों के छप्पर, महिलाओं तथा पुरुषों को देख रही हैं। उनकी आंखें नींद की खुमारी से भरी हुई, बेबीलोनिया से लेकर एशिया माइनर के गांवों और नगरों तक, दिन रात कई-कई दिनों तक इसी तरह हिचकोले खाती चलती रहती हैं।

(2)

काफिले में काफी चहल-पहल है। वह कुछ ही देर में शहर छोड़ कर जाने वाला है। ऊंट अपनी टांगों पर खड़ा हो जाता है और अपने चारों ओर के सीमित क्षितिज को देखता है। काफिले के मालिक का वफादार नौकर दौड़ कर छोटी सीढ़ी ले आता है और ऊंट के पेट से टिका कर खड़ी कर देता है। मालिक ऊंट की पीठ पर चढ़ जाता है और अपनी पत्नी के साथ बैठ जाता है।

जल्दी ही, अपनी मंजिल की ओर हिचकोले लेते हुए आगे बढ़ने वाले ऊंट की गति से गति मिला कर घंटियों की टिन-टिन गूंज उठती है। काफिला चल देता है।

काफिला दिन-रात चलता रहता है। वह सिर्फ तभी रुकता है, जब कहीं पर माल उतारना, बदलना या बेचना जरूरी होता है और इसके बाद वह फिर आगे बढ़ जाता है।

जब कभी कोई काफिला आधी रात में हमारे शहर में पहुंचता है तो हमें दूर से ही, स्वच्छ तारों भरे आकाश के नीचे, छोटी-छोटी घंटियों की टिनटिनाहट सुनाई देती है। यह टिनटिनाहट धीरे-धीरे नजदीक, और नजदीक आते-आते धीमी हो जाती है। काफिले के मालिक, ऊंट के हिचकोलों के साथ उस समय तक ऊंघते हुए हिलते रहते हैं जब तक कि काफिला हमारे शहर के किसी चौराहे तक नहीं पहुंच जाता। कभी ऐसा भी होता है कि काफिला बिना रुके ही आगे बढ़ जाता है। और घंटियों की टिनटिनाहट भी उसी के साथ दूर होती हुई तारों भरे आकाश की गहराई में अपने को विलीन कर लेती है।

(3)

एक काफिला पिछले तीन दिनों से हमारी सड़क के एक चौराहे पर ठहरा हुआ है। वहां की हवा ऊंटेरों के लबादों की एक बिचित्र सी बदबू से भरी हुई है। इसके साथ ही उस वातावरण में चिपचिपे आटे और ऊंट के बालों की महक भी थी। उनकी थकी हुई आवाजों और ऊंट की शांत निगाहों को भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। काफिले के मालिकों के छोटे-छोटे तंबू तने हुए हैं। शाम को वहां आग जलती है। सभी ऊंटेरे अपने-अपने ऊंटों को खाना देते हैं और थपथपा कर दुलराते भी हैं। वे कभी जोर से नहीं हंसते, सिर्फ मुस्करा देते हैं। उनकी वह बेरंग फीकी मुस्कान उनके चेहरे पर बड़ी मुश्किल से कभी-कभी ही दिखायी देती है और फिर गायब हो जाती है। लेकिन रेगिस्तान के आदमी की दृष्टि बहुत तेज होती है। उसकी आंखें उजली, किन्तु झुलसी हुई, कुछ नम किन्तु चमकती हुई, सदैव जिन्दादिल और बातूनी प्रतीत होती हैं। उन्हें देखकर हमें रेगिस्तान की गर्मी और शांति दोनों का ही अहसास हो जाता है। जल्दी ही काफिला फिर से अपनी यात्रा पर चल देता है। और तब सारा शहर ऊंटों की कर्कश, दुखी और कातर आवाजों से गूंज उठता है।

(4)

लेकिन एक ऊंट चलने के लिए तैयार नहीं होता। वह खड़ा नहीं होता। सिर्फ बैठा रहता है और टकटकी लगाए देखता रहता है। कई ऊंटेरे उसके पास इकट्ठे हो जाते हैं। वे उसकी आंखों की गहराई में झांक कर, उस पशु की भावना को पूरी तरह समझ लेते हैं। वह दरअसल जिद किए बैठा है। अपने मालिक के

डर से, उस ऊंट को खिलाने तथा देखरेख करने वाले ऊंटेरे का रंग पीला पड़ गया है।

ऊंट को या तो किसी चीज से चोट लगी है या किसी आदमी ने उसे चोट पहुंचाई है। तभी ऊंट का मालिक लौट आता है। 'जब तक इसकी जिद नहीं टूटती, तुम यहीं रुकना।' मालिक हुक्म देता है, 'तुम बाद में आकर हमारे साथ मिल जाना।' ऊंटेरा मान जाता है। काफिले की घंटियां एक बार फिर गूंज उठती हैं। जिद्दी ऊंट वापस जाते हुए अपने साथियों की ओर गर्दन मोड़ लेता है और उन्हें बहुत देर तक टकटकी लगाए देखता रहता है। फिर अचानक बहुत दुख भरी आवाज में चीख पड़ता है। काफिले का मालिक, पूरा काफिला रोक देता है। शायद ऊंट नहीं चाहता कि सब उसे छोड़ कर चले जाएं। लेकिन नहीं, वह बैठा रहता है और नहीं उठता। काफिला एक बार फिर बेबीलोनिया और अरब के रेगिस्तान से होकर मेसोपाटामिया के लिए चल देता है।

इस जिद्दी ऊंट का ऊंटेरा अपना लबादा उतारकर ऊंट की बगल में बिछा लेता है। और फिर अपना ओढ़ कर सो जाता है। उसे यही आशा है कि जब वह जागेगा तब तक ऊंट अपनी शिकायत भूल चुका होगा और वे शाम तक काफिले से जा मिलेंगे।

दिन पर दिन बीतने लगे, लेकिन ऊंट ने अपनी जानवरों वाली जिद्द जारी रखी। ऊंटेरा उसे सहला-सहला कर थक गया, किंतु ऊंट का दिल, हमारे देश की चट्टानों जैसा कठोर हो गया था।

दक्षिण से आने वाले यात्रियों को डराने वाली शीत ऋतु की सर्दी शुरू हो जाती है। ऊंटेरे के पास न तो भोजन है, न वह किसी को जानता है और न ही किसी से मदद मांग सकता है। वह ऊंट के लिए आटा घोल कर जो लप्सी बनाता है, वही खुद भी खा लेता है। वह उन बच्चों को पकड़ लेता है जो ऊंट की पीठ से उसके बाल नोच ले जाते हैं। वह उनसे कहता है कि अगर वे रोटी ले आएं तो वह उसके बदले उन्हें ऊंट के बाल नोच कर देगा।

कुछ दिनों बाद ऊंट पूरी तरह से बिना बालों का हो जाता है। ऊंटेरे ने उसके सारे बालों का धंधा कर डाला था। इस कारण रेगिस्तान का हीरो वह ऊंट भी सर्दी अनुभव करने लगा था। रोटी के बदले में देने के लिए बाल भी न बचे थे। अब वह दिन भी आ गया, जब ऊंटेरे को भीख मांगने के लिए विवश होना पड़ेगा।

लेकिन शहर बच्चे के उसे अपना बचा हुआ खाना लाकर देते रहते हैं।

ऊंटेरा उन्हें प्यार से गले लगा लेता है और उनका आभार मानकर उन्हें चूम लेता है।

कुछ ताकतवर नौजवान उस ऊंटेरे की मदद करने का निश्चय करते हैं।

उनका ख्याल है—'एक बार अगर ऊंट अपने पैरों पर खड़ा हो गया तो वह अवश्य रेगिस्तान की तरफ सीधा चला जायेगा।'

वे दो बड़े-बड़े लट्ठे ले आते हैं और बड़ी मुश्किल से ऊंट के मुड़े हुए पैरों के बीच फंसा देते हैं। फिर करीब बीस आदमियों की मदद से वे ऊंट को उठाते हैं। बड़ी गिड़गिड़ाहट, हताश और दर्दभरी आवाज के साथ ऊंट अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। सभी लोग खुश हो जाते हैं। ऊंटेरा तो समझ ही नहीं पाता कि वह कैसे अपनी खुशी जाहिर करे। वह धीरे-धीरे मुस्कराता है और सबको गले लगाता है। लेकिन एक या दो मिनट बाद ही ऊंट फिर से झुकता है और घुटनों को मोड़ कर बैठ जाता है। ऊंटेरा फिर दुख के सागर में डूब जाता है।

'कितना जिद्दी जानवर है।' सभी लोग कहते हैं।

बर्फ की पहली वर्षा जमीन पर बहुत कम ठहरती है। लेकिन जब हमारे काले कपड़ों पर बर्फ की सफेद परत जम जाती है तो कुछ इतने सुंदर चित्र बन जाते हैं कि मानव हाथों द्वारा कढ़ाई का इतना नाजुक काम संभव हो ही नहीं सकता।

हम बर्फ को देखकर बेहद खुश हैं। लेकिन ऊंटेरा भयभीत और परेशान है।

ऊंट इन विचित्र सफेद परतों को देखता है और जब उसकी आंखों पर वे छा जाती हैं तो वह परेशान होकर आंखें बंद किए हुए सिर हिलाता है।

ऊंटेरा, अपने कंबल को लपेट कर ऊंट के सामने घुटनों के बल झुक गया है और पहली बार चीख-चीख कर रो रहा है। हम उसके पास खड़े हैं। उसके लिए कुछ रोटियां लाए हैं। लेकिन उस भूखे आदमी को भोजन की कोई परवाह नहीं रही।

ऊंटेरे को इस तरह विलाप करते देखकर ऊंट द्रवित हो उठता है। उस समय बर्फ की सफेद परतों से ढकी होने के बावजूद भी ऊंट की आंखों से आंसू बह निकलते हैं और उसकी मूंछ तथा दाढ़ी के बालों में खो जाते हैं। ऊंट उस ऊंटेरे की तरफ कातर आंखों से देखता है। वह ऊंटेरे की आंखों की गहराई में डूब जाता है। उसके आंसुओं को टकटकी लगाकर देखता रहता है। उसकी आंखों से लगातार आंसू बहने लगते हैं।

झर-झर बरसती हुई बर्फ का हमारा आनंद उस समय ऊंटेरे के दुख के कारण पता नहीं कहां खो गया था।

अचानक ऊंट अपनी गर्दन उठाकर आगे बढ़ाता है और ऊंटेरे के मुंह के पास तक पहुंच जाता है। वह प्रायश्चित भरे स्वर में जैसे कुछ कहता है। फिर हांफते हुए धीरे-धीरे उठने लगता है।

हम खुशी से चीख पड़ते हैं।

'ऊंट उठ गया.........ऊंट उठ गया।'

ऊंटेरा अपने आंसू पोंछ डालता है। हम उसके लिए जो रोटियां लाए थे उन्हें वह ले लेता है। ऊंट की पीठ पर काठी रख देता है। फिर उस पर चढ़ कर रेगिस्तान की तरफ खुश होकर मुस्कराता हुआ चल देता है।

सड़क के दोनों ओर लोग रुक कर खड़े हो जाते हैं और इस जिद्दी ऊंट को देखने लगते हैं। वह हिचकोले खाता चला जा रहा है। बीच-बीच में उसकी दुखभरी आवाज गूंज उठती है। उसकी आंखें बहुत दूर अपने साथियों को खोज रही हैं।

ऊंटेरा सड़क पर खड़े लोगों का अभिवादन करता है। उस पर लोग पैसे फैंकते हैं, जिन्हें वह इकट्ठा करता जाता है। उसने रोटियों से अपना थैला भर लिया है। अब वह शहर से बाहर आ गया है और रेगिस्तान तथा धूप के प्रदेश की ओर बढ़ता जा रहा है।

वह अपने पीछे एक ऐसा देश छोड़े जा रहा है जहां शरद ऋतु अपनी लाल और पीली पत्तियों के साथ खत्म हो गयी है और कड़ाके की सर्दी शुरू हो गयी है।

अक्सेल बाकुंट्स (1899—1937)

बाकुंट्स का जन्म गोरिस नगर में हुआ था। वह तिबलिसी विश्वविद्यालय और खारकोव कृषि संस्थान में पढ़े।

अक्सेल बाकुंट्स, आरमेनियन साहित्य में एक महान मानवतावादी कलाकार और राष्ट्रों में बंधुत्व की भावना का प्रतिपादन करने वाले अग्रणी लोगों के रूप में जाने जाते हैं। उनकी मुख्य रचनाएं हैं—'एक लड़की : होनार', (कथा संग्रह); कथा-कहानियों का संग्रह, ओवनाटन मार्च पुस्तक, 'करम्राकर' (उपन्यास)।

पहाड़ी लाल फूल

कागावबर्दा पर्वत की चोटी पूरे वर्ष भर बादलों से ढकी रहती है। उस पर्वत पर ऊंचे-ऊंचे काले बुर्जों के साथ बनी किले की दीवारों के खुरदरेपन को सफेद पानी का बहाव छिपा लेता है। दूर से देखने पर ऐसी लगती हैं जैसे किले की प्राचीर पर संतरी पहरा दे रहे हैं। किले के बड़े-बड़े लौह द्वार बंद हैं और किसी भी क्षण कोई सिपाही इस पर्वत पर चढ़ने वाले को रोक सकता है।

लेकिन जब हवा बादलों को बिखरा देती है और उनकी सफेद चादर हट जाती है तो सबसे पहले एक मीनार का झुका हुआ गुंबद दिखाई देता है और फिर दिखती है जमीन में आधी धंसी हुई पुरानी दीवारें। तब यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वहां न तो लोहद्वार है और न सिपाही।

कागावबर्दा के भग्नावशेषों पर सन्नाटे का ही राज्य है। यदि वहां कोई आवाज है, तो वह है—वासूत नदी की कल-कल, जो अत्यंत उग्रता से नीचे घाटी में बहती है। जब पानी की धार संकरी घाटी से, नीले क्वार्ट्ज की चट्टान के ऊपर से चमकती हुई गुजरती है तो उसकी कल-कल की आवाज ऐसी लगती है जैसे नीचे हजारों शिकारी कुत्ते गुर्रा रहे हैं और गुस्से से अपनी ही जंजीरों को चबा रहे हैं।

किले की दीवारों पर एक बाज और एक गिद्ध ने घोंसले बना लिए हैं। किसी के पैरों की ज़रा सी आहट होते ही वे जोर से चीखकर उड़ते हैं और खंडहरों के ऊपर मंडराने लगते हैं। इस उड़ान में एक पहाड़ी चील भी उनका साथ देती है। उसकी चोंच बल खाती हुई तलवार जैसी है, पंजे नुकीले भाले जैसे और उसके पंख कवच जैसे हैं। कागावबर्दा की इतनी ऊंचाई पर केवल एक लाल फूल ही उगता है। वह सुर्ख लाल होता है। और उसका डंठल जो तीतर-जाति के पक्षी 'टारमिगन' के पैरों जैसा होता है। यह फूल खंडहरों पर ही खिलता है। जब बादल किले की काली दीवारों पर छा जाते हैं तो फूल का तना नीचे की ओर झुक जाता है जिससे फूल अपना सिर धूप से भीगी हुई चट्टान पर टिका ले। तभी एक चमकदार भ्रमर पराग में नहाया हुआ उस फूल की सुन्दरता पर झूमने लगता है और उस समय उसे सारी दुनिया लाल रंग में डूबकर मुस्कराती हुई दिखाई देती है।

बासूत नदी के दूसरे किनारे पर, बहुत नीचे घाटी में कई झोंपड़ियां बनी हैं। सुबह के समय उनके घरों पर बनी चिमनियों से धुआं उठता दिखाई देता है। फिर वह नीले बादलों की पट्टियों में विलीन हो जाता है। दोपहर में, जब मौसम में थोड़ी गर्मी आती है तो गांव में कहीं कोई मुर्गा बांग देता है। एक बूढा किसान अपने घर की छांव में बैठा ऊंघ रहा है। वह अपने अतीत की स्मृतियों में खोया हुआ, एक लकड़ी से बालू पर कुछ चित्र बना रहा है।

समय के रथ ने घाटी में स्थित गांव और चोटी पर बने किले दोनों को अपने प्रभाव से मुक्त नहीं छोड़ा। लगता है कैलेंडर के वर्ष और अपने आप बदल जाने वाली पेड़ों की पत्तियों में--कहीं कोई समानता है। तभी तो धीरे-धीरे स्मृतियाँ धुंधली होने लगतीं हैं। अब तो सिर्फ यह नदी ही है जो सदा की तरह गतिशील होकर बहती रहती है, वरना उसके ऊपर की चट्टानें वही हैं और उन पर आज भी पहले की तरह पहाड़ी चील उड़ा करती हैं।

बासूत नदी के किनारे कितनी पीढ़ियों ने अपना जीवन बिताया है, कितने लोगों ने अपने फटे हुए गलीचों पर जीवन बिताया है और अपने छप्परों को बांसों से ढका है। बसंत में जब कागावबर्दा के ढलानों पर लाल फूल खिलता है तो कितने लोग अपनी बकरियों और भेड़ों को चराने के लिए पहाड़ पर जाते हैं। कितने लोगों ने अपनी झोली को पनीर से भरने का सौभाग्य प्राप्त किया है और उस पनीर से सर्दियों में ज्वार की रोटियां खायी जाती हैं।

एक दिन दोपहर में तीन घुड़सवार कागावबर्दा के पहाड़ी ढलान पर चढ़

गए। उसके कपड़ों और घुड़सवारी के ढंग से यह स्पष्ट था कि उनमें से दो ऐसे हैं जो शहरी हैं और उन्होंने कभी कोई किला या पहाड़ी नहीं देखी।

तीसरा सवार उनका गाइड था। दो घुड़सवार तो घोड़ों की आयल को पकड़े हुए थे। वे अपने को गिरने से बचाने के लिए एक तरह से दुहरे होकर घोड़ों की पीठ से चिपके हुए थे, लेकिन तीसरा सवार घोड़े की पीठ पर बैठा गीत गुन-गुना रहा था. जिसमें अपने दूर बसे गांव से बिछुड़ने की तड़प थी।

उस पुराने किले को आच्छादित करने वाले बादल पर्दे की तरह ढह गए हैं और किले की दीवारें दिखने लगी हैं। अब सिर्फ किले के ऊपरी हिस्से पर बादल छाए हैं। पहला घुड़सवार उस किले की दीवारों से अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा है। उसे उस किले के बारे में प्रचलित किंवदंतियां याद आ गयीं। वे किस्से भी याद आ गए जो समय की पर्तों में दबे इतिहास की तरह हैं। तब यहां एक राजकुमार का शासन था। हथियार बंद घुड़सवार लोहे के फाटक से बाहर निकल कर सड़कों पर घूमते हुए दिखाई देते थे। वीर सिपाहियों के हमलावर दस्ते, अपने भाले घुमाते हुए लौटा करते थे। लेकिन वह घुड़सवार इस किले को एक शोध छात्र की हैसियत से देखने आया था। उसकी आंखों के सामने उस किले का अतीत मूर्तिमान हो रहा था। कल्पना के उन चित्रों में वह उन इतिहासकारों को, उन वीरों को देख रहा था, जिन्होंने चर्म पत्रों को अपनी नुकीली कलम से खरोंच-कर इतिहास लिखा था। वह युद्ध से लौटे हुए घोड़ों के हांफने का स्वर भी सुन रहा था। वह सोचता है कि आज इस पहाड़ी पर चढ़ना उसे कितना मुश्किल लग रहा है, किंतु वे लोग कैसे रहे होंगे जो पहाड़ी बकरियों की तरह बड़ी आसानी से इस पर चढ़ जाते हैं।

आखिर वे गांव तक पहुंच जाते हैं, लेकिन पहला घुड़सवार चलता रहा। वह किले की ओर जाने वाले पुराने रास्ते को खोज रहा था। अपनी धुन में मस्त, उसे यह भी होश न था कि उसके आसपास बच्चे राख के ढेर से खेल रहे हैं या पहाड़ पर चढ़ने वाली कुछ बकरियां उसे विचित्र निगाहों से देख रहीं हैं।

मखमली टोपी लगाए हुए दूसरा घुड़सवार कागावबर्दी की चोटी पर इतिहास खोजने नहीं आया था, उसके पास एक नुकीली पैंसिल, ढेर से ड्राइंग-पेपर थे। जब भी कोई सुंदर चेहरा या पहाड़ी पर काई लगी हुई चट्टान का कोना दिखता, वह तुरंत उसे कागज पर उतारने बैठ जाता।

इस तरह एक घुड़सवार पुरातत्ववेत्ता था और दूसरा कलाकार। जब वे अपने पड़ाव पर पहुंचे तो गांव के बहुत से कुत्ते उन्हें भोंकते हुए दौड़ पड़े। कुत्तों

की आवाजें सुनकर आसपास के लोग घरों की खिड़कियों और दरवाजों से झांकने लगे। राख के ढेर पर खेलने वाले बच्चों ने भी अब इन घुड़सवारों के पीछे कुत्तों को भौंकते देखा, लेकिन किसी ने भी आगे बढ़कर न तो कुत्तों को भगाया और न ही उनके बारे में कोई पूछताछ की। आखिर घुड़सवारों के साथ आए गाइड ने ही उन कुत्तों को भगाया। फिर भी कुत्ते कुछ दूरी बनाकर पीछे-पीछे चलते रहे और वे तभी वापस लौटे जब घुड़सवार किले की दीवार तक पहुंच गए।

उस किले के पत्थर, पुरातत्ववेत्ता के लिए सजीव हो उठे थे। लगा जैसे वे उससे बातें कर रहे हैं। वह एक-एक पत्थर को देखने लगा। कभी पत्थर को हाथ में लेकर खरोंचता, फिर नापता और नोटबुक में कुछ नोट कर लेता। कभी अपने जूते की नोक से जमीन को खुरचता और किसी अन्य पत्थर को खोजता। आखिर वह थोड़ी देर बाद दीवार पर चढ़ गया और एक बड़े से छेद से मीनार के अंदर झांकने लगा। उसने देखा कि दीवार पर लोहे की एक कलम फंसी हुई है। उसे देखकर वह खुशी के मारे जोर से चीख पड़ा।

उनका गाइड घोड़े की लगाम ढीली करके एक दीवार पर बैठा सिगरेट का धुआं फूंक रहा था। उसने वह चीख सुनी तो घबराकर नीचे कूद पड़ा। उसने सोचा कि उस चश्मे वाले को कहीं सांप ने तो नहीं काट लिया। उस समय वह कलाकार दीवार के खंडहरों और नुकीली मीनार के चित्र बना रहा था उसने जब किले के द्वार का चित्र बना लिया तो अचानक पैंसिल रुक गयी और घबराहट से हाथ ऊपर ही उठा रह गया। दरअसल उसकी आहट पाकर एक गिद्ध बड़ी जोर की आवाज करता हुआ अपने घोंसले से बाहर उड़ गया था। और अब वह मीनार के ऊपर मंडरा रहा था। उसके साथ कुछ और भी चिड़ियां अपने पंख फड़फड़ाती हुई उड़ने लगी थीं। इस विचित्र वातावरण से डरे हुए घोड़े एक दूसरे से सट गए थे। फिर जब पुरातत्ववेत्ता यह कहकर चिल्ला रहा था कि उसने राजा बाकुर का शव-कक्ष खोज लिया है, उसका साथी वह कलाकार इस बात से एकदम बेखबर था। वह तो आसमान में उड़ रहे गिद्धों, उनके शक्तिशाली पंखों और उनकी गोल-गोल लाल चोंचें देखकर मुग्ध हो रहा था। उसे उन पक्षियों की चक्करदार उड़ान में अनोखी शान दिखायी दे रही थी। वह इस दृश्य को देखने में इतना लीन था कि उसे यह भी पता न लगा कि कब उसकी टोपी उसके सिर से खिसककर नीचे चट्टान पर गिर पड़ी।

तभी एक किसान अपनी लाठी के सहारे लंगड़ाता हुआ उस ढलवां चट्टान की चढ़ाई पार कर आया और गाइड के पास खड़ा हो गया। किसान की कमर में

हंसिया खोंसा हुआ था और गले में गंदा-सा कपड़ा लिपटा हुआ था। किसान ने उस चश्मेवाले आदमी को एक चट्टान हटाते देखा था। उसने गाइड से पूछा कि ये लोग क्या कर रहे हैं। इन खंडहरों में क्या देख रहे हैं। लेकिन गाइड कुछ भी बताने में असमर्थ था। थोड़ी देर बाद उसने कहा—जानते हो, किताबों में लिखा है कि कागावबर्दा की चोटी पर सोने के सिक्के से भरा मटका कहीं पर गड़ा हुआ है।

किसान विचारों में खो गया। फिर अचानक उसने अपने को झटका-सा दिया और धीरे-धीरे घाटी की ओर चल दिया। उसे अपने ज्वार के खेत पर काम करना था। कुछ दूर चलने के बाद वह अपने आप से बातें करने लगा। अगर वह छिपा हुआ खजाना उसे मिल जाय तो यह कितने सौभाग्य की बात होगी। अब देखो न, उस चश्मेवाले ने जिस चट्टान को हटाया है, उस पर वह न जाने कितनी बार बैठ चुका है। लेकिन अगर उसे यह बात पहले मालूम होती तो उसकी जेब सोने से भर जातीं। तब कितना मजा आता—वह बहुत सी गाय खरीद लेता... । इस तरह अपने ख्यालों में खोया वह खेत पर पहुंच गया। उसने अपना कोट उतार दिया और अपने विचारों के साथ उसे भी एक ओर पटक दिया। एक मुट्ठी ज्वार उठाई और उसके दाने खेत में बिखेरने लगा।

उन खंडहरों के ऊपर एक लाल फूल खिला हुआ था, लेकिन पुरातत्ववेत्ता ने न तो उस फूल को देखा और न वहां उगी घास को। वे सब उसके जूतों के नीचे कुचले जा चुके थे। पुरातत्ववेत्ता के लिए तो यह दुनिया एक संग्रहालय थी जिसमें कोई जीवित वस्तु नहीं होती। उस चट्टान पर फैली बेल को उसने उखाड़कर फेंक दिया। फिर चट्टान की दरार में उगे पहाड़ी लाल फूल को अपनी छड़ी की नोक में फंसाकर खींचा और दूर उछालकर फेंक दिया जैसे इस जीवित सौंदर्य से उसका कोई संबंध न हो। अब उसने चट्टान पर जमी धूल को साफ किया जिसके नीचे एक शिलालेख छिपा था। उधर कलाकार ने वे सारे चित्र बना लिए थे, जिन्हें पुरातत्ववेत्ता ने बनाने के लिए कहा था। इसलिए अब वह खंडहरों के चित्र बना रहा था, दीवार के नीचे खिले पहाड़ी लाल फूल तथा नुकीली चट्टानों के बीच बने चील के घोंसले के चित्र बना रहा था।

वे दोपहर बाद उस किले से वापस चले। वापस चलने से पहले, पुरातत्ववेत्ता ने एक बार फिर से खंडहरों का चक्कर लगाया और उनके चिह्न नोट किए। इसके बाद वह अपने साथियों से मिलने के लिए जल्दी-जल्दी चल पड़ा। इस बार गाइड उन्हें रास्ता बताता हुआ आगे-आगे चल रहा था। उस समय

अगर पुरातत्ववेत्ता राजा बाकुर और चर्मपत्रों पर लिखे इतिहास में खोया हुआ था, तो कलाकार बासूत नदी की कल-कल में पहाड़ी लाल फूल के सौंदर्य की प्रशंसा सुन रहा था और उनका गाइड केवल बढ़िया तंदूरी रोटी, भुने हुए गोश्त और मक्खन की बात सोच रहा था।

गांव पहुंचते ही, पहले मकान के सामने उन्होंने घोड़ों की लगाम ढीली कर दी और उन्हें चरने के लिए छोड़ दिया। भूखे घोड़े जल्दी-जल्दी घास चरने में लीन हो गए। गाइड और उसके साथी घर के अंदर चले गए। उन्होंने देखा कि दरवाजे के पास ही बने चूल्हे के सामने एक छोटा-सा लड़का बैठा है। वह आग में कुकुरमुत्ते भून रहा था। अजनबी आदमी को देखकर वह चौंक पड़ा। एक क्षण के लिए वह समझ ही न सका कि क्या वह वहां से भाग जाए और कुकुरमुत्तों को जल जाने दे या फिर उन्हें आग से निकाल ले। तभी उसने अपनी मां के आने की आहट सुनी। अब उसका साहस बढ़ गया था। उसने जल्दी से एक भुना हुआ कुकुरमुत्ता निकालकर अंगीठी के ऊपर ठंडा होने के लिए रख दिया।

उस लड़के की मां जैसे ही उन लोगों के निकट आयी, उसने अपना घूंघट खींच लिया और घर के कोने की तरफ बढ़ गयी। वहां कोने में रखे बिस्तरों में से उसने दो गद्दियां निकालीं और आगंतुकों के बैठने के लिए बिछा दीं। गाईड पुरातत्ववेत्ता के थैले से खाने का एक डिब्बा निकालकर बोला—बहन हमें बहुत भूख लगी है। अगर तुम्हारे पास थोड़ा सा दही हो तो दे दो और हमारे लिए थोड़ी चाय बना दो। वैसे चाय के लिए चीनी हमारे पास है। उस महिला ने कोई उत्तर नहीं दिया। चुपचाप अंगीठी के पास गयी और उसमें भुन रहे कुकुरमुत्तों को जल्दी-जल्दी बाहर निकाल लिया। फिर वह अंगीठी की राख को झुककर फूंकने लगी जिससे आंच तेज हो जाय। इस क्रिया में उसके माथे पर लिपटा दुपट्टा खिसक गया। उसका गोरा माथा देखकर कलाकार दंग रह गया। उस महिला के बाल काले और आंखें भी गहरी कजरारी थीं। वह कलाकार अंगीठी और उसके सामने बैठी महिला पर से अपनी निगाहें पल भर को भी नहीं हटा सका। वह सोचने लगा—ऐसा रूप, ऐसा मुखड़ा पहले कहां देखा है। वैसी ही घनी भौंहे, वैसी ही कजरारी आंखें। तभी वह महिला अंगीठी के ऊपर तिकोना लगाने के लिए उठी। उसकी भौहों और बालों पर राख के कण, कलाकार की निगाहों में उतर रहे थे, वह सोच रहा था—कितने वर्षों पुरानी बात है, क्या ऐसा हो सकता है कि दो अलग-अलग व्यक्तियों के चेहरे बिलकुल एक जैसे हों—यहां तक कि उनके होंठ तक की बनावट एक जैसी हो। ऐसा लगता था जैसे

उसका तामिया रंग तो धूप में तपकर हो गया है, लेकिन आंखें तो उस पहली महिला जैसी ही हैं। बहुत आहिस्ता और खामोशी के साथ काम कर रही वह महिला हमारे लिए चाय बनाने लगी थी। जब वह झुकती, उठती या चटाई पर चलती तो उसकी चूड़ियां खनक उठतीं और उसका लहंगा जमीन में हल्के-हल्के सरकता हुआ चलता था।

कलाकार अपनी यादों में खो गया। उसी शक्ल की अतीत वाली महिला भी ऐसा ही लहंगा पहनती थी, जो जमीन पर घिसटते हुए सरसराता रहता था, लेकिन वह भूरे रंग का कोट पहनती थी और उसके काले मखमली हैट पर नारंगी रंग का "हैट-पिन" लगा रहता था। वह महिला अब बहुत दूर थी। शायद बासूत नदी ही, एक अन्य नदी में मिलकर उस समुद्र तट तक पहुंचाती है, जहां एक बार वह उस महिला के साथ रेत पर देर तक बैठा रहा था। अब गाइड ने भोजन का दूसरा डिब्बा खोल लिया था। पुरातत्ववेत्ता वहां बिछे कपड़े और उस पर रखे तांबे के बर्तनों को देख रहा था। उसे चमकता हुआ भोजन का डिब्बा अच्छा लगा। वह इस इन्तजार में बैठ गया कि कब डिब्बा खाली करें और वह लेकर जाए। लेकिन गाइड ने उसकी इच्छा समझ ली। उसने डिब्बा जल्दी से खाली करके लड़के को थमा दिया। लड़का खुश होकर डिब्बा हिलाने लगा। उसके अन्दर भोजन के कुछ दाने बच रहे थे। लड़के ने इन दानों को जमीन पर फेंक दिया। एक कुत्ता वहीं बैठा था, वह चट से उन दानों को खा गया। उधर लड़का अपने मित्रों को वह डिब्बा दिखाने लगा, क्योंकि वह एक अनोखी वस्तु थी। उस इलाके में भला ऐसा सुन्दर डिब्बा मिलता भी कहां।

अंगीठी के सामने बैठी महिला केतली का ढक्कन बार-बार उठाकर देख रही थी कि चाय का पानी खौला या नहीं। उसे लगा कि शायद आंच कम है। इसलिए आग को समेट कर उसने लकड़ियां पास-पास कर दीं। लेकिन उस समय उठ रहे धुँए से बचने के लिए उसने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं। बादल की तरह उठने वाला धुंआ, बांस के छप्पर की दरारों से बाहर जा रहा था।

अंगीठी के पास बैठी उस महिला के लंबे लहंगे के ऊपर से, उसकी टांगों और घुटनों की बनावट का साफ पता चल रहा था। कलाकार को एक क्षण के लिए वह महिला एक जादूगरनी सी प्रतीत हुई जो धुएं के गुबार में भविष्य देख सकती है।

लेकिन अतीत की महिला न तो कभी नंगे पैर चली थी और न कभी धुएं से भरी अंगीठी के सामने बैठी थी।

कलाकार अतीत में खो जाता है। समुद्र ने सवेरे-सवेरे किनारे की चट्टानों पर अपना फेन इस तरह बिखरा दिया है जैसे वह जस्ते का लावा हो।

काले मखमली हैट वाली महिला उसके पास बैठी है और सामने की बालू पर अपनी छतरी की नोक से कुछ लकीरें बनाने और मिटाने में व्यस्त है। कलाकार एक सूखी टहनी के छोटे-छोटे टुकड़े तोड़ता हुआ अपने विचारों में खोया है। समुद्र की लहरें उनके पैरों को छूकर अपना फेन छोड़ गयी हैं। उस महिला ने वहीं बैठे हुए एक दिन उस कलाकार से शादी का वादा किया था। उस क्षण कलाकार की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी। उस समय उसे सारी दुनिया एक ऐसे असीम समुद्र जैसी प्रतीत हो रही थी जिसका केन्द्र उसका हृदय था।

फिर दिन बीतते गए। जीवन-चक्र में फंसकर अचानक उसके सपने टूटकर बिखर गए। अब कलाकार के पास अपनी प्रेमिका की स्मृति के रूप में शेष थी— उसकी कजरारी आंखें, उसका भूरा कोट और छतरी की वह नोंक जिससे वह बालू पर अपने वादों को लिखती और मिटाती थी।

इधर केतली का ढक्कन खड़खड़ाने लगा था। महिला ने एक थैले से कुछ प्यालियां निकाली हैं और दस्तरखान बिछाकर, उस पर रंगीन गिलास रख दिए हैं। यह सब रखने के लिए जब वह झुकी तो उसकी लंबी-लंबी चोटी, उसके कंधों से फिसलकर नीचे लटक आयी। तभी कलाकार को याद आया कि समुद्र के किनारे वाली महिला के बाल छोटे थे, उसकी गर्दन सफेद और चमड़ी चमकदार थी। तभी हाथ में खाली डिब्बा लिए हुए वह लड़का दौड़कर आ जाता है।

दरवाजे के सामने कुछ बच्चे खड़े हैं और वे आगंतुकों की ओर आश्चर्य से देख रहे हैं। जब इस लड़के को एक और डिब्बा मिल गया तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। इस बार वह भागकर बाहर नहीं गया बल्कि एक आसनी बिछाकर वहीं बैठ गया। उसकी मां ने एक गिलास में थोड़ी चाय उसे दे दी थी और कलाकार ने उसमें चीनी की डली डाल दी। लड़के ने चीनी की डली निकालने के लिए चाय में उंगली डाल दी। गरम चाय में उसकी उंगली जली जरूर होगी लेकिन उसने आगंतुकों को देखकर उफ तक न की। फिर वह चीनी की डली की मिठास में भी तो खोया हुआ था। पुरातत्ववेत्ता उसकी इस हरकत पर मुस्कराया। वह एक क्षण के लिए अपने अतीत में खो गया जब उसने भी एक बार ऐसा ही किया था। मेजबान महिला ने चाय की केतली फिर भर दी थी और अपने बेटे की शैतानी पर मुस्करा रही थी। उसकी यह मुस्कान कलाकार की नजरों से बच न सकी। कितनी परिचित थी वह मुस्कान, सचमुच जब कोई दो व्यक्ति एक

जैसी शक्ल के मिल जाते हैं तो जाहिर है उनकी मुस्कान भी एक जैसी होती है। उस महिला के पहले ऊपर के होंठ हिले थे, फिर दोनों होंठ खुल गए थे और फिर मुस्कान से उसकी आंखें चमक उठी थीं।

कलाकार ने तुरंत अपनी जेब से चित्र बनाने का छोटा पैड निकाल लिया। जल्दी-जल्दी उसने उन पन्नों को उलट दिया जिन पर चट्टानों के चित्र बनाए थे। फिर वह अंगीठी के पास बैठी महिला का चित्र बड़ी तन्मयता से बनाने लगा। इस महिला की आकृति तो इसे परिचित सी लग ही रही थी, क्योंकि इससे पहले अनेक बार वह उसे अपने कागजों पर उतार चुका था। वह आकृति आज भी उसके स्मृति-पटल पर वैसी ही स्पष्ट थी। उसके पैड पर बन रहे चित्र को केवल लड़के ने ही देखा था। उस चित्र को देखकर लड़के को लगा जैसे उस कलाकार के पास चित्र बनाने के लिए जितने कागज हैं वे आइने की तरह हैं, जिन पर हर चीज का चित्र उसी तरह स्पष्ट दिखता है जैसे झरने के निर्मल जल में दिखता है। कुछ ही देर बाद गाइड घोड़ों को लेकर आ गया। उसने घोड़ों की लगाम कसी, उसके पेट को पट्टों से कस दिया और फिर जीन कस दी। अब वह उस महिला को अलविदा कहने गया। वह महिला चट से उठी और उसने दुपट्टे से घूंघट डाल लिया। ऐसा करते हुए उसकी उंगलियां, गाइड के बढे हुए हाथ की उंगलियों से सहज ही छू गयीं। बाकी दो लोगों ने भी अपने हाथ बढ़ाए, किंतु उसने अपने हाथ को सीने पर रखकर विनम्रता से सिर झुका लिया और उन्हें विदा किया। चलते समय कलाकार ने उस लड़के को कुछ चांदी के सिक्के दिए और उसकी पीठ थपथपाई।

अब तीनों घुड़सवार कागाबबदी की घाटी की ओर, पहाड़ी ढलान पार करते हुए बढ़ चले थे। उस समय वे तीनों घुड़सवार अपने-अपने ख्यालों में खोए हुए थे। रास्ते के दोनों ओर बेशुमार पहाड़ी लाल फूल खिले हुए थे। उस कलाकार ने अपनी जीन पर बैठे-बैठे ही झुककर एक लाल फूल तोड़ा और उसे अपने पैड के उस पृष्ठ के बीच में दबा दिया जिस पर अंगीठी के पास बैठी महिला का चित्र बना था। तभी घोड़ों की टापों से टकराकर कुछ पत्थर नीचे खड़खड़ाकर घाटी में लुढ़क गए।

उस कलाकार के मस्तिष्क में समुद्र की तरह भयानक लहरें उठ रही थीं। वे पहले तट पर काले मखमल की टोपी वाले खूबसूरत चेहरे से टकराती हैं, फिर एक ऐसी महिला से टकराती हैं जो लंबी पोशाक पहने है और उसकी चोटी पीठ पर लहरा रही है, इसके बाद वे किले खंडहरों को छूती हैं और साथ ही छूती हैं उस किले की दीवारों के नीचे उगे पहाड़ी लाल फूल को।

(2)

रात का अंधेरा घिर आया था।

एक आदमी उसी पहाड़ी रास्ते से ऊपर चढ़ रहा था। उसकी कमर में एक हंसिया खुंसा हुआ था। वह थका हुआ लग रहा था। सारे दिन वह ज्वार के छोटे-छोटे पौधों को खेत में लगाता रहा था, इसलिए उसकी कमर दुखने लगी थी। इसलिए उसके कदम धीरे-धीरे पड़ रहे थे। वह अपनी छड़ी के सहारे झुककर चल रहा था, लेकिन जल्दी ही थककर सांस लेने के लिए बैठ जाता था। वह जब रुकता तो उसके घुटने कांपने लगते थे। यह वही आदमी था जिसे गाइड ने खजाने के बारे में बताया था। उसने खेत से ही देख लिया था कि घुड़सवार वापस जा रहे हैं। तब उसे यही लगा कि घोड़ों की पीठ पर बंधे थैलों में अवश्य सोना भरा होगा। हां, वही सोना जो उसी पत्थर के नीचे सदियों से दबा था, जिस पर बैठकर वह अपनी भेड़-बकरियों को उन खंडहरों में चराया करता था। उस समय या तो वह बेहद परेशान था या इतना थक गया था कि उसकी स्थिति बिलकुल उस भूखे भालू जैसी हो रही थी जो शाम को अपने शिकार के लिए निकलता है।

जब वह घर पर पहुंचा तो एक कुत्ता दुम हिलाता हुआ उसके पास आया। लेकिन उसने उसे एक तरफ हटा दिया और अपनी कमर में खुंसा हुआ हंसिया निकालकर एक कोने में फेंक दिया। फिर अंगीठी के पास अपनी छड़ी टिकाकर वह चटाई पर बैठ गया। अंगीठी से अब भी धुंआ निकल रहा था। केतली में पानी उबल रहा था। चटाई के पास रखे तकिये पर चीनी के दो डले पड़े हुए थे। अभी किसान ज्वार के भुट्टों से, ज्वार के दाने निकालने की बात सोच रहा था कि उसकी पत्नी आ गयी। उसके हाथों की चूड़ियां चमक उठीं और उसकी लंबी पोशाक की सिलवटें सरसरा उठीं। उसका बेटा, उसका लहंगा पकड़े-पकड़े चल रहा था और साथ ही बगल में वही खाली डिब्बे भी दबाए था।

वह लड़का दौड़कर अपने पिता के पास आया और उसे अपना खजाना दिखाने लगा। अचानक उस किसान को लगा कि वे घुड़सवार जरूर यहां आकर बैठे थे। लड़के ने चांदी के वे सिक्के भी दिखाए जो कलाकार ने उसे दिए थे। किसान ने लड़के को झिड़ककर हटा दिया और उसके डिब्बे फेंक दिए। क्षणभर में वह लड़का और डिब्बे दोनों ही जमीन पर लुढ़क गए। लेकिन लड़का जल्दी ही उठा और उसने फिर डिब्बे उठा लिए। वह भागकर मां के पास गया और उसके लहंगे में मुंह छिपाकर रोने लगा।

पिता को लगा कि उसने व्यर्थ ही बेटे को प्रताड़ित किया। इसलिए उसने

उसे अपने पास बुलाया और उन सिक्कों को फिर से दिखाने के लिए कहा। वह लड़का फिर से अपने पिता के पास आ गया। उसके आंसू अभी सूखे न थे, पर वह मुस्कराने लगा था। वह सिक्के अभी उसकी मुट्ठी में ही बंद थे। लड़के ने पिता से इस बार यह भी बताया कि उस अजनबी की जेबों में सफेद कागजों के अलावा कोई चमकदार चीज भी थी। वह एक कागज पर मां का चित्र भी बनाकर ले गया है।

यह सुनते ही उस आदमी पर जैसे बिजली गिरी हो। उसके दिल में ईर्ष्या की आग भड़क उठी। गुस्से से उसकी आंखें बाहर निकल आयीं। उसका रंग उड़ गया था। मां ने बच्चे की ओर इस तरह देखा जैसे कह रही हो—ये क्या किया तूने। घबराहट से उसका चेहरा फीका पड़ चुका था। उसके चेहरे के बदलते रंग, पति ने देखे। अगले ही क्षण वह उठा और उसने अपनी पत्नी की पीठ पर इतनी जोर से मारा कि छड़ी के दो टुकड़े हो गए। छड़ी का टूटा हुआ टुकड़ा दूर जाकर गिरा। लेकिन उसने उफ तक न की। सिर्फ दर्द से छटपटाकर रह गयी। फिर वह चुपचाप अपनी हथेलियों से कमर पकड़े हुए उठी और घर से बाहर निकल गयी ताकि ठीक से रो सके। उसका बेटा भी एक हाथ में खाली डिब्बे और दूसरे से मां का लहंगा पकड़े बाहर चला गया।

पति अभी भी बड़बड़ा रहा था। उसने ज्वार की कुछ रोटियां खायीं फिर भेड़ की खाल से बना अपना हैट सिरहाने रखकर चटाई पर लेट गया।

काशावबर्दा पर्वत पर एक बार फिर शांति छा गयी। रात की अंधियारी के बढ़ने के साथ-साथ अंगीठियों की आग भी बुझ गयी थी। गांव के कुत्ते जंगली जानवरों के डर से कांपते हुए घरों के बाहर दुबक गए थे। भेड़ें घास पर लेटी हुई थीं। वह महिला भी एक चटाई पर लेट गयी थी और उसने अपने साथ लेटे बेटे को अपने ही कपड़ों से ढक लिया था।

बादल का एक टुकड़ा, किसी भयानक दैत्य की तरह पहाड़ से उतर कर झोंपड़ियों पर छाने लगा था। चट्टानों पर लगी काई पहले से ज्यादा काली दिखने लगी थी और वहां सोयी भेड़ों के झुंड पर रात का गहरापन फैल चुका था।

लाल फूल की पंखुड़ियों पर ओस की बूंदें टपकने लगी थीं। एक छोटा भौंरा, उस फूल की महक के आकर्षण में, उसके अन्दर ही सोता रह गया था। फूल की पंखुड़ियों में बंद होकर उसे यही लग रहा था कि शायद यह दुनिया इस फूल की ही तरह सुंदर और सुगंधित है।

वाखतांग अनन्यान (1905—)

अनन्यान का जन्म पोगोस—किलिसा के एक गांव में किसान के घर हुआ था। आरंभिक शिक्षा गांव के स्कूल में प्राप्त की और सन् 1915 में डिलिजेन्स के पुरोहित—स्कूल में प्रवेश किया। अनन्यान ने एक व्यायामशाला में प्रवेश लेना चाहा था किंतु इसलिए प्रवेश नहीं मिला था क्योंकि उसकी एक कविता को विद्रोही घोषित कर दिया गया था। यह कविता बाद में 'लेम टाको' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी।

अनन्यान की मुख्य रचनाएं हैं : 'नरगिस की ऊंचाइयों पर', 'गुफा के लोग', 'शिकार करते हुए' और 'लघु कथाएं' (लघु कथा संग्रह) 'हेलिश गेट्स का रहस्य' (साहस कथा)।

विश्वासघाती

वह सर्दी भरी रात थी। हमने फारस की सीमा पर बसे एक पहाड़ी गांव में ठहरने का निश्चय किया। दरअसल इरादा यह था कि गांव में रात बिताकर हम सवेरे शिकार पर चले जाएंगे। गांव पहुंचकर जिस घर में ठहरे उसका मालिक कुछ ज्यादा ही लंबा था। उसका चेहरा टेढ़ा, पीला और उदास था। उसने अपने चेहरे का एक भाग तौलिया लपेटकर पूरी तरह ढक रखा था।

मैं आग के ढेर के पास घुटनों के बल बैठा हुआ था। मेरे हाथ में शिकारियों की प्रिय स्टेनगन थी।

'कभी मैं भी शिकार खेला करता था'—हमारे उस मेजबान ने एक गहरी निःश्वास लेकर कहा—"लेकिन फिर मुझे छोड़ना पड़ा। दरअसल यह बेईमानी का धंधा है।"

"लेकिन क्या सचमुच शिकार का शौक छोड़ा जा सकता है"—मेरे साथी ने पूछा।

उस आदमी ने एक बार फिर निःश्वास ली और बोला—"एक दैत्य सर्प ने मेरा शिकार का शौक सदा के लिए खत्म कर दिया।"

'क्या सांप ने ! सचमुच यह तो कुछ अजीब सी बात है'—मैंने सोचा।

जब हमने बार-बार अनुरोध किया तो हमारा वह अल्पभाषी मेजबान आखिर मान गया। फिर आग के पास बैठकर अपनी 'नारगिल' पीते हुए उसने हमें जो कहानी सुनाई, वह इस प्रकार थी—

'एक जमाना था', उसने कहानी शुरू की, 'जब मेरा चेहरा टेढ़ा और भयानक न था। तब इसे मैं इस तरह तौलिये से ढककर लोगों से छिपाता भी न था। तब मैं ऐसा दुखी और हारा हुआ इन्सान भी न था। मैं तो बिलकुल तुम्हारे जैसा था, एकदम नौजवान और सुंदर। उन दिनों मैं अपने कंधे पर बंदूक रखकर ग्रेट मैसिस की घाटी में दूर-दूर तक शिकार खेलने चला जाता। उसी से मुझे खुशी मिलती थी। लेकिन इसी शिकार ने एक दिन मेरे चेहरे को इतना भद्दा और डरावना बना दिया।

यह कहकर हमारे उस लंबे मेज़बान सुलेमान ने अपना तौलिया हटा दिया।

उफ, उसे देखकर हमारे रोंगटे खड़े हो गए। उसके चेहरे का दाहिना भाग तो था ही नहीं। कनपटी और नीचे के जबड़े के बीच में सिर्फ एक बड़ा सा छेद था और उसके अन्दर से दिखने वाली हड्डियां बड़ी भयानक लग रही थीं। ऊपर दाहिनी आंख की जगह एक गोल काला गड्ढा था। आप सोचेंगे कि इस आदमी के चेहरे का यह हाल कोई बीस वर्ष से होगा और उसकी हड्डियों के ऊपर से मांस गल गया होगा। किन्तु बायीं तरफ का भाग यद्यपि ठीक था, किन्तु उस पर मृत्यु की भयावह छाया और एक निरंतर समाया हुआ भय स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

उसकी कहानी बड़ी रहस्यमयी प्रतीत हो रही थी और मेरी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।

"अच्छा" अब मैं बताता हूं कि ये सब कैसे हुआ और क्यों प्रकृति ने मुझे इतनी कठोर सजा दी। सुलेमान ने कहा। उसने अपने चेहरे पर फिर से तौलिया लपेट लिया था।

'वह सर्दी का मौसम था। एक दिन मैं हाथ में बंदूक लिए, मैसिस की तराई में सूखी घास के बीच से दौड़ता हुआ, एक लोमड़ी का पीछा कर रहा था। मेरी निगाहें सिर्फ लोमड़ी पर लगी थीं और मुझे कुछ भी ध्यान न था कि मैं कहां चल रहा हूं। अगले ही क्षण मुझे पता लगा कि मैं कुएं जैसे बहुत गहरे

और सकरे गड्ढ़े में गिर चुका हूं। मेरे ऊपर जो घनी झाड़ियां फैली हुई थीं, उनके बीच से ही मैं ऊपर का नीला आकाश देख सकता था।

मैंने बहुत कोशिश की। लेकिन किसी भी तरह बाहर निकलना संभव न हुआ। उस कुएं की दीवारें चिकनी और फिसलन भरी चट्टानों वाली थीं और उनमें कहीं कुछ पकड़ने या सहारे के लिए पैर रखने तक की जगह न थी। आखिर मैं हारकर एक पत्थर पर बैठ गया। मैंने सोचा, इस गड्ढ़े में असहाय की तरह मर जाना कितनी मूर्खतापूर्ण बात होगी।

अचानक मैंने देखा कि एक कोने में दो आंखें चमक रही हैं। मैंने ज्यों ही ध्यान से देखा तो मेरा शरीर एकदम ठंडा हो गया। वहां एक बहुत बड़ा सर्प कुंडली मारे बैठा था और मुझे टकटकी लगा कर देख रहा था।

मैं भय से आक्रांत, एकदम निर्जीव होकर बैठा रहा। उस सर्प के सामने मैं था और मेरे सामने वह सर्प। बस, हम एक दूसरे को घूर रहे थे। हम दोनों में से कोई भी हिलने तक की हिम्मत नहीं कर रहा था।

मैंने एक क्षण के लिए सोचा कि क्या मुझे इसपर गोली चलानी चाहिए। लेकिन अगर निशाना चूक गया और यह घायल हो गया तो क्या होगा। उस समय मेरी दशा क्या होगी। इस कल्पना-मात्र से मैं सहम गया।

सांप की आंखें जिस तरह पहले क्रोध से घूर रहीं थीं, अब धीरे-धीरे परिचय में बदलकर सिकुड़ने लगी थीं। उसने अपना चौड़ा सिर बाहर निकाला और आगे को बढ़ा। लेकिन ऐसा करते समय भी उसने अपनी निगाहें मुझ पर से हटाई नहीं।

अब मुझे ये खा जाएगा, मैंने सोचा। मेरा दिल डर से कांपने लगा। मैंने अपनी बंदूक उठाने का इरादा किया, लेकिन हाथ भी जैसे सुन्न हो गया था। वह कुंडली मारकर बैठ गया और सिर उठाकर मेरी आंखों से आंखें मिला कर देखने लगा।

मैं डर से थर-थर कांप रहा था। यह सही है कि उसकी हरकतों से शत्रुता का भाव नहीं प्रकट हो रहा था, लेकिन सांप का भला क्या भरोसा। यह ऐसा जीव नहीं होता जिससे खिलवाड़ की जा सके। दरअसल सांप की आंख से आंख मिलाकर देखने के लिए तो लोहे का कलेजा चाहिए।

मैं स्थिर होकर बैठा रहा। सांप भी अपनी जगह से नहीं हिला। लगा कि हम इस तरह अनंतकाल तक बैठे रहेंगे। लेकिन थोड़ी देर बाद सांप ने अपना सिर मेरी गोद में रख दिया। ऐसा करने से उसे मेरे शरीर की गर्मी मिली होगी

और उसे कुछ आराम महसूस हुआ होगा। फिर तो वह धीरे-धीरे सरकता गया और मेरी गोद में पूरी तरह कुंडली मारकर बैठ गया। मैंने अनुभव किया कि इस समय मुझे भी अपना मित्र भाव प्रदर्शित करना चाहिए। इसलिए मैंने उसे अपने कोट के पल्ले से ढक लिया। कुछ ही देर में मेरी गोद की गरमाहट में वह सुख की नींद सो गया।

अब ठंड से कांपने की मेरी बारी थी। सचमुच, सांप का ठंडापन महसूस करना कोई मजाक की बात नहीं है। परन्तु धीरे-धीरे मैं स्थिर हो गया। मैं सांपों की आदतें जानता हूं। अगर आप उन्हें नुकसान न पहुंचाएं और उनसे अच्छा व्यवहार करें तो वे भी आपको कुछ नहीं कहेंगे, बल्कि वे मित्र बन जाएंगे। वह सांप भी पुराना और अनुभवी था और इसीलिए मैं जिस स्थिति में था, वह मुझे उसी स्थिति में रहने देना चाहता था।

अब मैंने यही सोचकर संतोष कर लिया कि ठीक है, अगर ईश्वर इस मुसीबत के समय मुझे एक सर्प का ही साथ देना चाहता है, तो वह भी स्वीकार है। मुझे जो कुछ मिलेगा, मैं उसी में खुश रहूंगा। चलो, देखता हूं, आगे क्या होता है।

ऊपर से जो रोशनी आ रही थी, धीरे-धीरे कम होने लगी थी। जल्दी ही उस गड्ढे में अंधेरा हो गया। सांप बिलकुल बेहोश सो रहा था। उसका ठंडापन मेरी हड्डियों तक को कंपा रहा था। वह रात मैंने एक वर्ष की तरह गुजारी थी।

सवेरा होने पर सांप जागा। उसने अपना सिर उठाया और फिर देर तक मेरी ओर देखता रहा। थोड़ी देर बाद उसने अपना भयानक मुंह खोला और खुरदरी जीभ से मेरा हाथ चाटने लगा। मैंने बड़ी मुश्किल से साहस बटोरा और उसके सिर तथा गर्दन को धीरे-धीरे सहलाने लगा। हालांकि उस समय उसकी ठंडी-चिकनी चमड़ी का स्पर्श कर मैं घृणा से कांप रहा था। लेकिन इस दुलार से शायद सांप के दिल को पिघला दिया था और अब वह मेरी तरफ विनम्रता से, बड़े मित्रता भरे भाव से देख रहा था। अब उसके प्रति मेरा सारा भय दूर हो गया।

कुछ देर बाद सांप मेरी गोद से हट गया और सरकता हुआ दूर एक कोने में पहुंच गया। वहां पर वह एक सफेद पत्थर को चाटने लगा। मैं नहीं जानता था कि वह चट्टान किस तरह की थी, लेकिन मैंने बाद के दिनों में देखा कि सांप अक्सर उसे चाटता था।

दोपहर में जब शरद का सूर्य कुछ गरम हुआ तो सांप अपनी पूंछ पर खड़ा

होकर, उस गड्ढे की दीवार पर चढ़ गया और बाहर का नजारा देखने लगा। दरअसल उस समय ही मैं यह देख सका था कि वह सांप कितना दैत्याकार था। उसने कुछ झाड़ियों का सहारा लिया और धीरे-धीरे कुएं से बाहर निकल गया। मैं भी उठा और बाहर निकलने की कोशिश करने लगा, लेकिन सफलता नहीं मिली। आखिर मैं निराश होकर एक कोने में बैठ गया और रुआंसा हो उठा।

'मैं अब मुसीबतों में जकड़ा जा चुका हूं।' मैंने सोचा, लेकिन क्या इससे भी हास्यास्पद मृत्यु कोई और हो सकती है। और मृत्यु की कल्पना करते ही अपने बच्चों की याद में मेरा हृदय चीत्कार कर उठा।

काफी देर बाद मैंने ऊपर कुछ सरसराहट सुनी और देखा कि सांप उस गढ़े में झांक रहा है। उसके मुंह में एक खरगोश है। उसने एक झाड़ी का सहारा लिया और नीचे उतर आया।

और फिर, अल्लाह मुझे मौत दे अगर मैं झूठ बोलूं, उस सांप ने वह खरगोश लाकर मेरे सामने रख दिया। वह कभी मुझे देखता और कभी खरगोश को। मैं उस खरगोश को छूने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था। क्योंकि शायद सांप इस बात से बिगड़ जाता कि उस शिकार का मालिक तो वह है, फिर मैंने उसे छूने की हिम्मत कैसे की। लेकिन नहीं, वह उस खरगोश के पास तक नहीं फटका, बस सिर्फ मेरी तरफ और खरगोश की तरफ इस तरह देखता रहा जैसे मुझे यह समझाने की कोशिश कर रहा हो कि तुम भूखे होगे न, इसी-लिए यह खरगोश लाया हूं, इसे खा लो।

आखिर सांप की बात समझकर मैंने खरगोश को उठा लिया। सांप ने कुछ नहीं कहा। उस गड्ढे में बहुत सी सूखी टहनियां और पत्तियां पड़ी थीं, मैंने उन्हें इकट्ठा करके आग जलाने का इरादा किया लेकिन फिर रुक गया, क्योंकि मुझे नहीं मालूम था कि मेरी इस क्रिया के प्रति मेरे मेजबान की क्या प्रतिक्रिया होगी।

शाम को सांप फिर से मेरे पास आ गया और कुंडली मारकर मेरी गोद में बैठ गया। उसकी पूंछ का जो हिस्सा बचा था, वह मेरे पैरों के पास पड़ा था। मेरी गोद में वह फिर से सुख की नींद सो गया। अरारात की घाटी में तो गर्मी के मौसम में भी रातें ठंडी होती हैं, फिर सर्दी की रातों की क्या कहें। इसलिए मैं समझ गया था कि इस ठंडे शरीर वाले जंतु को रात में गर्मी पहुंचाकर मैं बहुत बड़ी सेवा कर रहा हूं। लेकिन इसके साथ ही मैं उस कहावत को भी नहीं भूल

रहा था—अगर तुम सांप पालोगे, तो मुसीबत को भी बुला लोगे। और तब आने वाली मुसीबत की कल्पना मात्र से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते।

अगले दिन सांप फिर गड्ढे से बाहर धूप सेंकने और कुछ भोजन की तलाश में चला गया। पहले दिन वह जो खरगोश लाया था, उसे वह उसी तरह छोड़ गया था। एक चमकदार पत्थर और लोहे का टुकड़ा मेरी जेब में पड़े थे। यह मौका ठीक था, इसलिए मैंने आग जलायी, खरगोश की खाल छील डाली और उस पर नमक लगाकर भूनने लगा। वहां बहुत अच्छी लकड़ियां तो थी नहीं। पतली-पतली टहनियों और पत्तियों से जो थोड़ी आग जली उसी से खरगोश को भून लिया। यों एक भूखा शिकारी जब मजबूर हो जाता है तो कच्चा गोश्त भी खा लेता है। खरगोश काफी नरम था, इसलिए मैंने उसका काफी हिस्सा खा लिया। लेकिन तभी ख्याल आया कि मुझे इतना ज्यादा नहीं खाना चाहिए था, क्योंकि अब जोर की प्यास लग रही थी और वहां पानी तो था नहीं, यह बात न जाने कैसे मुझे ध्यान ही न रही।

शाम को सांप घर वापस लौटा, लेकिन आज वह कुछ भी नहीं लाया था। मैंने खरगोश का आधा मांस और अंतड़ियां, खाल, सिर तथा पैर छिपाकर रख दिए थे। जब सांप वापस आया तो मैंने सोचा कि थोड़ा मांस उसे देकर, उसका कृपापात्र बन जाऊंगा। इसलिए खरगोश का बचा हुआ सारा मांस मैंने सांप को दे दिया। सांप ने वह मांस एक ही बार में गटक लिया। इसके बाद मैंने खरगोश की अंतड़ियां, पैर, सिर आदि खाल में लपेट दिए। वह इन्हें भी निगल गया। लेकिन उसने इस सारे भोजन को किसी लालची भेड़िये या कुत्ते की तरह झपटकर नहीं निगला, बल्कि उसने भूखे होने के बावजूद भी इत्मीनान से खाया।

इसके बाद तो हम और भी अच्छे दोस्त बन गए। सांप ने फिर से सफेद पत्थर को चाटा। यह ऐसा करते समय बार-बार मेरी ओर भी देख रहा था, जैसे कह रहा हो कि तुम भी इसी तरह इसे चाटो।

मैं भी पत्थर के पास गया। एक टुकड़ा उठाया जिसे सांप की जहरीली जीभ ने नहीं चाटा था। मैंने उस पत्थर के किनारों को चाटा। उस समय मुझे इतनी जोर की प्यास लगी थी कि मैं कुछ भी करने को तैयार था। मैंने यह सुना था कि फारस के रेगिस्तान में यात्रा करने वाले लोग अपने मुंह में सफेद पत्थर का एक कंकर रख लेते हैं और उसे चूसते रहते हैं। इससे थूक काफी निकलता है और प्यास कम हो जाती है।

मैंने जब उस पत्थर को चाटा तो सचमुच मेरी प्यास धीरे-धीरे कम होने

लगी थी। यों वह पत्थर एकदम बेस्वाद था, लेकिन वह प्यास बुझाने में समर्थ था—अब इसका कारण चाहे यह रहा हो कि उससे काफी थूक निकलता था, या यह कि उसमें कोई जादुई शक्ति थी—मैं नहीं जानता।

इस तरह मैंने वहां दो दिन और बिताए। लेकिन इतने समय में भूख और प्यास से मैं इतना कमजोर हो गया था कि मेरे लिए खड़ा होना मुश्किल हो गया था।

एक दिन सवेरे सांप मेरे शरीर के चारों तरफ लिपट गया और मैं उसकी कुंडलियों में पूरी तरह कैद हो चुका था।

सांप को यह स्थिति ज्यादा अच्छी लगी, क्योंकि इस तरह मैं उसके पूरे शरीर को गर्मी पहुंचा रहा था। अचानक ऊपर पंखों की फड़फड़ाहट हुई। किसी बाज का सताया हुआ एक तीतर हमारे गढ़े में आकर गिरा और एक कोने में डटकर बैठ गया। जब उसने हमें वहां देखा तो तुरंत उड़ जाने को हुआ, लेकिन सांप की गहरी दृष्टि ने उसे एकदम जड़ बना दिया था।

मैं सांप की दृष्टि-शक्ति से परिचित था, इसलिए निश्चित था कि वह पक्षी अब सांप के चंगुल से बचकर नहीं जा सकता।

सांप ने उसे घूरना शुरू किया और तीतर एकदम प्राणहीन होकर सिहर उठा। अपने शिकार पर आंखें गड़ाए हुए सांप धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा और उसकी गर्दन दबोचकर मेरे पास ले आया।

मैंने तीतर को छीलकर उसके दो टुकड़े कर डाले और उसकी खाल तथा पंख आदि सांप के मुंह में डाल दिए। वह उस पक्षी के पंख आदि सब निगल गया। मैंने तीतर के मांस पर नमक लगाया और खा लिया। इसके बाद उस सफेद पत्थर को चाटने लगा।

अब मेरी प्यास इतनी तीव्र हो रही थी कि मैं अपने होशोहवास खो बैठा और कराहने लगा। मैं बड़ी जोर-जोर से उस गड्ढे की दीवारें खरोंचने लगा कि किसी तरह कूदकर बाहर निकल जाऊं। मेरी यह दशा देखकर सांप अवश्य समझ गया होगा कि मैं बाहर जाना चाहता हूं। वह गड्ढे से बाहर निकला और एक मोटी डाल को पकड़कर उसके सहारे अपनी पूंछ लटका दी।

मैंने यह सब देखा तो चकित रह गया। कुछ क्षणों तक तो उसका आशय ही न समझ सका। जब वह काफी देर तक इसी तरह लटका रहा तो उसने अपनी पूंछ ऊपर खींच ली और फिर उसने गढ़े में अपना सिर डालकर मेरी ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा। इसके बाद फिर से पूंछ लटका दी। अब की बार उसकी पूंछ मेरे सिर से ऐसे लटक रही थी जैसे हाथी की सूंड हो।

मैं जानता था कि सांप बहुत मजबूत होते हैं और यह भी कि अगर मैं इसकी पूंछ पकड़ लूंगा तो यह मुझे ऊपर खींच लेगा। लेकिन मुझे यह भी डर था कि अगर ऐसा करने पर इसे चोट लग गयी और यह बिगड़ गया तो।

लेकिन इससे क्या होता है, मैंने सोचा, इस समय मेरी दुर्दशा हो रही है, उससे बुरा अब और क्या होगा।

बस मैंने सांप की पूंछ पकड़ ली। सांप ने जोर लगाया और उसकी पूंछ इतनी सख्त हो गयी मानो वह लोहे की छड़ हो और इस तरह उसने मुझे बाहर खींच लिया।

इतने दिनों तक नरक में रहने के बाद मैंने जब फिर से धूप देखी, अपने प्यारे खेतों को देखा अयज नदी के लहराते पानी को देखा, और देखा गांव के घरों के ऊपर से उठते हुए धुंए को—तो मुझे लगा कि मेरा पुनर्जन्म हुआ है और मैं एकदम बच्चों जैसा खुश था।

मैंने अपने प्राण-रक्षक मित्र को गले से लगा लिया और सिसकने लगा। मेरा सिर चकरा रहा था और लगा कि मैं बेहोश होकर गिर जाऊंगा। मेरे पैर बड़ी मुश्किल से संभल पाए। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा और सांप मेरे पीछे-पीछे अपना सिर उठाए घास में सरकता हुआ चलने लगा।

रास्ते में मैंने एक खरगोश देखा और उस पर गोली चला दी। सांप उस समय एकदम उछल पड़ा और भयानक आंखों से मुझे देखने लगा। लेकिन अगले ही क्षण वह आश्वस्त हो गया जब उसने देखा कि मैंने वह खरगोश उठाकर उसके सामने खाने के लिए डाल दिया है। सांप ने पूरा खरगोश निगल लिया और मैंने देखा कि वह धीरे-धीरे अपने पेट को फुलाता हुआ अंदर सरकता जा रहा है।

इस तरह दोस्ती के माहौल में हम अपने गांव पहुंच गए। शाम हो रही थी। गायें चरागाहों से लौटती हुई रंभा रही थीं। घरों के छप्पर पर धुआं उठ रही थी और कुत्ते भौंक रहे थे। सांप आगे नहीं जा सकता था, इसलिए वहीं रुक गया। गांव पहुंचकर मैंने मुड़कर देखा तो सांप सूखी घास पर लेटा हुआ था और उसकी आंखें मुझ पर टिकी हुई थीं।

घर पहुंचने पर मेरी पत्नी और बच्चे मुझसे लिपटकर रोने लगे। उन्होंने तो मेरी आशा ही छोड़ दी थी। सभी लोग यह सोच रहे थे कि मुझे मेसिस में कुर्दों ने पकड़कर मार डाला होगा।

बाद में जब उन्होंने मेरी कहानी सुनी तो लोगों के मन में सांपों के प्रति दया का भाव जाग उठा।

एक साल बीत गया। उस दिन बहुत गर्मी थी। कुत्ते अपनी जीभ को बाहर लटकाकर छायादार स्थानों में छिपे बैठे थे। मुर्गियां भी छायादार कोनों में दुबकी हुई थीं और भैंसें पोखरों में, कीचड़ में डूबी हुई गर्दन निकाले बैठी थीं।

अचानक मैंने कुछ शोर सुना। मैंने देखा कि गांव के बहुत से लोग-बूढे और जवान सभी, सड़क पर आ रहे हैं और चार अजनबियों का पीछा कर रहे हैं, जो फकीरों जैसे कपड़े पहने हैं। उन लोगों में से एक बीन बजा रहा था, दूसरा खंजड़ी बजा रहा था और बाकी दो के कंधों पर रंगीन पिटारों वाली कांवरें लटकी हुई थीं। उनके पास लोहे का एक पिंजड़ा भी था जिसमें ढेर से सांप कैद थे।

गांव के चौराहे पर पहुंचकर उन्होंने अपना सामान उतारा और पिटारों तथा पिंजड़े को खोला। फिर एक कालीन बिछा दिया और उस पर पिंजड़े में बंद सांप डाल दिए। एक कालीन पर इतने सारे सांपों को देखकर वहां खड़ी महिलाएं भय से चीख पड़ीं और बच्चों ने भी खूब शोर मचाया।

यों आपने भी उस तरह के सभी सांप देखे होंगे। उनमें एक "बदरंग" था जो पत्थर के टुकड़े जैसा था, दूसरा "गुर्जा" था जिसका बड़ा-सा चपटा सिर और शरीर भारी भरकम था, चौड़े मुंह वाला काला "अदेर" था, सतरंगी "शंखमार" था, बालों वाला "सिंगी-सांप" था, और भी बहुत सी किस्म के थे।

वे सपेरे बीन और खंजड़ी बजाते तो सांप अपनी पूंछ पर खड़े हो जाते और इस तरह हिलते जैसे वे नाच रहे हों। उनकी यह क्रिया सबके लिए तमाशा बन गयी थी।

एक सपेरा अपना साहस-प्रदर्शन कर रहा था। वह सबसे अधिक जहरीला सांप "अदेर" पकड़ता और उसे अपने सीने में रख लेता। सांप उसके सीने से खिसककर कमीज के अंदर घुस जाता और वहां से उसके पैजामे में छिप जाता। फिर अचानक वह उसकी कमीज के कालर के पास से झांकने लगता।

इसके बाद उसने दूसरा सांप उठाया और उसका सिर अपने मुंह में रख लिया। इस दृश्य को देखकर महिलाएं तो चीख पड़ीं। लेकिन सपेरा बड़ी शांति से मुस्कराया अपनी दाढ़ी हिला रहा था। एक किसान ने कहा—'इसमें कुछ नहीं है। इन लोगों ने सांपों के दांत तोड़ डाले हैं, इसलिए वे जहरीले तो रहे नहीं। ऐसे सांप को मुंह में डालने में तो मेरे बाबा को भी डर नहीं लगेगा।'

'अच्छा ऐसी बात है, ऐसा करो, अगर तुम सोचते हो कि यह जहरीला नहीं है तो एक मुर्गी ले आओ,' सपेरे ने कहा।

वह आदमी भी अपनी बात से पीछे हटने वाला न था। वह झट से एक

मुर्गी ले आया और सपेरे को पकड़ा दी। सांप ने अपनी गर्दन निकाली और बड़े गर्व से देखने लगा। उसकी आंखें गुस्से से लाल हो रही थी। उसने फुसकारा और आगे झपटकर मुर्गी की गर्दन में काट लिया। उस समय खून की सिर्फ एक छोटी सी बूंद टपकी। मुर्गे की गर्दन पर एक मामूली खरोंच भर थी। लेकिन जहर इतना तेज था कि मुर्गी हमारे सामने ही पलभर में मर गयी।

'इसको, गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना, जिससे कुत्ते न खाएं।' सपेरे ने मरी हुई मुर्गी लौटाते हुए कहा।

अब वह अपने सांपों को इकट्ठा करने लगा था। इसी दौरान उसने वहां खड़े लोगों से कहा— 'भाइयो, आप लोगों में से कोई ऐसा तो नहीं है जिसे कोई सांप घर में सता रहा हो। हम उस सांप से आपको छुटकारा दिला देंगे।'

"लेकिन क्यों, सांपों से हमें तो कोई परेशानी नहीं। सांप तो हमारे मित्र हैं।" एक बुजुर्ग ने कहा।

"अच्छा! ऐसा दुष्ट प्राणी, मित्र कब से बनने लगा?" सपेरे ने व्यंग्य से पूछा।

"जब से एक सांप ने हमारे पड़ोसी लंबू की जान बचाई।"

"अच्छा, तो यहां ऐसा चतुर सांप भी है।"

तब उन्होंने सपेरे को मेरी पूरी कहानी सुनाई। उस समय सपेरा इतनी उत्सुकता से सब कुछ सुन रहा था, जैसे कोई भूखी बिल्ली छींछड़ों को देखकर बेचैन होती है।

सपेरे ने मुझसे कहा, 'सुलेमान भाई, मुझे वह सांप दे दो। मैं उसे टिफलिस और बाकू ले जाऊंगा, जहां लोग उसे देखकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे।'

'लेकिन यह तो बेईमानी का काम है सपेरे भाई', मैंने कहा—मैं 'ऐसा कभी नहीं कर सकता।'

'सुलेमान भाई, अल्लाह गवाह है। भला इसमें धोखा कैसा। मैं उसे रेशम और मखमल की पिटारी में रखूंगा और उसे बढ़िया खाना खिलाऊंगा। यहां जंगली झाड़ियों में रहकर वह हरदम ठंड और भूख से परेशान रहता होगा। मेरे पास उसे गरमी और आराम मिलेगा। बस तुम हमें उसकी बांबी दिखा दो सुलेमान। उसे हम खुद ही पकड़ लेंगे। मैं इसके लिए तुम्हें दस तूमान दूंगा।'

'सपेरे भाई! तुम तो पैगम्बर के बंदे हो। सबको दया का संदेश देते हो। फिर तुम मुझे बुरा काम करने को कह रहे हो।' मैंने कहा और मन ही मन सोचने लगा —'अरे बेटा! अब तुम दस तूमान में एक बैल खरीद लेना।'

'सुलेमान, मैं पैगंबर से कहूंगा कि वह तुम्हारे पापों को माफ कर दे। तुम मुझे सिर्फ उस सांप की बांबी दिखा दो।'

सपेरे ने एक कपड़ा निकाला और जमीन पर बिछा दिया। फिर उसपर बैठकर हाथ ऊपर उठा लिया और दुआ मांगने की मुद्रा में कुछ बड़बड़ाने लगा। आखिर मैं उसके बहकावे में आ गया और पन्द्रह तूमान में अपने प्राणरक्षक को बेचने के लिए तैयार हो गया। ओफ! उस समय मैं भी कितना नीच और कृतघ्न व्यक्ति हो गया था।

सपेरे मेरे फैसले से बहुत खुश हुए और मेरे सर्प-मित्र की बांबी की ओर चल पड़े।

हम उसके जितने नजदीक आ रहे थे, मेरी आत्मा मुझे उतना ही धिक्कार रही थी। बस यही लगता है कि गरीबी का अभिशाप आदमी को कुछ भी बना सकता है—चोर, खूनी, विश्वासघाती।

"कोई बात नहीं," मैंने अपने आपको समझाने की कोशिश की, "सांप का क्या है, गूंगा जानवर है। वह भला विश्वासघात का मतलब क्या समझेगा। आखिर वह कोई इन्सान तो है नहीं कि मैं उसे देखकर शरमा जाऊं।"

आखिर हम सांप की बांबी तक पहुंच गए। मैं एक तरफ खड़ा हो गया। सांप अन्दर था।

एक सपेरे ने बांबी के पास रेशमी कालीन बिछा दिया। धूप के कारण उस कालीन के रंग हजारों किरणों की तरह चमक रहे थे। उन्होंने सांप को बुलाने के लिए बीन बजायी और सांप उस कालीन पर चुपचाप चला आया। मैं उस समय एक झाड़ी के पास छिप गया था। सांप की वह दशा देखकर मेरा हृदय पीड़ा से छटपटा रहा था। लगा जैसे बादशाह मेरे सगे भाई को अपनी सेना में युद्ध के लिए ले जा रहा हो।

सपेरा हल्के मधुर स्वर में एक अरबी गाना गुनगुना रहा था। साथ ही वह खंजड़ी की ताल देकर उसके घुंघरुओं को भी हिला-हिला कर बजा रहा था।

सांप ने अपनी कुंडली से सिर ऊपर उठाया और परेशान होकर इधर-उधर देखा। मैंने देखा कि उस समय वह संगीत के जादू में खोया हुआ था। अब सपेरे ने जेब से एक चमकदार चीज निकाली और सांप को दिखा कर फिर बीन बजाने लगा।

वाह! संगीत का जादू भी कितना प्रभावशाली होता है। संगीत चाहे

तो किसी को भी वश में कर ले—दुनिया की सबसे सुन्दर चीज हो, खूनी भेड़िया हो या भयानक सांप हो।

सांप उस संगीत में इतना खो गया था कि धीरे-धीरे रंगीन चमकदार कालीन से सरककर उसने सपेरे की गोद में सिर रख दिया।

इस तरह उस सांप को बड़ी चालाकी से पकड़ कर पिंजड़े में बन्द कर लिया गया। मैं थोड़ी दूर और हट गया जिससे मैं यह न देख सकूं कि वहां क्या हो रहा है। दरअसल मैं बार-बार अनुभव कर रहा था कि मैंने बहुत बुरा काम किया है और मुझे इसके लिए शर्म से डूब मरना चाहिए।

जैसे ही साँप पिंजड़े में बन्द हो गया, एक सपेरा मेरे पास आया और मुझे पन्द्रह तूमान देकर बोला—'मुझे उम्मीद है कि इस धन को तुम नेक काम में खर्च करोगे। तुमने मुझे बहुत बड़ा खजाना दिया है।'

उस क्षण, वे सिक्के, मेरी हथेली में दहकते अंगारों जैसे जल उठे थे। पिंजड़े में दोनों तरफ कुंडे लगे थे। दो सपेरों ने उसे उठाया और खुश होकर चल दिए। जब वे मेरे पास से निकले, सांप ने अचानक सिर ऊपर उठाया और मेरी तरफ घृणा भरी नजरों से देखा। वह एक बार जोर से फुंफकार उठा और पिंजड़े की छड़ों पर सिर पटकने लगा, जैसे वह उन्हें तोड़ कर निकल आएगा।

उसने मुझे पहचान लिया था। भले ही वह बुद्धि-हीन रहा हो, उसने यह समझ लिया था कि मैंने विश्वासघात किया था। मैं अपनी जगह पर तीतर की तरह जड़ होकर खड़ा था और हाथ तक हिलाने की स्थिति में न था। अगले क्षण सांप ने एक बार फिर मेरी तरफ क्रोध और घृणा की नजरों से देखा। उसने पिंजड़े की छड़ों में मुंह दबाया और फिर मेरे चेहरे पर पीला-सा झाग थूक दिया। वह थूक मेरे दाहिने गाल पर भी गया था।

उस समय यही लगा जैसे सांप ने कहा हो—अरे नीच, कुत्ते, क्या मैंने तेरी देखभाल इसीलिए की थी, क्या तुझे उस नर्क से इसीलिए बाहर निकाला था कि तू मुझे सिर्फ पंद्रह तूमान के लालच में आकर बेच देना। जा, मैं तेरे जैसे निर्दयी और कृपण-हृदय पर थूकता हूं। थू है······पतित कहीं का।

मैं भय से कांप उठा था। कुछ ही क्षणों में मैं बेहोश होकर गिर गया। उसके बाद क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम। कई महीनों तक मेरी दशा पागलों जैसी रही। हर क्षण मेरे सामने वह सांप खड़ा रहता। उसके थूक में जहर था। मेरे गाल पर पड़ते ही उस जहर ने उतने हिस्से को जला दिया था और फिर धीरे-

धीरे सारा मांस और एक आंख भी गल-गलकर निकल गये। आज मेरे चेहरे का यह जो दुर्दशा आप देख रहे हैं यह उसी विश्वासघात का फल है।

लंबू सुलेमान ने अपनी नारगिल फिर निकाल ली थी। उसमें कुछ जलते हुए कोयले रखते हुए उसने कहा—"बस यही मेरी कहानी है, मेरे शिकारी दोस्तो।"

सीरो खानज़ादियान (1915—   )

खानज़ादियान का जन्म गोरिस नगर में हुआ था। सन् 1934 में इन्होंने गोरिस के माध्यमिक-शिक्षक-प्रशिक्षण स्कूल से स्नातक-परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद बाकू के शिक्षा-संस्थान में इतिहास-विभाग में अध्ययन किया। खानज़ादियान की मुख्य रचनाएं हैं :—हमारी रेजिमेंट के लोग, पृथ्वी, कादजोरान् म्हितार स्पारपेट, और पुराने जमाने की एक किताब, (उपन्यास) लाल लिली (कथाओं और नवलकथाओं का संग्रह)।

सफेद मेमना

बूढ़ा माली नवसार्द काम करते-करते थक गया था। पास ही नारियल के पेड़ के नीचे से झरना बह रहा था। नवसार्द वहां हाथ-पैर धोकर थोड़ा आराम करने गया था। वह धूप से तपे चेहरे पर ठंडे पानी के छींटे डालने के लिए झुका ही था कि उसके मुखिया की आवाज सुनायी दी—"अरे अवसार्द, जल्दी आ ! तेरा बेटा अर्शाक आया है।"

"क्या" बूढ़ा माली आश्चर्य से बुदबुदाया ! फिर बड़ी मुश्किल से अपनी झुकी हुई कमर को सीधा करके खड़ा हो गया। अपनी वर्षों की प्रतीक्षा पूरी होते देखकर, वह बड़ी फुरती से वहां पहुंच गया था जहां वह मुखिया खड़ा था।

"क्या कहा", अर्शाक आया है, कब आया है, कहां है वह ?"

"वह गांव में है, मैंने उसको खुद देखा है। वह नीले रंग की मोटरकार में बैठा गांव में घूम रहा था। नवसार्द, तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो जो ईश्वर ने तुम्हें ऐसा योग्य बेटा दिया।"

उस समय सूर्य पहले की तुलना में दस गुना अधिक तेजी से चमकने लगा था। नवसार्द को लगा जैसे वह हवा में चल रहा है। वह खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

नवसार्द अपने गांव की ओर देखकर न जाने किन विचारों में खो गया था। लेकिन तभी अचानक उसे कुछ याद आया और वह शराब बनाने के अड्डे की तरफ तेजी से मुड़ गया।

उसने अर्शाक को पिछले दस वर्षों से नहीं देखा था। हर साल वह आशा-भरी दृष्टि से सड़क की ओर देखकर उसके आने की प्रतीक्षा करता रहा है। आज अर्शाक आया है, यह कितनी अच्छी बात है। बाग में फल पक गए हैं और नवसार्द भी अभी स्वस्थ है।

गांव में नवसार्द का कोई रिश्तेदार न था। उसका जीवन बहुत दुखभरा रहा है। उसके अपनी कोई संतान न थी। उसकी पत्नी बहुत साल पहले गुज़र गयी थी। उसका छोटा भाई और उसकी बहू भी युद्ध के दिनों में भूख से मर गए थे। बस उनका बेटा अर्शाक ही बचा था, जिसे नवसार्द ने पाला है।

नवसार्द ने एक फावड़ा उठाया और एक जगह की मिट्टी खोदने लगा। उस जगह की मिट्टी हल्की नम थी और उसमें शराब की महक थी। थोड़ी मिट्टी खोदकर उसने मिट्टी का छोटा घड़ा निकाला, जिसे उसने दस साल पहले यहां दबा दिया था। उस घड़े के ठंडे स्पर्श से वह बहुत खुश हुआ। बर्तन की शराब की भीनी खुशबू सूंघकर वह मुस्कराया और अपने आपसे बोला—"यह तो बिलकुल शेरों का पेय बन गयी है।" फिर उसे याद आया कि नदी किनारे शहतूत के पेड़ के नीचे बहुत से तरबूज पके हुए हैं। वह तुरंत वहां पहुंचा। एक तरबूज के डंठल को काटकर अलग किया और अपने कुर्ते के पल्ले से उसके ऊपर की मिट्टी साफ की। उसकी चमकदार धारियों को देखकर वह बहुत खुश हुआ। 'मेरे अर्शाक को तरबूज बहुत पसंद है', वह बुदबुदाया। फिर घुटनों के बल झुका और उस बड़े से तरबूज को बाहों में दबाकर जोर से हिलाते हुए उस पर कान लगाकर कुछ सुनने लगा। तरबूज के अंदर की आवाज़ सुनकर उसने सिर हिलाया कि ठीक है। इसके बाद वह अंजीर के पेड़ के पास आया। बड़ी मुश्किल से चढ़ पाया था पेड़ पर। उसने चिड़ियों द्वारा यहां-वहां कुतरे हुए बहुत से मीठे फल तोड़ लिए। इसके बाद छांटकर बढ़िया-बढ़िया फल एक सुन्दर सी टोकरी में भर लिए।

अब नवसार्द नदी के किनारे-किनारे उस ओर चला, जहां छह महीने का एक सफेद मेमना चर रहा था। नवसार्द ने उस मेमने को किसी खास अवसर के लिए छोड़ रखा था।

अर्शाक घर वापस आया है। इस दिन को देखने के लिए मैं जिन्दा हूं, यह कितने संतोष की बात है। नवसार्द ने मन ही मन कहा और मेमने को लेकर चल

दिया। उस समय मेमना बड़ी जोर से मिमियाया था। आओ चलो, नवसार्द ने उससे कहा था—आ जा......अर्शाक घर आया है।

वह गांव की ओर जाने वाला पठारी रास्ता चढ़ने लगा। फलों से भरी टोकरी का बोझ उसके कंधे को दबा रहा था। घड़े की शराब भी छलक रही थी और सीधा सादा मेमना या तो उसके पीछे-पीछे चलता था या कभी आगे दौड़ जाता था।

'आज इतनी जल्दी कहां जा रहे हो', जो भी रास्ते में मिलता वह यही पूछता।

'अर्शाक आया है न', बड़े गर्व से बूढ़ा नवसार्द उन्हें बताता और आगे बढ़ जाता।

रास्ते में मिलने वाले एक-एक पेड़, झाड़ी, पत्थर और झरने उसे अर्शाक के बचपन की याद दिला रहे थे। बहुत बार ऐसा हुआ है जब वह नन्हे अर्शाक को अपनी गोद में लेकर इस चढ़ाई वाले रास्ते से गुजरा है। तब अक्सर वह एक बड़े पत्थर पर बैठकर सुस्ताया करता था। अर्शाक को एक नाशपाती खाने को दे देता और अपने कुर्ते के पल्ले से उसकी नाक पोंछ देता। वह झरना भी मिला जिसका पानी पीना अर्शाक को बहुत अच्छा लगता था। नवसार्द अपने हाथ से चुल्लू बनाकर अर्शाक के मुंह में लगा देता था और इस तरह उसे पानी पिलाता। फिर वह बाग भी आया जिसके पेड़ों में अभी बेशुमार फल लगते थे और जो शरद ऋतु में भी हरे रहते थे। अर्शाक जब सात साल का था तब यहीं एक बार चेरी के पेड़ से गिर पड़ा था और उसकी टांग टूट गयी थी। तब उसके इलाज के लिए नवसार्द उसे कई मील पैदल चलकर दूर की बस्ती में एक डाक्टर के पास ले गया था।

फिर नवसार्द को याद आया जब उसने अर्शाक को शहर में पढ़ने के लिए भेजा था और उसका खर्च पूरा करने के लिए अपनी एक-एक चीज बेच दी थी। इस सबसे उसे कितनी परेशानी हुई थी, लेकिन अर्शाक को उसने ग्रेजुएट बना दिया और फिर मास्को पढ़ने के लिए भी भेजा। इसका ही फल था कि अर्शाक दुनिया में इतना बड़ा आदमी बन सका था।

नवसार्द अक्सर गांव वालों को बताता कि मास्को में अर्शाक कितना महत्वपूर्ण काम करता है, उसकी मोटरकार कितनी बड़ी है और यह कि मास्को के सबसे आलीशान घर में रहता है।

नवसार्द बहुत जल्दी ही घर पहुंचना चाहता था। घड़े की शराब छलक रही थी और सीधा-साधा डरपोक मेमना उसके आगे-पीछे चल रहा था।

आखिर वह घर पहुंचा। लेकिन घर के बाहर अशोक की मोटरकार न देखकर चिंतित हुआ।

'वह घर तक मोटर में क्यों नहीं आया' नवसार्द को आश्चर्य हुआ। फिर खुद ही उत्तर भी देने लगा--अरे, मैं भी कैसी बातें करता हूं यहां के पत्थर कितने नुकीले हैं। उसे डर लगा होगा कि कहीं मोटर के टायर न कट जाएं। यह तो अच्छा ही किया कि घर तक मोटरकार नहीं लाया।

उसका एक मंजिला घर था। ऊपर छप्पर था और नीचे कच्चा फर्श। पहाड़ की ढलान पर वह घर बिलकुल चील के घोंसले-सा लग रहा था। उसी का क्यों, वहां बने सभी घर वैसे ही लग रहे थे।

नवसार्द अपने बाड़े में घुसा। घड़ा और टोकरी जमीन पर रखकर मेमने के सामने थोड़ी घास डाल दी। अब वह इधर-उधर देखने लगा। आज पहली बार उसे अपना घर बड़ा ही दयनीय और जर्जर लगा।

"कोई बात नहीं, यह अशोक का ही घर है। यहीं वह बड़ा हुआ है। वह भला इस घर के प्रति हीन भाव क्यों अनुभव करेगा।" उसने अपने को समझाते हुए कहा और आंगन साफ़ करने लगा।

"बधाई नवसार्द, अशोक वापस आ गया है।" पड़ोस की बुढ़िया बाड़े के बाहर से ही बोली।

नवसार्द खुशी से उछलकर बोला—"धन्यवाद......धन्यवाद।"

"भगवान करे तुम्हारा परदेसी भी इसी तरह लौट आए।"

"मैंने अशोक को देखा है।"

"क्या यहां आया था।"

"नहीं, मैं दुकान पर सुइयों का पैकेट खरीदने गयी थी। वहीं पर कृषि-दफ्तर के सामने उसे खड़ा देखा था। कैसा सुन्दर लड़का है। उसे देखकर यही लगता है जैसे कोई राजकुमार हो। मैं तो उसे बस देखती ही रह गयी। भगवान तुम्हें खुश रखे।"

"धन्यवाद", बूढ़े आदमी का गला भावावेश से भर आया था। वह घर के आंगन को जल्दी-जल्दी साफ-सुथरा बनाने में जुट गया था।

पहले उसने धूल साफ की। "मैं नहीं चाहता कि मेरा बेटा अपने जूते इस धूल में गंदे करे।" एक जगह कील निकली हुई थी। उसे एक बड़े पत्थर से ठोकते हुए वह बुदबुदाया—"ऐसा न हो कि अशोक की कमीज इस कील से उलझकर फट जाए।"

अब उसने घर का दरवाजा खोला। एक चारपाई दीवार के सहारे न जाने कब से अपने भाग्य को रो रही थी। उसे देखकर वह बोला—"मैं कहूंगा—याद है, तुम किस तरह इस चारपाई पर सोया करते थे और मैं यहां फर्श पर सोता था।" चारपाई पर पड़ी चादर ठीक करते हुए वह फिर अपने आप से कह रहा था—"मैं कहूंगा—ये तुम्हारा पुराना कटोरा है जिसमें तुम खाते थे। ये देखो अर्शाक तुम्हारा लकड़ी का चम्मच है। याद है न! जिस दिन इसे मानस बढ़ई से खरीदकर लाया था, तुम कितना नाराज हुए थे कि इस पर चित्र क्यों नहीं बना है और फिर मैं एक चित्रकार से इस पर सुंदर चित्र बनवाकर लाया था।"

इस तरह अर्शाक से मन ही मन बातें करते हुए वह झरने की ओर गया और वहां से पानी ले आया। फिर आंगन, बरामदे और कमरे के फर्श पर पानी छिड़का। इसके बाद एक बार फिर झाड़ू लगाने लगा।

पड़ोस की बूढ़ी महिला ने फिर से बाड़े के बाहर से ही झांककर पूछा—'नवसार्द तुम्हें मालूम है, अर्शाक प्रधान जी के घर गया है।'

"नहीं तो, वहां कब गया।"

"बस, तुम्हारे आने से पहले ही गया है।"

"उसने देखा होगा कि घर पर कोई नहीं है, इसलिए आराम करने चला गया होगा। कोई बात नहीं, आ जाएगा, वह कोई बच्चा तो है नहीं।

"ठीक कहते हो।"

नवसार्द कुछ सूखी लकड़ियां ले आया और घर के बाहर बने अलाव के पास रख दीं। अब उसने जेब से चाकू निकाला और मेमने के पास गया। लेकिन फिर उसका विचार बदल गया। उसने फैसला किया—पहले अर्शाक को तो आ जाने दूं। और प्रधान जी के दुमंजिले घर की ओर ताकने लगा।

"वहां क्या है जो इतनी देर लगा दी। थोड़ी देर में अंधेरा हो जाएगा। अंजीर भी खराब हो जाएंगे, बेर भी बेस्वाद हो जाएंगे।"

उसने टोकरी से फलों को निकाला और खिड़की पर रख दिये। फिर वह पड़ोस से एक नया मेजपोश मांग लाया और टेबिल पर बिछा दिया। सोफे की पुरानी गद्दी झाड़ी और उस पर एक कपड़ा बिछा कर तकिया रख दिया।

अब सब कुछ तैयार था। फिर भी अर्शाक नहीं आया। "मामला क्या है, वह प्रधान के घर क्यों गया?"

नवसार्द को आश्चर्य भी हो रहा था और मन ही मन चिढ़ भी रहा था। न जाने क्यों उसके हाथ भय से कांप गए। लेकिन फिर जल्दी ही अपने को सम-

झाने लगा, "अर्शाक अब एक महत्वपूर्ण आदमी है। उसे गांव के बारे में प्रधान जी से पूछताछ करनी होगी इसीलिए रुक गया होगा और जल्दी क्या है। आ जाएगा। मेरे पास कुछ दिनों तक तो रहेगा ही। अब मैं इतनी जल्दी उसे नजरों से दूर नहीं होने दूंगा। इतने दिनों की कसर पूरी कर लूंगा।"

सूर्यास्त होने लगा था, लेकिन अर्शाक अभी तक घर नहीं आया था बूढ़े नवसार्द की चिंता बढ़ने लगी। एक बार तो उसने सोचा कि चलकर प्रधान जी के घर पता तो लगाऊँ, लेकिन फिर इरादा बदल गया।

वह बाड़े में आया और पड़ोसी के पोते से बोला—"बेटा, जरा दौड़कर जा और देखना कि अर्शाक क्या कर रहा है। कहना मैं घर पर हूं और उसका इंतजार कर रहा हूं।"

लड़का जल्दी ही लौट आया।

"क्यों, तुमने अर्शाक को देखा ?"

"हां"

"क्या कर रहा है ?"

"शराब पी रहा है।"

"तुमने बताया था कि मैं घर पर हूं ?"

"हां।"

"तो क्या कहा उसने ?"

"बोला अच्छा ठीक है।"

नवसार्द ने इन शब्दों को एक बार अपने मन में दुहराया और बोला 'तब तो इसका मतलब है कि वह जल्दी ही घर आयेगा। चलो तब तक में अलाव की आग जला दूं।'

उसने अलाव में आग जला दी। फिर वह कबाब भूनने की सलाखों को साफ करने लगा। इसके बाद घर के अंदर गया और लैम्प की धूल साफ करके उसे ले आया। अब वह टेबिल के सामने बैठकर अर्शाक का इंतजार करने लगा था।

लेकिन समय बीतता जा रहा था। गांव में सब जगह रोशनी हो गयी थी और घरों की सुंदरता बढ़ गयी थी। सड़क का शोर धीरे-धीरे कम होने लगा था। थोड़ी देर बाद, सिर्फ दूर से आने वाली कुत्तों के भौंकने की दुखी आवाज ही शेष रह गयी।

अर्शाक अभी भी नहीं आया था। आग बुझने भी लगी थी और वहां राख

का ढेर बनता जा रहा था। सफेद मेमना घास पर लेटा हुआ जुगाली कर रहा था। नवसार्द अंधेरे में टकटकी लगाए देखता रहा। उसकी आंखों पर इतना जोर पड़ रहा था कि उन से आंसू बहने लगे थे और उसका सिर भारी हो चला था। वह उठा, लेकिन उसके पैरों ने जवाब दे दिया। 'मैं क्यों उसके पास गिड़गिड़ाने जाऊं। मैं उससे उम्र में बड़ा हूं, उसे मेरे पास आना चाहिए।' वह बड़बड़ाने लगा। लेकिन फिर अपने आपको ही समझाने भी लगा। 'खैर वो बड़ा आदमी है। हो सकता है उसे प्रधानजी से कुछ जरूरी बातें करनीं हों। वह सवेरे जरूर घर आएगा।'

फिर भी वह इंतजार करता रहा। रात के दो बज गये, फिर तीन और चार। वह तब भी इंतजार करता रहा। सर्दी की वह रात धीरे-धीरे बीत गयी। बूढ़े नवसार्द की आंखें अंधेरे में टकटकी लगाकर देखने के कारण धुंधली हो गयी थीं। धीरे-धीरे वह नींद से भर गया और टेबिल के सहारे बैठे-बैठे ही सो गया।

उसे नहीं मालूम कि वह कितनी देर तक सोया। वह तो पड़ोसिन महिला की आवाज सुनकर जागा था। तब उसने आंखें खोलीं और देखा कि सूर्य की किरणें फैल चुकी हैं। 'नवसार्द ! ए नवसार्द' पड़ोसिन ने बुलाया। वह दौड़कर बाहर आया।

"आज इतनी देर तक क्यों सोते रहे।"

"लेकिन क्यों, क्या अशाक जाते समय यहां आया था।"

"नहीं," पड़ोसन ने सिर हिलाकर कहा 'तुम्हारा अशाक तो वापस जा रहा है। वो देखो सड़क की तरफ देखो।'

नवसार्द को लगा जैसे उसके सिर पर पहाड़ टूट पड़ा हो। वह जल्दी से छप्पर के झुके हुए हिस्से की तरफ से ऊपर चढ़ गया और वहां से देखा अशाक की मोटर कार धूप में चमकती हुई, सड़क पर तेजी से चली जा रही थी और नवसार्द की नज़रों में वह धीरे-धीरे छोटी, और छोटी होती जा रही थी।

नवसार्द अब एक बूढ़े आदमी की तरह कांपते पैरों से चल रहा था। वह धीरे-धीरे बागान की ओर चल पड़ा था। उसकी डबडबाई आंखें जमीन में धंसी हुई थीं। आज उसकी कमर सबसे ज्यादा झुकी हुई थी और वह सफेद मेमना आज उसके पीछे-पीछे उछलता हुआ चल रहा था।

कज़ाक गुलनज़रियान (1918--   )

गुलनज़रियान का जन्म येरेवान में हुआ था। येरेवान विश्वविद्यालय के दर्शन-शास्त्र विभाग से स्नातक होने के बाद, महान राष्ट्रीय युद्ध में भाग लिया। इसके बाद 'इन्स्टीट्यूट आफ लिटरेचर' में काम किया। वहां अनुसंधान कार्य करने के साथ-साथ गुलनज़रियान ने साहित्यिक गतिविधियों में भी भाग लिया। इनके मुख्य ग्रंथ हैं—खेतों के मेहमान और मेज़बान, कौन जानता है, अच्छे यात्री, गुड मार्निंग मम्मी, (लघु कथाओं का संग्रह) कस्बे की सुबह, दोपहर और सोना खोदने वाले (कहानियां) नराना (उपन्यास)

छठवां आदेश

सभी कहते थे कि वह एक महान कवि था।

वह ईश्वर में विश्वास करता था, मेरी-मैगडेलीन का अनुयायी था। लेकिन वह धार्मिक प्रवृति का न था। यहां तक कि वह आत्म-त्याग को मूर्खता मानता था। इसके अलावा, जो लड़कियां उसके साथ रहती थीं, वे उसे पूरा मर्द मानती थीं। उसके होंठ मोटे थे और मुंह अपेक्षाकृत बड़ा था। उसके बाल काले और घुंघराले थे। उसके चेहरे की विशेषता थी—उसकी मदभरी आंखें जो पहली ही झलक में किसी को अपना बना लेती थीं। वह कभी टाई नहीं बांधता था, क्योंकि पहाड़ों पर टाई नहीं बांधते। उसने कभी नये फैशन को भी नहीं स्वीकार किया।

यूनिवर्सिटी के साफ-सुथरे और शांत लड़कों को लड़कियां "दब्बू" कहती थीं, लेकिन पारगेव—अरमाज को "गुहामानव" कहती थी—क्योंकि उसके मुंह में काली पाइप हर वक्त सुलगती रहती थी और वह गंदे चुटकुले सुनाने में, अपनी मां के सामने भी संकोच नहीं करता था।

यों तो वह सभी के लिए अजूबा था, लेकिन युवतियों के लिए नहीं। वे तो बस उसे प्यार ही करने लगती थीं।

"छठवां ईश्वरी आदेश है : व्यभिचार करो ।"

लेकिन दो हजार साल पहले एक मछेरे और एक बढ़ई को जीवन के बारे में भला क्या जानकारी रही होगी, जब उन्होंने मेरी-मेगडेलीन के पास बैठकर अपने पवित्र ग्रंथ लिखे थे ।

आस्मिक एक कुंवारी लड़की थी । गेगम तो यहां तक कहती थी कि आस्मिक एक दिन नये ईसा को जन्म देगी और वह ईसा हमारी सभ्यता को मिटा देंगे । इसके बाद पहला बंदर फिर से कुल्हाड़ी का आविष्कार करेगा, जिससे आणविक राकेट बनाने वाले एक नये समाज की शुरुआत हो सके ।

वास्तव में हर पीढ़ी, अपने-अपने ढंग से कयामत के दिन का अर्थ लगाती रही है ।

हां तो आस्मिक एक कुंवारी लड़की थी । उसने काला पाइप और एक झलक में आकर्षित कर लेने वाली मदभरी आंखें भी देखीं । लेकिन फिर भी वह उनके वश में नहीं हुई । उसकी सहेलियां उससे चिढ़ी हुई थीं । लड़के भी चिढ़कर कहते—'अरे आस्मिक ! हुंह ! उसमें भला कौन सी अच्छी बात है । उसके साथ चलना, हंसना या बातें करना तो कुछ अजीब सा ही लगता है । जानते हो वह जिन्दगी में केवल एक बार बोली थी, जब उसके पैर में कील चुभ गयी थी ।'

सब यही मानते थे कि प्रकृति ने उसे इतना मासूम बनाकर यों ही अपनी मेहनत बेकार कर दी । अरे देखो तो सही, वह पारगेव-अरमाज़ तक से प्रभावित नहीं हुई । हां, यह जरूर है कि पारगेव ने उसे देखा था, और उसने भी इसलिए देखा, क्योंकि आस्मिक, सारी लड़कियों में सबसे ज्यादा उदास किन्तु आकर्षक थी । लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण कारण शायद यह था कि वह उसे अंधी प्रतीत हुई, वरना वह उसे देखकर भी अनदेखा कैसे कर सकती थी ।

"आओ थियेटर चलें ।"

आस्मिक के सामने बिजली सी कौंध गयी थी ।

"आओ भी ! चलो ! आज मैं बहुत उदास अनुभव कर रहा हूं"

"क्या तुम थियेटर तभी जाते हो, जब उदास अनुभव करते हो ।"

"नहीं ये बात नहीं है ।"

"और जेम्मा का क्या हुआ ।"

"वह तो एकदम बोर लड़की है ।"

"लेकिन क्या मैं बोर नहीं लगती ।"

"हम तो एक दूसरे को जानते भी नहीं हैं, फिर मैं अभी से कैसे कुछ कह सकता हूं।" पारगेव ने मुस्करा कर कहा।

"क्या तुम सचमुच मुझे......... ।"

"हां"

"लेकिन क्यों"

"तुम नयी हो, मासूम हो.........और क्या-क्या हो.........मैं खुद भी नहीं जानता"

"तब तो मैं बिलकुल नहीं जाऊंगी।"

"अच्छा, तब तो तुम जरूर जाओगी।"

उस समय सभी लोग चकित रह गये थे, जब आस्मिक ने जाना स्वीकार कर लिया था।

उस शाम थियेटर में एक जार्जियन कलाकार अपने दल के साथ आया था। थियेटर में आधा शहर उसका नाटक देखने आया था, जिसमें एक जार्जियन ओथेलो, आरमेनियन डेस्डीमोना को अपने वश में कर लेता है।

और उसने डेस्डीमोना को उसी पारंपरिक ढंग से वश में कर लिया जैसी वह होती आयी है। आस्मिक पर उस दृश्य की जो भावात्मक प्रतिक्रिया हुई, उसे देखकर पारगेव चकित रह गया था।

"चलो, काफी हाउस चलें, थियेटर से बाहर निकलते हुए पारगेव ने कहा।"

"अभिनय काफी प्रभावशाली था न"

"क्यों नहीं था, और फिर जब तुम साथ हो तो।"

"क्यों, मैं तो कुछ बोली भी नहीं।

"छोड़ो जाने दो, चलो काफी हाउस चलें। मेरा मन काफी पीने को हो रहा है।"

"लेकिन मेरा मन नहीं है।"

"अरे आओ भी......... ।"

काफी हाउस में घुसते ही तीन स्कूली लड़कियां झपटकर उसके पास आयीं। उन्होंने अपने बालों को बड़े फैशन से सजा रखा था। तीनों ने अपनी आटोग्राफ-बुकें पारगेव के सामने रख दीं। पारगेव ने उन्हें अपने हस्ताक्षर देकर कृतार्थ क्या किया, वे एकदम मशहूर हो गयीं। उस क्षण से उनकी आटोग्राफ-बुक ऐतिहासिक दस्तावेज जो बन गयी थीं।

शीघ्र ही वे तीनों सुकेशियां जा चुकी थीं।

"मैं देख रहीं हूं कि तुम लोगों में काफी लोकप्रिय हो।"

आस्मिक ने बड़ी व्यंग्यभरी मुस्कान के साथ कहा "हां, मैं बहुत अच्छा लिखता हूं। तुम देखना एक दिन आरमेनियावासी मुझे महान कवि के रूप में स्वीकार करेंगे।"

"नहीं, कभी नहीं"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा"

"यही कि वे तुम्हें कवि नहीं मानेंगे, क्योंकि तुम्हारे अंदर अभी कवि की प्ररणा नहीं है। तुम तो अभी सिर्फ अपने को और अपनी योग्यता को प्यार करते हो।"

"इसका मतलब यह हुआ कि मैं योग्य हूं।"

"हां वो तो है, और प्रतिभावान भी हो।"

"तो फिर किस बात की कमी है ?"

"यह मैं नहीं जानती।"

"क्या पहले कभी किसी ने तुम्हें प्यार किया था। मैं यह नहीं पूछ रहा हूं कि क्या तुमने कभी प्यार किया है। लेकिन तुमने अपने किसी न किसी अध्यापक पर तो जरूर बिजली गिराई होगी।"

"नहीं, मैंने कभी प्यार नहीं किया और मैं यह भी नहीं जानती कि उसका अन्य बातों से भला क्या रिश्ता है। सब बेकार की बातें हैं।"

"हम प्यार करने के लिए जीते हैं", पारगेव ने लापरवाही से कहा—"हम कविताएं लिखते हैं और पिछले दो हजार सालों से हम आरमेनियावासी सिर्फ प्यार करने के लिए ही जीते रहे हैं।"

"ठीक है, तो करो प्यार।"

"लेकिन किसे ?"

"मुझे"

पारगेव हंस पड़ा। "मैं तो करूंगा, लेकिन तुम पसंद नहीं करोगी। मैं तो मेरी-मैगडेलीन को मानता हूं। और तुम कुंवारी लड़की हो।"

"मैं जानती हूं, और लोग तो मेरे बारे में यह भी कहते हैं कि मैं एक नये ईसा को जन्म दूंगी।" आस्मिक ने हंसते हुए कहा। फिर उसने वेटर को इशारे से बुलाया।

"मेरे पति के लिए एक गिलास फ्रेंच ब्रांडी ले आओ।"

वेटर चला गया। पारगेव ने जानबूझकर कुछ परेशानी प्रदर्शित की।

"तुमने क्या कहा।"

"अरे, क्या तुम एक गिलास फ्रेंच ब्रांडी भी नहीं पी सकते हो।"

"हां...हां...वो तो पी सकता हूं।"

"घबराओ नहीं, बिल का भुगतान मैं करूंगी। इसमें संकोच करने की कोई बात नहीं है। आखिरकार हम दोनों सहपाठी भी तो हैं।"

वेटर लौट आया—"माफ कीजिएगा, मैं यह पूछना भूल गया कि फ्रेंच ब्रांडी की कौन सी किस्म आप पसंद करेंगे।"

"मेरे पति सबसे बढ़िया ब्रांडी पीते हैं, वही ले आओ।"

आस्मिक की बातों पर पारगेव को विश्वास नहीं हो रहा था।

"इस तरह क्यों घूर रहे हो? अच्छा नहीं लगता!" उसने कहा और हंसने लगी।

"लेकिन जो कुछ हो रहा है, उसमें बहुत मजा आ रहा है।"

"अरे अभी तो और भी मजेदार बातें होंगी। हम जनवरी की छुट्टियों में शादी कर लेंगे।"

"तुम जानती हो, अगर मैं इस तरह शादी करता गया होता तो आज मेरी कितनी पत्नियां होतीं।"

"लेकिन मेरे साथ तो शादी करनी पड़ेगी। मैं उन सबसे अलग हूं।"

जब वे वहां से चलने लगे तो आस्मिक ने कहा—"मिस गोर तो मुझसे भी ज्यादा सुंदर हैं और मिस नाजिक तो और भी मासूम हैं। फिर रुककर बोली—'तुम इस तरह पाइप पीते हुए अच्छे नहीं लगते। और सच कहूं तो तुम्हें पाइप पीना भी नहीं आता। अब मत पीना।'

अगली सुबह पारगेव आस्मिक के बारे में सोच रहा था। वह उसके बारे में जितना ज्यादा सोच रहा था, उस पर उतना ही ज्यादा क्रोध आ रहा था। उसने आइने के सामने से गुजरते हुए अपना प्रतिबिंब देखा। उसकी पाइप अच्छी लग रही थी। आस्मिक गलत कह रही थी। वह पहले की तरह अपनी पाइप पीता हुआ युनिवर्सिटी के लिए चल दिया। युनिवर्सिटी के बरामदे में प्रोफ़ेसर लालयिआन ने रोक लिया।

"मेरे नवजवान दोस्त! मैंने तुम्हारी पुस्तक पढ़ी है और मुझे अच्छी लगी है।"

"धन्यवाद"

"इसमें धन्यवाद की कोई बात नहीं है। अगर तुम अहंकार से बच सके तो एक दिन अवश्य महान कवि बनोगे।"

"क्या कह रहे है आप।"

"परेशान मत हो, तुम्हारी क्लास शुरू हो रही है, आओ।"

एक पीरियड खत्म होने और दूसरे के शुरू होने के बीच जो समय मिलता है, उसमें अक्सर छात्रों को बातें करने का मौका मिल जाता है। ऐसी ही एक बात आस्मिक ने कही, जिसकी उससे कभी आशा न थी।

"आज शाम को मेरी चाची के पास चलोगे"

"किसलिए"

"वह पुराने विचारों की है, कहने लगीं जब तक मैं तेरी पसंद को देख न लूं शादी के लिए कसे हां कर दूं।"

"बंद करो ये सब बातें, पारगेव ने चिढ़कर कहा था।"

"अरे तुम फिर से पाइप पीने लगे।"

"मुझे भला कौन रोक सकता है।"

"अगर तुम इसी तरह पाइप पीते रहे तो मैं तुमसे शादी नहीं करूंगी।"

"मैंने कहा न, ये बकवास बंद करो।" पारगेव ने गुस्से से कहा।

"नाराज मत हो। मैंने तुम्हें यह बात कल शाम को ही बता दी थी।"

और आश्चर्य की बात तो यह है कि इस विरोधाभास के बावजूद भी वे शाम को मिले।

"सब लोग यही सोचते हैं कि तुम एकदम कुंवारी हो।"

"वो गलत कहते हैं, तुम्हारा कालर गंदा है।"

"इससे तुम्हें क्या।"

"मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने पति का ध्यान रखूं।"

मैं तुम्हारे इस मजाक को समझ नहीं पा रहा हूं।"

मैं मजाक नहीं कर रही। मैं पूरी गंभीरता से बात कर रही हूं।"

"लेकिन..........।"

"यही कि तुम मुझे प्यार करते हो।"

"पर इसके लिए मैं अपने आप पर जबरदस्ती नहीं कर सकता।"

"उसकी जरूरत भी नहीं है। जरा अपने दिल से पूछो।"

"मैं अपने शब्द वापस लेती हूं। अब हम चाची के घर नहीं जाएंगे।"

तभी पारगेव की जेब में चाबियों का गुच्छा खनक गया।

"आओ चलो"

"लेकिन कहां"

"अरे आओ तो........"

"लेकिन मैं तो यूंही मजाक कर रही थी। मेरी कोई चाची नहीं है।"

"कोई बात नहीं, आओ चलो।"

लेकिन आस्मिक बैठ गयी। उसका सूती स्कर्ट हवा से थोड़ा फूल गया था।

"तो तुम क्या कह रही थीं कि हम शादी करेंगे" पारगेव ने भारी आवाज़ में पूछा।

"नहीं, बिलकुल नहीं"

लेकिन तभी पारगेव ने उसका चुंबन लेकर उसे बाहों में भर लिया।

"लेकिन मैं तुम्हारी शादी का इरादा यहां पूरा नहीं कर सकती" कहकर वह मुस्काने लगी।

"तो फिर तुम यहां क्यों आयीं।"

"तुम बहुत बिगड़ चुके हो, तुम्हें लगता है हर चीज़ बहुत आसानी से मिल जाती है। चलो चलें।"

"नहीं, तुम कहीं नहीं जाओगी।"

"बेवकूफ मत बनो! तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं जाऊंगी, और तुम्हें मिलना हो तो शयनशाला में आ जाना।"

पारगेव ने अब तक क्रोध, आश्चर्य और चोट के भाव तो जाने थे, लेकिन प्यार का अनुभव नहीं किया था।

"बुरा मत मानना" आस्मिक ने कहा और अचानक उससे लिपट गयी।

"इससे पहले तुम्हें कभी किसी ने प्यार नहीं किया। वे तुम्हें धोखा देती रहीं और तुम समझते थे कि तुमने उन्हें धोखा दिया है। चलो, मैं तुम्हारे घर चलूंगी।"

और सचमुच, पारगेव की पहली वास्तविक कविता ने उसी दिन जन्म लिया। वह कविता एक बहुत असामान्य और घृणित लड़की के बारे में थी।

पारगेव में इस अचानक परिवर्तन से उसके मित्र बड़े परेशान थे। उसने अचानक पाइप पीना छोड़ दिया था और अब उसकी कमीज़ भी एकदम धुली हुई रहती थी।

यह सही है कि उन्होंने उसी समय तो शादी नहीं की, क्योंकि अक्सर वह आस्मिक के शयनशाला गृह की खिड़की के सामने घंटों इंतजार करता देखा जाता था। चौराहे पर पड़ी बेंच पर जब वे बैठे होते तो पारगेव स्वयं विवाह के प्रस्ताव बार-बार रखता था। किंतु जब पारगेव अरमाजा टाई बांधना सीख गया तो वह बिलकुल आम लोगों जैसा हो गया। उसके बारे में केवल आस्मिक की ही अलग राय थी। वह सचमुच बिलकुल अलग सोचती थी और इसी कारण वह खुश थी।

अविग अवाकियान (1919—)

अविग अवाकियान का जन्म तेहरान में हुआ था। सन् 1946 में वह सोवियत आरमेनिया में रहने आए और येरेवान विश्वविद्यालय के भाषा-विज्ञान विभाग में काम करने लगे। अवाकियान की मुख्य कृतियां हैं :—दहकती पृथ्वी, और नसेली दलारयान (उपन्यास) 'कल' (कहानी), शहरे-शाद, एक मेरी नगर (कथा-संग्रह)

दक्षिणी बुख़ार

एक हज़ार साल बाद भी दक्षिण के निवासी, बूढ़े शिकारी "बाबा" को याद करेंगे और एक हज़ार साल बाद भी पोस्त के खेतों में काम करने वाले किसान जब धूप में थके हुए, उस पहाड़ी की ढलान पर खड़े हों तो उन्हें अपने पूर्वजों की कहानियां याद आएंगी जिनका मुख्य पात्र बाबा होता है।

मुझे पहाड़ पर मिले उस बूढ़े आदमी की बात याद है। मैं नीचे तीन बार गया हूं और बांस के जंगलों को बहुत गहराई से देखने की कोशिश की है। लेकिन मैं शेरों का पीछा करने नहीं गया था। दरअसल मेरे पिता कहा करते थे कि वहां दूर एक झरना है, जिसका पानी नीला है। मैं वही झरना देखना चाहता था।

हम बूढ़े आदमी की बात सुनकर हंस देते क्योंकि बाबा बहुत बूढ़ा हो चुका था।

बाबा अपने जीवनकाल में उस झरने को तो नहीं खोज सका था। लेकिन हमने उसके अवशेषों को खोज लिया था और उन्हें पहाड़ी की ढलान पर लाकर दफना दिया था।

बाबा के बाद गांव में सैफी बंधुओं की चर्चा गरम हो गयी। उनमें सबसे बड़े भाई का नाम था वली सैफी। उसने अपने बाकी दो भाईयों को अमरीकी

मोटर-बसों का एक दस्ता लूटने के लिए भेजा था और स्वयं गांव में रुक गया था। लोग कहते हैं कि उसने एक अमरीकी को चालीस बोतल शराब और चालीस किलोग्राम अफीम देकर एक दूरबीन वाली बंदूक और उसके साथ कारतूस के कई बक्से खरीदे थे। वह बांस के जंगल में तो जाता था, लेकिन उसे बाबा की तरह घने जंगल के बीच भटकने की जरूरत नहीं होती थी। उसके पास तो दूरबीन वाली बंदूक थी। वह जंगल में जाता और आधा किलोमीटर से ही जो शेर दिखाई देता उसे गोली मार देता। फिर अपने शिकार को कंधे पर टांगकर गांव में गर्व के साथ लौट आता। उस समय उसकी चाल देखने योग्य होती थी।

इन्हीं दिनों की बात है। अगस्त की एक दोपहर थी। हम असीरियन जार्ज के खुले हुए रेस्तरां में बैठे जिन पी रहे थे और बहुत बोर हो रहे थे। हम सभी गर्मी से परेशान एक दूसरे की तरफ देख रहे थे और यही इंतजार कर रहे थे कि कोई तो कुछ कहकर हंसना शुरू करे। हम पांच व्यक्ति थे—तीन अमरीकी सिपाही—एक पूक, हेरी और रिबे, लाल सेना का एक आदमी जार्जेन होहन्निसियान और मैं।

दूसरी तरफ सड़क के उस पार एक पहाड़ पिरामिड की तरह खड़ा था। स्थानीय निवासी इसे "कोहे-मार" यानी सांपों का पहाड़ कहते थे। इसकी तराई में बनी सड़क पर घर लौट रहे किसान दिखाई दे रहे थे। उस समय वे लोग पोस्त के खेतों से लौट रहे थे। हम दूर से उन काले और झुके हुए लोगों तथा उनके चलने से उड़ने वाली सफेद धूल को बहुत साफ़ देख रहे थे। जब ढलान खत्म हो गयी, वे कुछ देर के लिए नजरों से ओझल हो गए और काफी देर बाद फिर दिखे। हम उनके चेहरे देखकर समझ जाया करते थे कि आज की शाम ठंडी होगी या नहीं।

और इसके बाद अपने कंधे पर मरा हुआ शेर का बच्चा लादे वली सैफी दिखाई दिया। सड़क पर शहंशाह की तरह चलता था। वह अपनी पीली मूंछों के बीच से हमारी तरफ कनखियों से देखता और हमें नमस्कार करता।

उसे देखकर जार्जेन बहुत चिढ़ता और अपनी स्वचलित बंदूक के कुंदे पर जोर से हाथ पटकता। वह कहता—'मुझे बस इजाजत दे दो। मैं इस आदमी को कुत्ते की तरह चीर दूं तो कहना। बाबा के बाद कैसा आदमी आया है। हवा में दूरबीन वाली बंदूक चलाता रहता है।'

एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि मैंने अचानक बांस के जंगल में जाने का इरादा कर लिया। "कल सुबह से पहले" मैंने जब मित्रों से कहा, "मैं बांस के जंगल में

जाऊंगा। मैं नीला झरना खोजना चाहता हूं।' उस समय हम असीरियन जार्ज के खुले रेस्तरां में बैठे हुए थे। मेरी बात सुनकर बिना किसी स्पष्ट कारण के, वे सभी लोग खड़े हो गए। मैं उनकी अचरज से फटी हुई आंखें बड़ी देर तक देखता रहा। तभी मैंने उनकी नज़रों से एक बहुत असामान्य सी अभिव्यक्ति सुनी—"इसे दक्षिणी बुखार चढ़ गया है" यानी मैं मौत के मुंह में जा रहा हूं।

थोड़ी देर बाद मैंने घने कुहरे के बीच जार्जेन को जाते देखा। उसने एक बार अपनी घड़ी की तरफ नजर डाली और चला गया था। अमरीकी सिपाही रिवे, हेरी और पूक भी दूसरी दिशाओं में चले गए। उनमें से एक तो गटर में गिरते-गिरते बचा। उसे असीरियन जार्ज उठाकर लाया और उसके सिर पर गीला तौलिया रखने लगा। बाकी लोग धीरे-धीरे वहां से खिसक गए और पता नहीं कहां गायब हो गए।

मैं दिन निकलने से पहले ही चल पड़ा। उस रात हवा बिलकुल नहीं चली थी। धतूरे की चौड़ी-चौड़ी पत्तियां सुस्त होकर लटकी हुई थीं। रास्ते में मुझे कुछ गांव वाले भी मिले। उनसे बातें भी हुईं। वे सब बहुत दुखी थे। कहने लगे—"लगता है सारी दुनिया से बादल गायब हो गए हैं, इसी लिए वर्षा नहीं हुई। वैसे दुनिया कैसी चल रही है।"

फिर उन सबने एक साथ पूछा—"इस रास्ते से कहां जा रहे हैं साहब।"

"मैं बांस के जंगल में जा रहा हूं" मैंने उत्तर दिया। "बाबा कहते थे कि वहां एक नीला झरना है। मैं उस नीले झरने को खोजने जा रहा हूं। बाबा को तुम जानते हो।"

किसानों ने एक-दूसरे की तरफ देखा। फिर एक फीकी हंसी हंसकर ढलान पर स्थित अफीम के खेतों की चले गए।

पहाड़ की चोटी पर अभी-अभी सूर्य की पहली किरण पड़ी थी और बांस का जंगल सुनहला होकर चमकने लगा था। वाह! क्या चमक थी। सूर्य से भी अच्छी, सूर्य से भी ज्यादा दमकने वाली।

बांस के पेड़ों को पार करता हुआ मैं आगे बढ़ने लगा था। और यही सोच रहा था कि मेरे जीवित लौटने की तो कोई आशा नहीं है।

मुझे नहीं मालूम कि मैं कितनी दूर तक चलता रहा था। लेकिन अंततः मैं झरने तक पहुंच गया था। बहुत सुंदर झरना था। उसका पानी गहरा, नीला और बिना झाग वाला था। मैं उसके किनारे बैठ गया और बाबा को याद करने लगा। ठंडी हवा ताजगी पैदा कर रही थी और मैं उस समय तक वहां बैठा रहा

जब तक कि तेज हवा के झोंकों से बांस पेड़ सरसराने नहीं लगे। धीरे-धीरे हवा गरम और उमस भरी हो गयी थी।

"हमारी दुनिया में तुम्हारा स्वागत है" मुझे एक थकी हुई आवाज सुनाई दी। "हजार-हजार बार स्वागत है।"

मैंने अपनी बंदूक उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, जो सूखी घास पर पड़ी हुई थी।

"हां...हां, मार डालो हमें। हमारी खाल खींच लो और लोगों के सामने शान से खूब अकड़कर चलो।"

यह बात एक बूढ़े शेर ने कही थी। मेरा ख्याल है वह दुनिया का सबसे बूढ़ा शेर था। मैंने देखा, उसने मेरी बंदूक पर रखा अपना पंजा हटा लिया था और मेरे सामने खड़े होकर बातें कर रहा था।

"ये वली सैफ़ी कौन आदमी हैं।" शेर ने पूछा—"कौन है वो।"

मैंन समझ लिया था कि शेर अकेला न था। बांस के उस जंगल में चारों ओर कई शेर छिपे हुए सब कुछ देख रहे थे।

मैंने कहा—"वो कैसा आदमी है, यह तुम इतनी-सी बात से समझ लो कि उसने अपने दो भाईयों को अमरीका की बसों को लूटने के लिए भेज दिया है। उसके पास दूरबीन वाली बंदूक है जिससे वह तुम्हें मार सकता है। तुमसे आधा किलोमीटर दूर बैठकर वह अपनी बंदूक की दूरबीन से निशाना साधता है और तुम्हारे गोली दाग देता है।

"लारेस्तान के बाबा को तुम जानते हो?"

"अवश्य जानता हूं।"

बूढ़े शेर ने एक बार मेरी परिक्रमा की। मैंने उस समय उसकी जर्जर भूरी अयाल और तेज आंखों को बड़े ध्यान से देखा।

"वह इस बांस के जंगल में अपनी मरम्मत की हुई बंदूक लेकर आया करते थे", उसने कहा—"हम उन्हें तब तक प्यार करते रहे जब तक बूढ़े नहीं हो गये और उन्होंने हमें प्यार करना नहीं छोड़ा। उसके बाद वह हममें से किसी न किसी को मारने लगे थे और उसकी लाश उठाकर ले जाते। तब एक दिन मेरे कुटुम्बियों ने उनका काम तमाम कर दिया। तुम जरा वली सैफ़ी को इस बांस के जंगल में तो ले आओ।" फिर एक क्षण रुककर बोला—"सुन रहे हो! यह हम सबका आदेश है। तुम उसे यहां लेकर आओगे।"

इसके बाद उसने जंगल की तरफ मुंह करके देखा। वहां छिपे हुए शेर

तुरंत सामने निकल आए। उनकी अयाल विनम्र होकर लहरा रही थीं, पूंछ झुकी हुई और आंखें जैसे दया की भीख मांग रही थीं।

"वली सैफ़ी को यहां ले आओ।" उन सबने अपना पंजा उठाकर एक स्वर में कहा।

बूढ़ा शेर बोला—"वली सैफ़ी ने इन सबको शोकमग्न बना दिया है। वह इनके बच्चों को मारकर अपने कंधों पर और इनके माता-पिता की लाशों को बैलगाड़ियों में लदवाकर ले गया है।"

सभी शेरों ने एक साथ अपना मुंह ऊपर उठाया और उनका दुखी स्वर पूरे वातावरण में गूंज उठा। उनकी आंखों से उस समय आंसू बहते देखकर मेरा मन दुख से भर गया था।

"ठीक है! मैंने कहा—" मुझे अब जाने दो। मैं वली सैफ़ी को यहां लाकर छोड़ जाऊंगा।

"ठीक है", शेरों ने गुर्राकर कहा और खुश होकर अपने पंजों से जमीन खुरचने लगे।

बूढ़े शेर ने मेरी ओर देखकर कहा—"इस झरने का पानी तो पी लो।"

मैंने वह गहरा नीला जल पीकर उनसे कहा—"ठीक है। कल सुबह आऊंगा। अब मुझे जाने दो।" "मैं तुम्हारे साथ जंगल की सीमा तक चलूंगा", बूढ़े शेर ने कहा—"अपनी बंदूक उठा लो।"

मैंने बंदूक उठा ली और उसे इस तरह घृणा से दूर फेंक दिया जैसे लोग मरा हुआ सांप फेंक देते हैं।

"अब इसकी जरूरत नहीं है।" मैंने कहा।

सभी शेर एक बार फिर खुशी से गुर्राए और जमीन खरोचने लगे।

जंगल से लौटते समय वह बूढ़ा शेर मुझे रास्ता दिखा गया। इस दौरान मैंने देखा कि कान से पूंछ तक वह गहरी पीड़ा और दुख में डूबा हुआ था।

विदा लेते समय उस बूढ़े शेर ने आंखें मूंद लीं और प्यार से मेरा हाथ चाटकर चला गया।

वली सैफ़ी उस समय अपने घर पर न था। उसकी पत्नी सोनी से भेंट हुई और वह मुझे तंबू में ले गयी। उसने बताया—"साहब, आप इतने धूल से भरे हुए और थके हुए हैं। आप सोफे पर लेटिए और आराम कीजिए। वली अभी आता ही होगा। तब तक मैं आपके लिए चाय बनाती हूं।"

मैं सचमुच बेहद थका हुआ था। इसलिए वहां सोफे पर लेट गया।

"वली कहां है ।" मैंने पूछा ।

"जहन्नुम में गया है...... ।"

मैंने देखा कि सोनी रो रही है । फिर कुछ संभलकर चुपचाप अपनी उंगलियों के नाखून कुतरने लगी ।

"आखिर हुआ क्या ।" मैंने पूछा ।

तब सोनी ने एकदम से अपने शरीर के कपड़े उतार दिए । अपना नंगा बदन दिखाकर बोली—"देखिए साहब ! वली ने मेरा क्या हाल किया है ।"

वली ने उस सुंदरी को बुरी तरह पीटा था । इतना कि बस उसे जिन्दा रहने के लिए छोड़ दिया था । "फिक्र मत करो । कल सुबह हम उससे मुक्ति पा लेंगे ।"

तभी वली सैफ़ी आ गया । उसकी बंदूक कंधे पर लटकी हुई थी । उसने कनखियों से अपनी नंगी पत्नी की ओर देखा, फिर मेरी ओर मुड़कर सोफे पर पैर फैला दिए ।

"स्वागत है साहब ! ज़रा आराम से बैठिए । इसे अपना ही घर समझिए । चलिए, हम लोग थोड़ी जिन पियें ।"

और हम जिन पीते हुए बातें करने लगे ।

'वली,' मैंने चौथे घूंट के बाद कहा—'बांस के जंगल में लोगों ने एक सुनहरा शेर देखा है । एक अमरीकी कर्नल ने उसकी खाल के लिए पच्चीस हज़ार देने के लिए कहा है । तुम्हारा क्या ख्याल है ।"

वली सैफ़ी की आंखें लालची भेड़िये जैसी चमक उठी थीं ।

'साहब, हम कल सवेरे ही चलेंगे । ए, सोनी, थोड़ी जिन और ले आ । पच्चीस हज़ार का मामला है .. . बस आपका काम हो गया साहब......चिंता न करो ।'

उस समय मुझे याद आ रहा था, वह दुखी बूढ़ा शेर जिसकी आंखों से आंसू बह रहे थे । उन्होंने कितने दुखी स्वर में कहा था—"वली सैफ़ी को यहां ले आओ ।"

सोनी ने अपने शरीर की चोटों को गाउन से ढंक लिया था और अगली सुबह का इंतज़ार करने लगी थी ।

उषा काल होते ही वली ने तीसरी खाली बोतल अपने तम्बू के द्वार के बाहर फेंक दी और बोला— "अब चलो साहब ।"

चलने से पहले उसने अपनी बंदूक को अच्छी तरह देखा परखा, उसकी नली को चूमा और हम चल दिए ।

सोनी ने फुसफुसाकर अनुनय भरे स्वर में मुझसे कहा—"साहब ! इसको वहीं छोड़ आना।

उस समय उसकी आंखें भी सिर्फ बूढ़े शेर की तरह नहीं, बल्कि वहां के तमाम दुखी शेरों की तरह डबडबाई हुई थीं, जिन्होंने कहा था—"वली सैफ़ी को यहां ले आओ।"

हम पैदल चलकर, बेहद थके हुए थे, आखिर किसी तरह वहां पहुंच गए।

"मैं इनकी धज्जियां उड़ा दूंगा"—घमंड में डूबे वली ने बांस के पेड़ों और अपनी बंदूक की ओर देखते हुए अट्टहास किया।

हम नीले झरने के पास बैठकर सुस्ताने लगे और तब तक बैठे रहे जब तक बांस के पेड़ों में सरसराहट नहीं शुरू हो गयी।

थोड़ी ही देर में मैंने हवा में आ रही मिट्टी की महक से समझ लिया कि इस समय वे शेर खुशी से जमीन खरोंच रहे हैं।

"वली सैफ़ी, तुम्हारा हज़ार-हज़ार स्वागत है। हम तुम्हारा इंतजार कितने दिनों से कर रहे थे।"

सैफी ने सूखी घास पर रखी अपनी बंदूक उठाने के लिए हाथ बढ़ाया तो बूढ़े शेर ने तुरंत उस पर से अपना पंजा उठा लिया, और सैफी के सामने आकर खड़ा हो गया।

"लारेस्तान के राजा वली सैफी ! गोली चलाओ"—वह बूढ़ा शेर दहाड़ा।

बांसों के पीछे छिपे बाकी शेर भी अब सामने आ गए थे। उन्होंने अपनी आंखों के इशारे से मुझसे कहा—"इसे लाने के लिए धन्यवाद। अब तुम घर जाओ। हममें से कोई तुम्हें जंगल की सीमा तक पहुंचा आएगा......कौन जाएगा।'

"मैं" वे सब एक स्वर में गुर्रा उठे।

आखिर एक शेर मेरे साथ आया। उस शेर को चट्टान के पीछे से छिपकर गोली मारी गयी थी, जिससे उसका पैर घायल हो गया था, वह मेरे साथ जंगल में चलते हुए कह रहा था—"सिर पर गोली चलाना तो समझ में आता है, लेकिन इस तरह लगड़ा बना देने से क्या फायदा।"

मैं भी सोचने लगा। आखिर एक लंगड़े शेर की भी क्या जिंदगी है। ऐसे शेर को तो रात में बांस के जंगल से बाहर निकलना चाहिए और पहाड़ की घाटियों में जाकर तारों की रोशनी में झूमते हुए, किसी किरण को पकड़ने की कोशिश में, खाई में कूदकर प्राण दे देना चाहिए।

"अब तुम जाओ"— उस लंगड़े शेर ने कहा ।

हम जंगल की सीमा तक पहुंच गए थे, जहां से सड़क शुरू होती थी ।

हम तुम्हारे बहुत आभारी हैं, शेर धीरे से कर्तव्यपरायण होकर बोला, और फिर चला गया ।

मैं सड़क पर बैठ गया और उसे जाते हुए देखता रहा । उसे जाने में थोड़ा समय लगा । लेकिन उसकी चाल कुछ वैसी थी जैसी उस समय होती है, जब किसी काम के तमाम होने के प्रति वह निश्चित हो जाता है ।

जंगल को जाने वाले ढलान रास्ते के खत्म होने पर वह लंगड़ा शेर खड़ा हो गया था । शायद वह किसी चीज से टकरा गया था और उसे ही मुड़कर देख रहा था । लेकिन तभी उसने मुझे देखा ।

"जाओ......जाओ......" एक बार फिर उसने तसल्ली दिलाते हुए कहा और मैं चला आया ।

रफेल अरमियान (1921—1978) Kumud

अरमियान का जन्म एकमियादजिन में हुआ था। येरेवान स्टेट विश्वविद्यालय के भाषा-विज्ञान विभाग में इन्होंने अध्ययन किया। इनकी मुख्य कृतियां हैं :— रूबिनयान बंधु (उपन्यास) असेडिल्ड हॉर्सेस और एक मृत शहर के नीचे (कथा संग्रह)

किस्सा छोटे लड़के और बड़े ट्रक-चालक का

मजदूर बस्ती की ओर जाने वाली उस सड़क का ढलान जहां खत्म होता है वहीं एक सराय है। वहां लोग बहुत कम ठहरते हैं और इसी कारण वहां कोई एक रात के लिए भी ठहर जाता है तो कई दिनों तक उसकी याद बनी रहती है— कम से कम उस समय तक तो जरूर ही बनी रहती है जब तक कि कोई दूसरा अतिथि नहीं आ जाता। इस सराय की मालकिन एक अकेली महिला है, जिसका एक छोटा—बेटा भी है। संयोगवश एक दिन मैं भी इसी सराय में रात बिताने के लिए पहुंचा।

मैं जीवन भर लंबी-लंबी यात्राओं पर जाकर विचित्र स्थानों और अनजाने नगरों को देखने के सपने संजोता रहा हूं। लेकिन सच पूछिए तो मैं कभी भी आरमेनिया की सीमा से बाहर नहीं गया। लोग यह सोचते हैं कि मैं ट्रक-चालक इसलिए बन गया क्योंकि मुझमें कुछ और बनने की योग्यता न थी। लेकिन यह कितनी अजीब बात है कि लोग किसी को बिना जाने ही उसके बारे में गलत धारणाएं बना लेते हैं। यह भी संयोग ही है कि मैं अपने आपको बहुत अच्छी तरह जानता हूं —दरअसल इतनी अच्छी तरह कि जब भी मैं आइने के सामने खड़ा होता हूं, तो मैं अपने आपसे कहता हूं—इस धरती पर तुम ही सबसे बदसूरत आदमी होंगे, वरना आज तक तुम्हें किसी का प्यार क्यों नहीं मिल सका। तब मैं एक बात और जोड़ देता हूं, ठीक है, लेकिन तुम्हारे पास एक पवित्र हृदय तो है।

आप शायद समझ सकते हैं कि मैं बहुत बढ़-चढ़कर बातें कर रहा हूं। लेकिन ऐसा नहीं है। मैंने अपने बारे में जो कुछ कहा है—वह एकदम सच है। अगर ऐसा न होता तो सराय की मालकिन और उसके छोटे बातूनी लड़के के प्रति मेरे मन में कोई आकर्षण न उत्पन्न होता ?

उस दिन जब मैंने सराय के सामने अपना ट्रक रोका और नीचे उतर कर सराय के बरामदे में पहुंचा, वह लड़का आगे बढ़कर मुझसे मिला और मुस्कराकर पूछने लगा—"क्या तुम बहुत दूर से आए हो।"

मैंने भी मुस्कराकर पूछा—"बहुत दूर" से तुम्हारा क्या मतलब है ?

लड़के ने अपनी जेब से एक तुड़ा-मुड़ा और कुछ फटा हुआ एक नक्शा निकाला और टेबिल पर फैलाकर एक-एक नगर पर उंगली रखते हुए पूछने लगा—"लंदन से, पेरिस से, न्यूयार्क या मास्को से ?"

मैंने उसका आशय बिलकुल समझ लिया था। मैंने कहा—इस बार तो येरेयान से आ रहा हूं।

वह लड़का फिर से झुककर नक्शा देखने लगा। उसने कुछ उत्सुकता और चिंता व्यक्त करते हुए कहा—"मैंने येरेयान कभी नहीं देखा।"

"कितनी खुशी की बात है कि आखिर कोई अतिथि हमारी सराय में आया। पिछले एक महीने से कोई अतिथि नहीं आया था और मेरे इस छोटे से बेटे को बस अकेले ही यात्रा करनी पड़ती थी। तुम्हें यात्रा करना अच्छा लगता है।"

"नक्शे पर" मैं एकदम से पूछ बैठा।

"हां, क्या नक्शे पर यात्रा नहीं कर सकते।"

"क्यों नहीं।" मैंने सोचा और अपनी इस मूर्खता पर अपने आपको ही कोसने लगा। आखिर नक्शे को देखकर कोई भी आदमी लंबी यात्रा का सुख क्यों नहीं ले सकता। मुझे उन लोगों को यह बात समझाने में काफी समय लगा कि मैं उनकी बात का मजाक नहीं उड़ा रहा था। दरअसल मुझे यह कहने में काफी देर लगी थी कि "मुझे तो यात्रा करना ही अच्छा लगाता है, फिर चाहे वह नक्शे पर ही क्यों न की जाए।"

वह महिला मेरी तरफ देखकर मुस्करा दी। उस क्षण अचानक मैंने देखा कि वह न केवल सुंदर थी बल्कि अद्भुत सुंदर थी। मुझे उसी क्षण लगा कि मैं बदसूरत हूं और शायद वह मेरी बदसूरती पर मुस्करा रही है। मैं यह तो सोच ही नहीं सकता था कि वह मुझे देखकर इसलिए मुस्करा रही है क्योंकि मुझे प्यार करती है। अरे ! ऐसा विचार तो मेरे मन में कभी आ ही नहीं सकता। हालांकि

मुझे अक्सर हैरानी होती है कि महिलाएं किसी भी पुरुष की सुंदरता को इतना महत्व क्यों देती हैं।

'मैं सारी दुनियां घूमा हूं। मैं हर तरह के शहर में गया हूं और वहां सभी जगह मेरे दोस्त हैं।' उसके लड़के ने बड़े गर्व से कहा—'यह बात क्या तुम जानते हो?'

"हां" मैंने अपने बचपन को याद करके कहा। मैं भी बचपन में अपने सह-पाठियों को उन शहरों और देशों के बारे में बताया करता था, जिनके बारे में किताबों में पढ़ लेता था। लेकिन वो हमेशा यही कहते थे—"तुम यूं ही बातें बनाकर कह रहे हो।" मैं घर आता और उनकी इस हरकत पर चीख-चीखकर रोता, उन्हें फिर कभी कुछ भी न बताने की कसम खाता, लेकिन अगले दिन फिर वही सिलसिला शुरू हो जाता। बाद में मेरा एक सहपाठी एक बड़े जहाज का कप्तान बन गया, दूसरा साथी वैज्ञानिक बना और तीसरा एक बड़े उद्योग का मालिक। लेकिन मैं सिर्फ एक ट्रक-चालक ही बन पाया। एक दिन सड़क पर उनमें से एक से मेरी भेंट हो गयी। उसने बड़ी कृपापूर्वक मुस्कराकर मेरी तरफ देखा और बोला—"कहो स्वप्नदर्शी, कैसी जिन्दगी चल रही है। उस दिन एक पार्टी में हम कई लोग मिले तो तुम्हारी चर्चा हुई थी।"

'इन्होंने मेरी चर्चा की थी', मैंने अपने आप कहा—'लेकिन तुमने उस अवसर पर मुझे आमंत्रित नहीं किया।'

"मैं इन सब शहरों में गया हूं।" मैंने उस लड़के को कहते हुए सुना तो जैसे मेरा सपना टूट गया। वह नक्शे पर उंगली रखकर कह रहा था "मैं इन शहरों में रहा हूं, वहां मेरे दोस्त हैं और वे मेरा इंतजार कर रहे हैं कि मैं आऊं और उन्हें देखूं।"

'यात्रा वर्णन की जितनी पुस्तकें हो सकती हैं, वे सब इसने पढ़ी हैं।' उसकी मां ने कहा और वह मेरा नाम अपने रजिस्टर में लिखने लगी।

'तुम अभी तक अविवाहित क्यों हो', उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखकर पूछा।

हमारी नजरें मिलीं। मैं बादाम जैसी उसकी सुंदर भूरी आंखें देखकर स्तब्ध रहा गया था। एक क्षण के लिए उसके प्रश्न का उत्तर देना ही भूल गया। मुझसे नाराज होने की बजाय, मेरी एकटक नजर को देखकर चुपचाप अपनी आंखें झुका लीं।

"अरे जरा देखो तो!" मैंने अपने आपसे कहा, 'कोई तुम्हारी तरफ देख

रहा है।" मैंने "कोई" इस तरह कहा जैसे अक्सर ही कोई देखता हो, लेकिन सचाई तो यह थी कि यह पहला मौका था जब किसी महिला ने मेरी नजरों के सामने अपनी नजरें झुका लीं थी। हां, बिलकुल पहला मौका था।

'मैं समझ गया, तुमने इतनी अधिक यात्रा की है कि तुम्हें शादी करने का समय ही नहीं मिला।' उस लड़के ने यह बात कुछ इस तरह कही जैसे वह सब कुछ जानता हो।

मैंने उन्हें यह बताना जरूरी नहीं समझा कि मैं आरमेनिया की सीमा के बाहर नहीं गया हूं और यह कि शादी तो इसलिए नहीं की, क्योंकि किसी स्त्री ने मुझे पसंद ही नहीं किया।

मैंने इसलिए भी कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह लड़का मुझे एक अनुभवी यात्री समझता था और उसकी मां ने मेरे सामने आंखें झुका लीं थीं।

शाम को मैंने अपना ट्रक, समान से लदा होने के कारण, बाड़े में खड़ा कर दिया और फिर सीढ़ियां चढ़कर ऊपर चला गया।

चूंकि उस समय केवल मैं ही एक मेहमान था, इसलिए मुझे सबसे अच्छा कमरा दिया गया था। लेकिन मैं कमरे में नहीं गया।

मैं हाल में पड़ी आराम कुर्सी पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। किसकी ? मां की या बेटे की। यह बात मैं नहीं बता सकता। उसकी मां बाहर किसी से बातें कर रही थी।

थोड़ी देर बाद वह अंदर आया। मैंने पहली बार उसे ध्यान से देखा। उसकी आंखें इतनी सुंदर थीं, इतनी सुंदर थीं कि उसका चेहरा जैसे आंखों के सिवा कुछ भी न था।

वह मेरे पास पड़ी कुर्सी खींचकर बैठ गया। उसने बैठते ही पूछा : "तुम कभी ताहिती गए हो।"

मैं सोच में पड़ गया कि यह क्या पूछ रहा है।

"तुम यह बात क्यों पूछ रहे हो"—मैंने कहा।

"कोई खास बात नहीं, वहां बहुत अच्छे केले होते हैं।"

मैंने हालांकि कभी केले नहीं खाए थे, लेकिन उसे दिखाने के लिए मैंने होठों पर जीभ फेरते हुए कहा—"केले, सचमुच बढ़िया होते हैं। तुमने फारस की खाड़ी में मोतियों के गोताखोरों को देखा है।"

मैं फिर चक्कर में पड़ गया। इसका क्या जवाब दूं।" नहीं, मैंने नहीं देखा, मैं जब फारस की खाड़ी में पहुंचा तो बहुत रात हो चुकी थी और सभी गोताखोर

जा चुके थे ।' 'अरे, तब तो सब बेकार हो गया'—बालक ने कहा । उसकी आंखों से मैं समझ गया था कि वह अगला प्रश्न सोच रहा है । बस मैं जल्दी से उसे उन देशों की कहानियां बताने लगा जिन्हें मैंने कभी देखा भी न था, जैसे अफ्रीका में शेर और जंगली भैंसों का शिकार कैसे किया और पिग्मी लोग कितने छोटे से भाले से तेंदुआ मारते हैं । यह सब सुनकर वह बहुत खुश होता रहा ।

"आजकल भाले से कोई शिकार नहीं करता । अब तो सबके पास बंदूकें हैं"—उसने कहा ।

उसने मुड़ा-तुड़ा नक्शा अपनी जेब से निकाला । उसे टेबिल पर फैला दिया और पीले रंग से रंगे हुए अफ्रीका पर झुक गया ।

इन दिनों अफ्रीका में बेहद गर्मी होगी । जबकि यहां किलीमंजारों की तराई में हिरण चर रहे हैं ।

वह अपलक अफ्रीका का नक्शा देख रहा था । मुझे लगा कि वह हिरणों के झुंड, ज़ेबरा और शुतुर्मुर्गों की दौड़ देख रहा है, शेरों की गरज और गीदड़ तथा लकड़बग्घे की घुरघुराहट सुन रहा है । नक्शे पर झुके हुए हम, जंगलों में घूमते हुए हाथियों की कतार का पीछा करने लगे थे और उस समय हमारे सामने चल रहे थे—अपने छोटे-छोटे भाले हवा में घुमाते हुए पिग्मी ।

'आप हमारे साथ चाय पिएंगे । इस समय रसोई घर बंद हो चुका है ।'

मैंने सिर उठाकर देखा । सराय की मालकिन हमारे बिल्कुल पास खड़ी है । उसकी भूरी बादामी आंखों से मादकता बिखर रही थी । वह मुस्करा रही थी । इस बार हमारी निगाहें दुबारा मिली थीं । उसने फिर से अपनी आंखें झुका लीं थीं । मैंने अपने आप से कहा—मैं भी कैसा मूर्ख हूं जो यह सोच रहा हूं कि वह मेरा चेहरा देखकर ही मेरे बारे में फैसला कर लेगी ।' 'खुशी से पीऊंगा चाय ।' मैंने कहा । 'हां एक बात और है । अगर आप अनुमति दें तो मैं आपके बेटे को अपने साथ ले जाऊंगा और कुछ दिनों बाद वापस पहुंचा दूंगा ।' 'जो भी आता है, वह ऐसा ही वादा करता है, किंतु आज तक किसी ने इसे पूरा नहीं किया ।'

'लेकिन मैं जरूर पूरा करूंगा' मैंने कहा ।

लड़का खुशी से झूम उठा । उसने अपना नक्शा समेटा और इस तरह जेब में ठूंस लिया जैसे सारी दुनिया उसमें रख ली हो । इसके बाद वह बाहर भाग गया ।

सवेरे हम चल पड़े । उस बच्चे की यह पहली यात्रा थी । और जब हम बड़े शहर से गुजरते या हम दोनों सड़क पर पैदल चलते तो मैं अपने आपसे कहता—

जल्दी ही हम वापस जाएंगे और अगर इसकी मां ने मुस्कराकर मेरा स्वागत किया और फिर से अपनी भूरी बादामी आंखें झुका लीं तो हम दोनों—मैं और यह लड़का, किसी दूर देश की यात्रा पर जाएंगे ताकि विचित्र शहरों और नए लोगों को देख सकें। फिर जब घर लौटेंगे तो बालक की मां हमारी प्रतीक्षा कर रही होगी। लड़का अपनी जेब से नक्शा निकाल कर मां को बताएगा कि हमने कौन-कौन से देश देखे हैं और साथ ही ताहिती, फारस की खाड़ी में के मोतियों के गोताखोर और अफ्रीका के शेर तथा हिरणों के बारे में भी बताएगा। जब हम अपनी कहानियां खत्म कर चुकेंगे तो हम नयी यात्राओं के सपने में खो जाएंगे और उस समय उसकी मां हमारे लिए चाय बना रही होगी—बहुत प्यारी खुशबू वाली एकदम ताजी चाय।

मिट्रिच सारकिसियान (1924—)

सारकिसियान का जन्म अहुलकलाकी (जार्जियन सोशलिस्ट सोवियत रिपब्लिक) के एक क्लर्क के परिवार में हुआ था। उन्होंने येरेवान शिक्षा शास्त्रीय संस्थान से भाषा विज्ञान में स्नातक की परीक्षा पास की। वह जब स्कूल में पढ़ते थे तभी से रचनाएं लिखने लगे थे। उनकी पहली पुस्तक 'सांग्स' 1957 में प्रकाशित हुई थी। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं :—'आग में झुलसता जीवन', (कथा संग्रह) 'भाग्य का अन्त' और 'लड़कियो तुम बिलकुल बदल गई हो', (कहानियां) सेंट मदर इकान के सामने (लघु उपन्यासों का संग्रह), सिपाही और प्रेमी और सारजेंट कारो, (युद्ध संबंधी पुस्तकें)

तुम कैसे बदल गयीं, लड़कियो ?

तुम कैसे बदल गयीं, लड़कियो ! सचमुच, तुम बदल गयीं हो। जब मैं युवक था, तब लड़कियां तुम्हारे जैसी न थीं। मैं जानता हूं तुम कहोगी कि समय आगे बढ़ता रहता है और हमें उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए। मुझे गलत मत समझना। तुम्हें सिर्फ इन ऊंची एड़ी की सैंडिलों और नये फैशन के कपड़ों ने ही बदला है, ऐसा नहीं है। पुरुषों की नये फैशन की पोशाकें तो मैं भी पहनता हूं, लेकिन मैं उससे अत्यंत आधुनिक नहीं बन जाता। और फिर इस मामले में कोई विकल्प भी तो नहीं है।

खैर छोड़ो, लगता है कुछ विषयांतर हो गया। हां, तो मैं कह रहा था, तुम लड़कियों में बहुत बदलाव आ गया है और कसम से कहता हूं, ये बहुत अच्छा हुआ है।

अच्छा चलो, सच्चाई को खुद बोलने दो। मैं तुम्हें बताऊंगा कि बहुत साल पहले कैसे मैंने प्यार किया और कैसे मेरे पड़ोसी का बेटा करेन, अभी हाल ही में प्रेम जाल में फंस गया।

मेरा प्यार

हमारा शहर बहुत बड़ा न था। उस जैसे पन्द्रह शहर मिलकर ही येरेवान जैसा नगर बना सकते हैं। हमारा सबका एक ही सहकारी-खेत था। हमारे शहर के प्रधान का नाम गारसो था और अगर पूरा नाम लूं तो कहूंगा—जंग खाया हुआ बुड्ढा गारसो। लोग कहते हैं यह नाम उसे उसके ड्राईवर ने दिया था।

गारसो को पैदल चलना पसंद न था। सहकारी-समिति की मोटरकार उसके लिए पैर के जूतों जैसी थी। उसे खेत पर जाना हो या जिला कमेटी के दफ्तर वह कार पर ही जाता था। अगर रास्ते में उसे किसी से बात करनी होती तो कार रुकवा देता, खिड़की के बाहर सिर निकाल लेता और उसी तरह बैठे-बैठे ही बातें करता, बहस करता और डांट-फटकार भी करता। यानी जिस तरह हम बिस्तर पर जाने से पहले तक जूते पहने रहते हैं, वह सहकारी-समिति की कार पर सवार रहता और उसे अपने द्वार पर ही रोकता। अगर उसका वश चलता तो वह उसे अपने बिस्तर तक भी ले जा सकता था। जाहिर है कि गारसो उस कार से बिलकुल जंग की तरह चिपका हुआ था और इसीलिए उसके ड्राईवर ने कहा था—जंग लगा बुड्ढा—गारसो।

मैंने कभी नहीं देखा कि वह कितना लंबा है। कारण, जब भी देखा, बस कार की खिड़की के बाहर सिर निकाले हुए देखा। मैं सिर्फ इतना जानता था कि उसके नीचे चार पहिये लगे हैं, एक बड़ा भोंपू है, तेज रोशनी वाली एक जोड़ी बत्तियां हैं और बायीं तरफ एक ड्राईवर है। उसे हमारी तरह इधर से उधर भटकना नहीं पड़ता वह तो सड़क बीच से गुजरते हुए अपने पीछे दोनों ओर पीली धूल के गुबार उड़ाता निकल जाता। मैं उस धूल को कभी नहीं भूल सकता जो उसके कपड़ों, उसके चेहरे और यहां तक कि जूतों पर भी छा जाती। और तो और वह धूल उसकी आत्मा तक में समा गयी थी।

"थू ······ये तो बिलकुल जंग जैसी है।" गारसो कहकर थूक देता। फिर वह ड्राइवर से कहता—चलो, आगे बढ़ो और उसकी कार डामर से बनी सड़क की चमकती पीठ पर दौड़ने लगती। तब पीली धूल उड़ना बंद हो जाती, जैसे कोई जादू हो जाता। जब कार ने शहर में प्रवेश किया और सहकारी-समिति के दफ्तर के सामने रुकी तो गारसो ने वहां एकत्र किसानों को देखकर लापरवाही से सिर हिलाया और फिर अकड़कर चलते हुए अपने दफ्तर में जाकर बैठ गया।

"आज फिर वह गुस्से में है। आज या तो वह खुद मुसीबत में है या किसी

पर मुसीबत बनकर टूटने वाला है ।" प्रधान की चढ़ी हुई भौहों को देखकर बूढ़े माटो ने कहा—जरा उससे कोई पूछे कि अपनी नाक से आगे क्यों नहीं देख सकता। उसे सिर्फ नज़दीक का ही दिखता है। उसकी आंखों में जंग लग गया है। वह अपने पैरों के पास की जमीन तक नहीं देख सकता और न ही कभी आंखें ऊपर उठाकर आसमान की ओर देखता है। वह सिर्फ जंग लगा बूढ़ा गारसो है और इसके सिवाय कुछ नहीं हैं। कोई कहता है।

आप पूछ सकते हैं कि प्यार और गारसो का भला क्या संबंध है। लेकिन इतनी जल्दी निष्कर्ष मत निकालिए। अनुभव हमें बताता है कि कभी-कभी जंग भी सोना बन जाता है और यह भी कि अगर एक ओर सुनहले रंग की मिट्टी होती है तो दूसरी ओर पौधों की पत्तियों पर चांदी जैसी चमकती ओस की बूदें भी होती हैं।

जंग लगे बूढ़े गारसो की एक बेटी थी। उसका नाम था—आरेब, पूरा नाम था—अरेविक, जिसका अर्थ है सूर्य की चमक। उसकी सौतेली मां का नाम था—मदाम रोसा। अरेविक सचमुच सूर्य की तरह चमक वाली थी। लेकिन रोसा गुलाब के फूल जैसी न थी। मैं तो उन्हें मदाम झरबेरी कहा करता था। इस तरह बेचारी अरेविक जंग और झरबेरी के बीच में फंसी हुई थी। वह भोर होते ही उठ जाती और आधी रात से पहले बिस्तर पर न जा पाती। वह सारा दिन काम करते हुए इधर से उधर भागती रहती। वह रात का भोजन बनाने के सिवाय घर का सारा काम करती थी।

"अरी चुड़ैल कहां मर गयी ! मुझे एक प्याज दे जा। मदान झरबेरी कहती"—अरे तू तो मरी हुई बिल्ली से भी गयी गुजरी है। जरा जल्दी नहीं चल सकती।

"बिस्तर बिछा दे, और देख जरा जल्दी करना।"

ये मधुर संवाद मदाम झरबेरी के थे। अब सुनिए जंग लगे बुड्ढे के संवाद।

"अरेव ! जरा जूते में पालिश कर दे।"

"अरेव ! मेरे कोट की धूल झाड़ दे।"

"अरेव ! मेरे सारे कपड़ों की धूल झाड़ दे।"

वे दोनों अरेव को जरा भी प्यार नहीं करते थे। लेकिन अरेव....... मेरे लिए सूर्य से भी बढ़कर थी। वह स्कूल में नवीं कक्षा में पढ़ती थी और उस समय मैं दसवीं में पढ़ता था जब मैंने उसे ठीक से देखा था। हमारे घर एकदम आमने-

सामने थे और बीच में सड़क थी। बस हम दोनों सूर्य और पृथ्वी जैसे थे, हरदम एक दूसरे के सामने और बहुत दूर।

अरेविक सुडौल और सुंदर थी। उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखें थीं। लेकिन सहमी रहती थी। वह अत्यंत सुंदर थी और इसी कारण उसकी आंखों के किनारे गुलाबी दिखते थे। मदाम फ़रबेरी उसकी सुंदरता पर निगाह नहीं टिका पातीं थीं। और इसीलिए उसे ताने मारने से कभी नहीं चूकतीं। गारसो भी ऐसा ही व्यवहार करता था। फलतः अरेविक की बड़ी-बड़ी काली आंखें सदैव आंसुओं से भरी रहतीं।

मैं उनके फाटक के बाहर उसका इंतजार किया करता था —अरे, अरेविक कितनी बड़ी हो गयी। कितनी प्यारी लगने लगी हो।

वह मेरी तरफ आश्चर्य से देखती। उसके चेहरे से स्पष्ट लगता कि वह मेरी बात पर विश्वास नहीं कर रही है।

"क्या मुझे घर में कम ताने सुनने को मिलते हैं जो तुम अब सुना रहे हो—आरमेन।

लेकिन अरेविक ! मैं तो सही कह रहा हूं। तुम सचमुच अत्यंत सुंदर हो।

मुझे लगा कि वह नाराज हो गयी है। उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया, लेकिन उसकी आंखें मुस्करा रही थीं, जैसे कह रही थीं—"और कुछ" फिर उसने बड़ी सहजता से मेरी बात की उपेक्षा करने की कोशिश की।

आज शाम को बाग में जरूर आना। मैं वहां तुम्हारा इंतज़ार करूंगा।

वह क्षण के लिए असमंज में पड़ गयी, फिर तेजी से भागकर घर के अंदर चली गयी।

उस शाम को वह बाग में आयी और सच मानो वह शाम जैसे सूर्य की रोशनी से चमक रही थी।

"हलो"; उसने शरमाते हुए कहा था।

हम दोनों बहुत देर तक चुप बैठे रहे थे। मेरे होंठों को बड़ी मुश्किल से कुछ वे शब्द मिले जिन्हें मैं कभी नहीं बोल सका था। लेकिन मेरे होंठ सिर्फ कांप-कर रह गए और केवल मैं ही अपनी बात सुन सका। वह मुझे बड़े ध्यान से देख रही थीं। इसका सिर झुका हुआ था और वह चुपचाप बैठी थी।

"मुझे खुशी है कि तुम आ गयीं", मैंने कहा "तुम इतनी प्यारी हो.......इतनी सुंदर हो......."

"इसीलिए मैं चली आयी। मुझसे इस तरह की बातें पहले कभी किसी ने नहीं कीं।"

फिर वह एकदम चुप हो गयी, जैसे उसने यह कहकर कोई अपराध किया हो। फिर कुछ क्षणों बाद उसने कहा—तुम मजाक तो नहीं कर रहे थे। सच बताना आरमेन।

"मैं कसम खाकर कहता हूं अरेविक! तुम सूर्य की तरह हो।"

कुछ देर बाद हम चाहते हुए भी धीरे-धीरे शहर की ओर चल पड़े।

यह प्रेम शब्द-विहीन और चुंबन रहित था। यह सौगंध-रहित आनंदातिरेक था—जिसमें आशाएं थीं, आश्वासन थे। हम मौन होकर चलते रहे—केवल मानसिक रूप से एक दूसरे का चुंबन-आलिंगन करते हुए। फिर उसी सड़क पर घूमते हुए हम घर वापस आ गए। मदाम झरबेरी ने अरेविक को इतनी-इतनी देर तक घूमने के लिए दो बार पीटा था।

कुछ दिनों के बाद बसंत का मौसम आ गया। वह हमें बुलाने लगा। एक दिन स्कूल के बाद मैं और अरेविक लाल फूल तोड़ने के लिए निकल पड़े।

उस वर्ष बसंत का मौसम भी कितना सुहाना था। पहाड़, घाटियां और मैदान हरियाली में डूबे हुए धूप में चमक उठे थे। चारों ओर असंख्य फल बिखरे हुए थे। उसी दिन मैंने पहली बार अरेविक को खुश होकर हंसते हुए देखा था। वह एक तितली को पकड़ने के लिए झपटी और इतनी जोर से नहर में गिरी कि सारा पानी उछलकर मुझे भिगो गया। उसने हंसते हुए कहा—"मैं एकदम पागल हूं··हूं न?"

उस समय वह बिलकुल सूर्य जैसी दमक रही थी। जब वह घास पर बैठकर फूलों का गुलदस्ता बनाने में व्यस्त थी, मैंने झुककर प्यार से उसकी चिकनी गर्दन को चूम लिया। उसमें गरमाहट थी और मखमल जैसी कोमलता भी। मेरे होंठों ने उस क्षण फूल और सूर्य की दीप्ति को एक साथ स्पर्श किया था। उसने इसका विरोध नहीं किया। लेकिन जब मैंने उसकी ओर देखा तो उसका चेहरा डरा हुआ और आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं। यह देखकर मैं परेशान हो गया। वह रोने लगी थी।

"क्या हुआ, क्यों रो रही हो।" मेरे पूछने पर उसने हथेलियों से अपना चेहरा ढक लिया था। क्या मैंने कुछ गलत किया। आखिर उसका चुंबन लेने में गलत बात क्या हो सकती थी। उसकी आंखें लाल हो गयी थीं, जैसे उसे किसी ने बहुत फटकारा हो। लेकिन मैंने तो सिर्फ उसका चुंबन लिया था।

हम घर की ओर वापस चल दिए। अचानक धूल के एक बादल ने हमें ढक लिया। अरेविक एकदम जड़ हो गयी--"अरे ये तो पापा हैं।"

उसके पिता कार का दरवाजा खोल चुके थे। धूल से सना हुआ एक राक्षस हमारी ओर बढ़ रहा था। मुझे उसी समय ज्ञात हुआ कि गारसो के चार नहीं, दो पैर थे। मैंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि वह इतना भीमकाय होगा। "अरेविक! यहां क्या कर रही हो।"

पहले उसने अपने को गुलदस्ते में छिपाना चाहा। फिर उसने चुपचाप वह गुलदस्ता अपने पिता को भेंट कर दिया। लेकिन पिता ने उन फूलों को जमीन पर फेंक दिया।

'अरे नीच, तू यहां इस भिखारी के साथ क्या कर रही है।' वह चीखे। फूलों को धूल ने ढक लिया था। मुझे लगा कि अब यह धूल हमें भी खा जाएगी। गारसो मेरी ओर मुड़ा। 'ए लड़के, तुम अपना रास्ता देखो! और सुनो, अपनी औकात से बाहर मत जाओ।"

उसने अरेविक की चोटियां पकड़ी और उसे कार में धकेल दिया। घर-घराती हुई कार चली गयी और पीछे छोड़ गयी धूल का गुबार, वही धूल जो सुनहले रंग की थी। सचमुच उस कार की धुलाई बहुत जरूरी हो गयी थी।

उस शाम सहकारी समिति के बाहर कई बूढ़े आदमी बातें कर रहे थे— 'आज वह फिर गुस्से में है। या तो वह खुद मुसीबत में हैं या किसी पर मुसीबत बनकर टूटने वाला है।' बूढ़े माटो ने कहा, "उससे कोई पूछे तो जरा कि अपनी नाक से आगे क्यों नहीं देख सकता"।

किसी ने कहा —उसे सिर्फ नजदीक से दिखता है। उसकी आंखों में जंग लग गई है। वह अपने पैरों के नीचे की जमीन नहीं देख सकता और न ही वह कभी आसमान की ओर आंखें उठाकर देखता है। ऐसे व्यक्ति के बारे में बातें करने से क्या फायदा। वह तो जंग लगा बूढ़ा गारसो है और इसके सिवाय कुछ भी नहीं है।

आखिर मुसीबत का पहाड़ हमारे ही सिर पर टूटा। हमारे लिए एक दूसरे से मिलना बिलकुल असंभव हो गया था। अरेविक मुझसे स्कूल में भी मिलने से डरती थी।

स्नातक बनने के बाद में अपना अध्ययन जारी रखने के लिए येरेवान चला गया। कुछ दिनों बाद मैंने सुना कि अरेविक की शादी हो गयी है। फिर मैंने सुना कि जंगी गारसो को उसके पद से मुक्त कर दिया गया है। लोग कहते हैं कि

अब उसके सिर्फ दो हाथ और दो पैर हैं और वह अपने पैरों से चलता है। शहर की तरफ जाने वाला रास्ता पक्का बन गया है और अब मोटरकारों, लोगों की भौंहों और आत्माओं पर जमने वाली धूल खत्म हो चुकी है।

आज भी मेरी स्मृतियों के किसी कोने में अरेविक के गले में फूलों और सूर्य की दीप्ति का स्पर्श बना हुआ है।

अब बताओ लड़कियो, यह सब अजीब नहीं है। और जानती हो, यह प्राचीन इतिहास नहीं है। यह सब कुछ हुए बीस वर्ष से ज्यादा समय नहीं बीता।

करेन का प्यार

"ए करेन"!

ये अरेविक की आवाज थी। वह जब कभी हमारी खिड़की के बाहर दिखाई देती, हरेक की जैसे आत्मा जाग उठती। ऐसा लगता जैसे अचानक हमारा हृदय किसी अनजानी प्रसन्नता से भर गया है। अपनी नीली पोशाक में अरेविक ऐसी लगती जैसे आसमान का कोई टुकड़ा जमीन पर उतर आया हो। और करेन "मेरीना" की धुन में सीटी बजाता जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरने लगता। फिर अरेविक की बांह में बांह डाले, वह अपने साथ आसमान के इस खूबसूरत टुकड़े को लेकर प्यार की राहों में खो जाता।

उस समय हमारी आंखों के सामने चाल का आंगन अंधेरे में डूब जाता। यहां तक कि अस्सी वर्ष का बूढ़ा वानो, जो आधा बहरा और एकदम जर्जर था—उस दृश्य को देखकर आहें भर उठा और इतनी धीमी आवाज़ में बोला कि वह स्वयं ही सुन सके. किंतु हमने फिर भी उसे सुन लिया—वाह, क्या लड़की है! इसका चुंबन तो मैं भी लेना चाहूंगा।

हमारी पड़ोसन येरानुई चाची ने उसकी ओर तिरस्कृत दृष्टि से देखा और बोली—अरे बुड्ढे! इस उमर में ऐसी बातें करते हुए शरम नहीं आती।

अरेविक और करेन के जाने के बाद हमारा पड़ोसी कारो, जिसे अरेविक ने तिरस्कृत कर दिया था, सीढ़ियों से ऊपर चला गया और पेगलिएक्की का विरह गीत "हंसो, विदूषक हंसो" को केनियो की तान में तब तक गाता रहता जब तक उसका गला न बैठ जाता। जो भी हो, उसे कभी हंसते नहीं देखा। गीत गा चुकने पर वह बाहर चला जाता जिससे उसे थोड़ी सांत्वना मिल सके।

यह दृश्य हर रोज़ दुहराया जाता था। अगर लड़की न आती तो हमारी चाल के लोग चिंतित हो उठते।

तब धूप से खिले हुए मौसम में भी बूढ़ा वानो कहता—'लगता है बहुत खराब मौसम होने वाला है। आज पानी बरसने वाला है।'

येरानुई चाची उसकी ओर तरस खाकर देखती और कहती—'बेचारा ! इस गर्मी में भी ठंडा हो रहा है ! क्या करे ! बुढ़ापे में यही हाल होता है।'

तब कारो भी बाहर नहीं दिखाई देता था और न ही वह अपनी तान छेड़ता था। ऐसे दिन मुझे उसके लिए खुशी महसूस होती थी कि कम से कम इस बहाने वह अपनी आवाज़ को खराब होने से बचाएगा।

अगर कभी लड़की को आने में देर हो जाती तो करेन उसकी प्रतीक्षा करता हुआ धीरे-धीरे सीढ़ियां उतरता। तब उसके पैरों की थप्प-थप्प कितनी भारी होती थी, इसे सुनकर ही समझ जाते थे। अगर वह सीटी नहीं बजा रहा होता तो इस का मतलब था कि तरेविक नहीं आयी है। और अगर अचानक वह सीटी बजाने लगता तो हम सब संतोष की सांस लेते और दौड़ कर उन्हें देखने के लिए अपने-अपने छज्जों पर पहुंच जाते।

हमारी चाल की इमारत हर वर्ष लगातार बढ़ रहे और घने हो रहे पेड़ों तथा झाड़ों की हरियाली में एकदम खो गयी है। इसका फल यह हुआ है कि चाल की सुन्दर इमारत हरियाली से पूरी तरह से ढकी हुई है और ईर्ष्यालु निगाहों से बची हुई है। इस हरियाली में एक बात बड़ी सुखद है। एक तो सड़क के शोर से रक्षा होती है, दूसरे गर्मियों में धूप की तपन का असर नहीं होता। सर्दियों में तो पेड़ तुषार से ढके होने के कारण साइबेरिया के वनों की याद दिलाते हैं। शिशिर ऋतु में जब पत्ते झड़ जाते हैं तो हमारा बाग बूढ़े वानो जैसा लगता है। यानी बूढ़े वानो की तरह बाग भी एकदम ठंडा हो जाता है और ऐसा लगता है जैसे सर्दियों का सूर्य उनके प्रति उदासीन हो गया हो। सभी लोग हमारे बाग को "प्रेमियों का उपवन" कहते हैं। यहां पूरे वर्ष भर, दिन और रात हर समय प्रेमियों के जोड़े आते रहते हैं और पूरे समय उनकी चुंबन क्रिया चलती रहती है। और सच्चाई तो यह है कि अगर दिन में चौबीस की बजाय पच्चीस या छब्बीस घंटे हो जाते तो उस समय भी उनकी चुंबन क्रिया चलती रहती।

जीवन में एक दूसरे के प्रति आकर्षण, विशेषकर चुंबन ही तो सब कुछ है। इसलिए नीचे उपवन में उन प्रेमियों को चुंबनरत देखकर मैं दो बच्चों का पिता भी उनकी जैसी क्रियाओं का इच्छुक हो जाता हूं और घर के अन्दर उसी लालसा से

चला जाता हूं, जिस तरह दस वर्ष पहले अपनी पत्नी के पास उसके चुंबन के लिए जाता था। तो कुल मिलाकर करेन और अरेविक एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और उनका प्यार हम सबके लिए एक अच्छा उदाहरण बन गया था —जो मुझसे शुरू होकर बानों पर समाप्त होता था।

सर्दियों में करेन और अरेविक हमारे बड़े हाल की ओर जाने वाली सीढ़ियों के नीचे मिलते। और उनकी यह मुलाकात देर रात को समाप्त होती। "अच्छा अब मैं चलती हूं···तुम मुझे प्यार कर लो। शुभ रात्रि···अरेविक कहती। "मैं तुम से मिलने घर पर आऊंगा।" और करेन उसका चुंबन लेता।

मेरे प्राण! तुम्हें ठंड तो नहीं लग जाएगी।" अरेविक की कोमल आवाज़ सुनायी देती।

और तुम्हें ठंड नहीं लग जाएगी, करेन कहता और दोनों बहस करने लगते। तब करेन उसे घर पहुंचा आता। जब वह सिर झुकाए हुए लौटता तो ठंड से उसकी एक-एक हड्डी जम जाती, लेकिन उन दोनों के लिए कभी किसी ने एक भी बुरा शब्द नहीं कहा।

"उन्हें इस तरह देखना कितना अच्छा लगता है।" येरानुई चाची कहा करती थीं।

करेन की मां भी अपने बेटे की पसंद पर बहुत खुश थी। वह अपनी भावी बहू को देखकर कहतीं—इस जैसी दूसरी लड़की तुम्हें पूरे शहर में नहीं मिलेगी।

और फिर दूसरे ही क्षण वह अभिमान से भरकर कहतीं—मेरा करेन भी तो कितना अच्छा है।

वह ठीक कहतीं थी।

इसके बाद कुछ ऐसा हुआ कि उस प्रेमी-युगल की खुशियां दो बार बिखरने को हुईं, किन्तु अंततः उस संघर्ष में प्रेम की ही विजय हुई।

बसंत का मौसम आ गया था। अरेविक ने अपना कोट उतार दिया था और एक बार लगने लगा जैसे आसमान का एक खूबसूरत टुकड़ा धरती पर फुदक रहा है। सारे वातावरण को देखकर लगता था जैसे बसंत ने सूखे तिनकों की चादर हटा दी है और हर तरफ रंग बिरंगे गलीचे बिछा दिए हैं।

करेन का जन्म बसंत में हुआ था। मैं जानता हूं कि अरेविक का जन्म भी बसंत में हुआ था। लेकिन मैं यह बात किसी तथ्य के रूप में नहीं, बल्कि अनुमान के रूप में जानता हूं, क्योंकि बसंत तो केवल बसंत में ही जन्म ले सकता है और मैं अपने इस विचार के प्रति एकदम आश्वस्त हूं।

बसंत के आगमन पर पूरी चाल करेन का जन्म-दिन मनाती है। चाल का हरेक घर इस उत्सव में भाग लेने के लिए अपना प्रतिनिधि भेजता है। सच पूछो तो हम सब में करेन ही सबसे ज्यादा खुश था।

इस उत्सव में जब कारो ने अपना प्रिय विरह-गीत 'हंसो विदूषक हंसो' गाया तो सब से ज्यादा अरेविक ने तालियां बजाकर उसकी प्रशसा की। फिर कारो ने दुबारा वह गीत गया। लेकिन जब नाचने के लिए वाद्य बजाया गया तो कारो ने अरेविक को नाचने के लिए आमंत्रित किया और उस शाम दोनों बहुत देर तक नाचते रहे।

अगले दिन सभी लोग एक ही चर्चा कर रहे थे कि कल रात कारो अरेविक को अपने घर ले गया था और उसने अपने प्यार के बारे में बताया है। यह तो कोई नहीं जानता कि इस बात में कितनी सच्चाई थी, लेकिन एक बात जरूर साफ थी कि उस लड़की ने कारो की बात बड़े ध्यान से सुनी थी और जब चलने लगी तो उसने मुस्करा कर कहा था--अच्छा··· अगली मुलाकात तक के लिए अलविदा, कारो-विरही।"

यह सनसनीखेज समाचार हमारे मुहल्ले में काफ़ी गरम बहसों और आलोचना का विषय बना।

"चि···चि···! येरानुई चाची कुड़मुड़ाई, "तुम्हारा मतलब है अरेविक भी बाकी सुन्दर लड़कियों की तरह है।"

काफी चखचख और कहासुनी के बाद लोगों ने आखिर यह खबर बूढ़े वानो को सुनाई। लेकिन दूसरों को यह खबर जितनी विचित्र लग रही थी, उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। "वह लड़की सुन्दर है। ऐसी सुन्दरता किसी एक की सम्पत्ति बनकर रहे. यह तो ज्यादती है।" बूढ़े वानो की इस बात पर, वहां खड़े नौजवान हंस पड़े, क्योंकि उन्होंने यह जान लिया था कि बूढ़ा वानो मुक्त-प्रेम में विश्वास करता है।

करेन अभी-भी "मेरीना" धुन पर सीटी बजाता था, यह बात और है कि अब उसे सुनकर अरेविक नहीं आती थी। अरेविक की अनुपस्थिति से कोई परेशान भी न था। उसने करेन को धोखा दिया था, इसलिए कोई क्यों परेशान होता। हां, यह जरूर है कि हमारे मुहल्ले को उदासी की चादर ने ढक लिया था।

कारो ने अपना विरह गीत गाना बन्द कर दिया था। अब वह अपने घर के छज्जे पर भी नहीं आता। और अगर वह कभी अचानक छज्जे पर आ भी जाता

तो येरानुई चाची उसकी तरफ हिकारत भरी नजरों से इस तरह देखतीं और कहतीं —जानती हूं तुझे ! तूने अपने साथी की लड़की चुरा ली है । तेरा चेहरा तो ठगों जैसा है ।

तब बूढ़ा कहता—अरे, वह तो बहुत बढ़िया आदमी है । लड़कियां उसे पसंद करती हैं । मुझे तो उसे देखकर ईर्ष्या होती है ।

"कौन सी अच्छाई है उसमें ! उसने अपने दोस्त को दगा दिया है ।"

"फिर भी वह अच्छा है बूढ़े वानो ने कहा ।"

"करेन" यह अरेविक की आवाज़ थी । एक बार फिर हम सब अपने-अपने छज्जों पर झपटकर आ गए । एक बार फिर हमारी आंखें चमक उठीं थी । तब करेन "मेरीना" धुन पर सीटी बजाता हुआ जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरने लगा था ।

अरेविक को अपना बाहों में समेटकर वह आसमान का बहुमूल्य टुकड़ा लिए प्यार की राहों पर चल पड़ा था ।

"यह सब कुछ क्या है, समझ में नहीं आता ।" बूढ़े वानो ने कहा ।

"इसमें न समझ में आने वाली बात क्या है । येरानुई चाची ने उसे डांटकर कहा—"उसने कारो को झपटकर अलग कर दिया है ।"

"ओह ! तब तो वह अच्छी लड़की है ।" वानों ने अपने विचारों को तुरंत बदलकर कहा —ऐसी लड़की के माता-पिता प्रशंसा योग्य हैं ।"

कारो ने अपने को कमरे में बंद कर लिया था और वहीं बिरह का गीत गाने लगा था । पड़ोसियों ने करेन से पूछा कि क्या यह सच है कि कारो ने इस लड़की का अपहरण करना चाहा था । करेन ने कहा—हां यह ठीक है । लेकिन वह शांत था । उसने जब कारो के बारे में यह बात कही तो उसके प्रति कोई क्रोध का भाव न था । हां, इस विषय में वह इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सका । जो भी हो, वह अपनी अरेविक के प्रति अत्यंत गौरवान्वित था ।

क्या तुम सोचते हो कि केवल मैं ही अरेविक को प्यार करता हूं । उसके पास तो इतने प्रस्ताव आते हैं कि जिन्हें मना करने तक के लिए समय नहीं मिलता । दरअसल करेन बहुत खुश और मस्त था ।

अचानक फिर से खतरे की घंटी बजी ।

अरेविक के माता-पिता ने करेन से शादी करने के लिए इंकार कर दिया । उसके प्रोफेसर पिता इस बारे में एक भी शब्द नहीं कहना चाहते थे । उन्होंने करेन के माता-पिता से स्पष्ट कह दिया था कि अपनी बेटी का विवाह करने का

उनका कोई इरादा नहीं है, और अगर विवाह किया भी तो चमार के बेटे से नहीं करेंगे। "आप कुछ ज्यादा ही बोल रहे हैं", करेन के पिता ने कहा, जितना चबा सकते हो, उतना ही खाओ।

सभी लोग इस बात पर नाराज और चिढ़े हुए थे। "मेरी समझ में नहीं आता कि अरेविक के पिता अपनी नाक से आगे क्यों नहीं देखते।" येरानुई चाची ने कहा।

और उत्तर दिया बूढ़े वानो ने—"उसे दूर का नहीं दिखता। वह अभी भी अपने क्षुद्र बुर्जआ विचारों से चिपका हुआ है।

"करेन" ये अरेविक की आवाज थी। अभी सवेरा हुआ ही था। उस चाल के किराएदार बिस्तर छोड़-छोड़ कर अपने छज्जों पर आ गए थे। वह नीचे खड़ी मुस्करा रही थी। वह दिन कितना चमकीला और खुशनुमा था। अरेविक के हाथ में एक बड़ा सूटकेस और एक बंडल था। उसकी आंखों में दृढ़ता थी। उनमें ऐसी चमक थी, जिसने सारे विरोधों को पराजित कर दिया था।

करेन "मेरीना" धुन पर सीटी बजाता हुआ सीढ़ियां उतर आया। फिर वे दोनों सीढ़ियों पर वापस चढ़ गए। करेन की मां ने उन दोनों का स्वागत किया—"आओ अरेविक... ...मेरे घर का उजाला।"

अब अरेविक हमारी है। वह पड़ोसियों के बड़े परिवार की एक सदस्या है। हम अपनी इस उपलब्धि और दौलत पर प्रसन्न हैं। अरेविक की खिलखिलाहटों में, केनियों की धुन वाला विरही-गीत विलीन हो गया था। नीचे आकाश का वह सुंदर टुकड़ा अब ऊपर पांचवीं मंजिल पर आसमान के ठीक नीचे पहुंच गया था।

"अब अरेविक को अपना घर मिल गया है।" येरानुई चाची कहती है।

"प्यार तो आत्मा की वस्तु है।" बूढ़ा वानो कहता है।

"प्यार मृत्यु से भी ज्यादा शक्तिशाली होता है।" मैक्सिम गोर्की ने यही तो कहा है।

हां, प्यार शक्तिशाली होता है, लेकिन उनके लिए जो स्वयं शक्तिशाली होते हैं।

लेकिन लड़कियो, तुम कैसे बदल गयी। सचमुच बदल गयी हो। और जानती हो, यह दुनिया भी तो तुम्हारे साथ ही बदलती है। देखो न, अस्सी साल का बूढ़ा, बहरा और जर्जर वानो तक बदल गया।

अब तो बता दो......तुम कैसे बदल गयीं......।

अगासी ऐवाजियान (1925—)

ऐवाजियान का जन्म अबस्तुमान (जार्जिया सोशलिस्ट सोवियत रिपब्लिक) में हुआ था। इन्होंने तिब्लिसी आर्ट एकेडेमी और तिब्लिसी विश्वविद्यालय के भाषा-विज्ञान विभाग में अध्ययन किया। इनकी मुख्य रचनाएं हैं : वर्षा, परिवार का पिता, सितारे की भूमिका और सिगनियार मार्टिरोस की साहसिक यात्राएं (कथा संग्रह) इन्होंने कई फिल्मों की स्क्रिप्ट भी लिखी—त्रिकोण, हटाबल्ला, पिता, बगदासर का विवाह होने वाला है। ये सभी फिल्में "आरमेन फिल्म स्टूडियो में बनीं।

फुसफुसाहट

येगोर बमंट्स ने अचानक अपनी ही आवाज सुनी और स्थिर होकर खड़ा हो गया। वह सड़क के बीचों-बीच जोर-जोर से बोलता हुआ जा रहा था। उसने झेंपते हुए इधर-उधर देखा। कुछ दूरी पर चौराहे के एक ओर बनी काली इमारत की पांचवीं मंजिल से एक महिला नीचे झांक रही थी। गत्ते के एक फटे हुए डिब्बे जैसी बनी "एयरोफ्लाट" की सिटी-एजेंसी-बिल्डिंग के सामने टैक्सी स्टेण्ड पर एक दूसरे की गाड़ियों पर झुके हुए ड्राइवर बातें कर रहे थे और पास ही बेंच पर एक महिला बैठी थी। इनमें से किसी का ध्यान उसकी तरफ न था। वह शांत हो गया। न तो किसी ने उसे देखा, न ही किसी ने उसकी तेज कर्कश आवाज ही सुनी थी। येगोर ने अपनी बिना हजामत की हुई दाढ़ी सहलाई, फिर अपने अपराधबोध से सिकुड़ा हुआ, उस इमारत की दीवार पकड़े-पकड़े चलने लगा। इस तरह उसने अनेक बार जोर-जोर से अपने ही आपसे बातें करते हुए, अपने को पकड़ा है, कई बार दूसरों ने भी टोका है और जब उसने अपनी इस आदत का काल्पनिक दृश्य अपने ही सामने प्रस्तुत किया तो शर्म से गड़ गया।

येगोर ने अपनी काली जैकिट पहनी, ऊपर तक बटन लगाए, सिर पर

परंपरागत ढंग से टोपी लगायी और यह सोचकर चला कि अब कभी सड़क पर अपने आपसे बातें नहीं करेगा। "अंततः तुम क्या कर सकते हो येगोर बमंट्स। देखो, तुम लोगों को तो बदल नहीं सकते। आखिर इसके लिए कितनी बार कोशिश करोगे। तुम अपने भाई के साथ ही कुछ नहीं कर पाए। सुबह से तुम उसे समझाते हो, लेकिन सब बेकार। अरे उसे अकेला छोड़ दो...... उससे कह दो कि यह उसके भले के लिए है। इसके अलावा तुम्हारे पास उसके लिए कुछ भी करने को तो नहीं है और जो कुछ है भी वह एकदम बेहूदा और व्यर्थ है। वह तुम्हारी बातों को कोई महत्व नहीं देता है, तुम पर विश्वास नहीं करता है। इधर दो साल से वारसेनिक के लिए तुम अपने आपको सता रहे हो, क्यों। क्या उस लड़की ने तुम्हारी ओर कभी ध्यान दिया। लेकिन इस कारण तुम्हारे बाल सफेद हो गए। फिर तुमने साटो से संबंध बनाए। उसके साथ तुम्हारी दाढ़ी सफेद हो गयी। फिर जेनिया आयी। तब तक तुम काफी थक चुके थे। तुम बात करने की स्थिति में भी न थे। तब तुमने सोचा वह अपने लिए हैं और मैं अपने लिए हूं। फिर भी हम किसी तरह रह लेंगे। पर भला यह कैसे हो सकता था कि वह अपने लिए है और मैं अपने लिए हूं। आखिर हमें साथ-साथ रहना है। योगोर को तब याद आया कि कैसे उसने लोगों को समझाने के निरर्थक प्रयत्न किए थे। फिर उसने उनसे चुपचाप मन की बात कही, किन्तु उसने जब यह अनुभव किया कि यह महिला भी उस की बात को नहीं समझ पा रही है और न समझना चाहती है तो उसने मान लिया कि पहले की तरह इस बार भी धोखा हुआ है। दरअसल एक बार जब वह बोलने लगता तो चुप ही न होता। वह कहना शुरू करता तो उसकी आवाज तेज हो जाती और फिर वह चीखने लगता। इतना चीखता कि जेनिया परेशान हो जाती। और एक दिन आखिर वह उसे छोड़कर चली गयी। उसके दोस्तों ने भी वैसा ही व्यवहार किया। मैक्सिम, सेदो और ज़कार—सभी छोड़कर चले गए। फिर बाकी लोगों ने भी साथ छोड़ दिया और कभी-कभी तो वे उसका मज़ाक भी बनाते—"वह देखो, सुधारवादी आ रहा है।" वे उसकी तरफ जिस आत्मविश्वास और समझदारी से देखते वह उसके लिए असहनीय और विचित्र लगती। वे कहते —"कहो सुधारवादी! मैं चाहता हूं तुम मेरी बात सुनो और समझो। अगर तुम मेरी बात मानोगे तो सब ठीक हो जायेगा। मेरी समझ में नहीं आता कि लोग सुनना क्यों नहीं चाहते। अधिक से अधिक यही होता है कि लोग तुम्हारी आंखों में झांकते हैं और दूसरी-दूसरी बातें सोचते हैं—यानी वह अपना अच्छा-बुरा समझता है, उसे तुम धोखा

नहीं दे सकते, वह यह भी जानता है कि वह सैकड़ों लोगों को धोखा दे सकता है।

इस तरह येगोर अपने आप में वापस आता है। वह अपने दबे हुए और रक्त संतित विचारों को अपने अंदर से निचोड़कर निकालता है। फिर वह ऊंचे स्वर में बोलने लगता है। चिल्लाता है और जोर-जोर से चीखने लगता है। तब यही लगता है कि लोगों को किसी भी तेज आवाज़ को रोक देना चाहिए, चाहे वे उसे पसंद करें या नहीं। जब येगोर देखता है कि वे उसकी ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं तो वह अपनी आवाज़ को और तेज़ कर देता है और तब तक बोलता रहता है जब तक वह खांसने नहीं लगता और उसकी आवाज़ अवरुद्ध नहीं हो जाती है। उसके माथे, गले और चेहरे की नसें सूज जाती हैं। भला और होगा भी क्या। पिछले कुछ दिनों से योगोर अत्यंत हास्यास्पद हो गया था। वह बोलता तो बोलता ही रहता और यह जानते हुए भी कि वह व्यर्थ ही बोल रहा है, फिर भी वह चुप नहीं होता और इसी कारण लोग उसे देखकर कतराने लगे थे। येगोर! तुम फिर बड़बड़ा रहे हो, लोग उसे टोकते। और सचमुच वह बड़बड़ाता था, इसमें कोई शक नहीं है। बूढ़े लोग तो बड़बड़ाते ही हैं। लेकिन अगर आप एक बार सुनें, सचमुच एक बार—मैं दुहराऊंगा नहीं, बस एक बात को एक ही बार कहना काफी है, तो आप पाएंगे कि वह बड़बड़ाहट नहीं है और तब मैं बूढ़ा आदमी नहीं लगूंगा। अब सिर्फ सुनिए......येगोर अक्सर परिचित लोगों को सड़क पर रोक लेता है और जो कुछ कहना चाहता है उसे जल्दी-जल्दी और घबराहट के साथ कहने की कोशिश करता है। लोग उसकी बातें सुनकर आंखें चढ़ाने लगते हैं और जब उ‌ाके गाल लाल हो जाते हैं तो वह समझ जाता है कि वे उसकी बात नहीं सुन रहे हैं। "लेकिन वे क्यों नहीं सुनते हैं", येगोर उनकी बांह पकड़कर पीछे-पीछे चलता है। तब वे कहते हैं—"अच्छा-अच्छा ठीक है .... ठीक है।" और तब येगोर अनुभव करता है कि वे उसे बिलकुल नहीं सुन रहे थे।

येगोर थक जाना चाहता था, इतना थक जाना चाहता था कि बस मुस्करा सके, शाम को सभी को खुश करके शांतिपूर्वक घर वापस आए और संतोष की नींद ले सके। एक दिन येगोर नदी के पार चला गया। उसने पुराने शहर में प्रवेश किया और धूल भरी सड़कों तथा गुफाओं में घूमने लगा। पुराने ज़माने में वे गुफाएं एक कमरे और कमरे के आवास थे, लेकिन अब वे खाली थे। उनमें धूल और गंदगी भरी हुई थी।

उस शहर की पक्की सड़क पगडंडी बन चुकी थी और धीरे-धीरे हरियाली

के बीच पगडंडी भी गायब हो चुकी थी। येगोर उस शहर के सबसे ऊंचे स्थान पर बैठ गया। लेकिन येगोर का अन्तर्मन शांत न था। उसे लगा जैसे उसकी नसें और शरीर के अन्य भाग अपनी-अपनी जगह से हट गए हैं। वह अपने को शांत और अशांत दोनों ही बनाने के लिए नीचे देख रहा था।

नदी की इस तरफ, पुराने शहर में, खाली और जर्जर गुफाएं कंकाल की तरह असहाय होकर आश्चर्य से देख रहीं थीं। अब वहां सिर्फ कुछ अस्तबल और एक कब्र शेष थी। वहां रहने वाले लोग, धूप वाले आरामदेह घरों में जा चुके थे। उन्हें वह आवास-सुविधा बड़ी आसानी से मिल गयी थी, विशेषकर जब एक गुफा के ढह जाने के कारण दुर्घटना हुई थी।

येगोर ने एक बार मुड़कर उन सड़कों की ओर देखा जो एकदम सीधी, चौड़ी और सुडौल बनी हुई थीं। उसकी निगाह सड़क के आखिरी हिस्से पर पड़ी। उसने थोड़ा ऊपर उठकर देखा और फिर वापस गर्दन घुमा ली। उस सड़क पर कारें दौड़ रहीं थीं। वे इधर-उधर गुफाओं तक ला रहीं थीं। इसके अलावा बसों से भी यात्री झुंड के झुंड बनाकर उतर रहे थे और उन गुफाओं को आश्चर्य से देख रहे थे।

गुफा की चोटी पर बैठकर येगोर उनके आश्चर्य मिश्रित भावों को स्पष्ट देख पा रहा था। उन लोगों को ऐसा लग रहा था कि यहां शायद बालों वाले दो मीटर लम्बे लोग, अपनी पत्थर की कुल्हाड़ियों के साथ इन गुफाओं में रहते रहे होंगे। जबकि येगोर बमंट्स स्वयं इनमें से एक गुफा में रहा था।

पर्यटकों का दल ऊपर की ओर चढ़ता है। उनका गाइड बिना सांस लिए बता रहा था—"इस पंचवर्षीय योजना में आखिरी गुफा भी खाली करा दी जाएगी। निर्माण कार्य में हमारा नगर सारे देश में चौथे नंबर पर है। इन गुफाओं में रहने वाले लोग, इन अर्द्ध जंगली कमरों से निकलकर इस छोटी नदी के पार चले गए और वहां कंकरीट और टूफा से बनायी गयी बड़ी, चौड़ी और धूपदार इमारतों में वे रहने लगे।"

"वे प्रस्तर-युग से एकदम बीसवीं शताब्दी में आ गए।" एक संकोची पर्यटक ने लोगों को हंसाने के उद्देश्य से पूछा। लेकिन ऐसे लगा जैसे दूसरे लोग भी यही बात पूछना चाहते थे, क्योंकि हंसने की बजाय लोग गाइड की तरफ देखने लगे थे।

पर्यटकों का दल अब प्रार्थना-भवन की ओर इस तरह बढ़ रहा था, जैसे वह किसी ओर से बंधा चला जा रहा हो। दल के लोग अपने आपको न तो अना-

सक्त बना सके और न ही उन्हें मंत्र पाठ की अनुभूति हुई जिसे वहां के मूलनिवासी अनुभव किया करते थे। वे चुपचाप प्रार्थना-भवन के अंदर गए। वहां पतली मोमबत्तियां जल रहीं थीं जिनके प्रकाश में वहां चारों तरफ टंगी हुई गंदी और बदसूरत व कढ़ाई वाली तौलिया, महिलाओं के कपड़े और बीमार लोगों के उतारे हुए कपड़े टंगे हुए दिख रहे थे। मोमबत्तियों के बीच में, एक चौकी पर भेड़ का सिर कटा हुआ रखा था। उसकी आंखें बंद थीं। पास ही बेहद उदास मुद्रा में येगोर बैठा था। कुछ देर बाद पर्यटकों का दल उस शहर और येगोर दोनों को एक दूसरे के लिए छोड़कर चला गया।

दो आदिवासी तंग जीन्स पहने हुए, पानी में पंप लगाकर, ऊपर की अभी-भी आबाद गुफाओं में पानी पहुंचा रहे थे।

लगता है अब तक येगोर अपने भीतर की उत्तेजना को समाप्त कर चुका था, लेकिन अब कोई आंतरिक धूर्तता फिर से उसकी उत्तेजना को भड़का रही थी। तुम बोलते रहते हो......बोलते रहते हो... पर कोई तुम्हारी बात नहीं सुनता है। ऐसा क्यों है कि मैं उन्हें सुन लेता हूं और वे मुझे नहीं सुनते। मैं उनसे कुछ भी नहीं चाहता हूं। मैं तो चाहता हूं कि वे खुश रहें, लेकिन मुझे सुन लें।

येगोर को लगा कि वह फिर से बोलने लगा है। उसने इधर-उधर देखा। अचानक उसे दूर दो बिंदु चलते हुए दिखाई दिए। पहले वे उसे पक्षी महसूस हुए, फिर धीरे-धीरे वे भेड़ जैसे दिखे। लेकिन जब येगोर ने ध्यान से देखा तो बड़ी मुश्किल से समझ सका कि वे तो मनुष्य हैं। लेकिन वे इतनी दूर थे कि वह यह नहीं जान सका कि वे बच्चे थे, पुरुष थे या स्त्रियां थे।

अचानक येगोर ने लोगों को कहीं पास ही बातें करते हुए सुना। परेशान होकर उसने इधर-उधर देखा। उसने बिना किसी परिश्रम के ही जान लिया कि वे लोग किस देश के हैं, क्या भाषा बोल रहे हैं और कैसे लोग हैं। उसने समझ लिया था कि युवती तो यरेवान की थी और पुरुष ज़ंगेज़ूर से आया था। लेकिन वे आवाजें कहां से आ रहीं थी। येगोर ने ऊपर देखा, मुस्कराया और फिर नीचे की ओर देखा। और तब उसे विश्वास ही न हुआ जब उसने जाना कि वे आवाज़ें दूर दिख रहे लोगों की हैं। पहले तो उसे लगा कि यह सब कोई चमत्कार है या निर्माण तकनीक का कमाल है या हो सकता है कि कोई भावी रहस्य हो—लेकिन फिर उसे याद आया कि यह तो बड़ी साधारण सी बात है-। आखिर उसने यहां पहले भी तो दूर की आवाज़ें सुनी हैं। हां उसने यह कभी नहीं सोचा कि ये कैसे होता है, लेकिन उन आवाजों को उसने सुना है। फिर भी यह सवाल तो है कि

बड़ी मुश्किल से दिखाई देने वाले दूर के स्थानों से अपने वाली आवाजें इतना निकट कैसे सुनाई देतीं हैं। अब उसने इस मसले पर एकदम दूसरे तरीके से सोचना शुरू किया। दरअसल अवरोधों के अभाव में हवा एक अच्छा संवाहक बन जाती है, ज्यादा ठीक कहें तो यह मनुष्य की निरंतरता का ही फल है, यानी हवा के माध्यम से वह एक स्थान से भेजी आवाज़ को दूसरे स्थान पर मनुष्य के ही रूप में प्रस्तुत कर सकता है। येगोर को याद आया (और वह इस बात को भूला क्यों) कि जब वह छोटा बालक था तो यहां रहा था और वह देखा करता था कि कैसे आवाज़ क्रिचुट्स और होव्हान्स बमंट्स गुफा के ऊपर चढ़कर एक दूसरे से बातें किया करते थे। जब अवाग नीचे उतरने लगती तो होव्हान्स उसकी ओर दिखे बिना ही नीचे उतर जाता। वे एक दूसरे को अपने विचार संप्रेषित करने में सक्षम थे। अब येगोर इस रहस्य का अर्थ समझ गया था—यह दुनियां एक पदार्थ है, अविभाज्य है और पत्थर, पहाड़, पौधे, हवा··· ·· सभी वस्तुएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। जहां पौधे समाप्त होते हैं—हवा शुरू हो जाती है, जहां हवा समाप्त होती है, वहां पत्थर आरंभ होते हैं, फिर पत्थरों के बाद काई, फिर मेंढक और फिर पानी······इसी तरह यह निरंतरता का क्रम चलता रहता है।

हमें सिर्फ यही पता नहीं है कि मनुष्य का आरंभ और अंत कहां है। इस दुनिया में कोई स्थान खाली नहीं है। यही कारण था कि जब क्रिचुट्स दुखी होती थी तो सामने की गुफा में बमंट्स भी उदास हो जाता था। यहां अगर कोई फुस-फुसाकर अपना संतोष व्यक्त करता तो पहाड़ के पीछे वहान उसे सुन लेता था। एक गुफा का कोई पत्थर लुढ़कता है तो दूर की गुफाएं थरथराने और कांपने लगती हैं। फिर भी किसी तरह इन गुफाओं ने अपने को ध्वस्त होने से बचा रखा है, क्योंकि वे जानती हैं कि अगर एक गुफा गिरेगी तो पड़ोस की गुफा भी ढह जाएगी और फिर उसके बाद की गुफा गिरेगी······इस तरह पूरा पहाड़ ध्वस्त होकर बरबाद हो जायेगा और गुफाओं की खाली जगह घाटियों में बदल जाएगी।

येगोर ने अब अपने बारे में सोचा। उसने सभी चीजों को एकदम और एक ही नजर में देखा। फिर तो रंग रंगों में व्याप्त हो गये, सीमाएं सीमाओं में, पौधे पौधों में। शरीर शरीर में—सब एक दूसरे में व्याप्त हो गए, चाहे वे पत्थर और पृथ्वी हों, फूल और पौधे हों, झाड़ियां और कांटे हों, सब एक जैसे हैं, एक से औचित्य वाले और एक सी सुन्दरता वाले हैं। इस तरह येगोर ने अपने विचारों की दुनिया में पत्थर, पृथ्वी, कांटे, उसके पिता, पर्यटक····· सबको अनुभव किया। अब उसके विचारों को सुनने वालों को कौन बताए कि जो भी येगोर के विचारों

को सुनता है वह येगोर के संप्रेषित दुख से स्वतः दुखी हो जाता है, ठीक उसी तरह, जिस तरह येगोर के दर्द से पत्थर लुढ़क पड़ता है। येगोर के दर्द के आतंक से मछलियां नदी में डूब जाती हैं, येगोर के विचार इकट्ठे हो जाने पर बादल इकट्ठे हो जाते हैं…… ।

येगोर फिर से अपने विचारों को गतिशील बनाता है। उसने नये शहर में सेरोब का घर ढूंढा। वह उस घर को बस देखता ही रह गया। फिर वह उस पर से फुसफुसाकर कहने लगा—"सेरोब! पिछली बार तुम मुझसे नाराज़ थीं। तुमने सोचा मैं किसी बात की ओर संकेत कर रहा हूं, किंतु मैंने सिर्फ वही कहा जो कह रहा था। उसके अलावा मेरे मन में कुछ भी न था।"

फिर येगोर ने सेरोब के घर की बगल में बनी चार मंजिली इमारत को देखा।

"गेरगिन"! तुम मेरा मज़ाक क्यों उड़ाती हो। इसमें भला मजाक की क्या बात है, अगर मैं शुशिक के साथ रहता हूं। अगर हम दो बूढ़े लोग साथ-साथ रहते हैं तो क्या बुरा है। हम शहर के बिलकुल किनारे पर ही रहते हैं और अब तो एक ही कमरे में गुज़ारा करना होगा। इसमें गलत बात क्या है। आखिर इसका मजाक क्यों बनाते हो। जरा सोचो और तब तुम स्वयं मेरी बात को ठीक महसूस करोगे। दरअसल तुम्हें मालूम ही नहीं है कि तुम मेरी बात के औचित्य को स्वीकार करते हो। हम एक-दूसरे से संबद्ध हैं और किसी भी प्रकार का संबंध हम सबके संबंधों को मजबूत बनाता है।

येगोर ने फुसफुसाकर बंद कर दिया। फिर उसने सहज भाव से सोचा, लेकिन इस बार गेरगिन के बारे में "गेरगिन! तुम मेरे मामले में दखल मत दो। यह बात तुम पर ही अधिक निर्भर करती है। तुम देखल मत दो।"

येगोर कुछ देर तक के लिए शांत हो गया। फिर उसने शहर की ओर देखा और एकदम किनारे पर बने लाल छप्पर वाले मकान को एकटक देखने लगा।

"अर्जुमन! मेरी तरफ इस तरह मत देखो। तुम्हारी हर नज़र मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े कर देती है। मैं मर जाऊंगा, अवश्य मर जाऊंगा। अगर मैं मर जाऊंगा तो तुम मुझे हीन समझोगी। इस बात को तुम महसूस नहीं कर रही हो। न जाने क्यों न तो तुम मेरी बात सुनती हो और न समझने की कोशिश करती हो क्या तुम चाहती हो कि हम एक दूसरे को हीन समझें। और यह कि मैं मर जाऊं और तुम मुझे हीन समझो। ठीक है……अर्जुमन…… ।

फिर येगोर शहर की एक झोंपड़ी को ढूंढने लगा और आखिर उसे खोज ही

लिया। उसने शहर के घरों को गिना, फिर लगा कि उसने गलती की है तो दुबारा गिनने लगा, लेकिन जिस घर को चाहता था उसे नहीं ढूंढ सका और तब उसने अपने आप पर शरमाते हुए वह बार से बाहर आने वाली सड़क से बातें करने लगा— "प्रिय नजेली, मैं तो तुम्हें अक्सर अपनी बात सुनाता था, बहुत बार सुनायी भी, लेकिन तुमने कभी सुना ही नहीं। मैं सचमुच तुमसे प्यार करता हूं, पर ऐसा लगता है कि तुम्हारे लिए प्यार का अर्थ कोई नहीं है, वह तो सिर्फ गाना-नाचना और सुस्त होकर बैठ जाना है। तुम यह नहीं महसूस करती हो कि अब तुम अप्रसन्न हो, लेकिन मैं महसूस करता हूं। मैं जानता हूं तुम मेरी बात नहीं सुनोगी, क्योंकि जब मैं तुमसे बात करता था तो तुम घबरा जाती थीं, फिर तुम नाराज हो जातीं और शोर मचाने लगतीं, नजेली प्रिये, मैं तो तुम्हारे लिए तो उपद्रव भी मचा दिया करता था······।

येगोर उदास हो गया, सड़क धीरे-धीरे छोटी होती गयी और लगा कि वह वहीं खत्म हो गयी है। तब येगोर गालस्त से बातें करने लगा। उसने उससे बहुत देर तक बातें कीं और जो कुछ कहना चाहता था उसे स्पष्ट बताता रहा। फिर वह चुप हो गया।

"येगोर" अचानक येगोर ने आवाज सुनी। आसपास तो कोई न था। येगोर मुस्कराया। बहुत स्पष्ट मुस्कान थी। ज़ाहिर है, किसी ने दूर की चट्टान से कुछ कहा था। बहुत दूर और अदृश्य था। "मैंने सुना है" येगोर फुसफुसाया, फिर बड़ी देर तक सोचता रहा और उस समय तक दूसरों से फुसफुसाकर बातें करता रहा जब तक कि उसे यह विश्वास नहीं हो गया कि उन्होंने उसकी बातें सुन ली हैं। उसने शांत होकर सांस ली और गुफा से नीचे उतर कर धीरे-धीरे बाहर की ओर चल पड़ा।

वारदगेस पेट्रोसियान (1932—   )

पेट्रोसियान का जन्म अश्तराक शहर में हुआ था। सन् 1954 में वह येरेवान राज्य विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग के पत्रकारिता-अनुभाग से स्नातक बने। उनकी प्रमुख कृतियां हैं : एक आदमी के बारे में बैले, (कविता-संग्रह), आखिरी-रात, अधूरे चित्र, शहर की आधी खुली खिड़कियां, आरमेनियाई-रेखाचित्र, बीते अनबीते वर्ष, बचपन के आखिरी दिनों के पत्र, किसी की औषधिशाला और दो अनजान मात्राओं के साथ समीकरण—कहानी संग्रह। मास्को फिल्म स्टूडियों में इनकी कहानी आरंभ करते हुए पर आधारित एक फिल्म बनी थी मील के पत्थर, पाखंडी की यह झूठी टोपी, नाटक येरेवान एकेडेमिक थियेटर में मंचित हुआ था।

उसकी मां का घर

वह अपनी मां के घर की एक चाबी अपने पास रखता था। आमतौर से वह काल-बैल कभी नहीं बजाता था क्योंकि इससे सोयी हुई मां के जाग जाने का डर था या अगर वह गहरी नींद में हुई तो घंटी की आवाज़ सुनेगी नहीं। उसने अपनी मां को पिछले चार-पांच महीनों से नहीं देखा था। मास्को... . विदेश और छोटे-बड़े कामों में वह कितना व्यस्त रहा है। "अगर थोड़ा समय मिल जाता तो कितना अच्छा होता" वह सोचा करता था। उसने घर का ताला खोला और अंदर गया। गलियारे में बत्ती जल रही थी।

"मां" उसने पुकारा। लेकिन कोई उत्तर नहीं आया।

वह कमरे में गया। बिस्तर बड़े अच्छे ढंग से बिछा हुआ था। फर्श साफ थी और रेडियो खुला हुआ था। उसकी मां रेडियो हर समय खोलकर रखती थी। वह कहती थी इसमें मनुष्य जैसा गुण है। जब मैं अकेले कमरे में आती जाती हूं और अपने आपसे बातें करती हूं तो इससे मुझे अपनी बहुत सी बातों के जवाब मिल जाते हैं।

उसकी मां उस समय न तो रसोईघर में थी और न ही छज्जे पर। अपनी सहज उदासीनता के कारण उसने रेडियो बंद कर दिया। हरे मखमल से सजे हुए सोफे पर लेट गया। यह ठीक ही था और बिलकुल ठीक था कि उसकी मां घर पर नहीं थी।

मां के पास क्या कुछ पीने के लिए रखा था। वह धीरे-धीरे उठा और रेफ्रीजरेटर खोलकर देखने लगा। उसमें आधी बोतल ब्रांडी और दो बोतल बियर रखी थी। उस समय गर्मी थी। उसने बियर की बोतल खोली। किंतु उसका एक ही घूंट मुश्किल से पी सका, क्योंकि वह खट्टी हो गयी थी। उसने बोतल पर तारीख देखी तो वह एक महीने पुरानी थी। दरअसल उसकी मां जानती थी कि वहान को बियर बहुत पसंद है। वह तीन या चार महीने गांव नहीं आ सका था, लेकिन जल्दी ही उसने अपने मन से इस विचार को निकाल दिया। वह तो इस अकेलेपन का पूरा लाभ उठाना चाहता था और अपने दिमाग़ को खाली रखना चाहता था—विशेषकर जबकि चारों तरफ गांव में शांति थी, सिर्फ बच्चों की आवाजें और कुछ कीड़े मकोड़ों की नीरस आवाज़ें ही सुनाई दे जाती थी। उसकी मां का घर रास्ते से हटकर था। उसके चारों ओर बाग थे और वहां कार नहीं आ सकती थी। वैसे भी वहान के पास कार तो थी नहीं। वह फिर से सोफे पर इस निश्चय के साथ लेट गया कि अब ज्यादा नहीं सोचेगा।

वह मां को मनाने आया था कि वह उसके साथ शहर चलकर रहे, कम से कम सर्दियां तो नहीं बिताए। उसने सोचा मां आएगी तो वह इस बात को कुछ ऐसे कहेगा—"मां, यह कितने अपमान की बात है कि तुम हमारे साथ नहीं रहतीं। आखिर मैं तुम्हारा इकलौता बेटा हूं। शहर में हमारे पास चार कमरों का एक मकान है और तुम तो अपनी बहू को भी प्यार करती हो। फिर भला हमारे साथ तुम्हारा न रहना कितने शर्म की बात है। आखिर तुम इस तरह अकेलेपन में कितने दिन काटोगी।"

तभी टेलीफोन की घंटी बजी। जिस सुखद आलस्य में वह डूबा हुआ था। वह एकदम गायब हो गया था। टेलीफोन की घनघनाहट से उसे कितनी बोरियत हुई थी। घंटी काफी देर तक बजती रही। आखिर वह उठा और धीरे-धीरे सुस्त पैरों से उस ओर बढ़ा। शायद तब तक घंटी बजना बंद हो जाय। आखिर उसे रिसीवर उठाना ही पड़ा।

"अनुश आंटी"! उधर से कोई महिला बोल रही थीं। "तुम सो तो नहीं रही थी। दरअसल मैंने यह पूछने के लिए परेशान किया कि क्या तुम शहर जा

रही हो। अरमयीस गाड़ी लेकर जा रहा है। चार बजे जाएगा।" वह महिला बिना रुके बोलती जा रही थी।" मैं उसे कह दूंगी कि तुम्हारा इंतज़ार करे, तो तुम जा रही हो।"

"मां घर पर नहीं है।"

"अच्छा··· " महिला ने कहा। फिर टेलीफोन कट गया। वहान ने मुस्कराकर रिसीवर रख दिया। वह सोचने लगा—आखिर ये कौन हो सकता है। कुछ भी समझ में न आने पर वह सचमुच ही एकदम निराश हो गया। फिर अपने आपसे कहने लगा—मां, आखिर तुम इस घर की चार दीवारी में कब तक बंद रहोगी और इस तरह शहर जाने के लिए कभी किसी से और कभी किसी से मिन्नतें करोगी।"

मां के लिए बहुत चिंतित था। यह बात और है कि वह शहर से गांव देर-देर से आता है, लेकिन मां के लिए उसके मन में बराबर चिंता बनी ही रहती है। उसने चाहा भी है कि इस परेशानी से मुक्त हो जाय क्योंकि मां येरेवान में अपने ही घर में है। तब शायद उसके दिमाग का तनाव कम हो जाता, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। इसलिए अब की बार वह मां से लड़ने के लिए तैयार होकर आया था। "बस अब बहुत हो चुका। हम जा रहे हैं। मेरे पास समय बहुत कम है। देखो मां, जरा समझने की कोशिश करो। आखिर अब तुम्हारी जिन्दगी बची ही कितनी है जो तुम अपनों से दूर रहकर बिताना चाहती हो। आखिर तुम्हारा है ही कौन।

उसकी मां को जीना ही कितना है। एक बार (उन दिनों वह अपने घर की चाबी नहीं रखता था। जब वह घर आया तो बड़ी देर तक दरवाजे पर दस्तक देता रहा। लोगों ने बताया कि मां तो घर में है, लेकिन उसकी दस्तकों का कोई उत्तर नहीं मिला। फिर उसने परेशान होकर खूब ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा पीटना शुरू किया। शोर सुनकर पड़ोसी भी इकट्ठे हो गए। उन्होंने बताया कि अभी थोड़ी देर पहले ही तो मां को अंदर जाते देखा था। वहान के मन में न जाने कैसा डर समा गया था। अंत में उसने एक खिडकी का शीशा तोड़कर उसे खोला और अंदर गया। वह पसीने से तरबतर था। उसका मन हज़ारों आशंकाओं में डूबा हुआ था। कहीं मां फर्श पर तो नहीं गिर पड़ी। कहीं रेडियो के पास मृत तो नहीं पड़ी है।।

उसकी मां बेखबर सो रही थी। यहां तक उसने कुछ ओढ़ा भी न था।

"मम्मी" उसने सावधानी से पुकारा। कहीं अचानक वह····· मम्मी······

वह परेशान हो उठा और मां का हाथ पकड़कर देखा—वह गरम था और नाड़ी ठीक चल रही थी।

तभी मां जाग गयी। "अरे मैं तो सो गयी थी।" मेरा वहान आ गया और मैं सोती रही.......।

इसके बाद से वहान अपने साथ घर की एक चाबी ले जाने लगा। फिर वह मास्को, विदेश, धन्धों आदि में कितना व्यस्त रहा......है। "कितना अच्छा होता अगर थोड़ा समय मिल जाता।" उसने चार महीनों से अपनी मां को नहीं देखा।

क्या घर में कुछ खाने को था। थोड़ी सी तली हुई फलियां और मूंग की दाल रखी थी, जो वहान को बहुत पसंद थी। उनको गरम किए बिना ही वहान उन्हें खाने लगा। गांव की पतली रोटी तो थी नहीं, सिर्फ शहर से आयी रोटी थी। कौन लाया होगा इसे। अब मां को ये सब परेशानियां नहीं उठानी होंगी। वह मां को इस बार जरूर अपने साथ शहर ले जायेगा। हस्मिक तो चलते समय स्पष्ट शब्दों में बोली थी—तुमने उन्हें गांव में अकेला छोड़ रखा है। गांव के लोग पहले से ही तरह-तरह की बातें करते रहे हैं। जानते हो, अकेला रहना कितना दुखदायी होता है। जरा एक बार रहकर तो देखो, पागल हो जाओगे। फलियां हालांकि ठंडी थीं, लेकिन स्वादिष्ट थीं। बस यूं ही आलस के कारण उसने गरम नहीं किया। फलियों के साथ उसने थोड़ी ब्रांडी भी पी। धीरे-धीरे वह उसकी नसों में बहते हुए शरीर के सभी अंगों में फैल गयी और वह सुस्त हो गया। आखिर मां कहां चली गयी। अपनी भतीजी यानी मेरी मामी की लड़की के यहां तो नहीं चली गयी। इस गांव में वही तो मां की रिश्तेदार है। वहान ने उस लड़की को तीन या चार साल पहले देखा था। उसका नाम वजगानुश या मैरानुश होना चाहिए। "आनुश" तो जरूर लगा होगा। उसके सात बच्चे थे। यह बात उसे बिलकुल ठीक से याद है क्योंकि सात में से छह लड़कियां हैं। टेली-फोन फिर घनघनाया। इस बार उसने जल्दी से रिसीवर उठा लिया।

"मां घर में नहीं है। मैं वहान बोल रहा हूं।"

"अरे वहान! अब तो तुम बड़े हो गए हो।" ये पुरुष की आवाज थी" सुनो मैं अराकेल बोल रहा हूं।

"अराकेल"

"तुम्हें भला कैसे मेरी याद होगी। मैं तुम्हारे पिता का मित्र था। मैं और अरमेनाक दोनों मित्र थे। अरमेनाक तो शहर चला गया। तुमसे मुलाकात होती है या नहीं।

"वह सोच रहा था कि अराकेल को क्या कहकर पुकारे।"

"अंकल अराकेल! क्या आपको मालूम है, मां कहां है। मैं दो घंटे से उसका इंतजार कर रहा हूं।" फिर उसने घड़ी की ओर देखा। मुझे घर में आए घंटे हो गए हैं और उसका कोई पता नहीं है।"

"बेटे! मैं बताता हूं।" उसकी आवाज में खरखराहट आ गयी थी। स्पष्ट था कि वह सिगरेट बहुत पीते थे और उसे दमे की बीमारी थी। "वह या तो सेद्राक के घर पर होगी, क्योंकि एक-दो दिन बाद सेद्राक की पोती की शादी होने वाली है। लड़का बहुत अच्छा है। अखलकलाक में वास्तुशिल्पी है। या फिर वह अखरोट खरीदने के लिए बाजार गयी होगी। यह जाम बनाने का मौसम है न। कल वह मरियम से साथ चलने को कह रही थी। मरियम मेरी बहू है। वह अस्तपताल में नर्स है। मैडिकल इन्स्टीट्यूट से स्नातक बनने में सफल नहीं हुई। उसके चार बच्चे हैं। तब भला वह क्या करती। यह भी हो सकता है कि तुम्हारी मां अपनी भतीजी वाजगानुश के घर गयी हो। वह बेचारी करीब एक महीने से बीमार है। डाक्टरों को शक है कि कहीं कैंसर न हो। यह भी हो सकता है कि तुम्हारी मां संत सारकिस चर्च गयी हो, क्योंकि आज उनका ही दिन है या...... ।"

"वहां कोई टेलीफोन नहीं है।"

'सेंट सारकिस चर्च में"

"नहीं, मेरी आंटी के यहां।"

"ऐसा करो, रिसीवर रख दो, मैं उनका नंबर देखकर बताता हूं।"

घर के बाहर के बाग को केवल खिड़की से भी देखा जा सकता था। उस समय शिशिर ऋतु समाप्त हो रही थी। हरियाली पीलेपन में बदल गयी थी। अंगूरों के गुच्छे अंगूरी शराब, मदिरा और अन्य हजारों चीजें बनने के लिए तैयार हो चुके थे। अचानक उसमें उत्साह सा भर गया। उसने सोचा—क्या मां के अंगूरी बाग में अभी भी कुछ अंगूर होंगे। ज्यादा नहीं, एक ही गुच्छा मिल जाए। सबसे बाद में पकने वाले अंगूर बड़े स्वादिष्ट होते हैं। बचपन में वह अंगूरी-बाग में हवा की तरह दौड़कर जाया करता था और धूप से सूखकर किशमिश बने हुए अंगूर के गुच्छों को ढूंढकर तोड़ लेता था। अब क्या वहां कुछ होगा। वह बाहर गया और अंगूरी बाग में टहलने लगा। वहां तीन या चार क्यारियां थीं। उसे अपनी मां के बाग की सीमा पता न थी और वह पड़ोसी के बाग में जा सकता था। यह संभव भी था। अंगूरी-बाग में सीमा रेखाएं भी नहीं बनीं थी। वहां

कोई कुत्ता भी हो सकता था। लेकिन उस वक्त वहां एकदम शांति थी। एक जगह कीचड़ भी था और इस कारण वह फिसल भी गया। दरअसल उसे अंगूर की पीली पत्तियों में सिर खपाकर, आंखें फाड़फाड़कर खोजना पड़ रहा था। आखिर उसे एक गुच्छा मिल ही गया। बहुत सी पत्तियों के बीच एक गुच्छा छिपा हुआ था। वह पीला और एकदम अकेला था। वह काफी बड़े-बड़े दानों वाला अंगूर था। उसने उसे लपककर तोड़ना चाहा, क्योंकि उसके पास चाकू तो था नहीं। उसने दुबारा कोशिश की किंतु गुच्छा अपनी ही अकड़ में लटका रहा। दरअसल उसे डर लग रहा था कि कहीं अंगूर की बेल टूट न जाय, वरना मां नाराज हो जायेगी। अंत में वह उसे तोड़ने में सफल हो गया। अब उसके हाथ में अंगूर का गुच्छा लग रहा था। वह क्यारी के किनारे पर बैठ गया और लाल-चियों की तरह खाने लगा। उन अंगूरों में, बचपन में शिशिर ऋतु में खाए अंगूरों का स्वाद था, या यों कहिए कि उसने आज वैसे ही अंगूरों का गुच्छा खोजा था। उसकी मां कहा करती थी कि वह स्वयं अंगूरी-बाग की देखभाल करती है। ये अलग बात है कि कोई पड़ोसी खुदाई करने या बुआई करने में मदद कर देता है। वैसे भला कौन सहायता करता।

पिछली सर्दियों में पेरिस में उसने एक इटेलियन रेस्तरां में अंगूर मंगाए थे। उसके दाने बड़े और पारदर्शी थे, उनके अंदर के बीच मछलीघर में दिखने वाली मछलियों जैसे लग रहे थे। परंतु वे स्वादहीन अंगूर थे। क्या उसने ये अंगूर भी वैसे ही खोजे हैं। या फिर वे स्वादहीन थे। अगर मिस मेरी मेरी उसे अभी देख लें तो। क्या सचमुच पूरा गुच्छा हड़प कर जाएगा। क्या वह कुछ और अंगूर खोज सकता है। उसने एक बार अंगड़ाई ली और जमीन पर लेट आंखें बंद कर लीं। कल उसने एक बूढ़ी महिला का आपरेशन किया था और उसका पित्ताशय निकाल दिया था। जब उस महिला का चेहरा छोड़कर सारा शरीर सफेद कपड़े से ढक दिया गया था तो अचानक उसमें उसे अपनी मां की छाया दिखाई दी थी। लेकिन वह भी कैसा मूर्ख था। अरे वह तो झुर्रियों और सफेद बालों वाली बूढ़ी महिला थी। उस महिला की आंखें एकदम से बंद हो गयी थी। वह तो डर ही गया था। तुरंत उसकी नाड़ी देखी, उसका दिल ठीक और निय-मित रूप से काम कर रहा था। लेकिन वह उस महिला की जिन्दगी को कितना बढ़ा सका। उसने तो शायद उसे कम ही किया। उसके पित्ताशय में बड़े-बड़े पत्थर निकले थे। उसने सुना दूर से कोई पुकार रहा है—"अर्तवाज़्द........ अर्तवाज़्द"। तभी एक हवाई जहाज काफी नीची उड़ान भरता हुआ गुजरा।

उसने अपनी आंखें तब भी नहीं खोली। मिस मेरी सर्जन है। पेरिस के बाहर बनी एक बस्ती में उसका क्लीनिक है। उसकी शादी नहीं हुई है और अकेली रहती है। "मैं किसी आपरेशन के दौरान मरना चाहूंगी" उस दिन इटेलियन रेस्तरां में बैठे हुए उसने कहा था। यह या तो शराब का असर था या वह सच-मुच ही किसी बात से उदास हो गयी थी। लेकिन वह सोचता है कि मनुष्य को शिशिर ऋतु के अंतिम अंगूर जैसा, पत्तियों के बीच छिपकर धूप से धीरे-धीरे सूखते हुए मरना चाहिए।

उसने आंखें खोलीं। आसमान की तरफ देखा, लगा जैसे नीला रेगिस्तान फैला हुआ है। उसके सिरहाने एक आदमी खड़ा था। कोई चालीस-पैंतालीस साल का होगा। उसने उसके बारे में अनुमान लगाया कि ये कौन हो सकता है……।

हमारी मारगो इस साल छोड़ दी गयी है। अच्छा हुआ तुम आ गए। मैं तो एकदम परेशान था कि क्या करूं, किससे कहूं।

"मेरी मां कहां हो सकती है। उसने कुछ झुंझलाहट से पूछा" तुमने मेरी मां को नहीं देखा है।"

"नहीं, मैंने नहीं नहीं देखा है। मैं तुम्हें कुछ डिब्बा बंद आड़ू और दूसरे फल भेजना चाहता था। पर तुम्हारी मां ने न तो मुझे तुम्हारा पता ही दिया, न टेलीफोन नंबर। ये अच्छा हुआ तुम आ गए, अब तुम उसे अपने साथ ले जाओगे।"

उसने अपने सामने खड़े आदमी को बड़े ध्यान से देखा। जमीन हालांकि सूखी थी लेकिन उसमें गरमाहट थी। फिर वह उस आदमी के बारे में भूल गया, जिसका नाम अभी याद था—अर्तवाज़्द। वह मां का पड़ोसी था। जब वे दोनों बच्चे थे तो शायद मिलकर फल भी चुराए हों। उसने आंखें बंद कर लीं, क्योंकि अब वह अर्तवाज़्द को नहीं देख सकता था, असल में वह आंखें बंद कर के चीजों का ज्यादा अच्छी तरह देख सकता था।

"मैं फलों को डिब्बा बंद कराने जा रहा हूं। उसने अर्तवाज़्द को कहते सुना। "मेरे पास ताजी शराब भी है, शुद्ध शहद भी है। जानते हो, शहर में चीनी का शहद बनाते हैं और दिमाग की तरावट के लिए शुद्ध शहद चाहिए। अच्छा अब तुम मारगो के बारे में क्या कहते हो। उसे बुलाऊं।

"जाओ अर्तवाज़्द, उसने आंखें बंद किए हुए कहा—मैं मां की प्रतीक्षा कर रहा हूं। बाद में खुद आऊंगा।

इत्तफाक से अर्तवाज्द ने बात मान ली और कुछ ही क्षणों बाद उसकी पदचाप धीरे-धीरे दूर जाती सुनाई दी। वहां बस पहले जैसी ही खामोशी छा गयी थी जिसमें कुछ कीड़े-मकोड़ों की नीरस आवाजें भर सुनाई देतीं थी।

उसने ब्रांडी का दूसरा पेग बनाया। उसे अपनी एक छात्रा की याद आ गयी जो एक दिन पहले आपरेशन देखते समय बेहोश हो गयी थी। आखिर कुछ भी हो, वह महिला सर्जन जो थी।

एक पतला रास्ता उसकी मां के अंगूरी बाग से घाटी की तरफ जाता था। अगर उसके पास समय होता तो वह जरूर घाटी की ओर जाता। उसका स्कूल उसी रास्ते पर, ठीक पहाड़ी के ऊपर था। सर्दी के दिनों में स्कूल पहुंचना बहुत मुश्किल होता था क्योंकि रास्ता बर्फ से एकदम ढक जाता था। तब उसके पास एक कुत्ता था। क्यातो नाम था उसका। वह हरदम उसके साथ स्कूल आता था। बहुत अच्छा कुत्ता था। कभी-कभी जब जल्दी होती तो वह कुत्ते की पीठ पर अपना बस्ता रख देता और वह उसे ले भी जाता था। क्या तुम्हारा कुत्ता सातवीं कक्षा तक पढ़ा है—उसके भाई ने एक बार मजाक में पूछा था।

मिस मेरी की पतली पारदर्शी उंगलियां थीं। आखिर उस दिन इटेलियन रेस्तरां में वह क्यों उदास हो गयी थी। उसने कहा था—तुम पूर्व के लोग मनुष्य का बचपन याद करके पिघल जाते हो, उनकी दुखभरी दास्तान सुनते हो और तुरंत यह सोचने लगते हो कि तुम कैसे उसके सहायक बन सकते हो। मिस मेरी के क्लीनिक की कीमत कम से कम एक लाख रुपये होगी।

मां की अलमारी के किवाड़ पर कुछ चित्र लगे थे। वहां दरअसल शीशे की जगह चित्र लगे थे। उसकी मां ने आइना हटाकर सामान्य शीशा लगा दिया था और उसके पीछे तस्वीरें लगा दी थी। उसने उन तस्वीरों को एक-एक करके देखा। उसकी बहन के नाक-नक्श बिलकुल नहीं पहचाने जा रहे थे। उसका चेहरा बिगड़ गया था। उसे याद आया कि मां कहा करती थी कि उसकी बहन की आंखें नीली थीं। तब वह गांव की सुंदरता मानी गई थी। पर उसे तो केवल एक ही दृश्य अच्छा लग रहा था और वही उसे आज भी याद था—उसके बहनोई जब सेना में भर्ती होने के लिए गए थे। बहनोई का नाम था—हेर्यूट्यून। उसने तीनों को एक साथ खड़े देखकर याद किया। उस समय किसी को पता न था कि दो महीनों में लड़ाई छिड़ जाएगी और हेर्यूट्यून पहले ही दिन शहीद हो जाएगा। उस समय उसकी बहन को भी पता न था कि वह साल भर में मर जाएगी और उसके अंदर जो बच्चा जीवित है वह अपनी मां की मृत्यु के छह

महीने बाद, युद्ध की विभीषिका से आंतकित एक ठंडी और कठोर रात्रि को मर जाएगा। किसी को कुछ भी मालूम न था। उस क्षण तो तीनों बहुत खुश थे – वह स्वयं रेलवे स्टेशन के शोर से, उसकी बहन अपने होने वाले बच्चे के अहसास से और उसका पति मर्दानगी के इस असंदिग्ध प्रमाण से प्रसन्न था कि उसकी पत्नी है और उसके बच्चा होने जा रहा है और वह सेना में भर्ती होने जा रहा है। वह उस दृश्य को कभी नहीं भूल सकता, किन्तु अपनी बहन का चेहरा भूल गया है। उसकी स्मृतियों में उसकी बहन नीले कुहरे में अव्यक्त सौंदर्य के समान थी।

टेलीफोन फिर बजा।

"हलो"

"अराकेल बोल रहा हूं। वाजगानुश का टेलिफोन नंबर है 1—78, लेकिन तुम्हारी मां वहां से आधा घंटा पहले चली गयी है। उसने वजगानुश के यहां खाना खाया था। लेकिन अब वह वहां से चली गयी है और जाते हुए कह गयी थी कि मैं सोवियत-ग्राम जा रही हूं। फिर जैसा में कह रहा था, वह अखरोट खरीदने जाएंगी······ तुम यहां आ जाओ न! बच्चों को भी साथ ले जाओ। उन्हें जाम बनाने की विधि देखने में मजा आएगा।

लेकिन मां सोवियत-ग्राम क्यों गई है।

अब भला उससे यह बात कौन पूछ सकता है। वह इस तरह की तो है नहीं जो अपने को अपने में रखती हो। वह कुछ क्षणों के लिए खामोश हो गया। फिर बोला — वहान बात ये है कि मेरी ऐसीडिटी कभी-कभी बहुत बढ़ जाती है। उससे यह रोग जल्दी ठीक हो जाता है। मैंने तुम्हारी मां से कहा था कि वह उस दवा के लिए तुमसे कहे। उसने कहा था क्या।

मैंने अपनी मां को करीब दो महीने पहले देखा था।

मैं जरूर उस दवा को देखूंगा।

ठीक है, खुश रहो बेटा! अब मैं सोवियत ग्राम फोन करता हूं। जैसे ही तुम्हारी मां से बात होगी, मैं उसे बताऊंगा कि तुम आए हो।

"धन्यवाद!"

उसने घड़ी की तरफ देखा। तीन घंटे बाद उसे अस्पताल में होना चाहिए। हालांकि उस दिन कोई विशेष बात तो थी नहीं लेकिन वहां जाना जरूरी था। उसने रेडियो खोल दिया। विदेशों के समाचार आ रहे थे। वह सुनता रहा। अचानक फिर उसे अपनी बहन की याद आ गयी लेकिन नहीं केवल बहन की

आकृति की याद आयी, जिसमें उसका चेहरा और नाक-नक्श न थे। उसने अपने सामने एक खामोश असुरक्षित आकृति देखी। उस समय रेडियो अपनी ओर उस का ध्यान आकर्षित करने में असमर्थ था। वह बहन की आकृति देखते-देखते गहरी उदासी में डूब गया। आखिर यह खोई हुई उदासी अचानक कैसे उभर आयी। ऐसा क्यों होता है कि कभी-कभी स्मृतियां घड़ी की टिक-टिक की तरह अचानक चोट करने लगती हैं। उसकी बहन, जिसका चेहरा भी अब उसे याद न था, धीरे-धीरे समय की उदासी में खो चुका था। अब अगर वह उसी नाम की लड़की को बुलाता भी था तो उसे कभी यह अहसास नहीं होता था कि यह उसकी बहन का ही नाम था। इसी तरह वह अपनी उस मां के बारे में क्या जानता है जिसे वह एक या दो महिनों में देखता है। उसे लगा जैसे उसके कलेजे में किसी ने चाकू घुसेड़ दिया हो। वह इस विचार की पीड़ा से छटपटा उठा और मां के चित्र के पास आकर खड़ा हो गया। वह तस्वीर उसके पिता के साथ येरेवान में खिचवाई गयी थी। तब मां जवान थी। पिता की दाढ़ी बढ़ी हुई थी, मां खुश नजर आ रही थी। हां वह फोटो में खुश दिखाई दे रही थी। आखिर कैसे माताएं खुश रह लेती हैं, और कैसे दुखी हो जाती हैं। उसने कितने दिनों से मां के पास तसल्ली से बैठकर बातें नहीं की। जब भी आया, बस दस-पन्द्रह मिनट के लिए और आते ही घड़ी देखने लगता। मां को कुछ रुपये देता। कभी-कभी उसके लिए जूतों का जोड़ा ले आता था या कोई कपड़ा और जब इन बातों से मां खुश न होती तो वह उससे नाराज होता। उसकी मां ने उसकी लाई बहुत सी चीजों को अब तक नहीं पहना है। दो साल पहले वह मां के लिए एक नरम बालों वाला कोट लाया था।

इस कोट के लिए इतना रुपया खर्च करने की क्या जरूरत थी। उसकी मां पहले तो खुश हुई थी, लेकिन फिर उदास हो गयी थी। वह कोट अलमारी में टंगा हुआ था। उसे मां ने शायद एक या दो बार पहना था— वह भी तब जब वह येरेवान गयी थी। उसने अनुमान लगाया कि उसकी मां इस कोट को गांव में पहन कर नहीं निकलना चाहती थी, लेकिन उसे बाद में पता लगा कि वह लोगों को बुला-बुलाकर अपना कोट दिखाया करती थी। जाहिर है उसने ऐसे बेटे पर बड़ा गर्व प्रदर्शित किया था। उसकी मां केवल एक ही बार रोई थी और अपनी किस्मत को कोसते हुए उसने एक विचित्र बात कही थी— मैं अक्सर यह जानने की कोशिश करती रही हूं कि आखिर मैंने ऐसा क्या किया है जिसकी ईश्वर ने मुझे सजा दी है। तुम्हारे पिता नहीं रहे, फिर बहन, इसके बाद तुम्हारा बड़ा

भाई··· सब मौत के मुंह में चले गए और मैं "उल्लू" की तरह अकेली रह गयी हूं। युद्ध के जमाने में, जब मैं अपारन में शराब बेचकर तुम्हें पालने-पोसने का जुगाड़ किया करती थी, कभी-कभी मैं शराब में पानी मिलाकर देती थी। क्या इसी कारण ईश्वर ने मुझे सजा दी है। लेकिन यह तो तुम्हारे पिता की मृत्यु के बाद की बात है। अगर वह होते तो भला मुझे घर से बाहर, इस तरह अकेले शराब बेचने जाने देते।

चित्र में उसके पिता के सुन्दर बाल थे और चेहरे से दयालु स्वभाव वाले लग रहे थे। वह मां से तीन साल बड़े थे। उन्होंने अपने बेटे का नाम, उनके बाबा के नाम पर रखा था, इसलिए उसके पिता नाम, गोत्र नाम और उपनाम के रूप में जिन्दा थे। किन्तु बेटे का बाबा से सम्बन्ध कैसे जुड़ता है। बिलकुल नहीं जुड़ता। मेरे नाम से नेफ्थलीन की गोलियों की महक आती है। एक बार उसने कहा था— दुनिया में एक से एक नये नाम है। लेकिन फिर भी अपनी जिज्ञासा की दुकान से एक पुराना नाम खोजकर निकाल लाए। इस पर उसके पिता ने उसे एक थप्पड़ मारा था। फिर दूसरे दिन उसके लिए वह एक जापानी टेपरिकार्डर ले आए थे। तब उसने पिता के इस काम को बड़ी चतुराई से की गयी नीचता कहा था।

उसकी स्मृतियां, यों तो कहना चाहिए कि कुछ-कुछ संकेतों से उभर रही थीं। युद्ध के दिनों में जब वह पंक्ति में खड़ा था और रोटियों के बंडल उतारे जा रहे थे, अचानक चौदह-पन्द्रह वर्ष का एक लड़का आया और एक रोटी उठा कर भाग गया। तब दुकानदार, नागरिक सेना का सिपाही और पंक्ति में खड़े कई लोग उसके पीछे दौड़े थे। वह भी दौड़ा था। आखिर वह लड़का पकड़ा गया। लेकिन उसके पास रोटी न थी। उन कुछ मिनटों की भाग दौड़ में उस लड़के ने पूरी रोटी खाली थी। दूकानदार, नागरिक सेना का सिपाही और दूसरे सभी लोग उस लड़के की तरफ आश्चर्य से देखते रह गए थे। लड़का सिर झुकाए चुपचाप असहाय सा खड़ा था। किन्तु उसकी आंखें क्रोध से जल रहीं थी। हां, उसने वह रोटी खायी थी, खायी थी··· खायी थी और एक किलोग्राम की रोटी खायी थी। फिर जब घर आकर उसने अपनी मां को यह घटना सुनाई तो मां ने रोते हुए कहा— उस गरीब को तुम घर क्यों नहीं ले आए। हम उसके साथ गरम-गरम खाना खाते। तुम्हें उसे घर ले आना चाहिए था।

····फिर उसके पिता चुपचाप उसकी बगल में बैठ गए, इसके बाद उसकी बहन आ गयी, बहनोई हेर्यूद्यून, उसकी बहन की बेटी भी आ गयी, उसके बड़े

भाई और न जाने कहां से रोटी छीनकर भागने वाला लड़का भी आ गया। वह अपनी स्मृतियों में इन सब में बहुत स्पष्ट देख रहा था और उस लड़के को भी देखा जो नंगे पांव और उदास था। उसने मां की उस मुस्कान को देखा था जो एक देहाती फोटोग्राफर के स्टूडियो में चालीस साल पीछे छूट चुकी थी। फिर पारसी महिला मिस मेरी एक कुर्सी पर आकर बैठ गयी। लेकिन तब भी वहां रेडियो के अलावा कोई नहीं बोल रहा था। उस समय विदेश-समाचार आ रहे थे। आखिर यह कल्पनिक दृश्य कब तक चलता रहता। उसकी मां तो इन काल्पनिक दृश्यों के बीच रोज़ ही जीती थी।

अब जाना जरूरी हो गया था। किन्तु जब तक कोई टैक्सी न मिल जाए तब तक वह शहर कैसे पहुंचेगा। उसने असामान्य उदासी में डूबते हुए अलमारी बन्द कर दी। एक बार टेलीफोन की ओर देखा, वह खामोश था। फिर उसने खिड़की के बाहर शिशिर ऋतु का खुला आकाश देखा।

जब वह दरवाजा बन्द कर रहा था, टेलीफोन फिर से घनघना उठा। उसने बिना किसी परेशानी के, बड़ी शान्ति से ताले में तीन बार चाबी घुमाई, फिर धीरे से किवाड़ को हिलाकर देखा कि ठीक से बन्द हो गया है या नहीं। टेलिफोन अभी भी अपनी गति से बज रहा था। हो सकता है अराकेल का फोन हो या हो सकता है मां का फोन ही हो जिसे अंततः अराकेल ने खोज लिया हो।

मोशेग गलशोयान (1933)

गलशोयान का जन्म आरमेनिया के कटनाहनूर ग्राम में हुआ था। इन्होंने येरेवान कृषि संस्थान से स्नातक की उपाधि ली, फिर मास्को से साहित्य के उच्च पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किए। आपकी मुख्य कृतियां हैं—जोरी मिरो (कहानी) पुष्पित पत्थर (निबंधों और कहानियों का संग्रह) और कुठाली (उपन्यास)

पु…का…र…

"आलेह···आलेह···मेरी प्रिय आलेह !"

एक बूढ़ा आदमी, लाठी के सहारे अपनी कमर झुकाए बैठा गा रहा था। मेमनों के झुंड के झुंड पहाड़ की ढलान पर घूम रहे थे। लेकिन ज़ोरो...बूढ़ा ज़ोरो मेमनों का चरवाहा न था। दरअसल उस गांव में मेमनों का चरवाहा कोई न था। गांव वाले बारी-बारी से मेमनों की रखवाली किया करते थे, इसलिए आज ज़ोरो की बारी थी। फिर भी ज़ोरो अपनी लाठी के सहारे कमर झुकाए बैठा गा रहा था।

"आलेह···आलेह···मेरी···" वह सुबह से अपनी प्रियतमा को बुला रहा था।

वह भी ऐसा ही बसंत था। एकदम नीली और प्रफुल्लित सुबह, बिलकुल किसी नीली दुनिया की तरह। सामने मरूटा पर्वत नीली आभा से दीप्त था। घाटियों और दर्रों पर नीले आसमान की चादर फैली हुई थी। उसमें बसे गांवों से नीला धुआं उठ रहा था। घाटियों को आप्लावित करती हुई, दूर से आने वाली तालबोरिक नदी का पानी भी नीला होकर बह रहा था। चकित मेमने मरूटा पर्वत की गोद में खेलते-विचरते हुए वसंत ऋतु और इस संसार से परिचित हो रहे थे। अपने थूथनों और जीभ के स्पर्श से ये छोटे-छोटे चतुर जानवर पत्थरों को पहचानने लगे थे। वे पत्थरों पर लगी काई और ज़मीन की महक से परिचित हो गए थे, कांटों और घास से बचकर निकलते थे और छोटी सी गौरैया की फड़-

फड़ाहट से डर कर भागने लगते थे। तो इस तरह जब ये छोटे जानवर इस दुनिया और वसंत से परिचित हो रहे थे, ज़ोरो दस या ग्यारह वर्ष का लड़का था। वह बकरी के बालों से बने ऊनी कपड़े की पैंट और उन्हीं से बने ऊनी जूते पहने था। ज़ोरो जानबूझ कर सूं···सूं ··सूं···कर गोफन घुमा रहा था और घाटी की तरफ कंकड़ फेंक रहा था। वे कंकड़ हरी सब्जियों की क्यारियों में काम कर रही लड़कियों के सिर पर से होते हुए घाटी में जा गिरते। इसमें सबसे मजेदार बात यह थी कि वे कंकड़ हवा में सूं···सूं करते हुए बड़ी ज़ोर से तब तक उड़ते रहते जब तक घाटी में न पहुंच जाते। लेकिन घाटी में पहुंचकर उनकी परिक्रमा समाप्त हो जाती थी और वे घायल कौवे की तरह घाटी में गिर जाते।

सब्जियां तोड़ती हुई लड़कियों की रंगबिरंगी पंक्तियां ढलान पर इधर-उधर बिखरी हुई थी। उनमें ही एक सात वर्षीय आलेह थी। उसकी काली चमकती आंखें और कोमल जुल्फें थी। वह नंगे पैर थी, किंतु इतने सुंदर कपड़े पहने हुए थी कि दूर से ही चमक रही थी और फुदकती हुई घूम रही थी। उसने फूलों की माला बनाकर खुद ही पहन ली थी। आलेह...उस समय हवा में झूमता हुआ फूलों का रंग-बिरंगा गुच्छा लग रही थी। छोटी आलेह... कितनी सुंदर थी। और जोरो ने अनजाने ही यह अनुभव किया कि यह उसकी आलेह है... और किसी की नहीं है, सिर्फ उसकी, बस।

उस समय सब कुछ उसका हो चुका था—वह नीली दुनिया, निरभ्र प्रभात और नीली चादर से ढका मरूटा पर्वत। तिरमईर विहार के ऊपर मंडराता सफेद बादल उसका था। सर्पीली नदी तालबोरिक के पानी की उछाल, गांव के ऊपर धुंए के बादल, प्यारे-प्यारे सुंदर मेमने उसके थे। सूरज, आकाश, पुष्पित चट्टानें और जिस चट्टान पर खड़ा होकर वह गोफन चला रहा था, वह गोफन भी—सब उसके थे। और इन सबके साथ फूलों से सजी आलेह, एक पत्थर दूसरे पत्थर पर फुदक रही थी। वह छोटी सी आलेह सिर्फ उसकी थी, और किसी की नहीं।

"आलेह···आलेह···मेरी प्रिय आलेह!"

वह बूढ़ा आदमी अपनी लाठी के सहारे झुके हुए गाए जा रहा था। वसंत की वह सुबह इतनी नीली और सुंदर इसलिए थी, क्योंकि सूर्य बादलों में छिपा हुआ था। उस सुबह हरे बांस की लाठी लिए, भेड़ों के उस चरवाहे ने अपनी छोटी आलेह को देखा और पहचाना, लेकिन वह उसे कहां पा सका था। और फिर वह उससे पचपन साल बाद मिला।

जोरो अपने छोटे बेटे की शादी की तैयारी कर रहा था। उसने निश्चय किया कि वह स्वयं अरारात के मैदानी इलाके से मदिरा (वाइन) लाएगा। दरअसल जब उसके अन्य बेटों की शादी हुई थी तब उसके पास साधन कम थे, इसलिए उसने अत्यंत क्षमापूर्वक एक छोटी सी दावत का आयोजन कर दिया था। किंतु अब ईश्वर की कृपा से वह पूरे गांव और अपने मित्रों को अच्छी सी दावत देने के साथ ही उन्हें अरारात के मैदानी इलाके से, विशेष रूप से लाई हुई घर की बनी मदिरा पिलाने में समर्थ था। उसका बड़ा और दूसरे नंबर का बेटा दोनों अलग रहते हैं। उन्होंने जोरो को बहुत समझाने की कोशिश की कि फैक्टरी मे बनी मदिरा खरीद लो उससे बढ़िया मदिरा कोई नहीं होती, लेकिन जोरो अपने निश्चय पर अडिग रहा। उसने कहा कि वह अरारात के मैदानी इलाके से और सिर्फ वहां से मदिरा लाएगा और वह स्वयं उसे पसंद करके लाएगा।

अगली सुबह वह अपने दूसरे बेटे की कार में, उसकी बगल में बैठकर मैदानी इलाके की ओर गया। वे उस इलाके में एक के बाद एक कई गांवों में भटके और हर गांव में बड़े-बड़े घड़ों में भरी मदिरा को जोरो ने चखा, लेकिन उनमें से कोई उसे पसंद न आयी।

आखिर शाम हो गयी थी और उसका बेटा झुंझलाकर गाड़ी चला रहा था। उस समय वे घने पेड़ों की कतार के बीच से गुजरने वाली सड़क पर जा रहे थे कि एक जगह उन्हें एक और सड़क दिखाई दी। जोरो बिना किसी कारण के चिढ़कर बड़बड़ा उठा—हमने उस सड़क को छोड़ दिया और एकदम से कार का स्टीयरिंग पकड़ लिया। कार सड़क से उछलकर झाड़ियों में घुस गयी। अच्छा हुआ कोई दुर्घटना नहीं हुई। कार में यहां-वहां थोड़ी खरोंच ही लगी थी। लेकिन उसका बेटा गुस्से से भर गया।

"कोई बात नहीं बेटे। जोरो ने उसे शांत करते हुए कहा—ऐसा ही चलता है। दुनिया में कुछ खत्म नहीं होता। ये मेरी पसंद का गांव है।" जल्दी ही वे उस गांव के बीच में पहुंच गए थे। "अब तो हम यहीं खरीदारी करेंगे" और वह उस ओर बढ़ गया जहां लोग इकट्ठा थे। उन सबके पास मदिरा थी और वे उसे अपने मदिरालय में ले जाना चाहते थे। केवल एक दुबला आदमी चुपचाप खड़ा था और जोरो ने उससे मदिरा के बारे में पूछा।

"हां जरूर है। मेरे पास अंगूर का बाग भी है और अंगूरी मदिरा भी।" उस आदमी ने बताया।

"अच्छा तब मैं अपने बेटे की शादी का जश्न तुम्हारी मदिरा से मनाऊंगा। चलो, तुम्हारे घर चलें। ज़ोरो ने कहा।

उसके घर के सामने लकड़ी की जाली पर अंगूर की बेल फैली हुई थीं। सारा घर मदिरा की महक से महक रहा था। सूखी हुई लाल मिर्चों की झालरें, खूबानी मेवे के दरख्त से घर तक लटक रही थी।

ज़ोरो को उस घर का दृश्य बहुत अच्छा लगा। उसने कहा—अरे भाई! ये तो बड़ी अच्छी जगह है। खुश रहो भाई, सुखी रहो। इन शब्दों को सुनकर एक बूढ़ी महिला ने झटके से मुड़कर देखा। वह लाल झालरों से मिर्चें निकालकर टोकरी में डालते-डालते रुक गयी। झालर की एक लड़ी अभी उसकी बांह में ही लटक रही थी और वह आश्चर्य से इस अजनबी को देख रही थी।

"क्या यह तुम्हारी पत्नी है।"

"हां, मेरी पत्नी और आपकी हमवतन।"

"अच्छा······। आओ बहन आओ······' ज़ोरा ने खुश होकर कहा। 'ज़रा बताओ तो कहां की हो।'

वह बूढी महिला बड़ी सुकुमारता से हौले-हौले आगे बढी। पहले उसने हाथ पर पड़ी झालर हटाई। सूखी मिर्चें सरसराकर गिर गयीं। अपने हमवतन का स्वागत मिर्चों से करते हुए उसने अपने को अपराधी महसूस किया।

"कौन से गांव की हो बहन।"

"सरेकान" यह उत्तर सुनकर ज़ोरो कुछ वैसे ही बैठ गया जैसे लोग उस पर पत्थर फैंक रहे हों और वह बचाव कर रहा हो। "सरेकान" ज़ोरो बड़ी मुश्किल से अपने को संभाल पाया। वह बूढी महिला हालांकि ज़ोरो के एकदम निकट थी। फिर भी ज़ोरो ने पास आकर उसका चेहरा ध्यान से देखा। वह उसे पहचानने की कोशिश करने लगा। बूढी महिला की आंखें थकी और उदास जरूर थीं, किंतु उनकी गहराई में चपल मुस्कान की किरणें छिपी हुई थीं।

ज़ोरो ने अपना सिर झुकाया और बूढी महिला की बांह में लटकने वाली मिर्चों की झालर को ध्यान से देखने लगा। तभी स्मृतियों में समायी हुई तीखी गंध, उसकी मूंछों में मकड़ी के जाले की तरह उलझ गयी। उसने धीमी आवाज़ में कहा—आलेह! उस बूढी महिला ने शायद अपना नाम सुना भी नहीं था कि ज़ोरो ने दुहराया। "आलेह" अब ज़ोरो एकदम तनकर खड़ा हो गया था। (इधर कुछ वर्षों में उसके बेटे ने उसे इस तरह तनकर खड़ा होते कभी नहीं देखा था) एकदम सीधे खड़े होकर उसने अपने सामने खड़ी नाटी बूढी महिला को

देखा। फिर उसकी निगाह आसपास के मकानों और पेड़ों पर से होती हुई दूर की पहाड़ी घाटियों पर ठहर गयी। फिर उसने पहाड़ों को देखते हुए जोर से पुकारा······आलेह···आलेह······आलेह।

बूढ़ी महिला खड़े-खड़े थक रही थी। उसने ज़ोरो की तरफ ध्यान से देखा। वह अभी भी अधखुली आंखों से दूर पहाड़ियों को देख रहा था और उसका नाम दुहरा रहा था। कुछ देर बाद उसने बूढ़ी महिला की ओर मुड़कर उन्हीं अधखुली आंखों से देखते हुए कहा—मैं ज़ोरो हूं आलेह—और उसका हाथ अपनी हथेलियों में लेकर दबाने लगा। फिर उसके माथे को उंगलियों से छूकर उसके होठों का स्पर्श करने लगा। वह बूढ़ी महिला परेशान थी। उनके देश की प्रथा के अनुसार महिला को पुरुष का हाथ पकड़ना चाहिए और इसलिए उसने जल्दी से ज़ोरो का हाथ चूम लिया था। ज़ोरो की आंखों से आंसू बह रहे थे। विस्मृत अतीत के आंसू, जो बहकर ज़ोरो के हाथों पर टपके थे।

फिर कुछ ऐसा हुआ कि उन दोनों ने चुंबन के लिए एक दूसरे के हाथ पकड़ लिए। उस महिला के हाथों में लटक रही लाल मिर्चों की झालर उनके एकदम सामने और आंखों के पास आ गयी। आलेह को छींक आ गयी। फिर उसकी आंखों से चुपचाप आंसू बह निकले। उसे रोते देखकर ज़ोरो बहुत खुश हुआ। उसने जल्दी से अपनी आंखें मलकर पोंछ डालीं। ताजे गर्म आंसू फिर से छल-छला आए थे और आंखों में चुभने लगे थे। वहीं पर एकदम आमने-सामने खड़े दो बच्चे भी अपनी आंखों को मलते हुए एक दूसरे को धुंधली आंखों से देख रहे थे।

"पापा हमें देर हो रही है।" ज़ोरो के बेटे ने कहा।

ज़ोरो होश में आ चुका था। उसने बेटे को देखा, मकान मालिक के प्रति आभार व्यक्त किया और फिर एक बार आलेह को नीचे से ऊपर तक देखकर पहचानने की कोशिश में लग गया।

"आलेह......" वह बुदबुदाया। वह कुछ कहना चाहता था, किंतु फिर मकान-मालिक की ओर मुड़ गया।

"तो, ये तुम्हारी पत्नी है···तुम्हें मेरी शुभकामनाएं"···ज़ोरो ने कहा और फिर तुरंत पूछ बैठा—मदिरा कहां है।

मकान मालिक ने तांबे के कटोरे में मदिरा भरकर एक गिलास के साथ पेश की। लेकिन ज़ोरो ने कटोरे से ही एक बार में पूरी मदिरा पी ली और उसकी तारीफ करने लगा।

"बहुत बढ़िया···"। जोरो ने हथेली से मूंछे पोंछते हुए कहा—"इसे पीकर मेरा कलेजा ठंडा हो गया। ऐसी बढ़िया मदिरा तो कभी नहीं चखी। आलेह, सचमुच बढ़िया और स्वादिष्ट है।" उसका सिर झुक गया और निगाहें कमरे के एक कोने में खड़ी बूढ़ी महिला की सैंडिलों पर टिक गयीं। "अब देखो बेटा, वह अपने छोटे बेटे से बोला, हम आखिर क्यों सुबह से शाम तक खाली हाथों गांव-गांव भटकते रहें। देखो, यही है मदिरा जिसे मैं चाहता था ····· डालो भाई··· ·।"

"कितनी। किस कीमत पर।" मकान मालिक ने पूछा।

"ये पूरा मटका मेरा है।" जोरो की आवाज में थोड़ी झुंझलाहट थी। "डालो, कीमत और हिसाब बाद में पूछना। ये मदिरा बहूमूल्य है ···मदिरा की कीमत तो सिर्फ मदिरा है, आलेह · डालो।"

मकान मालिक तांबे का कटोरा लेने को आगे बढ़ा, किंतु जोरो ने नहीं दिया।

"किसी और चीज से निकालकर डाल दो। ये मेरा गिलास बन चुका है।"

मकान मालिक ने जोरो को बहुत रोका कि वह इस तरह खड़े-खड़े न पिए। उसने समझाया यहां तो अपना घर है। वहीं चलो। टेबिल कुर्सी पर बैठकर पीना और सभ्य इन्सानों की तरह हम बातें करके एक-दूसरे को पहचाने-जाने, और खासकर तब जबकि दो पुराने दोस्त मिले हैं। किंतु जोरो कहां सुनने वाला था। उसके बेटे ने कुहनी मारकर इशारा भी किया और आलेह ने भी समझाया किंतु जोरो तो उसी जगह खड़े-खड़े, उसी कटोरे से मटके से सीधे निकालकर ही पीना चाहता था।

बूढ़ी महिला कुछ रोटियां और खाने की चीजें ले आयी और उसके सामने रख दीं। लेकिन जोरो ने कुछ भी न छुआ। कुछ ही देर में वह मटके के पास दीवार का सहारा लेकर झुक गया और अपना कटोरा मदिरा से भरकर खाली करने लगा। उसने कटोरा खाली करके अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और ठंडी सांस लेकर बोला—"आलेह—" बूढ़ी महिला टेबिल के सामने ही अनमनी सी बैठ गयी। कुछ देर पहले जब जोरो आया था, वह एकदम चुस्त और चैतन्य थी। लेकिन अब परेशान थी। उसकी बूढ़ी भाव शून्य आंखों से आंसू बह रहे थे।

"तुम्हारे पति को तो देख लिया है आलेह। और कौन-कौन है।"

"जोरो भाई, ईश्वर की कृपा से मेरे भी बेटे हैं" और उसने अपने आंसुओं पर काबू पा लिया। "मेरी बहुएं हैं, पोते हैं। लड़कियों की शादी हो चुकी है।"

"हां, तुम्हारे कौन-कौन हैं।"

"*ईश्वर की कृपा से मेरे भी बेटे हैं, बहुए हैं, विवाहित बेटियां हैं, आलेह।* पोते-पोतियां भी हैं और ये मदिरा भी है।" जोरो ने कटोरा फिर भर लिया। "ये स्वादिष्ट मदिरा मेरे छोटे बेटे की शादी के लिए है आलेह! आह, मेरी प्रिय आलेह!" और वह गाने लगा।

मकान-मालिक ने झुककर मटके को देखा और फिर जोरो को देखकर मुस्करा दिया। उसे खुशी थी कि मदिरा पसन्द की गई।

"आलेह! ये कितनी स्वादिष्ट मदिरा है।" जोरो ने अपना गाना रोककर कहा— आलेह! तुम्हारे पास यहां इतनी स्वादिष्ट मदिरा थी और मुझे उसके बारे में पता तक न था। और फिर गाने लगा।

जोरो के बेटे और मकान-मालिक ने मिलकर मदिरा नापकर भरी और हिसाब कर लिया। जोरो अभी भी गा रहा था। मकान-मालिक ने एक सिगरेट सुलगा ली और अपनी पत्नी के पास बैठ गया। जोरो अभी भी गा रहा था। उसके बेटे ने मदिरा भरी मशकों और पीपों को उठाकर गाड़ी में रख दिया। फिर वह आकर मदिरालय के बीच में खड़ा हो गया। जोरो अभी भी होशहवास खोकर गाए जा रहा था। तांबे का कटोरा खाली हो चुका था। दरअसल गाते-गाते उसने मदिरा से भरा कटोरा अपने ही ऊपर डाल लिया था और उसे यह भी होश न था कि वह सिर से पैर तक भीग चुका था।

"हाय आलेह!" उसने अपना गाना उसी तरह पूरा किया जिस तरह शुरू किया था। अब उसने आंखें खोलीं तो लगा कि वहां कोई नहीं है। न तो चंचल आलेह है, न वाचाल मकान-मालिक और न ही उसका बेटा। दरअसल वह एकदम होश खो चुका था। उसके बेटे ने कटोरा ले लिया और अपनी बांह का सहारा देकर बोला— "चलो पापा।"

जोरो ने अपनी बांह छुड़ा ली और दीवार से चिपक गया। "मारलुक की कसम खाकर कहता हूं आलेह! मैं यहां से नहीं जाऊंगा।

मकान-मालिक ने सुझाव दिया कि वे घर में चले जाएं जिससे जोरो थोड़ी देर लेटकर आराम कर सके। "हां! मेरी आंखों को नींद चाहिए।" अपनी हथेलियों से आंखों को मलते हुए जोरो ने कहा— अ-लेह, तुम कहां गायब हो गयीं।"

उसके बेटे ने एक बार फिर उसे खींचकर ले जाना चाहा, किन्तु ज़ोरो ने उसे धक्का देकर हटा दिया और गालियां देने लगा। उसने मकान-मालिक को भी बुरा-भला कहा। वह बच्चों की तरह दीवार से चिपक गया था और वहां से हटना नहीं चाहता था। बस बीच-बीच में सिर्फ "आलेह" को पुकार उठता था।

आखिर मकान-मालिक ने उसे अच्छी तरह फटकार लगाई। "तुम मुझे बाहर निकालने की धमकी देते हो।" ज़ोरी ने चिल्लाकर कहा। वह अभी भी दीवार से चिपका हुआ था। "मैं इस मदिरा और रोटी ही नहीं भगवान की कसम खाकर कहता हूं, तुम्हारे मटकों को फोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। देखता हूं तुम मुझे कैसे निकालते हो।...... आलेह...... ।"

अब बेटे और मकान-मालिक ने ज़ोरो को खींचकर बाहर निकाला। वह उस समय भी चिल्ला रहा था और आलेह को इधर-उधर देख रहा था, पर वह वहां न थी। वह बूढ़ी महिला बेहद परेशान और भावुक होकर बैठी हुई थी। उसने अपने घुटनों में सिर छिपा लिया था और फूट-फूटकर रो रही थी। उसे अब तक किसी ने इस तरह नहीं पुकारा था— कितनी आत्मीयता थी उस पुकार में, कितनी सहृदयता थी, कितनी उत्कंठा थी जैसे वह पुकार कोई प्रार्थना हो, कोई गीत हो या दूर पहाड़ों से आने वाली कोई प्रतिध्वनि हो... आ... ले... ह..." धीरे-धीरे वह आवाज़ दूर होती गयी।

ज़ोरो अंधेरी सड़क में भी चिल्लाता रहा। उसका बेटा गाड़ी चलाकर गांव से बाहर आया...... फिर भी तब तक ज़ोरो चिल्लाता रहा जब तक उसे नींद नहीं आ गयी।

और नींद में भी इसके होंठ हिल रहे थे "आ......ले......ह...... ।"

"आलेह...... आलेह...... मेरी प्रिय आलेह......"

अपनी छड़ी का सहारा लेकर झुका हुआ वह बूढ़ा आदमी गाता रहा...... गाता रहा। एक लड़का और लड़की पर्वत के ढलान पर बढ़ रहे थे। वे ज़ोरो के पोते-पोती थे, उसके सबसे छोटे-बेटे की संतान, जिसकी शादी में वह आलेह के घर से मदिरा लाया था।

शादी के बाद वह आलेह को देखने गया था। फिर सर्दियां शुरू हो गयीं थी। फिर बसंत आया, किंतु ज़ोरो को हर बार किसी न किसी काम में व्यस्त रहना पड़ा। एक बार उसे आलेह की याद आयी थी और उसने मन ही मन तय भी किया था कि नीचे मैदानी इलाके में वह जाएगा, लेकिन कुछ न कुछ बाधाएं आती रहीं और इस तरह कई साल बीत गए।

छह् साल बाद ।

आज सुबह से ही न जाने क्यों जोरो का मन बहुत अशांत था। वह मेमनों को, अपने घर और यहां तक कि अपने आपको भी भूल गया था। आज उसके सामने केवल नीली पहाड़ियां और घाटियां थी, नीली चादर से ढका सागर जैसा दिखने वाला अरारात का मैदान था और उस सागर की लहरों के बीच उफनती हुई अराकस नदी रूपहले कटिबंध सी लिपटी हुई दिख रही थी। उसके बाद आरमेनिया पर्वत की घाटी में लगे तंबुओं की रस्सी ऐसे हिल रहीं थी जैसे वहां तूफान चल रहा हो। लेकिन जोरो की आंखों के सामने तो बसंत की एक अन्य सुबह का खुशनुमा दृश्य था, उसके साथ ही फूलों से सजी एक दूसरी दुनिया थी, नीली चादर से ढके दूसरे पर्वत थे, दूसरी बलखाती नदी थी, सूर्य की रोशनी और बाकी दुनिया से परिचित हो रहे मेमनों का एक और झुंड था, एक और चरवाहा लड़का था जिसके हाथ में हरे बांस की लाठी थी, हरी सब्जियों की क्यारियों में सब्जी तोड़ती लड़कियां थीं और फूलों से सजी एक छोटी लड़की चट्टानों पर फुदक रही थी।

"आलेह्···" बूढा जोरो क्षितिज की ओर देखकर पुकार रहा था। "आलेह मेरी प्रिय आलेह्···" उसने अपने पोतों को तभी पहचाना जब वे बिलकुल निकट आ गए थे और लड़की उसके पैर में चिकोटी काटने लगी थी।

"बाबा, मेमने कहां हैं।"

"मेमने" बूढा जोरो तुरंत उसके प्रश्न को समझ न सका।

"मेमने" उसने अपनी निगाहों को देर क्षितिज से हटाकर अपने आसपास देखते हुए कहा—मेमनों को क्या हुआ···मेरे मेमने।"

अचानक उसे अपने घुटनों में बहुत पीड़ा महसूस हुई। वह लड़खड़ाते हुए कराह कर बैठ गया। लेकिन दूर क्षितिज ने उसे फिर अपनी ओर आकर्षित कर लिया वह उन्हीं बातों को दोहराता रहा।

"चलो खाना खाएं, छोटी लड़की ने भोजन का पैकेट खोलते हुए कहा—बाबा, आज हम भर पेट खाएंगे।"

"मैं तो एक गिलास मदिरा के साथ ही खा सकूंगा" जोरो ने सोचा और तभी उसने निर्णय किया, मैं आलेह को देखने जाऊंगा।

"बाबा, मेमने कहां हैं।"

"हे ईश्वर! मेरे दिमाग को क्या हो गया है। जोरो सोच रहा था और उसकी निगाहें अभी भी दूर मैदानों पर टिकी थीं।

"वहां · आलेह मेरी आंखों के सामने है, फिर भी मैंने उसे कितने दिनों से नहीं देखा। मैं उससे मिलने जाऊंगा।"

"मेमने तो कहीं नहीं दिख रहे हैं···बाबा।"

"कहीं नहीं हैं...ज़ोरो अपनी लाठी का सहारा लेकर उठा।"

"मैं आलेह को देखने जाऊंगा" उसने सोचा।

"मेमने उधर हैं।" उसने लाठी से यों ही इशारा करके कहा—जाओ, उनको इकट्ठा कर लाओ, फिर बैठकर खाना। मैं अभी उस गांव तक होकर आता हूं।

घर लौटते समय, पूरे रास्ते भर ज़ोरो ने आलेह के पास न जाने के लिए अपने को ही दोषी ठहराया। वह इसी बात को सोचकर हैरान था कि वह गया क्यों नहीं। क्या उसे समय नहीं मिला, क्यों उसकी आंखें और पैर जवाब दे रहे थे। या वह वहां जाने की हिम्मत नहीं कर सका। क्या वहां जाने के लिए सड़क या सवारी न थी। तब वह फिर क्यों नहीं गया। वह क्यों वहां जाने की बात इतने दिनों से टालता रहा और तब, अकारण ही, उसके मन ने कहा कि इसके लिए उसकी पत्नी दोषी है। बस वह जब घर लौटा तो बहुत गुस्से में था।

"ये तुम्हारी बनायी रोटी खराब है। ज़ोरो ने घर में घुसते ही अपनी पत्नी से झगड़ते हुए कहा। ये खराब हैं. तुमने मुझे एक हाथ से ये रोटी दीं और दूसरे हाथ से मेरे प्राण ले लिए। तुमने मुझे सताया है। मैं इस लाठी से तुम्हारा सिर तोड़ दूंगा।

और वह अपना ही सिर पहले छड़ी से, फिर हाथ से ठोकने लगा। तभी उसे एक नया विचार आया। "मेरा तो दिमाग ही खराब हो गया है। अरे आलेह के पास जाने की परेशानी ही खत्म हो जाय अगर मैं उसे यहां ले आऊं।"

उसकी पत्नी बहुत हैरान और परेशान थी।

"तुम्हीं मेरे रास्ते का कांटा हो"—ज़ोरो फिर गरजा। फिर सोचने लगा, आरमेनियन लोगों के बारे में ठीक ही कहा जाता है कि उसकी बुद्धि देर से जागती है। अरे मुझे चाहिए था कि आलेह को उसी दिन ले आता, जब मदिरा खरीदने गया था।

"तुम्हारे बच्चे···तुम्हारी बेटियां··तुम्हारे बेटे···ये सब मेरे रास्ते के कांटे हैं।" वह बड़बड़ाया।

उसने सोचा, उसी दिन आलेह को कार में बिठाकर ले आता तो अच्छा था। फिर उसे लगा कि उसका छोटा बेटा इस बात का जरूर विरोध करता।

"उस समय तुम्हारे दूसरे बेटे ने मेरी राह में रोड़ा अटकाया था। अब उसके साथ रहता जो हूं। लेकिन अब मेरे लिए ये घर जेलखाना है। मैं यहां सांस भी नहीं ले सकता हूं । मैं अलग रहूंगा।" ज़ोरो ने जल्दी से अपना अंतिम निर्णय सुना दिया। ज़ोरो ने सोचा —"आज मैं उस झोंपड़ी को ठीक करूंगा और कल सवेरे आलेह को ले आऊंगा।" फिर वह ज़ोरों से चिल्लाया—मैं तलाक दे दूंगा। भगवान की कसम मैं तुम्हें तलाक दे दूंगा।

ज़ोरो ने मन ही मन सोचा —"अगर वे लोग नहीं मानेंगे तो मैं उसका अपहरण कर लूंगा। फिर उसने कहा—"अब बहुत हो चुका। तुम मानो या न मानो, मैं तुम्हें तलाक देकर ही रहूंगा। और गुस्से में भरा हुआ ज़ोरो तेजी से बाहर निकल पड़ा। उसकी बूढ़ी पत्नी परेशान होकर आश्चर्य से देखती रही।

नये घर के पीछे एक झोंपड़ी थी। ये उनका पुराना घर था। उसका दरवाजा तार से बंधा हुआ था। झोंपड़ी में बहुत सी पुरानी चीजें रखी थीं—पुराने पालने, जंग लगे स्टोव, हल के फल, दरांतियां, पांयचे आदि। उसने कुछ ठीक तो लगने वाला स्टोव और दो कुर्सियां रख लीं और बाकी सारा सामान उठाकर झोंपड़ी के पीछे रख दिया। इसके बाद दीवारें और भीतरी छत साफ की और दरवाजे को ठीक कर दिया। अब वह रहने लायक बन चुकी थी।

और शाम तक जब बेटे घर में इकट्ठे हुए तब तक पिता ने उस झोंपड़ी में अपना बिस्तर भी लगा दिया था। वह अपना बिस्तर, प्लेटें, आटे की थैली भी ले आया था। अपना एक अलग घर बनाकर वह दरवाजे के बाहर बैठ गया और शांति से तंबाकू पीने लगा। बेटों ने आते ही तहलका मचा दिया—किसने पिता जी को नाराज़ किया है। वे एक दूसरे से वस्तुस्थिति पूछने लगे। फिर मां से पूछा। इसके बाद पिता से भी पूछा। लेकिन ज़ोरो ने बहुत छोटा सा उत्तर दिया मेरी मर्जी।

उनके बहुत मनाने के बावजूद भी ज़ोरो घर के अंदर नहीं गया और न ही वह बाकी दो बेटों के घर जाकर रहने को तैयार हुआ। उसका यह संबंध विच्छेद पक्का और स्पष्ट था।

अगले दिन ज़ोरो मैदानी इलाके में पहुंच चुका था। वह आलेह के घर के सामने चक्कर काटने लगा। वह उससे सड़क पर मिलना चाहता था। जब काफी देर तक वह चक्कर काट चुका तो शहतूत के पेड़ के नीचे रुक गया और पेड़ के तने के पीछे छिपकर उसकी डालों को आलेह के घर की खिड़की में रगड़ने लगा जिससे आलेह का ध्यान उधर जाए। क्या आलेह खिड़की पर नहीं आएगी।

अगर वह दिख गयी तो वह उसे इशारा करके बुलाएगा। वह एक बार तो वहां से हट गया, फिर दुबारा आ गया और पेड़ के पीछे छिपकर बार बार खिड़की पर डालियां रगड़ने लगा। लेकिन आलेह नहीं दिखी। सड़क पर बच्चों के अलावा कोई न था। उन दिनों बसंत का मौसम था—सभी लोग अपने-अपने काम में व्यस्त थे। आखिर ज़ोरो को घर के बाड़े में जाना पड़ा। वह जैसे ही बाड़े में घुसा कि आलेह दिख गयी। वह उसी खूबानी मेवे के पेड़ के पास थी, जहां उसने उसे पिछली बार लाल मिर्चों की झालरें इकट्ठा करते देखा था। अब खूबानी पेड़ के पास सब्जियां उगा दी गयी थीं और आलेह पौधों पर मिट्टी चढ़ा रही थी। वह नाटे कद की थी। उस समय वह एक छोटे से टीले पर बैठी हुई थी। उसके कंधे और गर्दन एक ओर झुके हुए थे और तब यूं ही ज़ोरो को लगा जैसे वह मिट्टी को नरम बनाते हुए यूं ही कुछ गुनगुना रही है। हालांकि न वह शब्द सुन सका और न गुनगुनाहट। किंतु उसे यह अवश्य महसूस हुआ कि वह गा रही है और अपनी मातृभूमि का गीत गा रही है—वही गीत जिसे ज़ोरो ने उस दिन गाया था जब वह मदिरा लेने आया था।

"मेरी प्रिय आलेह" ज़ोरो की आवाज़ सुनकर बूढी महिला ने चौंककर उसकी ओर देखा। ज़ोरो ने अपनी छड़ी खूबानी के पेड़ से टिका दी और आगे बढ़ कर उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए। "बड़ा सौभाग्य है कि तुम मिल गयीं। तुम तो पहले से भी छोटी हो गयी हो...बिलकुल उन पुराने दिनों की आलेह की तरह।" और फिर सिर हिलाकर उन पुराने दिनों की तरफ इशारा किया। तुम्हें छोटी आलेह की याद है। वह दिन भी बसंत के मौसम का था। आज की तरह। याद है तुम्हें! मैं आज भी उसे अपनी आंखों के सामने देखता हूं। तुम्हें याद है, तुम्हारे सिर पर फूलों की माला थी और तुम एक छोटी सी बच्ची थीं—इस पत्थर से उस पत्थर पर फुदकती फिरती थी। वही वह दिन था जब मेरा हृदय तुम्हारे प्रति आकर्षित हुआ था।

और फिर वही हुआ जैसा पिछली बार हुआ था। ज़ोरो सीधा खड़ा हो गया, उसकी आंखों में आंसू थे और वह दूर पहाड़ों को ताकने लगा था। उधर वह बूढ़ी माला परेशान होकर उसके सामने खड़ी देख रही थी।" ज़ोरो भाई, अन्दर चलो।" "नहीं...अन्दर नहीं जाना, मेरी प्रिय आलेह।" ज़ोरो ने बड़ी चुस्ती से कहा। घने बाग के बीच में सेब का एक पेड़ था। "वहां चलो, उस पेड़ के नीचे।"

फिर वह तांबे के कटोरे मांगने लगा और अपनी छड़ी उठाकर सेब के पेड़

के नीचे जाकर बैठ गया। "मेरा सौदा बहुत सच्चा है आलेह।" उसने आलेह के हाथ से मदिरा का प्याला लेकर कहा। "हे मारतुक ! मेरी रक्षा करना।"

और मदिरा पीकर ठीक से बैठ गया।

"हां, अब पूछो कि जोरो क्यों आया है।"

"हम एक दूसरे से परिचित हैं, मित्र हैं, हमवतन हैं। इस तरह अपने लोगों से मिलने-जुलने जाने की प्रथा तो सारी दुनियां में है।"

"बस ! मैं तो तुम्हें ये बता रहा था," जोरो ने अपने हाथ को सीधा करते हुए कहा—"वह दिन भी ऐसा ही सुहावना था जैसा आज है और मेरा हृदय तुम्हारे लिए व्यग्र हो उठा है आलेह।" जोरो उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा, लेकिन बूढ़ी महिला उसकी ओर उत्सुकता से देख रही थी। "मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाऊं।"

"खाने के लिए कुछ नहीं लाओ, मुझे सिर्फ मदिरा चाहिए।" जोरो ने मन ही मन कहा—हे मारतुक देवता ! इस आग को तुम्ही पवित्र हाथों से जलाओ और फिर तुम्हीं इसे ठंडा कर दो।"

बूढ़ी महिला जैसे ही फिर से आयी, जोरो ने कहना शुरू कर दिया—उस बसंत के दिन मरूटा के ऊंचे विहार ने मुझ पर तुम्हारे प्यार की वर्षा की आलेह, तब तुम उतनी ही महान थी और उसी दिन मैंने जाना कि आलेह, ओस-बिंदुओं से कोमल पैरों वाली आलेह, फूलों से सजी आलेह, मेरी अपनी आलेह है। वह मेरी आलेह है, मेरी अपनी आलेह है। देखो न, उस दिन, मारतुक ने मुझे प्यार दिया और अगले ही दिन बदमाशों ने उसे मुझसे छीन लिया। ऐसा लगा जैसे छोटे-छोटे जानवरों के झुंड पर कोई तेंदुआ टूट पड़ा हो। फिर वहां मार-काट और बरबादी हुई, छीन-झपट, भागदौड़ और लूटमार हुई और सूरज काला पड़ गया। आलेह, तब जैसे सूर्य ग्रहण हो गया था। फिर हम और तुम खो गए, क्यों ठीक है न।

जोरो ने मदिरा पी, एक सिगरेट जला ली और कुछ सुनने के लिए इंतजार करने लगा। बूढ़ी औरत खामोश थी। उसकी गर्दन एक ओर झुकी हुई थी और उसकी कटी-फटी उंगलियां हरी पत्तियों में उलझी हुई थीं।

"तुम अभी भी मेरी हो आलेह। बूढ़े जोरो ने धीरे से कहा—वह स्वप्निल दिन खोया नहीं है आलेह, वह अभी है। बसंत का वह दिन मेरे सामने बिलकुल आज जैसा ताज़ा है। मेगने और उनके बच्चे अभी भी मरूटा पर्वत की ढलान पर चर रहे हैं, लेकिन तुम...।

ऐसा लगा जैसे सब कुछ कल ही हुआ हो। अतीत की उस बासंती सुबह ने अपने मखमली रंगीन आवरण में सब कुछ इस तरह ढक रखा था जैसे अब वह कभी जोरो से अलग नहीं हो पाएगी। इसीलिए जोरो ने उस सौंदर्य का वर्णन एक बार फिर किया। "हर तरह मारतुक ने मुझ पर प्यार की छाप छोड़ दी और तब से आज तक वही पवित्र पाप मेरी आत्मा में बसा है। आलेह...आओ, अपना कटिबंध बांध लो और चलो मेरी प्राण !"

"कहां ? बूढ़ी महिला ने आश्चर्य से पूछा।"

"पूछ रही हो कहां, अरे तो फिर ये सारी कहानी मैं किसके लिए सुनाता रहा। आओ हम दोनों चलें। अपने गांव चलें। मैंने इसी के लिए अपना घर छोड़ दिया है। अब मेरी जिन्दगी के कुछ ही वर्ष बाकी हैं, और हम मारतुक की इच्छानुसार उन वर्षों को मिलकर जिएंगे।

"ये कुछ पागल या सनकी है क्या।" बूढ़ी आलेह ने सोचा। वह मुंह पर हाथ रखे आश्चर्य से उसकी बातें सुन रही थी। आखिर वह बड़े संकोच से जोरो के सामने रखी मदिरा को हटाने लगी। "नहीं ये सब मदिरा की वजह से नहीं कह रहा हूं···भला मदिरा का इससे क्या संबंध। आलेह, ये तो "इसके" कारण हैं, और उसने अपने दिल पर हाथ रख दिया। मेरी प्रिय, ये दिल ही तो है, और अगर नहीं, तो फिर किसके लिए मैंने वो कहानी सुनाई थी। अगर हम दोनों एक ही तकिए पर सिर रखकर साथ-साथ नहीं सो सकते तो फिर इतनी खुशनुमा सुबह क्यों होती है।"

"यदि मेरा सपना पूरा नहीं होता है और अगर उसे पूरा नहीं होना था तो ये नीली सुबह फिर क्यों आयी। अगर जोरो को अपनी नन्हीं प्यारी आलेह सुबह पाकर, शाम को खो देना था तो वह रूपहली सुबह दुबारा क्यों आयी। क्या वह इस दुनिया में पाप-कर्मों को बढ़ाने के लिए आयी। क्या वह जोरों की आत्मा को झुलसाने के लिए आयी। या जोरो को यह बताकर जाने के लिए आयी कि इस दुनिया में इतनी मधुरता है। आलेह। क्या वह एक सपना था। क्या वह एक मोहक कथा मात्र थी। नहीं। वह रूपहली सुबह मेरे लिए थी और है। अपना कटिबंध बांधो और चलो। जोरो की आवाज़ में अधिकार था। "जोरो भाई ! तुम अपने होश खो बैठे हो।" बूढ़ी महिला कुछ चिढ़कर बोली।"

"मैं तुम्हारा अपहरण कर लूंगा।" जोरो ने ज़मीन पर हाथ ठोकते हुए कहा। बूढ़ी महिला हथेली से मुंह दबाकर हंस पड़ी।

"तुम मेरा अपहरण कैसे करोगे ज़ोरो भाई !"

"तुम एकदम छोटी-सी तो हो। बस तुम्हें एक बोरे में डाल लूंगा। लेकिन जब तक तुम गांव से बाहर नहीं आतीं, तब तक जरा मुश्किल होगी। उसके बाद तो फिर चाहे सारी दुनिया मेरा पीछा करे। मेरी आलेह मेरी ही होगी। मैं तुम्हारा अपहरण अवश्य करूंगा। ज़ोरो ने दृढ़ता से कहा।

तभी किसी पुरुष ने आलेह को बाड़े से पुकारा और ज़ोरो को ऐसा लगा जैसे वह टेलीफोन सुन रहा हो।

"हलो··· ।"

"ये मेरे पति की आवाज़ है। बूढ़ी महिला ने जल्दी से उठते हुए कहा।"

"तुम्हारा पति तो अच्छा आदमी है। लेकिन मैं तुम्हारा अपहरण करूंगा। रात में··· ।"

फिर उसने अपनी स्कर्ट खींचकर फुसफुसाते हुए कहा—अपना मुंह बंद रखना और न ही इस बात को किसी से कहना।

बूढ़ी महिला फिर से ठीठी करके हंस पड़ी और अपने ऐप्रेन से मुंह पोंछने लगी।

'उठो ज़ोरो भाई, आओ, अंदर चलो।

घर के अंदर जाकर मैं क्या करूंगा। मैं गांव के बाहर जाकर छिप जाता हूं। अंधेरा होने पर वापस आऊंगा और तुम पर नजर रखूंगा। मैं ईश्वर की कसम कहता हूं, जरूर आऊंगा।

"मकान मालिक की आवाज़ फिर सुनाई दी।"

"मैं यहां हूं, बूढ़ी महिला ने कहा—ज़ोरो भाई आए हैं।"

ज़ोरो ने फिर से बूढ़ी महिला का स्कर्ट खींचा और दांत पीसकर मुक्का दिलाते हुए, उस चुप रहने के लिए धमकाया।

मैं तुम्हारा अपहरण करूंगा, आलेह ! जरूर करूंगा—वह फ़ुसफुसाया।

"अरे आप हैं। स्वागत है। मदिरा पिएंगे।" मकान मालिक ने हंसते हुए पूछा।

जरूर··· तुम्हारी जैसी मदिरा तो दुनिया भर में न है और न होगी। तुम्हें इसके लिए गर्व करने का पूरा हक है और गलत हो तो मेरा सिर तोड़ दो।

फिर इधर-उधर की बातें करते-करते पूरा परिवार इकट्ठा हो गया—दो बेटे, दो बहुएं, उनके बच्चे—सब लोग भोजन करने बैठ गए। "ये भोजन की टेबिल जिंदादिल लोगों की है।" ज़ोरो प्रशंसा के भाव से सोचा। "ये दृश्य तो

शादी की दावत जैसा है, कसम मारतुक की, ये तो मेरी और आलेह की शादी की दावत है ।"

सचमुच वह परिवार बहुत ही खुशदिल था और आलेह के बेटे तो बड़े ही उत्साही थे। जिस दिन वह मदिरा खरीदने आया था, वे घर पर न थे। उन्हें तो सिर्फ यही पता लगा था कि एक आदमी आया था। वह मां का पुराना हमवतन था। उसने मदिरा के कई कटोरे भर-भर कर पिए थे। फिर वह गाता रहा, पीता रहा और अंत में उसे बड़ी मुश्किल से मदिरालय से बाहर निकालना पड़ा। बाद में वह एक बार और आया था, लेकिन फिर भी वे उसे नहीं देख सके थे। और आज वही मजेदार आदमी उनका मेहमान है। उसके चेहरे पर सफेद मोटी मूंछे हैं और गहरी झुरियां हैं। वह जोर से बोलता है, खूब जमकर पीता है और खाली होते ही तुरंत अपना गिलास भर लेता है।

"आप हमारे मामा हैं।" छोटा लड़का बहुत खुश होकर बोला—"हमारी मां की ओर से हमारा कोई रिश्तेदार नहीं है। "आप सचमुच ही हमारे मामा हैं।"

"तुम चाहे मुझे अजनबी समझो या मामा, ये तुम्हारा काम है।" जोरो ने मन ही मन सोचा, "लेकिन आज रात मैं तुम्हारी मां का अपहरण अवश्य करने वाला हूं।"

छोटे बेटे की शकल मां से मिलती थी। "इसे मेरा बेटा होना चाहिए था।" जोरो ने सोचा और उससे पूछा, "बेटे, तुम्हारी पत्नी कौन है।" उस लड़के की पत्नी जोरो की बगल में बैठी थी। वह दयालु प्रकृति की लगी। जोरो ने उसके बालों को ठीक करते हुए कहा—"ये सुन्दर बहू मेरी है।" और फिर जोरो ने 'तुम्हारे लिए' कहकर एक के बाद एक दो कटोरे मदिरा पी डाली और उस बेटे की तरफ ध्यान से देखने लगा। उस बेटे के बच्चों ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा और उसकी आंखों में गीत उभर आए। उसने देखा कि उन नौजवान बेटों की आवाज बहुत अच्छी थी।

"बेटे तुम गा सकते हो ?"

"जी हां, छोटे बेटे ने खुश होकर कहा।"

"तो ठीक है, मेरे लिए एक गाना गाओ।"

और उस बेटे के गाने के दौरान जोरों ने फिर मदिरा पी। धीरे-धीरे उसकी आंखें धुंधलाने लगीं। इतनी जल्दी उसे आश्चर्य हुआ। अरे अभी तो उसने कुछ ही कटोरे तो पिए थे। खैर, इसका मतलब है, अब उसे नहीं पीना चाहिए।

जोरो दावत पर थोड़े ही आया था। उसके बेटों को पीने दो .... लेकिन जोरो तो खास मतलब से आया है .... आलेह कहां है।

आलेह इधर-उधर ठुमकती हुई घूम रही थी। उससे होंठों पर मुस्कराहट बराबर बनी हुई थी। "तुम युग-युग जियो मेरे बेटे।" जोरो ने कहा और कटोरा होठों से लगा लिया। फिर सोचा कि पिऊं या नहीं, लेकिन फिर पी गया।

मैं तो तुम्हें इससे भी ज्यादा आशीर्वाद देना चाहता हूं। लेकिन सुनो, ये गाना तुम्हारा प्रिय गाना नहीं था। वह तो कोई और होगा। अब सुनो मैं अपना गाना सुनाता हूं।

और गाने से पहले जोरो ने अपनी आंखें बन्द कर लीं, सिर झुका लिया, फिर इधर-उधर झूमते हुए गुनगुना उठा, हे ..ए...ए...आह ! फिर उसने ऊपर को हाथ उठाकर गाना शुरू किया। उसकी आवाज भारी, बूढ़ी और फटी हुई थी। उसकी आंखें बन्द थी—जैसे सब कुछ भूल गयीं थीं, किंतु उनमें गहरी वेदना और दया थी।

उसका गीत प्रकृति के बारे में था। उसमें पत्थरों और रंगीन फूलों वाले पर्वतों की चर्चा थी, पर्वत के ढलान को घेरने वाले मार्ग और उसपर चल रही बैलगाड़ी की चर्चा थी, पर्वत के नीचे दूर-दूर तक फैले और धूप में चमक रहे ज्वार के विशाल खेतों की चर्चा थी। जोरो हाथ हिलाहिला कर गा रहा था। उसके हाथ से टकराकर एक बोतल लुढक गयी। जोरो की बगल में बैठी छोटी बहू भी एक ओर खिसक गयी। जोरो के गीत में हरी लाठी वाले चरवाहे और सुन्दर फ्राक पहने हुए सब्जियां तोड़ती लड़कियों की चर्चा थी ... कुल मिला वह गीत और प्रकृति और प्रेम का गीत था।

जोरो ने गाना पूरा किया लेकिन वह अभी भी झूम रहा था और गीत गुनगुना रहा था, उसकी आंखें अभी बन्द थीं। उसने एक और लुढक कर पुकारा "आ....ले.. ह .." क्या ये गीत था। या गीत की टेक। या उसकी बूढ़ी पत्नी का नाम। मकान-मालिक इन प्रश्नों के उत्तर न समझ सका।

चीजों को यों ही अस्तव्यस्त छोड़कर आलेह टेबिल के एक किनारे पर परेशान बैठी हुई थी। उसके चेहरे पर कुछ देर पहले जो प्रसन्नता थी, वह मिट चुकी थी। उसके होठों के किनारों पर छिपी मुस्कान गायब हो चुकी थी। वह बहुत उदास और परेशान होकर अपने हमवतन की ओर देख रही थी। "आलेह .... "जोरो ने खिड़की के बाहर देखते हुए पुकारा। सूर्य पहाड़ों के पीछे छिप चुका था।

अच्छा होता अगर दुनिया में कभी सूर्यास्त न होता। जोरो बुदबुदाया। फिर उसने गीत के स्वर में कहा—दोपहर न होती, सूर्यास्त न होता, रात न होती, केवल बसंत और केवल बसंत का सवेरा होता। आलेह भी कभी बूढ़ी न होती। मैं तो चाहता हूं बच्चे बच्चे ही रहें। मैं उस पत्थर पर खड़े होकर तुम्हें देखूं और तुम ओस बिंदुओं से चमकती हरियाली के बीच सिर पर फूलों की माला सजाए हुए दिखो।

"मम्मी ! वह आपसे कुछ कह रहा है।" सभी लोग जोरो का एकालाप सुन रहे थे। सबसे छोटा बेटा उन बातों को सुनकर बहुत प्रभावित हुआ था।

"मां जोरो मामा तुम से कुछ कह रहे हैं। इनके पास बैठ जाओ। लेकिन मां के लिए अपने स्थान से उठना कठिन था। तब बेटे ने उसकी मदद की और उसे उठाकर जोरो के पास बिठा दिया।

"ओह मारतुक" जोरो उठा और उसने बूढ़ी महिला को अपनी बांहों में ले लिया।

बूढ़ी आलेह ने जोरो के सीने में अपना चेहरा छिपा लिया और जोरो ने अपना सिर झुका लिया। उसके गाल आलेह के बालों को छू रहे थे। उसने हौले से बालों को सहलाया और अपनी अधखुली आंखों से खिड़की की ओर देखते हुए संगीतमय स्वर से पुकार उठा।

"आलेह .. आलेह... मेरी प्रिय आलेह..."।

हांट मटेवोसियान (1933—   )

मटेवोसियान का जन्म आरमेनिया के अहनिज़ोर ग्राम में हुआ। इन्होंने सन् 1962 में येरेवान शिक्षा संस्थान (इसे यह नाम एच० अबेवियान के बाद मिला) के इतिहास और भाषा-विज्ञान विभाग से स्नातक की उपाधि ली। सन् 1967 में मास्को से लेखन के पाठ्यक्रम पूरे किए। इनकी प्रमुख रचनाएं हैं :—कहानी-'हम और हमारे पहाड़', तीन कथा-संग्रह : 'महान', 'पेड़' और 'दौड़'। मटेवोसियान ने फिल्मों की स्क्रिप्ट भी लिखी है, जैसे—'हम और हमारे पहाड़' और 'वसंत का सूर्य'। ये फिल्में आरमेन-फिल्म स्टूडियो में बनी थीं।

महान

आंद्रो माल ढोने का ठेला बना रहा था। जैसे ही वह देवदार का तख्ता चिकना कर लेगा, उसके पाए तैयार होंगे और तब छेद करके पेंच कसने में भला कितना समय लगेगा। तो, उसका काम लगभग पूरा हो चुका था। वे भी क्या लोग थे जोकि हर वस्तु को स्वर्ग से मिली सौगात समझते थे। यों एक तरह से वे ठीक भी थे, क्योंकि ऐसा न सोचते तो चिलचिलाती धूप में दिनभर कैसे काम करने का साहस करते... वह आज गांव की तरफ शाम को जाएगा और साहूकार सनासर से अपने बैल के बदले उधार रुपया मांगेगा, क्योंकि ग्रीष्म-चरागाह में ईंधन शायद ही बचा हो। वह जाकर पहले गायों को देखेगा और फिर चूंकि आशखेन ने बढ़िया दही जमाया होगा, इस लिए थोड़ा दही खायेगा।

यह सब तो ठीक था, किन्तु आंद्रो को ठेले का चौखटा पसन्द नहीं था। सामने का हिस्सा तो बहुत बुरा न था, बल्कि वह चिकना और गोल था। आप शायद उसे बढ़िया भी कह सकते थे, लेकिन आंद्रो की बहुत कोशिश के बावजूद भी वह ठीक नहीं बन पाया था। दरअसल वह थोड़ा टेढ़ा हो गया था अब उसे

सीधा करने के लिए जंजीर से खींचकर कई दिन तक बांधकर रखना होगा—इसके अलावा और कोई उपाय भी तो न था।

समय-समय पर आशखेन उसे कोई दूसरी औरत प्रतीत होती है। एक ऐसी औरत जिसे वह जानता ही नहीं। कभी वह युवती जैसी लगती है और कभी किसी और की पत्नी। समय-समय पर आशखेन अत्यंत मधुर स्वभाव वाली होती है। ऐसे समय पर भला कौन कह सकता है कि उसने अपनी तेज जिह्वा छिपा ली है। दरअसल वह उस समय उसे स्नेहभरी दृष्टि से देख रही होती होगी। तो इस तरह आशखेन को आप समझ पाए होंगे।

आशखेन घास के मैदान में आ पहुंची थी। वहां आंद्रो ने सूखी घास काटकर रखी थी और उसको गंजी में रखा जाना था। लेकिन आशखेन वहां सबसे पहले पहुंची थी। उसने भोर होते ही गायों का दूध दुहा, उसे जमाया और वहां पहुंच गयी। जब आंद्रो पहुंचा तो उसने देखा कि घास के पूले बनाकर एक जगह रखे जा चुके हैं और एक औरत पेड़ के नीचे सो रही है। वह उधर की तरफ करवट लिए थी, इसलिए आंद्रो ने दूर से देखकर सोचा कि वह आमो की मूल पत्नी सिरूशा है.., ईश्वर उसे शांति दे। लेकिन फिर उसे अपने पर हंसी आ गयी क्योंकि वह भला यहां क्या करने आएगी। लेकिन अगर वह सचमुच ही सिरूश है तो उसे बुरा नहीं लगेगा। किन्तु वह तो आशखेन थी। उसने सुबह तड़के उठकर गायों का दूध दुहा था, फिर दही जमा कर यहां आ गयी थी। उस समय गर्मी काफी हो गयी थी और आशखेन का शरीर उमस में डूबा हुआ था। उसने आशखेन के गर्मी से लाल हुए चेहरे को देखा। वह सो रही थी। यह सही है कि वह उस समय उतनी सहज न थी जितना वह थी। उसने घास के तिनके से उसकी गर्दन सहलाई और हंस पड़ा। लेकिन वह जागी नहीं। उसकी आंखों में थोड़ी हरकत जरूर हुई, और वह नींद में ही बड़बड़ाई, "किसी काम का नहीं है, गंवार" फिर भी वह जागी नहीं और नींद में ही उसने आंद्रो के गले में अपनी बाहें डाल दीं। वह तब भी सोयी हुई लग रही थी। उसके चेहरे पर मुस्कान थी और सचमुच वह उस समय तक नहीं जागी जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो गया। फिर वह वहां आसमान को ताकती हुई लेटी रही। जब वह उठी तो एक बार फिर वही मुर्झायी हुई आशखेन थी, वही बूढ़ी बातूनी डायन।

सभी लोग अपनी घास काट कर घर ले आए हैं और अब वे दूसरों की घास चुराने में लगे हुए हैं। लेकिन एक मेरा पति है जो दिनभर खर्राटे लेता रहता है। तुमसे कहेगा मैं काम करने आया हूं, लेकिन सच तो ये है कि उसे यही पता

नहीं होता कि वर्षा हो रही है या गर्मी पड़ रही है। उसे यही नहीं मालूम कि सर्दी किसे कहते हैं। इसलिए वह इतना लापरवाह है। वह एकदम चाशनी जैसा सुस्त है। वह तो बस किसी ऐसे पत्थर की छांह चाहता है जिसके नीचे रेंगकर वह लेट जाए और जीवन को आराम से बिता सके।

वह उसको पांयचे से मारना चाहता था, लेकिन फिर अपने को रोक लिया। दरअसल उसे उस पर दया आ गयी थी। आखिकार उसने कभी काम करना तो नहीं बंद किया चाहे वह कितना ही बड़बड़ायी हो। वह क्षुद्र न थी, वह आदतन बड़बड़ाया करती थी, और अगर वह क्षुद्र थी तो उसका कारण भी समझ में आया था, क्योंकि उनका जीवन बहुत कष्टमय था और आंद्रो सचमुच ही हर काम में सुस्त था। अब गिकोर की ही बात लो, वह कुछ दिनों के लिए सहकारी-खेत का अध्यक्ष बन गया। फिर वह दल का नेता बना, उसके बाद भंडार-अधिकारी, फिर बिक्री-अधिकारी और अब उसे डेरी फार्म का इंचार्ज बना दिया है। लोगों की उसे एक जगह से हटाने की देर नहीं होती कि वह दूसरा काम प्राप्त कर लेता है। तब काम देने वाला अपने आप से कहता है कि यह तो बहुत बड़ी गलती हो गयी, क्योंकि जैसे ही लोग वस्तुस्थिति से परिचित होंगे तो उसका बुरा हाल कर देंगे और सबकुछ फिर बदल जायगा। यह सही है कि अंतत: लोग उसका बुरा हाल कर देंगे, लेकिन तुरंत ही आप देखोगे कि वह किसी अन्य काउंटर के पीछे खड़ा है। तब आप कहेंगे, कोई बात नहीं, यहां भी वह टिकने वाला नहीं है, और सचमुच वह नहीं टिकता। लेकिन अन्त में इसका परिणाम क्या हुआ। ये रहा गेकोर। साठ साल का बूढ़ा, जिसे पेंशन मिल रही है। उसके पास अच्छा बाग है और उसमें से वह मन चाहे बड़े-बड़े रसदार फल तोड़ता रहता है और एक तुम हो जो तख्तों को ही चिकना करते रहते हो और सोचते हो कि बस कुछ ही दिनों की तो बात है।

आशखेन से शादी होने के एक महीने बाद ही इन दोनों में बुरी तरह झगड़ा हुआ था और उसने तभी महसूस किया था कि इस औरत के साथ जीवन बिताना असंभव है। इस बार सर्दियों में तो उसने आंद्रो को बुरी तरह पागल बना दिया था और तब आंद्रो ने उसे पीटते हुए कहा था--तुम अपने मायके चली जाओ। इस पर आशखेन ने जल्दी से अपना शाल लपेटी और स्कर्ट को ठीक करते हुए चली गयी थी। फिर उसी शाम को वह लौट आयी थी और साथ में अपने दामाद, बड़ी लड़की और उसके बच्चों को भी लायी थी। नाना··· नाना···बच्चों ने शोर मचाया था। वह आज भी दृढ़ और हृष्टपुष्ट आशखेन

के साथ बिताए सुहागरात के सुखद क्षणों को याद करता है तो उसके शरीर में बिजली दौड़ जाती है। किंतु इसके बाद फिर किस तरह अपूर्ण और अधूरा-सुख उसे मिलता रहा और वह इसी विश्वास तथा आशा के सहारे रहा कि अभी तो पूरी उम्र पड़ी है, दुनिया में और भी औरतें तो हैं। 'नाना · नाना···' वह झुंझला उठा था! क्या मुसीबत है।

जब आंद्रो चारसौवीं रेजीमेंट में था, एक दिन उसकी कम्पनी को संगीत-सभा में जाना पड़ा। वहां एक समूहगान हुआ था :—

एक शानदार हंस की तरह,

एक शानदार हंस की तरह,

तुम मुझे लगते हो—

एक शानदार हंस की तरह।

तांबे जैसे गालों वाली कुछ लड़कियां सामने कुछ सीटें छोड़कर बैठी हुई थीं। वे शायद अरारत घाटी के गांवों से आयी थीं। वे गीत के साथ, लाल रूमाल से बंधे सिर हिलाती जा रही थीं और बीच-बीच में सिपाहियों को भी देख लेती थीं।

वहां मार्टिन साकियान भी था। वह इजेवान का रहने वाला था। उसका चेहरा चौड़ा था। बेचारा कर्च के पास हुए युद्ध में मारा गया था। मार्टिन सार्जेन्ट था। बेचारा··· । हां तो उस दिन उसने कहा था—'आंद्रो चलो इन लड़कियों को उठा ले चलें। मैं बिंदियों वाली को उठाता हूं और तुम दूसरी को उठा लो।' आंद्रो ने दूसरी वाली को देखा और मन ही मन ललचाया भी, लेकिन वह बेहद शर्मीला था। उस लड़की के उरोज एकदम गोल और सख्त थे। फिर उसने मार्टिन की तरफ देखा। मार्टिन की ड्रैस एकदम चौकस और चुस्त थी और उसकी सुन्दरता बढ़ा रही थी। उसकी कमर में चमड़े की बढ़िया सी बैल्ट बंधी थी। जबकि आंद्रो की बैल्ट कपड़े की बनी हुई थी। उसके जूते भी नाप से बड़े थे, इसलिए उसका पैर उनके अन्दर फट-फट की आवाज करता था। इस लिए उसने कह दिया—'नहीं मारटिन मुझे किसी काम से जाना है' और वह दूसरी ओर मुड़ गया था। लेकिन उसने मन ही मन तय कर लिया था कि वह मास्टर सारजैंट से इस झगड़े को सदा के लिए निपटा कर ही रहेगा। वह उससे बढ़िया जूते और चमड़े का बैल्ट लेकर ही रहेगा। जब शाम मार्टिन लौटा तो वह सफल होकर लौटा था। वह गुनगुना रहा था। और आंखें नशीली हो रही थीं।

एक शानदार हंस की तरह,

एक शानदार हंस की तरह,

तुम मुझे लगते हो एक शानदार हंस की तरह।

सारजेंट ने कहा—'अबे साले, तू साथ क्यों नहीं आया।' और आंद्रो ने दुखी स्वर में कहा था—'इसमें खास बात क्या थी।' मारटिन जिस तरह लेटा था, उसी तरह लेटा रहा। थोड़ी देर बाद उसने अपनी नम आंखों से आंद्रो को देखा और बोला— "बेवकूफ"।

बेचारा मार्टिन साकियान। उसका चेहरा चौड़ा और भौंहें मोटी थीं। वह हंसता तो लगता जैसे चिल्ला रहा है। जब स्ट्रेचर पर लेटा तो उसने अपने पैर लापरवाही से किंतु बड़ी कठिनाई से एक दूसरे के ऊपर रख लिए थे और उस समय भी लगा जैसे वह चिल्ला रहा है।

बूढ़ा मूर्ख बासर अपने छोटे भाई के बाड़े में चीखने लगा था। उसकी मां की आवाज फलियों की कतारों और गोबर के ढेर के पास से गूंज उठी थी— ए··· देखो ·· चील······।

बूढी औरत को खुला हुआ आसमान मेघाच्छादित लगा, जबकि वह चीलों और बाजों से भरा हुआ था। एक बार में इतनी चीलें इसने अपने जीवन में शायद ही कभी देखीं हों।

'ए··· वो रहीं चीलें ······।'

उसको ऐसा लग रहा था कि किसी भी क्षण पानी बरस सकता है और खलिहान पर पड़ा चारा बरबाद हो जाएगा। फलियों को हंस चुग जाएगे और बूढा कुत्ता खेतों में गया तो पानी में भीगकर मर जाएगा और उसकी बहुएं उसके बेटों से लड़ने लगेंगी।

वह हंसों से बार-बार कहती— अरे तुम सब मर जाओ। अभी तो घास उठाकर लाना है। अरे लड़कियों, तुम सारी घास उठा लायीं। देखो बासर, तुमने मेरे बेटों का क्या हाल किया है। उन्हें परेशान करके रख दिया है।

धूप में फल सूख रहे थे। बूढा कुत्ता बैठा इंतजार कर रहा था कि यह बूढी औरत क्या आदेश देती है। मधुमक्खियां अपने छत्ते में व्यस्त थीं और उन की तेज भनभनाहट गूंज रही थी। वह बड़े बेटे के मकान के सामने लकड़ी काटने वाला अब शान्त हो गया था। पास ही कोई लड़की ठहाका मारकर जोर से हंस पड़ी थी।

'ए लड़की··· तुझे शरम नहीं आती··· तू पहाड़ों से कब आयी।' बूढ़ी औरत ने पूछा।

किन्तु उसे कोई उत्तर न मिला। दूर पर फिर कोई जोर से हंस पड़ा। दरअसल वह लड़की की हंसी नहीं, बल्कि एक औरत की हंसी थी।

''आन्द्रानिक'' बूढ़ी औरत ने पुकारा— ''आन्द्रानिक·· ·· आन्द्रो······।''

'हां, क्या है।'

'तुमने काम क्यों रोक दिया।'

पेड़ के पीछे से फिर कोई जोर से हंसा और एक बार फिर बूढ़ी औरत चिढ़ गयी।

'ये कौन हंस रहा है, आन्द्रानिक ?'

'मुझे क्या मालूम।'

'क्या कहा ?'

'मैंने कहा कि मैं नहीं जानता।'

'आन्द्रानिक !'

'क्या है ?'

'क्या तुमने घोड़े को दूसरी जगह बांध दिया है ?'

मधुमक्खियों के बाग में बड़े जोर की भनभनाहट हो रही थी। ताक के किसान दर्रे के रास्ते, नदी के किनारे-किनारे जा रहे थे। उनमें से एक यात्री की फीकी हंसी सुनाई दी। वह एक महिला थी। वह निर्जीव हंसी उसी की थी, वे लोग चार थे। दो युवतियां— जो एक तरह से अभी बच्चियां ही थीं, एक भारी भरकम जवान औरत जो एकदम राक्षसनी लग रही थी और ऊंट की तरह चलती थी। वह सचमुच विचित्र थी। चौथी महिला लड़कियों की मां थी।

वे बातें कर रही थीं कि फारस में या कहीं और एक रानी थी। वह अपने सिपाहियों को लाइन में खड़ा करती। फिर एक-एक सिपाही को ध्यान से देखती जाती और इस तरह वह हर रात के लिए एक प्रेमी का चुनाव रोज किया करती थी। सवेरा होने पर उसे कत्ल करवा देती थी। कितनी निर्दयी थी वह रानी। क्या उन सिपाहियों में इतना चतुर कोई न था जो उसके साथ रात बिताकर सवेरा होने से पहले भाग निकलता। अरे खिड़की से ही कूद जाता। उसके महल में खिड़कियां जो रही होंगी।

''आन्द्रानिक।''

"क्या मां।"

'क्या मधुमक्खियां छत्ता बदल रही हैं।' मधुमक्खियों की भनभनाहट ज्यादा तेज हो गयी थी। आंन्द्रो ने ऊपर की ओर देखकर कहा— 'गर्मी बहुत है। वे गर्मी से परेशान हो रहीं हैं।'

उसने सोचा कि अगर वह नदी किनारे जाकर घोड़े को किसी और जगह बांध दे तो ठीक रहेगा। बेचारा घोड़ा आलखो सारे दिन एक ही जगह चरता रहा होगा। हो सकता है रस्सी भी लिपटकर तंग हो गयी हो। उधर से यात्री महिलाएं कह रही थीं कि उस राक्षसनी महिला ने अपने पति को छोड़ दिया था और स्कूल के प्रिंसिपल रूबेल ने जब इस विषय पर बातचीत की तो उसके विरुद्ध नहीं प्रतीत हुई, बल्कि वह एक साल तक रुकने के लिए तैयार हो गयी। लेकिन किसी दूसरी औरत के मामले में रूबेन को पड़ने की क्या जरूरत थी। हो सकता है, दूसरे लोग उसकी पत्नी को ओर ताक रहे हों तो। इसलिए उसे चाहिए कि वह अपना घर देखे और अपनी ही बातों से मतलब रखे।

आंन्द्रो ने कुल्हाड़ी छांए में फेंक दी और अपने घुटनों पर लगा बुरादा झाड़ने लगा। उसने अपना हैट आंखों तक खींच लिया और दर्रे के रास्ते से नदी की ओर चल पड़ा। वहां जाकर देखा तो घोड़े ने एक गोल दायरे में उगी घास की जड़ों तक चर डाला था और अब उस गोल दायरे के बीच तेज धूप में खड़ा था।

आन्द्रो ने घोड़े को नदी के ऊपरी बहाव की ओर ले जाने का निश्चय किया। लेकिन चट्टानों को पार करते समय फिसल गया और पानी में गिर पड़ा। वह मुस्करा कर उठा, किन्तु कुछ ही कदम चलकर फिर फिसल गया। इस बार उसने किसी की हंसी सुनी जो ऊपर बह रहे पानी की दिशा से आयी थी। उसने घोड़े पर ही अपना गुस्सा उतारा और उन ग्रीष्म-यात्रियों को अभिवादन करके सिर झुकाए हुए उनके पास से निकल गया। उन लड़कियों की मां पानी में पैर डाले बैठी थी। उसने बड़ी शिष्टता से उसके अभिवादन का उत्तर दिया। वे लड़कियां तांबे के रंग वाली और इकहरे बदन की थीं। वे सकरे जांघिए पहने थीं। वे नदी के बीच में एक सपाट चिकनी चट्टान पर खड़ी जोर-जोर से हंसी नहीं थीं और वह निर्जीव हंसी भी उनमें से एक लड़की की थी। आन्द्रो के पास इतना बक्त न था कि वह यह देखे कि वह राक्षसनी क्या कर उसे थोड़ी झुंझलाहट भी हुई कि यह उसे नहीं देख सका और साथ ही यह कि उन लड़कियों ने तन ढकने के नाम पर कपड़े की कुछ पट्टियां लपेट रखी

थीं। अगर वे उसकी लड़कियां होतीं तो वह उन्हें जरूर फटकारता। "अरे तू गधे से भी गया गुजरा है," आन्द्रो घोड़े को फटकारते हुए ज्यों ही मुड़ा तो उसने देखा कि सामने वह राक्षसनी एकदम नंगी करवट लेकर लेटी है। उसने एक हाथ अपने गालों पर टिका रखा है। उसकी आंखों पर धूप का चश्मा चढ़ा था। आन्द्रो ने उस ओर से अपना ध्यान हटाकर पूरी ताकत से घोड़े को रस्सी से मारा। घोड़ा डगमगाया और बैठ गया। वह अपना सिर ऊपर-नीचे करके हांफने लगा। आखिर वह चुपचाप उठा और ठंडी सांस लेकर खड़ा हो गया। आन्द्रो ने देखा कि बेचारा जानवर पसीने से भीग गया है। उसे दया आ गयी और बोला--- सत्यानाश।

लड़कियां फिर जोर से हंस पड़ी थीं। अब वह राक्षसनी एक बड़ी चट्टान पर लेटी हुई साफ-साफ दिख रही थीं। जैसे ही आन्द्रो ने रस्सी बांधने के लिए जमीन में खूंटा गाड़ने लगा, उसने देखा कि वह राक्षसनी लाल रंग की बहुत छोटी-छोटी पैंटी और ब्रेजरी पहने थी। वह करवट लिए पड़ी थी और उसके गोल-मटोल पैर साफ दिख रहे थे। आन्द्रो ने हंसकर कहा--- ये किस लिए रखे हैं।

फिर चलते-चलते जब दुबारा उनकी ओर देखा तो उसे अपने पिता की याद आ गयी जो उसी बड़ी चट्टान पर बैठकर कच्चे चमड़े को पानी में भिगोया करते थे, जिससे फिर वह साधारण किस्म के जूते बनाते थे और साथ ही याद आयी मां की जो नदी में ऊन धोया करती थी। मां के पैर बेहद सफेद और पतले थे। तब वह पास ही एक चट्टान पर बैठा पानी की कलकल के साथ गीत गाया करता था। एक क्षण के लिए उसे अपने ऊपर हंसी आ गयी। फिर अचानक उसने कल्पना की कि उसके पिता सिर उठाकर छोटी लाल पैंटी पहने चट्टान पर लेटी इस भीमकाय महिला को देख रहे हैं। अपने इस विचार पर दरअसल आन्द्रो हंसना चाहता था, किन्तु वह दुखी हो उठा। उसके दुखी होने के कई कारण थे--- यह कि उसे अपने पिता की याद आ गयी थी जो जूते के लिए चमड़ा तैयार करते थे। जिनकी सफेद दाढ़ी थी और अब कब्र में शान्त और जड़ होकर पड़े हुए थे। यह कि आज उसी चट्टान पर वह औरत धूप स्नान का मजा ले रहीं हैं। यह कि उसकी मां के पैर पानी में बेहद सफेद और दुबले दिखा करते थे, यह कि वह नदी के पानी में ऊन धोया करती थी, यह कि वह इस पानी की कलकल के साथ गीत गाता रहा है और यह कि बेचारा घोड़ा आलखो पसीने से भीग गया था और यह कि धूप में तपी वे दो लड़कियां, नदी

के बीच स्थित उस चट्टान से दागी गयी बन्दूक की गोली सी महसूस हो रहीं थीं।

···इसके पिता ने उसके लिए कुल्हाड़ी का बेंट बनाया था। उस समय वह गोबर के काले ढेर पर खड़ा एक कद्दू से खेल रहा था। उसके पिता मधु-मक्खियों के बाग में बैठे उनकी भनभनाहट सुन रहे थे।

'मेरी कुल्हाड़ी में बेंट नहीं लगा है।' उसने कहा।

'क्या कह रहे हो. सुनाई नहीं दे रहा है।' उसके पिता ने मुस्कराकर देखते हुए पूछा— उस समय उनकी दाढी एकदम बर्फ सी सफेद दिख रही थी।

वह सिर झुकाए हुए धीरे-धीरे मधु मक्खियों के छत्ते के नीचे से होता हुआ आया और मुस्कराकर बोला— 'मैं क्या करूं। मेरी कुल्हाड़ी में बेंट नहीं लगा है।'

'मैं बना दूंगा—' पिता ने कहा।

फिर उन्होंने एक लकड़ी तोड़ी और बड़ी तसल्ली से, जिस तरह शान्ति-पूर्वक काम करने की उनकी आदत है, आहिस्ता-आहिस्ता बोलते हुए उसे छील कर बराबर किया, फिर कांच के टुकड़े से चिकना किया। इसके बाद कपड़े से घिसा और अन्त में हथेलियों से साफ करके बड़े गर्व से बोले— 'बेटा वह बहुत बढ़िया अंगूर का पेड़ था। मैंने उसकी एक डाल काट ली जो बिलकुल तुम्हारी ही उम्र की थी' और फिर वह चुप हो गए। यह देखने के लिए कि उनका बेटा क्या कहता है, क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ ऐसी बात कह गए थे जिसे समझने की जरूरत थी। उनकी बात में शायद दम रहा हो, लेकिन हो सकता है न भी रहा हो, क्योंकि यह तो सही है कि बात केवल कुल्हाड़ी के बेंट की थी, लेकिन जब उन्होंने डाल काटी थी तो······

मैं इस पेड़ को दुबारा देखने गया था, लेकिन वह पेड़ वहां न था। कहते-कहते वह हांफने लगे थे।

इसके बाद आन्द्रो वहां से उठकर "आउट-हाउस" की तरफ चल दिया था। उस ओर जाने वाले सकरे रास्ते पर वह मटरगश्ती कर रहा था और अपने पैंट के बटनों को ठीक करने की कोशिश में कई बार गिरते-गिरते बचा।

"आन्द्रानिक।"

"जी।"

"तुम काम क्यों नहीं कर रहे ?"

"मां, तुम क्या हो हमारे दल की नेता।"

"मैं सुन नहीं पा रही हूं।"

"मैंने कहा, मैं काम कर रहा हूं।"

"शाबाश मेरे बेटे!"

सूरजमुखी के फूल चुपचाप सूर्य के साथ-साथ चल रहे थे। टमाटरों की कतार के नीचे की मिट्टी पानी सोख रही थी। नाशपाती के पेड़ से एक नाशपाती टपक पड़ी थी। मधुमक्खियों के बाग में फैली गुनगुनाहट की नीरसता को एक भौंरे की तेज गुनगुनाहट ने भंग कर दिया था। स्कूल के प्रिंसिपल की पत्नी सामने सड़क पर दिख रही थी। वह धीरे-धीरे चल रही थी। उसका चमकीला हाउस कोट हवा में उड़ता था तो उनका घुटना दिख जाता था। बार-बार उड़ने के कारण अब उन्होंने उसे कसकर पकड़ लिया था। फिर वह पानी लेने के लिए झरने के किनारे झुकी तो लगा वह एकदम फैल गयी है। लेकिन इसके बाद वह सीधी होकर खड़ी हो गयी और पतली दिखने लगी। वहां वह कुछ देर तक अपनी कमर पर हाथ रखे खड़ी सुस्ताती रही।

"आन्द्रानिक"----मां ने पुकारा।

आंद्रो एक खुली मधुमक्खी पेटिका पर खड़ा था। उसने उसकी जाली का ढक्कन हटा दिया था, क्योंकि वही ढक्कन उस पेटिका को छप्पर से अलग किए था। उसके हिलने-डुलने से मधु मक्खी पेटिका भी हिल गयी। इस कारण मधुमक्खियां घबरा उठीं और झुंड बनाकर उड़ने लगीं। एक मक्खी उसकी पीठ पर चढ़ गयी और बांह में आकर फंस गयी। आन्द्रो ने उस पर थोड़ा धुआं फेंका, तो वह उड़ी तो लेकिन माथे पर काट गयी।

"आन्द्रानिक", फिर आवाज आयी।

"ये बुढ़िया पागल हो गयी है।"

एक गधा दूर घास का बोझ रखे पेड़ों के बीच धीरे-धीरे आता हुआ दिखाई दिया। मधुमक्खी-पेटिका भारी हो गयी थी और उनकी शहद धूप में चमक रही थी। बस दो दिनों में वह मीठा और निचोड़ने योग्य होने वाला था। एक दो पेटियों की मक्खियां तो अभी भी दूसरी खाली पेटियों में बदली जा सकती थीं। अगर मौसम खराब हो गया हो तो उन्हें वापस रख दिया जाएगा। अचानक उसे अपनी गर्दन में तीखा दर्द महसूस हुआ। उसके बालों में उलझी मधुमक्खी ने उसके कान के पास काट लिया था और उड़ गयी थी।

"आन्द्रेनिक।"

"क्या बात है, क्यों पुकार रहीं हो।" उसने चिढ़कर कहा। उसकी गर्दन में दर्द

हो रहा था। गधे की पीठ पर लदा घास का बोझ आन्द्रो के घर की दिशा में झुका हुआ था। उसे हांकने वाला अभी तक नहीं दिखा था। शायद वह या तो कोई बूढ़ा होगा या बच्चा। अचानक उसे स्टीपेन की याद आ गयी जिस पर सचमुच ही दया आती है। वह पिछले दस सालों से अपने दर्द की बातें कर रहा है। लेकिन एक बात है कि वह अपनी गायों को भरपेट चारा खिलाता है और उसी के पास चारे का सबसे ज्यादा भंडार है।

आन्द्रो ने पेटी पर ढक्कन रख दिया और दूसरी पेटी देखने लगा तो आधी खाली थी। ढक्कन रखते समय उसकी हथेली पर एक मधुमक्खी ने डंक मार दिया। आन्द्रो मुस्करा दिया। इस पेटी से कम से कम दस-पन्द्रह किलो शहद निकलेगा। यह साल बहुत अच्छा होगा। उसने ढक्कन ठीक से जमा दिया और हथेली से मधुमक्खी का डंक निकालने लगा। लेकिन उसकी उंगलियां इतनी मोटी थीं कि वह नहीं निकल सका। दरअसल उन दिनों स्टीपेन बीमार था। क्या आदमी को अपनी बीमारी बताने के लिए मरना जरूरी था। और एक गाय भला कितना चारा खा सकती है। अगर किसी आदमी को रात में चैन से नींद आ जाए तो वह दिन भर में एक गाय की खुराक तो जुटा ही सकता है।

चारे का बोझ अब टट्टर वाले अहाते को पार कर गौशाला की ओर बढ़ रहा था। जब नाशपाती के पेड़ के पास पहुंचा तो आन्द्रो के घर की ओर मुड़ गया। तभी वह देखकर जान गया कि बोझ उठाने वाला गधा नहीं था।

'आन्द्रेनिक।"

"क्या है?"

"ये चारा कौन लाया है?"

"मरियम।"

"जरा पूछो उससे, क्या बात है, एक बार में इतना बोझ उठाने की क्या जरूरत है? कुछ कम नहीं कर सकती थीं।"

"तुमने तो सब कुछ खुद ही कह दिया है।"

मरियम सामने आ गयी। उसने चारे का बोझ झुकाकर पेड़ से टिकाना चाहा, लेकिन स्वयं लुढक गयी। वह फिर एक लट्ठे से उसे टिकाना चाह रही थी, लेकिन चूक गयी और इस तरह बोझ के साथ जमीन पर गिर पड़ी। एक फीकी मुस्कान उसके होंठों पर उभर आयी।

"तुम शहर से कब लौटीं?"

"तो तुमने मुझे आते देख लिया और मेरे लिए शहद निकाल लाए। अच्छा किया।"

"जी हां, मैंने प्रधान मंत्री को आते हुए जो देख लिया था।"

"क्यों, क्या मैं प्रधान मंत्री से कम हूं," उसने गट्ठर की रस्सियां ढीली करते हुए कहा।

"बिलकुल उसका उल्टा हो," आन्द्रो हंस पड़ा— "किसी भी मंत्री पर इतना बोझ नहीं है।"

"अरे भाड़ में जाए वो सब। इस वक्त तो मेरी बाहें इतनी सुन्न हो रहीं हैं कि मुझे उनके होने तक का अहसास नहीं है।"

"तुमने रस्सियां इतना कसकर क्यों बांधी थीं ?"

"मैंने नहीं, मजदूरों ने बांधी थीं।"

"तो क्या इस बोझ को तुम पहाड़ से यहां तक उठाकर लायी हो।"

"अब घास वाली जगह कोई नहीं बची है, जानते हो।"

"ओह, अच्छा, तुम शहर से कब लौटीं ?"

"कल।"

"अच्छा पनीर केला बिका।"

"पनीर के पहाड़ लगे थे, लेकिन कोई खरीददार ही न था।"

"तो तुम वहीं रहीं।"

"हां, चार दिन तक।"

"सो तो दिख रहा है।"

"तुम्हारा मतलब है, मैं कमजोर हो गयी हूं।"

"हां।"

"लेकिन तुम्हारी पत्नी की तरह नहीं।"

"तुम्हारी नजर तो बहुत तेज है, जरा मेरी हथेली से डंक तो निकाल दो।"

"अरे, हथेली कितनी सूज रही है।"

"हां, कई बार हम डंक खा जाते हैं और हमें पता भी नहीं चलता। इस तरह तो नहीं, लेकिन कई बार तो डंक निकालना भी मुश्किल हो जाता है। अच्छा, ये बताओ, तुम्हें अपना दामाद कैसा लगा ?"

"ठीक है, अच्छा काम करता है।"

"तो तुम अपनी बिटिया की शादी कब कर रही हो।"

मरियम डंक नहीं निकाल सकी। उसके कंधे में लिपटी रस्सियां उसे पीछे को

खींचे हुई थी। आन्द्री उसके घुटनों पर झुका हुआ था और उसकी मोटी गर्दन बीच में थी। मरियम के पैर के नीचे कोई कंकड़ जोर से चुभ रहा था।
"क्या आदमी है" मरियम ने चिढ़कर कहा— "अरे मेरी रस्सियां तो खोल दी होती।" वह एकदम अकड़ कर खड़ी हो गयी।
"उसका एक प्रेमी है, जब वह नौवीं पास कर लेगी तो मैं उसके साथ शादी कर दूंगी।"
"तब तुम एकदम अकेली हो जाओगी।"
"मैं कभी अकेली नहीं हूं।"
"सुनो, तुम भी तो अभी शादी के योग्य हो। तो फिर कर क्यों नहीं लेती।"
"हां ··· हां, मेरी हंसी उड़ा लो।"

आन्द्रो ने ठेले का आखरी तख्ता ठोका और अब जब कि वह तैयार हो गया था, उसने सोचा कि इसका चालक मुझे बहुत गालिया देगा, क्योंकि पिछला भाग बहुत चौड़ा बन गया है।"
"जब तुम थकी और झुंझलाई हुई रहा करो तो यहां मत खड़ी हुआ करो।' आन्द्रो ने कहा।
"ये शायद ठेला है और तुमने इसे बनाया है।"
"बकवास बन्द करो, अपनी घास उठाओ और जाओ।"

और, जब कुछ देर बाद आन्द्रो हाथ में जंजीर लिए गंजी से बाहर आया तो वह वहां तब भी खड़ी थी। उसकी पीठ पसीने से भीगी हुई थी। वह सपाट छाती वाली, बिना रीढ की औरत थी। उसने मर्दों के जूते पहन रखे थे। आन्द्रो जिस तरह भी होता, उसकी मदद कर देता है। उसे उसके पति बासिल की मृत्यु की याद कभी नहीं दिलाता। अगर उसे घोड़े की जरूरत होती है तो आन्द्रो वह भी उपलब्ध करा देता है, लेकिन मरियम भी मरियम ही थी— एकदम रूखी और तख्ते जैसी सपाट।

मरियम ने थोड़ा पानी पिया और बाकी अपने चेहरे पर छिड़ककर बोली—"हंस लो, मेरे ऊपर हंस लो।" उसने अपने कपड़े ठीक किए और बोली—"कहीं आने-जाने में मुझे बहुत आलस आता है और अब मैं थोड़ा शांत हो गयी हूं।" वह ठेले पर बैठ गयी।
"अरे उसके ऊपर मत बैठो, उठो ··· टूट जाएगा" आन्द्रो चिल्लाया, "तुम शायद विश्वास नहीं मानोगी कि मैंने आज क्या देखा। मैंने नदी में आज एक सफेद भैंस देखी। अच्छा सुनो, अगर तुम मेरी मदद करना चाहती हो तो जरा सब्बल

उठा दो और गैंती भी। अरे क्या हुआ। तुम्हें दिखाई नहीं देता क्या। वो दीवार के पास रखी है।"

उसने जंजीर का एक हिस्सा सब्बल में बांध दिया। "जरा रस्सी दो, वो नांद में पड़ी है। अरे मोटी वाली दो··· मूर्ख ·· हां यही। तुम कल्पना नहीं कर सकती हो कि वह भैंस कैसी थी। अगर उसे काटो तो उसमें दस मरियम निकल आएं और एक आन्द्रेन।"

"तब तो तुमने सचमुच बढ़िया भैंस देखी।"

"आह, कितनी अच्छी थी।"

"तो तुम औरतों को भूलकर अब भैंसों को देखने लगे हो—" मरियम ने पूछा।

आन्द्रो दुखी और परेशान हो उठा। एक ये मरियम है। इसने एक बेटी की शादी कर दी है और उसकी भी बेटी है और ये अभी चालीस की है। अरे चालीस बरस में तो एक औरत, पूरी औरत होती है, लेकिन मरियम नहीं मानती। बस जब देखो तब, कभी आलू के बोरे, कभी झाड़झंखाड़ का गट्ठर, उठती है तो कभी कुल्हाड़ी लिए दिखती है या कभी अपने मुखिया से झगड़ती हुई दिखेगी।

"मरियम।"

"क्या है?"

"तुम्हारी उम्र कितनी है।"

"सोलह साल, एकदम षोड़शी।"

"तुम अब तो चालीस की होगी?"

"छत्तीस··· छत्तीस की हूं आन्द्रो।"

फिर उसने मजा लेने के लिए कहा— "तुम तो चौदह से ज्यादा नहीं दिखतीं।"

"मूर्ख," उसने उदास होकर कहा— "तुम एकदम मूर्ख हो··· ।"

"भाई मैं तो आम बात कर रहा हूं।"

"जब मेरा पति मरा तब मैं बीस साल की थी।"

"मरियम··· ।"

"क्या है?"

"और तुम तब से अब तक एकदम अकेली हो।"

उसने नाशपाती के पेड़ की तरफ देखा, फिर मधुमक्खियों को और फिर आन्द्रो को देखा— "तुम अभी भी मेरा मजाक उड़ा रहे हो।"

आन्द्रो का पैर नीचे पड़ी कुल्हाड़ी से खेल रहा था। "मरियम क्या पति के बिना जीवन मुश्किल होता है ? मेरा मतलब है— लकड़ी काटने, यहां-वहां जाने का काम करने से नहीं है। वो तो मैं जानता हूं। मतलब है मर्द के न होने से कुछ कमी महसूस नहीं होती ?"

मरियम ने उसकी ओर देखा। उसके होंठ चिपके हुए थे। "क्या फिर कभी कोई तुम्हारी जिन्दगी में आया ?"

वह चुपचाप उसकी ओर देखती रही। उस समय मरियम एकदम असहाय और शुष्क लग रही थी।

"मरियम, गाय रखकर क्या करना चाहती हो। अरे बेच दो उसे और शादी कर लो या अपनी बेटी-दामाद के पास जाकर रहो। आखिर इतनी मेहनत-मजदूरी करने से क्या फायदा। जरा वहां रहकर तो देखो। तुम गाय रखने वाले लोगों में नहीं हो ओर न अब इतना भारी-भारी बोझ उठाओ। ए··· पगली··· सुन रही है।"

आन्द्रो घर के बाहर आया तो देखा कि नाशपाती के पेड़ के नीचे बूढा एली फाक्स गेकोर ऐसे बैठा है जैसे उसने देखा ही नहीं।

मुझे एक कुत्ता पालना चाहिए। आन्द्रो ने सोचा। उसे याद आया कि उसने एक कुत्ता पाला था। वह पहाड़ी के ऊपर चरागाहों में रहता था।

"आन्द्रो तुम सो रहे थे क्या ?"

"हां, लेकिन मरियम ने आकर जगा दिया—" उसने जम्हाई लेकर कहा—"अरे दुनिया में रखा ही क्या है ?"

"तुम्हारी नाशपाती पक गयी हैं।"

"हां, एक ले लो न।"

"इन्हें खाने के लिए मेरे पास दांत कहां हैं। और हां, तुम्हारी मधुमक्खियां भी अच्छी हैं... मेरी तो सब पागल हो गयीं हैं। बस झुंड बनाकर घूमती रहती हैं। पिछले साल काफी शहद हुई थी, लेकिन इस साल तो वे बस घूम ही रहीं हैं। क्या तुम वोदका बना रहे हो ?"

"देखूंगा।"

"इसमें देखने की क्या बात है। इतने सारे फलों का क्या करोगे ? इनको बरबाद होने देना तो शर्म की बात है... आन्द्रो, अच्छा मेरा एक काम कर दो।" गिकोर ने उसकी ओर देखकर कहा।

"अच्छा कहो क्या काम है ?"

"मेरी मधुमक्खियां इधर-उधर घूम रही हैं और इस बार मेरे पास अतिरिक्त मधुमक्खी पेटी नहीं है, पर तुम्हारे पास है। अगर एक पेटी मुझे दे दो तो मैं जल्दी ही लौटा दूंगा, क्योंकि वे दुष्ट मक्खियां मुझे पागल बना रही हैं।"
आन्द्रो ने पूछा— "तुम्हारी उम्र कितनी है जो तुम्हारे सब दांत गिर गए।"
"सरसठ साल।"
"झूठ, मैं शर्त लगा सकता हूं, तुम मुझे केवल बेवकूफ बना रहे हो। मैं कोई पेंशन कमेटी थोड़े हूं—" आन्द्रो को बुरा लगा था।

मरियम चुपचाप अन्दर से निकलकर आ गयी थी और दरवाजे पर खड़ी थी। फिर उन दोनों को बरसाती के नीचे पास-पास खड़ा देखकर और आन्द्रो की काली मूंछों और दाढ़ी से गिकोर समझ गया कि वे दोनों पुराने प्रेमी हैं (एक अकेली औरत प्रेमी के बिना रह भी तो नहीं सकती) और यह कि आन्द्रो ने पिछली सर्दियों में मरियम के घर के सामने से एक लट्ठा चुराया था। वह बहुत अच्छा लट्ठा था और दरअसल गेकोर स्वयं ले जाना चाहता था किन्तु लोग तो उससे भी चालाक निकले।

' मैं सन् 98 में जन्मा था। दो साल वो और पैंसठ अब तक के—दोनों मिलकर सरसठ हुए न। तुम तो मेरे सामने बच्चे थे।"

"मैं तो यों ही चिढ़ा रहा था, नाराज मत हो।"

"और अगर तुम बच्चे न भी रहे हो, तो भी मैं तुम्हारे ऊपर कैसे नाराज हो सकता हूं।"

मरिमय बिना कुछ कहे आंद्रो को छोड़ कर चल दी। वह एक क्षण के लिए घास के ढेर के पास रुकी, फिर रस्सियां उठाने लगी। 'रुको, मैं उठवा देता हूं,' गिकोर उसकी मदद के लिए आगे बढ़ा उसने कोई उत्तर नहीं दिया। बस धीरे धीरे अपना झुका हुआ बदन उठाकर सीधा करने लगी। उस समय आंद्रो ने उसका धुला हुआ चेहरा और गले की उभरी हुई नसों को देखा।

"वाह, तुम तो अभी तन्दुरुस्त हो", आंद्रो ने कहा।

मरियम ने अपनी पीठ पर बोझ लाद लिया और आंद्रो ने एक बार फिर उसकी फीकी मुस्कान देखी। वह सड़क पर पहुंच कर बोली—'हां अभी मैं तन्दुरुस्त हूं।'

उसका बोझ एक झुके हुए पेड़ की डालियों में उलझ गया। मरियम झुकी और करीब-करीब गिरने को हुई, लेकिन फिर संभल गयी और झुककर पेड़ के नीचे से निकल गयी। बहुत सी, पकी नाशपातियां टूटकर गिर गयीं।

"मैं एक नाशपाती ले लूं।' उसने गिड़गिड़ा कर पूछा।

"अरे मूर्ख, पेड़ से तोड़ ले, देख, वो तेरे उरोजों पर गिर रहीं हैं।"

उसने जमीन पर से एक नाशपाती उठा ली और दूसरी पेड़ से तोड़ ली और हंसने लगी।

"बहुत अच्छी है बेचारी···।" बूढ़े फाक्स गिकोर ने कहा—'अभी जवान है··· तन्दुरूस्त है ·'।

दरअसल गिकोर आया था आंद्रो का घोड़ा उधार मांगने। उसे कसाख से अनाज के कुछ बोरे ढोकर लाने थे। यही कोई अस्सी किलो वजन रहा होगा— ज्यादा नहीं। गिकोर का घोड़ा इतना बोझ नहीं उठा सकता था, फिर वह डरपोक भी था। सड़क भी खराब थी और वह रात को लौटने वाला था, इसलिए उसका घोड़ा तो कहीं भी लड़खड़ाकर गिर सकता था और हो सकता है गिकोर को भी पटक देता क्योंकि वह था मजबूत, लेकिन साथ ही दुष्ट प्रकृति का था। अब बोझ कोई ज्यादा तो नहीं... यही कोई अस्सी किलो था या ज्यादा से ज्यादा नब्बे किलो। वह रात में इसलिए यात्रा करना चाहता था कि घोड़े को पसीना नहीं आएगा। वह उसे दिन में जो खिला देगा और आराम करने देगा और रात में वापस आ जाएगा जिससे वह थके नहीं।

आशखोन सबसे पहले गायों को दुहा करती थी। वह सबसे पहले दूध लेकर पहुंचती थी और दूसरों की तुलना में उसके पास सबसे ज्यादा दूध होता था। वह गायों को सहलाती थपथपाती और उनकी गौशाला को साफ करती थी। सचमुच उसकी गौशाला सबसे ज्यादा साफ रहती थी और उसके बछड़े सबसे बड़े और तन्दरुस्त दिखते थे। वह चरवाहे को गौवें सौंपती और फिर अपनी कमर में फेंटा लपेटकर पहले कपड़े के साबुन से, फिर नहाने के साबुन से नहाती, फिर बालों में कंघी करती और तब सिर में रूमाल बांधती। कुछ औरतें अगर रूमाल बांधती हैं तो कंघी नहीं करतीं और अगर कंघी कर ली तो रूमाल नहीं बांधतीं, लेकिन वह ऐसी न थी। वह भीतर बाहर दोनों और सफाई से रहती थी। कंघी करके वह रूमाल बांधती और इसके बाद अपनी शादी की सोने की अंगूठी पहनती। इस तरह वह एक अच्छी घरेलू औरत थी और हरदम परिवार के बारे में सोचती रहती। वह अपनी सोने की घड़ी पहनती और तब पशुफार्म के मैनेजर लेवान से मिलने जाती। वह एकदम साफ-सुथरी, सर्वश्रेष्ठ और ईमानदार, सच्ची और सुन्दर थी।

वह अत्यन्त विनम्र, शान्त और समर्पित और निस्सहाय थी। एकदम

शुद्ध आरमेनियाई और ग्रामीण स्त्री थी। वह कभी पहले बोलने का साहस नहीं करती थी। अपने से बड़ों का आदर करती थी और धैर्य रखती।
लेबोन ने पूछा— "क्या हुआ आशखेन।
"लेबोन चाचा," कहकर वह चुप हो गयी। वह बेहद शर्मीली और संकोची थी। शहर की फूहड़ और गांव की कुल्टा औरतों जैसी न थी वह। वह तब तक चुप रही जब तक लेबोन ने स्वयं अनुमान नहीं लगा लिया कि सर्वश्रेष्ठ दूध बेचने वाली आशखेन उससे क्या पूछना चाहती है।
"तुम कुछ दिनों की छुट्टी चाहती हो।"
आशखेन ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

अगर शाम का दूध दुहने के लिए तुम समय से लौट सकती हो तो मुझे कोई एतराज नहीं है। बाकी सारा समय तुम्हारा है। तुम जो इच्छा हो करो।

आशखेन बिना अनुमति लिए कोई काम नहीं करती थी। उसकी समझ भी बहुत अच्छी थी। वह जानती थी कि घाटी में काम करने वाले मजदूर दही लेना पसन्द करेंगे। इसलिए वह पूरे उदार मन से, अपनी गाय के दूध से बना दही लेकर उन्हें देने जाती। आशखेन विचारशील भी थी। वह उसे स्वयं ले जाकर देती। भले ही उसके बोझ से उसकी कमर क्यों न झुक जाए। वह संवेदनशील भी थी। वे लोग जब दही खाते तो वह चुपचाप विनम्रता से सिर झुकाए घास के तिनके से खेलती बैठी रहती। फिर वह मरियम के साथ झरने से पानी लेने जाती। वे दोनों बचपन की मित्र थीं। एक-दूसरे की बातें, देखते ही समझ जाती थीं। वे यह भी जानती थीं कि झरने से पानी लाना औरत का काम है, इसलिए वे चुपचाप चली जातीं।

आशखेन ने बाल्टी को पानी की धार में ठीक से डुबो दिया, फिर उसे भरकर कांवर के एक किनारे पर बने गड्ढे में ठीक से फंसा दिया जिससे गिरे नहीं। उसने मरियम को एक तरफ हटा दिया जिससे पानी में मिट्टी न गिरे। अब उसने मरियम के सिर का रूमाल खोल दिया जिससे वह फटे नहीं। बालों का जूड़ा बनाकर बांध दिया, जिससे बाल खिच न सकें। और इसके बाद वह मरियम को पीटने लगी। उसने मरियम के कंधे, सीने, पेट, पीठ और कमर पर खूब दनादन घूंसों की मार लगाई। वह इन स्थानों पर इसलिए घूंसे मार रही थी कि उसे चोट भी लगे और चोट का निशान भी किसी को दिखाई न पड़े। इसके बाद उसने मरियम को थोड़ा पानी पिलाया और अपनी कंघी दी जिससे वह अपने बाल ठीक करले। इसके बाद मरियम की रूमाल फिर से उसके सिर पर बांध दी और उसकी बाल्टी उठाकर खुद चल दी, क्योंकि मरियम से चला नहीं जा रहा था, वह लड़खड़ा रही थी।

करेन सिमोनियान (1936—)

सिमोनियान का जन्म येरेवान में हुआ था। सन् 1958 में इन्होंने पॉलिटेकनिक इन्स्टीट्यूट के मशीन-निर्माण विभाग से स्नातक की उपाधि ली, किन्तु बाद में साहित्य-सेवा में लग गए। इनकी मुख्य रचनाएं हैं: फंतासी, अलविदा नथेनियल, भेषजज्ञ नरसेस बादजान: इनका नाटक: 'तुम्हारे सपने सच हों,' को येरेवान थियेटर में किशोरों के लिए प्रस्तुत किया गया था। इन्होंने आरमेनियन स्टूडियो में निर्मित कुछ फिल्मों के आलेख भी लिखे हैं।

अयालयुक्त धुनकी

नरसेस मजहान की दृष्टि हरे-भरे मैदान में बने छोटे-मोटे घरों पर टिकी हुई थी। वे एकदम खिलौने जैसे सुन्दर थे। एक-दूसरे से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बने हुए थे।

सदा की तरह उस सुबह भी सारी दुनिया ख़ामोशी की पारदर्शी चादर से ढकी हुई थी। यदि आप अपनी आत्म-शक्ति को थोड़ा जगा सकें और उस धुंधलके में, अपने को चिंतित बनाने वाले विचारों को मुक्त कर दें तो आप निश्चित ही उस आश्चर्यजनक शान्ति का मोहक स्वर सुन सकेंगे। लेकिन यदि आप में आत्मशक्ति नहीं है, यदि आपके विचार आपके उद्वेलित मस्तिष्क से बाहर नहीं निकलना चाहते और यदि आपकी आन्तरिक चिन्ता बढ़ती ही रहती है तो फिर आपका भगवान ही मालिक है।

और फिर इस हरियाली, इन घरों और इस शान्ति की जरूरत किसे है। क्या उसे जो यह भी नहीं जानता कि शंकाओं को मिटाने और इच्छाओं को समाप्त करने की विधि किसने बनायी ?

और यदि मैं दूर, बहुत दूर पीछे छूटी हुई, अपने पूर्वजों की भूमि की याद में दुखी हूं और यदि मैं अपनी आयालयुक्त धुनकी चाहूं तो क्या मेरी ये इच्छाएं पूरी हो सकती हैं— नरसेस मजहान ने सोचा।

"देखा, कैसी विचित्र इच्छाएं जन्म ले रही हैं।" उस हरे-भरे मैदान के किनारे पर बने घर ने कहा— "क्या तुम जानते हो कि तुम इतनी देर तक घर से बाहर नहीं रह सकते। इसके लिए तुम व्यर्थ ही आग्रह कर रहे हो। वापस आओ…… घर में वापस जाओ……।

"एँ!…… घर में आ जाओ।" उसकी मां भी तो इसी तरह शाम को उसे बुलाया करती थी। लेकिन उसमें एक बात बुरी थी कि वह तभी बुलाती थी जब वह अपने खेल में मस्त होता और खेल भी अपने चरमबिन्दु, पर पहुंच रहा होता था। तब वह अपने पैंट की धूल झाड़कर कमीज को ठीक से अन्दर करता और बेल्ट को कसकर बांध लेता ताकि उसके अन्दर छिपाए हुए गोल्डेन सेब गिरकर घाटी की सड़क पर न बिखर जाएं। वह बड़े बेमन से घर की ओर चल देता।

घर………।

नरसेस मजहान का हृदय बेचैन हो उठा। अचानक उसकी बचपन की स्मृतियों को वास्तविकता की नयी अनुभूति हुई। वह अनुभूति क्षणिक अवश्य थी किन्तु उसने उसे लाल छप्पर वाले घर की ओर जल्दी-जल्दी जाने के लिए विवश कर दिया जो हरे मैदान के किनारे पर बना था। बाद में, निश्चित ही उसे लगा कि वह अनुभूति मात्र एक सुखद भ्रम थी।

अपने घुटने की एक ठोकर से ही उसने अहाते का द्वार खोल दिया, फिर रुका और इधर-उधर देखने लगा और फिर जैसे उसका बचपन अतीत की मोटी परतों के नीचे दब गया, उसकी मां की आवाज कहीं दूर खो गयी और गोल्डेन सेब लुढ़ककर सड़क पर धूल में कहीं खो गए— तो नरसेस मजहान यह समझने की कोशिश करने लगा कि आखिर इनमें से अब सच क्या है?

निस्संदेह कुछ बात तो थी! कुछ बात जरूर वहां थी।

"वह क्या 'घर' से संबंधित थी?"

हुंह…… फिर वही घर की बात।

आमतौर से लोग अपने ही छप्पर के नीचे अपने को सुरक्षित समझते हैं, क्योंकि तब वह अपनी मर्जी के मालिक होते हैं— एकदम स्वतन्त्र। लेकिन इस सुन्दर, सुव्यवस्थित और पक्के छप्पर वाले घर में ऐसा कुछ भी न था। इसमें तो उन चिन्ताओं को जन्म देने की अद्भुत शक्ति थी जिसका कारण कुछ समझ में आने वाला न था, लेकिन यह भी सही है कि वे चिन्ताएं परेशान कर रही थीं।

······अब वह बैठक के कमरे की ओर बढ़ेगा जिसके फर्श पर बिछी चटाई, उसके जूतों से रगड़ खाकर मरसरा उठेगी और उस कमर की खिड़की से नीला आसमान साफ दिखाई देगा।

कितना विचित्र है······ वह जब भी घर में प्रवेश करता रहा है, उस समय अंधेरा छाया रहता जो पहले गहरा नीला दिखता, फिर विचित्र सी गहरी उदासी में बदल जाता। लेकिन कैसी है यह उदासी? ऐसी उदासी तो उसकी मातृभूमि में असंभव ही है, जिसे वह दूर, बहुत दूर पीछे छोड़ आया है। वहां तो पर्वतमालाओं की लहरियों में चांद तैरता रहता है और उसका प्रतिबिम्ब शान्त झील की लहरों में दिखाई देता है।

वह मातृभूमि नहीं, एक अचरजलोक है।

और यह सोचकर नरसेस मज़हान ने बैठक के उस कमरे में एक गहरी सांस ली।

फिर न जाने कहां से – या तो चारपाई के नीचे से या दीवार पर लटक रही घड़ी के पीछे से, या कमरे की छत से लटक रहे दीपदान से— अपनी उपस्थिति का अहसास कराए बिना ही वहां भय उभर कर आएगा और धीरे-धीरे उसे चारों ओर से ढक लेगा और तब वह पूरी तरह से अपने आप में सिमट जाएगा।

नरसेस मज़हान ने अनजाने में ही झेंपकर मुस्कराने की कोशिश की। फिर उसने बड़ी सावधानी से बैठक का द्वार खोला और अन्दर झांककर देखा। लेकिन अगले ही क्षण वह रसोई घर की ओर मुड़ गया। उसका झटके से अचानक मुड़ना और मुस्कराने का प्रयत्न— दोनों ही कुछ बड़ा निराशा भरा दृश्य उपस्थित कर रहे थे। लेकिन उसे निराशाजनक या प्रसन्नता भरे दृश्यों में कोई रुचि न थी। वह तो केवल एक दिन, बल्कि केवल एक शाम वह एकदम अकेले, अपने साथ बिताना चाहता था।

बैठक की दीवार का सहारा लेकर उसने संतोष की सांस ली और अपने सिर के ठीक ऊपर हिल रहे घड़ी के पेंडुलम को आशंकित दृष्टि से देखने लगा।

मैं अकेला हूं। उसने सोचा। इस समय मैं एकदम अकेला और स्वतन्त्र हूं। यहां कोई अनचाहा मेहमान नहीं आएगा और आज भय भी बहुत उग्र प्रतीत हो रहा। फिर आज भयभीत होने का कोई कारण भी तो नहीं है, क्योंकि आज तो मैंने अपनी मातृभूमि, अपनी मां की पुकार और गोल्डेन सेबों को याद किया है।

जब मैं कपड़े उतारकर नहाने जा रहा हूं। फव्वारे के पानी की धार मेरे शरीर में सुइयों की तरत चुभेंगी। लेकिन वह मेरे शरीर पर जमी धूल धो डालेगी।

"तुम परेशान हो क्या? उस घर ने पूछा और नरसेस को लगा कि उसका दिल तेजी से धड़क रहा है। उसने अपनी हथेलियों से चेहरा ढक लिया और उंगलियों के बीच से देखने लगा। वहां वह अकेला था, एकदम अकेला।

"तुम थक गए हो, तुम भूखे हो। वह घर कह रहा था।" "जाओ, पहले नहा लो, फिर देखते हैं कि क्या हो सकता है?"

तुम क्या कर सकते हो? वैसे भी तुम इतने कृपालु क्यों हो रहे हो? आखिर तुम्हें इसकी फिक्र क्यों है कि मैं थका हूं या भूखा हूं।। तुम्हारा काम है अपनी दीवारों पर इस घर का छप्पर संभाले रहना। इसलिए उसे इतनी मजबूती से संभालना कि मैं यहां अपने को बिलकुल सुरक्षित अनुभव करूं।

.. ...नरसेस मजहान ने अपनी कमीज के बटन खोले और जैसे ही आगे बढ़ा कि उसके पांव ठिठक गए। उसने धूल से भरी कमीज की बाहें पकड़कर पहले धीरे से, फिर जल्दी से उसे उतार दिया।

वह जल्दी से नहाना चाहता था और कौन जाने तब वह अपना अत्यंत पवित्र गीत भी गा उठें।

" नमस्ते "

नहीं, ये उस घर की आवाज नहीं थी।

यह शवास्प की आवाज भी न थी, जिससे वह खाराकर उन दिनों में अक्सर ही मिला करता था जब वह स्टेशन पर ड्यूटी दिया करता था।

शवास्प का आना एकदम अनिश्चित होता था। उसके आने का उद्देश्य क्या है, इसका पता लगाना भी शायद ही किसी के लिए संभव रहा हो। जो भी हो, नरसेस मजहान स्वयं भी नहीं जानता कि अब तक उसने स्वयं भी उसके बारे में पूछताछ क्यों नहीं की।

यह सही है कि उसने कई बार चाहा तो था, लेकिन फिर अचानक उसका ध्यान बदल जाता और वह पूछताछ कर ही न पाता।

वह अरनाक की भी आवाज न थी। अरनाक हरे मैदान के सामने वाले छोर पर शवास्प के घर के ठीक सामने रहता था।

"नमस्ते नरसेस मजहान!"

यह आवाज़ मोरिक की भी न थी। यह बात मैं अपनी सुदूर स्थित मातृ-भूमि और अपने उन पूर्वजों की सौगंध खाकर कहता हूं जो अपनी उस मातृ-भूमि की रक्षा करते रहे जिसके प्रति वे प्रतिबद्ध रहे हैं और जिन्हें आज की जीवित पीढ़ी याद करती है। मैं इन तमाम पवित्र बातों की कसम खाकर कहता हूं। कि वह मौरिक भी न था।

"तुम क्या चाहती हो।" नरसेस मजहान ने भारी आवाज़ में पूछा। उसके सिर पर तौलिया लिपटा हुआ था। उसने यह प्रश्न उस महिला से पूछा था जिसके कंधों पर एक अलौकिक पारदर्शी चीवर पड़ा हुआ था। वह निस्संकोच भाव से मुस्करा रही थी और उस समय की नाजुक स्थिति की उसे कोई चिंता न थी। "क्या तुम भी हमारे इस इलाके में रहती हो।" नरसेस मजहान ने बिना यह सोचे ही पूछ लिया कि उसने कितनी बेवकूफी भरी बात पूछी है। आखिर वे सब ही तो उन मकानों में रहते थे—अरनाक, शवास्प, मोरिक और वह स्वयं।

"तुम कौन हो?" उसे लगा कि उसे अपनी ही आवाज़ अपरिचित बनकर सुनाई दे रही है। मैं पूछता हूं कि तुम कौन हो। यहां क्यों आयी हो। तुम्हें मेरे घर में क्या काम है।

और उसी क्षण उसने घर के सुख को अनुभव किया। वह घर नरसेस मजहान से 'मेरे घर में' शब्दों को सुनकर खुश हो रहा था। उस घर के बारे में जैसा कि हम सब और यहां तक कि वह घर स्वयं भी नहीं जानता था कि उसे किसने और कब बनवाया। यह भी नहीं जानते कि वह बना भी था या स्वयं उद्भूत था। इसलिए वह स्वयं भी किसी का होकर रहने का सपना देखा करता था।

नरसेस मजहान को लगा कि इस बात को तो वह बहुत पहले ही समझ चुका है। मैंने बहुत पहले ही समझ लिया था घर मेरा बनना चाहता है। फिर ये महिला किसलिए आयी है। यहां क्या उसका कोई संबंधी है। क्या उसका कोई पूर्वज है? क्या उसका कोई अपना इतिहास है? वैसे मैं उसके इस स्नेह की प्रशंसा करता हूं। लेकिन भला मैं क्या कर सकता हूं। मेरी मुक्ति, मेरी शक्ति, मेरा साहस, मेरा अभी तक एक मशीनी मानव न बनना और अपने आपको उससे बचाए रखना, ये सब मेरी मातृभूमि के वास्तविक और साकार अस्तित्व द्वारा नियंत्रित है।

"जाओ नहा लो।" महिला ने कहा— "मैं तब तक खाना बनाती हूं।"

उसने तौलिया ठीक कर दिया और नरसेस मज़हान के जूते, मौजे, कमीज़, और परेशानियों को बटोरकर रसोईघर में चली गयी।

नरसेस मज़हान ने फव्वारे के नीचे खड़े होकर सोचा— "ये सही है कि मैंने नहीं बताया कि मैं कौन हूं, लेकिन मैं देख रहा हूं कि तुम मेरी खातिर सारी चिन्ताओं और शंकाओं को दूर करने के लिए आ गयी हो और हां ..... । खाना बनाने के लिए भी।"

"मैं तुम दोनों को अकेला छोड़ दूंगा।" घर ने कहा। "तुम जानते हो वह कौन हैं। वह एक गृहिणी है। वह एक औरत है और एक रहस्य भी। और अगर तुम उस रहस्य को जानने के लिए तैयार हो तो, वह कई पीढ़ियों वाली पुरखिन साबित होगी। और वे पीढ़ियां अपने दूर देश की याद में कभी दुखी नहीं होंगी। इसलिए मैं तुम दोनों को अकेला छोड़ दूंगा और परेशान नहीं करूंगा, तब तुम अपनी विस्मृतियों में डूब जाओगे और इस विस्मरणशीलता के कारण तुम्हें असीम प्रसन्नता अनुभव होगी।"

यह कैसी अजीब विचारशीलता है। और फिर भी मुझे विश्वास था कि मैं आज शाम अकेला रहूंगा। मैं सभी आगन्तुकों से मुक्त रहूंगा.....सबसे। लेकिन यहां हरे-भरे इलाके में हम कुल चार लोग हैं, तो इससे क्या? फिर वे हैं कौन। शावास्प, अर्नाक या मोरिफ। और मैं नरसेस मजहान। और जब से मैं यहां आया हूं, एक इच्छा मेरे अन्दर जाग उठी है— एक कली जो हरी टहनी के रूप में उभर आयी है, वह अकेले में रहने की मेरी इच्छा अब एक पेड की तरह उग आना चाहती है।

"क्या तुम देर तक नहाओगे?"

एक महिला का स्वर सुनाई देता है और उस आवाज को अनसुना करने के लिए नरसेस मजहान ने पानी की धार तेज कर दी जिससे उसके शोर में वह दुनिया की बातों से बेखबर हो जाए।

इस तरह लगातार अपनी मातृभूमि को याद करते-करते एक दिन तुम अपने होश-हवास खो बैठोगे। घर ने बड़े भेद भरे स्वर में कहा। "तब तुम्हें क्या मिलेगा। कुछ नहीं। मेरी बात पर विश्वास करो, तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। तुम सिर्फ परेशानियों, चिन्ताओं और यादों में घुटते रहोगे।

तुम मेरी आत्मा को सता रहे हो— नरसेस मजहान ने सोचा। क्या तुम सोचते हो कि अगर मैं अपने देश की याद नहीं करूंगा तो तुम मुझे सांत्वना और संतोष देने वाले बनोगे।

और उसने पानी की धार के नीचे अपना सिर हिलाया और नल बन्द कर दिया। फिर शीशे की ओर देखा जिस पर भाप छायी हुई थी।

कोई प्रतिबिम्ब नहीं रहा था। जैसे वह वहां नहीं था। उसका चेहरा भी नहीं था। वह बिलकुल अदृश्य जैसा था। सिर्फ हल्की छाया सी दिख रही थी। जिसमें आप किसी भी आकृति की कल्पना कर सकते थे और इच्छानुसार उसे रूप दे सकते थे। हुंह ···।

उसने रोएंदार तौलिया लपेटा और अपनी बांह से शीशे पर छायी भाप साफ कर दी। फिर वह अपने आपको देखकर मुस्करा दिया।

तुम पूछ रहे थे कि मातृभूमि को याद करके मुझे क्या मिलेगा। नरसेस मजहान ने सोचा! तुम यह क्यों नहीं समझते कि इस तरह मैं अपने आपको पा सकूंगा। इसे तुम खेल मत समझो।

"तुम व्यर्थ ही सारी बातों को उलझा देते हो।" महिला की आवाज फिर सुनाई दी। "जो भी हो! तुम्हारे पूर्वज जब मुझे मिले तो उन्होंने कोई संदेह नहीं प्रकट किया।"

नरसेस मजहान तौलिया को बांधते हुए बैठक में आ गया। उसके गीले पैरों के निशान पूरे फर्श पर उभर आए थे।

"इस बारे में क्या ख्याल है?" घर ने सावधानी से पूछा। "मैं क्या कह सकता हूं। उन्हें शायद इसलिए संदेह नहीं हुआ होगा क्योंकि वे अपने ही देश में जन्मे, वहीं रहे और मरे। और शायद वहीं रहकर ही उन्होंने इस नीले आसमान के नीचे दूर-दूर फैले देशों की कल्पना कर ली। वे जरूर सपने देखते रहे होंगे और गर्मी की रातों पर घर के छप्परों पर लेटकर पहाड़ों से आने वाली ठंडी हवाओं की प्रतीक्षा करते रहे होंगे। लेकिन इन बातों के सहारे कोई कब तक जी सकता है जबकि उसे अपने में रहने के कोई साधन नहीं प्राप्त हों।

"··········पैरों के गीले निशान बेड-रूम तक चले गए थे। फिर दरवाजा बन्द हो गया। उसके किवाड़ों के नीचे पैर का एक निशान आधा दिख रहा था – एड़ी का हिस्सा बैठक की ओर और पंजा बेड-रूम की ओर ।

इस दरवाजे को बन्द करने से क्या फायदा— नरसेस मजहान ने सोचा— वह लेट गया था। उसकी आंखें अधखुली थीं और गर्दन के नीचे उसने अपनी हथेली लगा रखी थी। फिर उसने उस महिला के कंधों का सहारा ले लिया जिसके बारे में किसी को पता न था कि वह कहां से और क्यों आयी है। तुमने दरवाजा बन्द करके ठीक ही किया है, लेकिन इस घर में हम कहां छिप सकते हैं।

हम अकेले कैसे रह सकते हैं। हम एक दूसरे के होकर कैसे रह सकते हैं। एक आत्मा, एक शरीर··· आरम्भ और अन्त ···· कैसे हो सकते हैं ?

मैं अपने विचारों में खो गया—लगा जैसे नीले कुहरे में डूब गया हूं या गर्म रेगिस्तान में सफेद सूरज की किरणों के नीचे चल रहा हूं।

और तब तुम्हारे प्यार की पुकार क्यों मुखरित नहीं हुई। हो सकता है कि चरमावस्था पर पहुंचकर कुहरा धुल गया हो, विचारशीलता ने अस्थायी प्रसन्नता दी हो और मेरी कल्पनाएं मूर्त होकर मुझे सांत्वना देने लगीं हों।

"ठीक है। तुम अपने को अपने में ही समेटे रहो, नरसेस मजहान , तुम अपने को एकदम मुक्त अनुभव करो।" घर ने कहा, "और मैं अब अपनी दीवारों पर छप्पर को मजबूती से पकड़े रहूंगा।"

'ठीक है ·· अब ·· अब मैं जागूंगा। मेरी आंखें जरूर बन्द हैं, किन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि मैं सो रहा हूं। मैं तो जाग रहा हूं। मैं इस दुनियां और अपने आपको अनुभव कर रहा हूं। मैं एक विचित्र दयनीय और एक अत्यन्त सुखद उदासी भी अनुभव करता हूं, क्योंकि मुझे उस महिला की याद है जिसके बारे में कोई नहीं जानता था कि वह क्यो और कहां से आयी है। और उसका नाम··· नाम क्या था उसका।"

इस समय वह रसोईघर में होगी।

····नरसेस मजहान घर में यों ही घूमने के लिए उठा। वह किसी को खोजना चाहता था। लेकिन किसे और क्यों। नहीं ··· रसोईघर में कोई नहीं था। बैठक की दीवार-घड़ी का पेंडुलम टिक-टिक कर रहा था। उसके जूते के तल्ले फर्श की चटाई पर सरसरा रहे थे। उसके मन में फिर से भय की भावना समाती जा रही थी और दया, उदासी, यादों और चिन्ता के भाव कम होने लगे थे।

नरसेस मजहान ने सोचा कि अगर मुझे भय द्वारा ही सताया जाना है तो ठीक है मैं जरा बैठक के कमरे में जाकर देखता हूं कि यहां कौन-सी नयी बात है।

भौरिक। शवास्प। उसने महसूस किया कि उन नामों को वहां बोलने की जरूरत न थी, बस वे उसके गले में अटक कर रह गए थे। वह अपने को बीमार अनुभव करने लगा था। उसने दरवाजे की चौखट का सहारा ले लिया जिससे ऊपर उसके घुटने जवाब दे जाएं तो वह धीरे-धीरे सरककर जमीन में बैठ जाए और पैर फैला ले।

कुछ देर बाद टेबिल पर बैठकर शान्तिपूर्वक बासी भोजन खाने वाला आदमी और कोई नहीं, वह स्वयं था। हां, नरसेस मजहान। "इसका मतलब यह हुआ कि मैं अपने होश में हूं —" नरसेस मजहान ने सोचा। और अगर मैं ऐसा करूंगा तो दूर छूटी हुई अपनी जन्मभूमि की याद से परेशान हो उठूंगा। अगर मैं ऐसा करूंगा तो मैं अयालयुक्त धुनकी भी तो पा सकूंगा······ अगर मैं ऐसा करूंगा·········।

टेबिल के सामने बैठे हुए उसने अचानक मुड़कर दरवाजे की ओर देखा उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। वह उंगलियों के बीच से देखने लगा और देखता रहा······ देखता रहा·········।

नरसेस मजहान ने बड़ी सावधानी से दरवाजा बन्द कर दिया। फिर उसने दरवाजे की तरफ झुकते हुए सोचा— "हम सभी किसी न किसी चीज की कामना करते हैं। लेकिन मेरी दूर छोड़ी हुई मातृभूमि की जो एक अत्यन्त नगण्य वस्तु है, वह है केवल अयालयुक्त धुनकी। जो आज भी है और जिसकी याद मेरे मन में जीवित है।"

दया और उदासी के भाव बढ़ रहे थे। मेरी यादें एक पवित्र स्वर लहरी का रूप ले रही थी और मेरी चिन्ता मुझ पर फिर छाने लगी थी कि वह औरत जिसे कोई नहीं जानता था कि वह क्यों और कहां से आयी ?

पर्च जीतुन्त्सियान (1938—   )

जीतुन्त्सियान का जन्म अलेक्सेन्द्रिया (मिस्र) में हुआ था। सन् 1946 में उस का परिवार अपने स्वदेश सोवियत आरमेनिया आ गया था। सन् 1963 में जीतुन्त्सियान ग्यातिगोर्स्क के विदेशी भाषा संस्थान से स्नातक बने। बाद में उन्होंने मास्को से उच्च स्तरीय लेखन पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। उनकी मुख्य रचनाएं हैं— उसका दोस्त, हमारे पड़ौस की आवाजें और पेरिस के लिए (कथा संग्रह)। हमारे बाद (कहानी), क्लाड राबर्ट आइजरली (उपन्यास), जीतुन्त्सियान के लिखे नाटक— नष्ट शहर की कथा और अत्यन्त उदास व्यक्ति, येरेवान नाटक मंच द्वारा प्रस्तुत किए गए थे। उन्होंने आरमेनियन फिल्म स्टूडियो के लिए कुछ फिल्में भी लिखी हैं।

हर दशक से एक

वे जल्दी ही आएंगे।

"तुम्हारे पास धूम्रपान के लिए कुछ है?"

"मैं पवित्र हूं, मैं मरना नहीं चाहता।"

"चुप रहो। तुम्हें कुछ नहीं होगा।"

"घर में मैंने ऊपर अटारी में विह्स्की की एक बोतल छिपा दी थी, अगर किसी ने उसे नहीं देखा होगा तो मैं युद्ध के बाद आकर उसे पिऊंगा।"

"मैं पूछता हूं तुम्हारे पास धूम्रपान के लिए कुछ है?"

"मैं शहर के एक मोची को जानता हूं। युद्ध के बाद मैं उसके पास जाकर उसका काम सीखूंगा।"

"इस समय क्या बजा है?"

बढ़ी हुई दाढ़ी, उदास चेहरे और कम बोलने वाले वे लोग— सिपाही थे। वे जब भी बातें करते तो फिजूल के विषयों पर, छोटी-छोटी बातों पर। और

फिर भी लोग सुनते और एक दूसरे की बातें अच्छी तरह समझते। वे अपने बारे में बताते और एक ही युद्ध की बातें दुहराते रहते। लेकिन कभी किसी ने यह नहीं कहा कि वह उन बातों को सुन चुका है। और अगर वे बोर हो भी जाते तो भी बड़ी सहनशीलता से बातें सुनना जारी रखते। लेकिन कभी-कभी कुछ लोग टोक भी दिया करते थे—'बस करो भाई, हर बार तुम एक ही बात सुनाते हो।' और तब खामोशी छा जाती। वे एक दूसरे की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगते। शायद वह बात कहने वाला व्यक्ति ठीक ही था। लेकिन वह कौन था और कहां था? वे उसे आसपास देखते किन्तु खोज न पाते। हो सकता है कि उनमें से ही किसी ने कहा हो, क्योंकि वे सभी तो अपनी-अपनी दास्तान सुनाने का अवसर चाहते थे और एक बार में एक ही व्यक्ति सुना सकता था।

फिर दूसरा सिपाही अपनी बात शुरू कर देता।

"जब मैं कमरे के कोने में रखी आलमारी के सामने खड़ा हुआ (वह कमरा बड़ा, साफ और रोशनीदार था) तो मेरी पत्नी ने कहा कि इसे दरवाजे के पास रखना ज्यादा ठीक रहेगा।"

"लेकिन दरवाजे के पास रखने से दिक्कत नहीं होती?" किसी ने उत्सुकतावश पूछा।

सिपाहियों के इस दल ने मोर्चे पर जाकर युद्ध करने के लिए मना कर दिया था और इस बात को हुए कुछ ही दिन बीते थे। अब वे डरे हुए यह इंतजार कर रहे थे कि देखो क्या होता है?

"वे आ रहे हैं," कोई अचानक चिल्लाया। वह आवाज भारी और डरी हुई थी। निश्चित ही वह भी उनमें से ही कोई था। लेकिन आश्चर्य तो यह था कि यह आवाज बेहद परिचित लगी थी।

दंड देने वाला फौजी दस्ता आगे बढ़ा।

"खड़े हो जाओ—" आदेश मिला। "एक कतार में खड़े हो जाओ।" वे किसी तरह एक कतार में खड़े हो गए।

उस समय कोई कुछ नहीं सोच रहा था। सब का ध्यान दूर खेत में लड़ रहे दो कुत्तों पर टिका हुआ था। वैसे उन कुत्तों को देखकर यह अनुमान लगाना कठिन था कि वे लड़ रहे थे या खेल रहे थे।

एक अफसर ने बोलना शुरू किया। उसके लंबे भाषण में से सिपाही केवल एक ही बात याद रख सके कि उन्हें गद्दार समझा गया था और मिलिटरी

कमांड के आदेश न मानने के लिए हर दशक में से एक को गोली से उड़ाया जाना था।

फिर भी कोई भयभीत न था, क्योंकि कोई यह नहीं सोच रहा था कि दस में से उसी का नंबर मरने वालों में होगा।

और फिर अचानक उस खामोशी में एक घबरायी हुई आवाज सुनायी दी। "मैं नहीं मरना चाहता— मुझे तो उन लोगों ने मजबूर किया था।

अब सभी की समझ में आ गया था कि हर दस में से एक के मरने का अर्थ था— दसवां, बीसवां, तीसवां व्यक्ति। वे कुल मिलाकर सत्तर लोग थे, इसलिए सात को तो निश्चित ही मरना था।

कतार में खड़ा पहला सिपाही अकारण ही मुस्करा दिया। उसने संतोष के साथ अफसरों की तरफ देखा क्योंकि उसका नंबर एक था और इसलिए वह अफसरों के प्रति आभारी था। वहां बड़े अफसरों में एक तो बिलकुल फिल्म-एक्टर जैसा लग रहा था। अपनी जेबों में हाथ डाले वह आराम से खड़ा था।

आखिर वे हैं क्या चीज, जो मिलिटरी कमांड के आदेशों को न मानने का साहस कर सकते हैं? वे कुछ नहीं हैं। सिर्फ मामूली सिपाही हैं और उन्हें दंड मिलना ही चाहिए। लेकिन उसे याद आया कि इस सारी योजना को बनाने वालों में से एक वह भी तो था। भय और शर्म से उसने अपने हाथ जेबों से निकाल लिए और नीचे जमीन की तरफ देखने लगा। फिर उसने कुछ इस तरह का भाव प्रदर्शित किया जैसे क्या वह सचमुच ही फिल्म-एक्टर जैसा लग रहा है।

दूसरे और तीसरे नंम्बर के सिपाही यह विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें नहीं मरना है। उन्होंने जल्दी-जल्दी गिना— एक-दो— वह दूसरे नंबर पर था। एक-दो-तीन— वह तीसरे नंबर पर था। लेकिन इन दोनों को पहले नंबर वाले से यूं ही ईर्ष्या होने लगी थी। वैसे इसमें कोई ऐसी बात न थी, क्योंकि नंबर एक-दो-तीन को तो मरना ही न था। फिर भी वे अकारण ही नंबर एक से चिढ़ रहे थे क्योंकि वह उन सब में नंबर एक था।

लेकिन बाकी सिपाही अपने फैसले की प्रतीक्षा कर रहे थे क्योंकि उन्हें अपना नंबर नहीं मालूम था। अफसरों ने उन्हें जोर-जोर से गिनती बोलने के लिए कहा, हालांकि फिर भी ये सिपाही धीरे-धीर बोल रहे थे। एक क्षण के लिए तो नंबर एक भी अपनी संख्या बोलकर सहम गया था।

"एक— ।"

नवें नंबर के सिपाही का चेहरा पीला पड़ गया था क्योंकि वह दसवें नंबर के सिपाही के बिल्कुल पास खड़ा था। वैसे भी नौ और दस की संख्याओं के बीच बहुत कम अन्तर है। किन्तु इस अन्तर की वजह से नवें आदमी का भाग्य खुल गया था।

खैर जो भी हो, एक संख्या का अन्तर भी कम नहीं होता। अगर यह अन्तर न होता तो नौ की संख्या होती ही क्यों? और वह सिपाही अपनी इस शोध पर मुस्करा दिया।

सिपाहियों द्वारा धीरे-धीरे बोली जा रही गिनती को कोई भी सुन सकता था।

"सौलह-सत्रह-अठारह-उन्नीस, उन्नीसवां सिपाही थोड़ा शरमा गया क्योंकि उसे बीसवें पर दया आ गयी। आखिर उसके घर वालों को यह बुरी खबर देने के लिए उसे ही तो पत्र लिखना पढ़ेगा। फिर युद्ध खत्म होने पर उसे उन लोगों की सहायता के लिए मिलने जाना पड़ेगा। यह सब इसलिए है कि वह खुश है। वह खुश था कि उसका नंबर बीसवां न था और उसे मरना नहीं था। उस क्षण उसे समझ में आया कि मनुष्य कितना नीच होता है, कितना कायर होता है। उसने सोचा कि वह तो हमेशा ही एक ईमानदार आदमी रहा है और आज पहली बार उसने अपने को पहचाना था। लेकिन उसने अपने बारे में इतनी सारी बातें कैसे सोच लीं। यह भी शायद खुशी के कारण ही हुआ है।

"मैं नहीं मरना चाहता—" एक डरी हुई आवाज सुनायी दी और लोग धीरे-धीरे गिनती बोलते जा रहे थे। "छब्बीस-सत्ताइस-अट्ठाईस-उन्तीस—' उन्तीस नंबर वाला व्यक्ति मुस्कराया।

वह जीवन भर ईश्वर में विश्वास करता रहा है। वह नियमित रूप से प्रार्थना करता रहा है और हर रविवार को वह अपने बच्चों को गिरजाघर ले जाता और उन्हें प्रार्थनाएं याद कराता था। बच्चों को फुसलाने के लिए वह थोड़ी मिठाइयां भी खरीद लिया करता था। वह और उसकी पत्नी दोनों पहली बार गिरजाघर में ही ईसा-मसीह के चित्र के नीचे मिले थे। और एक दिन उन्होंने एक दूसरे का हाथ जीवन भर के लिए थाम लिया था तब उन्हें लगा था कि जैसे ईसा-मसीह ने उन्हें देखा और मुस्करा दिए। इसीलिए उसके भाग्य में उन्तीसवां नंबर आता है। वह शुरू से ही विश्वास कर रहा था और उसका यह विश्वास इतना दृढ़ था कि अब वह खुशी से चिल्लाना चाहता था कि "दोस्तो— ईश्वर पर विश्वास रखो, वही तुम्हें बचा सकता है।"

लेकिन ईश्वर द्वारा की गयी भलाई शायद, ज्यादा न थी क्योंकि अब उस पर बहुत कम लोगों का विश्वास है। इसलिए वह ज्यादा मांगने का अधिकारी है। उसने सोचा कि अगर मैं युद्ध से कुशल और सुरक्षित लौट गया और वापस जाकर मुझे अच्छा काम मिल गया तो मैं रईस बन जाऊंगा, काफी बूढ़ा होकर मरूंगा और— इसके बदले हे ईश्वर, मैं तुम्हें अपना विश्वास दूंगा। तुम्हारी प्रार्थना करूंगा। अब मैं परमपिता और परमपुत्र तथा पवित्र शैतान के नाम पर क्रास बना रहा हूं। यह याद रखो कि अब तुम में बहुत कम लोगों का विश्वास है— आमीन—।

'छत्तीस-सैंतीस-अड़तीस-उन्तालीस'। उन्तालीसवें आदमी को थोड़ी परेशानी महसूस हुई कि वह चालीस से एक कम है, चालीसवां व्यक्ति उसका गहरा मित्र था। वे दोनों साथ-साथ पढ़े थे ; युद्ध में कंधे से कंधा मिलाकर लड़े थे और साथ ही साथ सारे कष्ट भोगे थे। और कतार में भी वे साथ ही साथ खड़े थे। अगर वे दोस्त न होते तो कतार में साथ साथ खड़े न होते और तब शायद उसका दोस्त चालीसवां सिपाही न होता। वह अपनी दोस्ती के कारण दुखी हो रहा था और अब यह महसूस कर रहा था कि उसने अपने दोस्त के लिए जो कुछ भी अब तक किया है वह सब स्वार्थवश किया था। उसने अपने मित्र के प्रति जो भी दया और गंभीरता प्रदर्शित की थी, उसके लिए वह शर्म अनुभव करने लगा था। अचानक वह मुस्करा पड़ा। फिर उसने ठंडी सांस ली। उसे अपने तर्क का औचित्य समझ में आ गया था। अब उसे कोई दोषी नहीं ठहरा सकता था। उसे याद आया कि एक बार उसने बुरा व्यवहार किया था लेकिन वह अपने मित्र के प्रति सदा ईमानदार रहा है। एक बार जब वह बेरोजगार था, उसने एक नौकरी के बारे में सुना था और उसने अपने दोस्त को उसकी कोई सूचना नहीं दी थी वह उस नौकरी को पाने के लिए अकेले ही चला गया था। लेकिन बाद में उसे इस बात के लिए बहुत अफसोस हुआ था और अपने किए पर बहुत शरम महसूस हुई थी। इन बातों को याद करके एक क्षण के लिए वह सहम गया। वह फिर से एक अच्छा दोस्त बन गया था। आखिर जिन्दगी में हर इन्सान से गलती तो होती ही है। वह बड़ी मुश्किल से इन विचारों को दिमाग से हटा सका। उसे लगा ये सब व्यर्थ है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि उसने वे गलतियां कीं, अगर यहां एकत्र लोग इन बातों को जान लें तो वे मुझे दुष्ट समझेंगे। इसलिए वह एकदम शांत हो गया। कोई बात नहीं, वह एक बुरा आदमी, एक बुरा दोस्त सही-और भयानक उत्तेजना के उन क्षणों में उसका यही तर्क उसका सबसे बड़ा औचित्य बन गया।

छियालीस-सैंतालीस-अड़तालीस-उन्चास—उन्चासवें व्यक्ति को मृत्यु से बच जाने पर कोई आश्चर्य नहीं था। उसे आरम्भ से ही इस बात का पक्का विश्वास था, वह जानता था कि वह एक ईमानदार आदमी है इसलिए वह नहीं मरेगा। और अचानक अफसर का स्वर सुनाई दिया।

'रुक जाओ, एक गलती हो गयी है —चालीस से आगे फिर गिनो।

और तब यह स्पष्ट हो गया कि उस गलती की वजह से पचास नंबर उन्चास हो गया था और इक्यावन नंबर पचास हो गया था।

अब ठीक है अब उसे ही मरना था। यह बात भी वह शुरू से ही जानता और यह कि चूंकि वह एक ईमानदार आदमी रहा है: इसलिए उसे मरना होगा।

और अब पहले वाले पचास नंबर ने, जो अब इक्यावन नंबर हो गया था। और अपने साथ वाले को जानता भी न था, शर्म से गड़ गया, जैसे इस सारी गलती का दोष उस पर हो, वह फुसफुसाया—मैं—मैं—अपराधी नहीं हूं।

यों यह बहुत छोटी सी बात थी, और शायद झूठ भी रही हो, लेकिन उस क्षण तो वह सामान्य सच्चाई भी अपराध जैसी लगी क्योंकि उससे पड़ोसी आहत् हुआ था तब वह कुछ और बड़बड़ाने लगा। और वह बातें अधिक गंभीर प्रतीत हुई ?

'शायद-शायद मुझे भी मरना चाहिए। युद्ध से तो कुछ ही लोग वापस जा पाते हैं और उसके लिए केवल यही सबसे बड़ा औचित्य सिद्ध हुआ।

'छप्पन-सत्तावन-अठ्ठावन-उनसठ'

'मैं मरना नहीं चाहता-मुझसे जबरदस्ती यह अपराध कराया गया है।' यह साठवें व्यक्ति की सुपरिचित घबरायी हुई आवाज थी। किसी को उस पर दया नहीं आयी। यदि उन्हें दया आ रही थी तो केवल सत्तरवें व्यक्ति पर और वह भी केवल एक वजह से। वह यह कि दसवें, बीसवें, तीसवें—सभी को गिनती होने से पहले तक यह आशा थी कि उन्हें नहीं मरना है और वे दसवां व्यक्ति नहीं होंगे। लेकिन सत्तरवें नंबर का वह आखिरी सिपाही तो इस बात को शुरू से ही जानता था। उसकी क्या दशा हुई होगी।